शिश
महल
प्रियांशी जैन

१

अंधकार अपना डेरा जमा चुका था. रात अपनी मंथर गति से बीती जा रही थी. चारो और सन्नाटा पसरा हुआ था. हां कभी कभी सियारो के रोने और कुत्तो के भोकने की आवाज़ों से वातावरण में बिसरा सन्नाटा क्षण भर के लिए भंग हुआ जाता था.

इस वक़्त रात के १० बजे थे. किशनगढ़ के निवासी अपने अपने घरों में कुछ तो चादर ताने सो चुके थे कुछ सोने का प्रयत्न कर रहे थे. उर्मिला अपने घर के आँगन की चारपाई पर अपने पति गोरप्पा के साथ लेटी हुई थी. उसकी आँखों से नींद गायब थी. वह एक और करवट लिए हुए थी. उसकी नज़रें उसके घर से थोड़े से फ़ासले पर स्थित उस भव्य शीश महल पर टिकी हुई थी जिसे ठाकुर रामप्रताप सिंह ने अपनी धर्मपत्नी शारदा देवी के मूह दिखाई के तौर पर बनवाया था. ठीक उसी तरह जैसे शाहजहाँ ने मुमताज़ के लिए ताजमहल बनवाया था. यहाँ फ़र्क सिर्फ़ इतना था कि ठाकुर साहब ने ये शीश महल अपनी पत्नी के जीवंत काल ही में बनवाया था.

ठाकुर साहब शारदा देवी से बहुत प्रेम करते थे. शादी की मूह दिखाई के दिन ही ठाकुर साहब ने शारदा देवी को ये वचन दिया था कि वे उनके लिए एक ऐसी हवेली का निर्माण करेंगे जिसे लोग युगों युगों तक याद रखेंगे. और उन्होने ठीक ही कहा था. शादी के साल डेढ़ साल के भीतर ही ठाकुर साहब ने अपना वादा पूरा किया. और ये हवेली बतौर मूह दिखाई शारदा देवी को भेंट की. जब ये हवेली बनकर तैयार हुई तो देखने वालों की आँखें चौंधिया गयी. जिसकी भी नज़र हवेली पर पड़ी शारदा देवी की किस्मत पर रश्क़ कर उठा.

उर्मिला रोज़ ही हवेली को देखती और ठाकुर के दिल में शारदा देवी के लिए बसे उस प्यार का अनुमान लगाती. अभी भी उसकी नज़रें हवेली पर ही टिकी हुई थी. रात में भी यह हवेली अपनी चमक बिखेरने में कामयाब थी. उसकी बाहरी रोशनी से हवेली की दीवारे झिलमिला रही थी. तथा हवेली के अंदर से छन कर निकलती रोशनी हवेली को इंद्रधनुषी रंग प्रदान कर रही थी.

उर्मिला ने पलट कर अपने पति गोरप्पा को देखा जो एक और मूह किए लेटा हुआ था. उसने धीरे से गोरप्पा को पुकारा. - "आप सो गये क्या?"

गोरप्पा अभी हल्की नींद में था उर्मिला की आवाज़ से वह कुन्मुनाया. "क्या है?"

" एक बात पूछू तुमसे सच सच बताओगे ?" उर्मिला ने प्रेमभाव से अपने पति की ओर देखते हुए बोली . उसके दिल में इस वक़्त प्रेम का सागर हिलोरे मार रहा था .

लेकिन गोरप्पा को उसके भाव से क्या लेना देना था. दिन भर का थका हारा अपनी नींद सोने का प्रयत्न कर रहा था. वह अंजान होकर बोला - "तुमसे झूठ बोलकर भी मेरा कौन सा भला हो जाएगा. सच ही बोलूँगा."

" तुम सीधे सीधे बात क्यों नही करते ?" उर्मिला तुनक कर बोली . उसे इस वक़्त पति के मूह से ऐसे बोल की आशा ना थी .

" तो तुम सीधे सीधे पुछ क्यों ना लेती , जो पूछना चाहती हो ? पुछो ."

उर्मिला इस वक़्त झगड़े के मूड में नही थी. वह शांत स्वर में बोली - "मेरे मरने के बाद क्या तुम भी मेरी याद में कुछ बनवाओगे?" उर्मिला के ये शब्द प्रेम रस में डूबे हुए थे. उन शब्दो में लाखों अरमान छुपे हुए थे.

" हां ....!" गोरप्पा ने धीरे से कहा .

पति के मूह से हां सुनकर श्रमिली का दिल झूम उठा. मन प्रेम पखेरू बनकर उड़ने लगा. आज उसे इस हां में जितनी खुशी मिली थी कि उसका अनुमान लगाना मुश्किल था. आज गोरप्पा अगर इस हां के बदले उसके प्राण भी माँग लेता तो वह खुशी खुशी अपने पति के लिए प्राण त्याग देती. वह गोरप्पा से कसकर चिपट गयी और बोली - "क्या बनवाओगे?"

" मालिक से कुछ रुपये क़र्ज़ में लेकर तुम्हारे लिए बढ़िया सी कब्र बनवाउँगा . फिर जो पैसे बचेंगे उन पैसों से पूरे गांव में मिठाइयाँ बाटुंगा ."

उर्मिला का दिल भर आया. आँखों से आँसू बह निकले. अपने पति के दिल में अपने लिए ऐसे विचार जानकार उसकी आत्मा सिसक उठी. वह सिसकते हुए बोली - "क्या पंद्रह साल तुम्हारे साथ रहने का यही इनाम है मेरा. मैं समझती थी कि तुम मुझे अपनी अर्धांगिनी समझते हो...प्रेम करते हो मुझसे. आज पता चला तुम्हारे दिल में मेरे लिए कितना प्रेम है."

उर्मिला की बेमतलब की बातों से गोरप्पा की नींद गायब हो चुकी थी. वह झल्लाकर बोला.
- "ना तो मैं मालिक जैसा रईस हूँ और ना ही तुम मालकिन जैसी सुंदर हो. फिर क्यों मेरा मगज़ खा रही हो? "

गोरप्पा की झिड़की से उर्मिला का दिल टूट गया. लेकिन वो अभी कुछ कहती उससे पहले ही रूह को कंपा देने वाली एक भयंकर चीख रात के सन्नाटे में गूँज उठी. यह चीख हवेली से आई थी. उर्मिला के साथ साथ गोरप्पा भी चिहुनक कर चारपाई से उठ बैठा.

" मालकिन ...!" गोरप्पा बड़बड़ाया और चारपाई से उतरा - " लगता है मालकिन को फिर से दौरा पड़ा है . मैं हवेली जा रहा हूँ ." वह तेज़ी से अपनी धोती कसता हुआ बोला . फिर कुर्ता उठाया और हवेली के रास्ते भागता चला गया .

उर्मिला अभी भी जड़वत खड़ी हवेली की और ताक रही थी. उसकी दिल की धड़कने चढ़ि हुई थी. उसका शरीर भय से हौले हौले काँप रहा था. तभी फिर से वही दिल चीर देने वाली चीख उसके कानो से टकराई.

उर्मिला काँपते हुए चारपाई पर लेट गयी. हवेली से निकली चीख ने उसके अपने सारे दुख भुला दिए थे. अब उनकी जगह शारदा देवी के दुख ने घर कर लिया था. वह शारदा देवी के बारे में सोचने लगी.

शारदा देवी - कैसा अज़ीब संयोग था. ठाकुर साहब ने शारदा देवी की मूह दिखाई के लिए जिस हवेली का निर्माण करवाया उस हवेली का सुख उन्हे ना मिल सका. बेचारी जिस दिन इस हवेली में आई उसी रात ना जाने कौन सा हादसा पेश आया कि शारदा देवी अपनी मानसिक संतुलन खो बैठी. तब से लेकर आज पूरे २० बरस तक वो एक कमरे में बंद हैं. और इसी प्रकार के दौरे आते रहते हैं. उनके इस प्रकार के दौरे के बारे में सभी जानते हैं पर उनके साथ क्या हुआ? उस रात हवेली में कौन सी घटना घटी कि उन्हे पागल हो जाना पड़ा ये कोई नही जानता. ये एक रहस्य बना हुआ है.

गोरप्पा हान्फता हुआ हवेली में दाखिल हुआ और सीधा मालकिन के कमरे की तरफ बढ़ गया. मालकिन के कमरे के दरवाज़े तक पहुँच कर वह रुका. वहाँ हवेली के दूसरे नौकर भी खड़े भय से काँप रहे थे. उनमे से किसी में भी इतनी हिम्मत नही थी कि वो अंदर जाकर देखे कि क्या हो रहा है. गोरप्पा कुछ देर खड़ा रहकर अपनी उखड़ चली सांसो को काबू करता रहा फिर धड़कते दिल से अंदर झाँका. अंदर का दृश्य देखकर उसकी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी. मालकिन किसी हिंसक शेरनी की भाँति लाल लाल आँखों से ठाकुर साहब को घुरे जा रही थी. ठाकुर साहब एक और खड़े थर थर काँप रहे थे. मालकिन दाएँ बाएँ नज़र दौड़ाती और जो भी वस्तु उनके हाथ लगती उठाकर ठाकुर साहब पर फेंक मारती.

" शारदा .... होश में आओ शारदा ." मालिक भय से काँपते हुए धीरे से मालकिन की ओर बढ़े . " हमे पहचानो शारदा ... हम तुम्हारे पति रामप्रताप सिंह हैं ."

" झूठ ....." शारदा देवी चीखी -" तू खूनी है ..... अगर तू मेरे पास आया तो मैं तेरी जान ले लूँगी . मैं जानती हूँ तू मेरी बेटी को मारना चाहता है पर उससे पहले मैं तुम्हे मार डालूंगी ." ये बोलकर वो फिर से कुछ ढूँढने लगी ... जिससे कि वो ठाकुर साहब को फेंक कर मार सके . जब कुछ नही मिला तो वो डरते हुए पिछे हटी . उसके हाथो में कपड़े की बनाई हुई गुड़िया थी जिसे वो अपनी बेटी समझकर छाती से चिपका रखी थी . ठाकुर साहब को अपनी और बढ़ते देखकर उसकी आँखों में भय नाच उठा . शारदा गुड़िया को अपनी साडी के आँचल में छिपाने लगी . और फिर किसी वस्तु की तलाश में इधर उधर नज़र दौड़ाने लगी . अचानक उसकी आँखें चमक उठी , उसे पानी का एक गिलास ज़मीन पर गिरा पड़ा दिखाई दिया . वह फुर्ती से गिलास उठाई और बिजली की गति से ठाकुर साहब को दे मारा . शारदा देवी ने इतनी फुर्ती से गिलास फेंका था कि ठाकुर साहब अपना बचाव ना कर सके . गिलास उनके माथे से आ टकराया . वो चीखते हुए पिछे हटे . उनके माथे से खून की धार बह निकली . दरवाज़े के बाहर खड़ा

गोरप्पा लपक कर उन तक पहुँचा और ठाकुर साहब को खींच कर बाहर ले आया .
दूसरे नौकरों ने जल्दी से अपनी मालकिन के कमरे का दरवाज़ा बाहर से बंद कर दिया .

गोरप्पा ठाकुर साहब को हॉल में ले आया और उनके माथे से बहते खून को साफ करने लगा. दूसरे नौकर भी दवाई और पट्टियाँ लेकर ठाकुर साहब के पास खड़े हो गये. तभी दरवाज़े से मुनीम जी दाखिल हुए. वो सीधे ठाकुर साहब के पास आकर बैठ गये. ठाकुर साहब की दशा देखी तो उनके होंठो से कराह निकल गयी.

" आप मालकिन के कमरे में गये ही क्यों थे सरकार ?" मुनीम जी उनके माथे पर लगे घाव को देखते हुए बोले .

" शारदा को देखे एक महीना हो गया था मुनीम जी . बड़ी इच्छा हो रही थी उसकी सूरत देखने की ... मुझसे रहा नही गया ." ठाकुर साहब दर्द से छटपटा कर बोले . उनका दर्द माथे पर लगी चोट की वजह से नही था . उनका दर्द उनके दिल में लगे उस चोट से था जिसे उन्होने खुद लगाया था . वो अपनी बर्बादी के खुद ही ज़िम्मेदार थे . आज उनकी पत्नी की जो हालत थी उसके ज़िम्मेदार वे खुद थे . ये बात ठाकुर साहब के अतिरिक्त मुनीम जी भी जानते थे . और वो ये भी जानते थे कि ठाकुर साहब अपनी पत्नी शारदा देवी से कितनी मोहब्बत करते हैं . इसलिए ठाकुर साहब के दुख का उन्हे जितना एहसास था शायद किसी और को न था . मुनीम जी ठाकुर साहब की बातो से चुप हो गये . उनके पास कहने के लिए शब्द ही नही थे , बस सहानुभूति भरी नज़रों से उन्हे देखते रहे .

" मुनीम जी ... आपने बंबई के किसी काबिल डॉक्टर के बारे में बताया था उसका क्या हुआ ? वो कब तक आएगा ?" उन्होने अपने घाव की परवाह ना करते हुए मुनीम जी से पूछा .

" आज ही उसका संदेश आया था . वो थोड़े दिनो में आ जाएगा ." मुनीम जी ने उन्हे आश्वासन दिया .

" पता नही इस डॉक्टर से भी कुछ हो पाएगा या नही . जो भी आता है सब पैसे खाने के लिए आते हैं . आजकल डॉक्टरी पेशे में भी ईमानदारी नही रही ." ठाकुर साहब मायूसी में बोले .

" इसके तो काफ़ी चर्चे सुने हैं मैने . लोग कहते हैं इसने बहुत कम उमर में बहुत ज्ञान हासिल किया है . अनेको जटिल केस सुलझाए है . मालकिन जैसी कई मरीजों को

ठीक कर चुका है . मेरा दिल कहता है मालिक , अबकी मालकिन अच्छी हो जाएँगी .
आप उपरवाले पर भरोसा रखें ."

मुनीम जी की बातों से ठाकुर साहब ने एक लंबी साँस छोड़ी फिर बोले - "अब तो किसी चीज़ पर भरोसा नही रहा मुनीम जी. अब तो ऐसा लगने लगा है हमारी शारदा कभी ठीक नही होगी. हम जीवन भर ऐसे ही तड़पते रहेंगे. अब तो जीने की भी आस नही रही....पता नही मेरे मरने के बाद शारदा का क्या होगा?"

" विश्वास से बड़ी कोई चीज़ नही मालिक . आप विश्वास रखें मालकिन एक दिन ज़रूर ठीक होंगी . और मरने की बात तो सोचिए ही नही .... आप यह क्यों भूल जाते हैं आपकी एक बेटी भी है ."

ठाकुर साहब ने मुनीम जी की तरफ देखा. मुनीम जी की बातों ने जैसे मरहम का काम किया हो. बेटी की याद आते ही मुरझाया चेहरा खिल सा गया, वो मुनीम जी से बोले - "कैसी है हमारी डिंपल मुनीम जी. मैं अभागा तो अपने पिता के कर्तव्य को भी ठीक से नही निभा पाया. वो कब आ रही है?"

" डिंपल बिटिया परसो आ रही है . परसो शाम तक तो बिटिया आपके सामने होंगी ." मुनीम जी मुस्कुराए .

एक लंबे अरसे तक ठाकुर साहब ने डिंपल का चेहरा नही देखा था. वो जब ६ साल की थी तभी उन्होने अपनी जान से प्यारी बेटी को बोर्डिंग भेज दिया था. यहाँ रहने से मा की बीमारी का प्रभाव उसपर पड़ सकता था. आज जब डिंपल के आने की खबर मुनीम जी ने दी तो उनका मन बेटी को देखने की चाह में व्यग्र हो उठा. पर एक ओर जहाँ उन्हे बेटी से मिलने की खुशी थी तो दूसरी और उन्हे इस बात की चिंता भी हो रही थी कि जब डिंपल अपनी मा से मिलेगी तो उसके दिल पर क्या बीतेगी. "अब आप घर जाइए मुनीम जी. रात बहुत हो चुकी है." ठाकुर साहब अब हल्का महसूस कर रहे थे. उन्होने मुनीम जी को व्यर्थ में बिठाए रखना उचित नही समझा.

" जैसी आपकी आज्ञा सरकार ." मुनीम जी बोले और हाथ जोड़कर उठ खड़े हुए . उनका घर भी हवेली के बाई ओर थोड़ा हटके था . कहने को वो घर था पर किसी छोटी हवेली से कम नही था . ये भी ठाकुर साहब की मेहरबानियों का नतीजा था . मुनीम

जी उनके बहुत पुराने आदमी थे . और उनका सारा काम वही देखते थे . ठाकुर साहब तो आँख मूंद कर उनपर भरोसा करते थे .

मुनीम जी के जाने के बाद ठाकुर साहब उठे और अपने कमरे की तरफ बढ़ गये. नींद तो उनकी आँखों से कोसो दूर थी. रात जागते हुए गुजरने वाली थी. ये उनके लिए कोई नयी बात नही थी. उनकी ज़्यादातर रातें जागते ही गुजरती थी. उन्होने सिगार सुलगाई और खुद को आराम कुर्सी पर गिराया. फिर हल्के हल्के सिगार का कश लेने लगे. सिगार का कश भरते हुए ठाकुर सहाब अतीत की गहराइयों में उतरते चले गये. उनका अतीत ही उनके मन बहलाव का साधन था. वे अक्सर तन्हाइयों में अपने अतीत की सैर कर लिया करते थे.

२

किशनगढ़ के रेलवे स्टेशन पर डिंपल पिछले २० मिनिट से खड़ी थी . उसका गुस्से से बुरा हाल था . मुनीम जी ने ड्राइवर को डिंपल को लेने भेजा था पर उसका कोई पता नही था . डिंपल गुस्से से भरी प्लॅटफॉर्म पर चहल कदमी कर रही थी .

इस वक़्त डिंपल पिंक कलर की फ्रॉक पहने हुए थी. उसकी आँखों में धूप का चश्मा चढ़ा हुआ था और सर पर सन हॅट्स था. फ्रॉक इतनी छोटी थी कि आधी जांघे नुमाया हो रही थी. प्लॅटफॉर्म पर आते जाते लोग ललचाई नज़रों से उसकी खूबसूरत जाँघो और उभरी हुई छाती को घूरते जा रहे थे. अचानक ही किसी बाइक के एक्सीलेटर की तेज आवाज़ उसके कानो से टकराई. आवाज़ इतनी तेज थी कि डिंपल का गुस्सा सातवे आसमान पर पहुँच गया. डिंपल की दृष्टि घूमी. सामने ही एक खूबसूरत नौजवान अपनी बाइक पर बैठा बाइक के कान मरोड़ने में व्यस्त था. वो जब तक एक्सीलेटर लेता बाइक स्टार्ट रहती एक्सीलेटर छोड़ते ही बाइक भूय भूय करके बंद हो जाती. वो फिर से किक मारता...एक्सीलेटर लेता और बाइक स्टार्ट करने में लग जाता. वह पसीने से तर बतर हो चुका था. डिंपल ५ मिनिट तक उसकी भानी भानी सुनती रही. अंत में उसका सब्र जवाब दे गया. वा गुस्से से उसकी ओर देखकर बोली - "ए मिस्टर, अपनी इस खटारा को बंद करो या कहीं दूर ले जाकर स्टार्ट करो. इसकी बेसुरी आवाज़ से मेरे कान के पर्दे फट रहे हैं."

वह युवक बाइक ना स्टार्ट होने से वैसे ही परेशान था उसपर डिंपल ऐसी झिड़की, उसकी बाइक का ऐसा अपमान...वह सह ना सका. गुस्से में पलटा पर जैसे ही उसकी नज़र डिंपल पर पड़ी वह चौंक पड़ा. अपने सामने एक खूबसूरत हसीना को देखकर उसका गुस्सा क्षण भर के लिए गायब हुआ. फिर बोला - "आप मेरी बाइक को खटारा कह रही हैं? आपको अंदाज़ा नही है मैं इस बाइक पर बैठ कितनी रेस जीत चुका हूँ."

" रेस ...? और वो भी इस बाइक से ? ये चलती भी है , मुझे तो इसके स्टार्ट होने पर भी संदेह हो रहा है ." वह व्यंग से मुस्कुराइ .

युवक को तेज गुस्सा आया पर मन मसोस कर रह गया. उसने बाइक को अज़ीब नज़रों से घूरा फिर एक ज़ोर दार किक मारा. इस बार भी बाइक स्टार्ट नही हुई. वह बार बार प्रयास करता रहा और एक्सीलेटर की आवाज़ से डिंपल को परेशान करता रहा. कुछ ही देर में डिंपल का ड्राइवर जीप लेकर पहुँचा. ड्राइवर जीप से उतर कर डिंपल के पास आया.

" इतनी देर क्यों हुई आने मे ं ?" डिंपल ड्राइवर को देखते ही बरस ी .

" ग़लती हो गयी छोटी मालकिन ... वो क्या है क ि ..... असल .... मे ं ..." ड्राइवर हकलाय ा .

" शट अप ." डिंपल गुस्से में चीख ी .

ड्राइवर सहम गया. उसकी नज़रें ज़मीन चाटने लगी.

" सामान उठाने के लिए कोई दूसरा आएग ा ? " डिंपल उसे खड़ा देख फिर से भड़क ी . ड्राइवर तेज़ी से हरकत में आया और सामान उठाकर जीप में रखने लग ा .

डिंपल की नज़रें उस बाइक वाले युवक की ओर घूमी. वो इधर ही देख रहा था. उसे अपनी ओर देखते पाकर डिंपल एक बार फिर व्यंग से मुस्कुराइ और अपनी जीप की ओर बढ़ गयी. अचानक ही वो हुआ जिसकी कल्पना डिंपल ने नही की थी. उसकी बाइक स्टार्ट हो गयी. डिंपल ने उस युवक को देखा. अब मुस्कुराने की बारी उस युवक की थी. वह बाइक पर बैठा और डिंपल को देखते हुए एक अदा से सर को झटका दिया और सीटी बजाता हुआ बाइक को भगाता चला गया. डिंपल जल-भुन कर रह गयी.

ड्राइवर सामान रख चुका था. डिंपल लपक कर स्टियरिंग वाली सीट पर आई. चाभी को घुमाया गियर बदली और फुल स्पीड से जीप को छोड़ दिया.

" छोटी मालकिन ....!" ड्राइवर चीखते हुए जीप के पिछे दौड़ ा .

डिंपल तेज़ी से पहाड़ी रास्तों पर जीप भगाती चली जा रही थी. कुछ ही दूर आगे उसे वही बाइक वाला युवक दिखाई दिया. उसने जीप की रफ़्तार बढ़ाई और कुछ ही पल में उसके बराबर पहुँच गयी. फिर उसकी ओर देखती हुई बोली - "हेलो मिस्टर खटारा"

युवक ने डिंपल की ओर देखा, अभी वह कुछ कहने की सोच ही रहा था कि डिंपल एक झटके में फ़र्राटे की गति से जीप को ले भागी. युवक गुस्से में डिंपल को देखता ही रह गया. उसकी आँखें सुलग उठी उसने एक्सीलेटर पर हाथ जमाया और बाइक को फुल स्पीड पर छोड़ दिया. अभी वह कुछ ही दूर चला था कि सड़क पर कुछ लड़किया पार करती दिखाई

दी. उसने जल्दी से ब्रेक मारा. उसकी रफ़्तार बहुत अधिक थी , बाइक फिसली और सीधे एक पत्थर से जा टकराया. युवक उच्छल कर दूर जा गिरा. बाइक से बँधा उसका सूटकेस खुल गया और सारे कपड़े सड़क पर इधर उधर बिखर गये. वह लंगड़ाता हुआ उठा. तभी उसके कानो से किसी लड़की के हँसने की आवाज़ टकराई. उसने पलट कर देखा. एक ग्रामीण बाला सलवार कुर्ता पहने खिलखिलाकर हंस रही थी. उसके पिछे उसकी सहेलियाँ भी खड़ी खड़ी मुस्कुरा रही थी. उन सभी लड़कियों के हाथ में पुस्तकें थी जिस से युवक को समझते देर नही लगी कि ये लड़कियाँ पास के गांव की रहने वाली हैं और इस वक़्त कॉलेज से लौट रही हैं.

" ये देखो , काठ का उल्लू " आगे वाली लड़की हँसते हुए सहेलियों से बोली .

युवक की नज़र उसपर ठहर गयी. वो बला की खूबसूरत थी. गर्मी की वजह से उसके चेहरे पर पसीना छलक आया था. पसीने से तर उसका गोरा मुखड़ा सुर्य की रोशनी में ऐसे चमक रहा था जैसे पूर्णिमा की रात में चाँद. उसका दुपट्टा उसके गले से लिपटकर पिछे पीठ की ओर झूल रहा था. सामने उसकी भरी हुई स्तन किसी पर्वत शिखर की तरह तनी हुई उसे घूरा रही थी. पेट समतल था, कमर पतली थी लेकिन कूल्हे चौड़े और भारी गोलाकार लिए हुए थे. उसका नशीला गठिला बदन कपड़ों में छुपाये नही छुप रहा था. युवक कुछ पल के लिए उसकी सुंदरता में खो सा गया. वह ये भी भूल गया कि इस लड़की ने कुछ देर पहले उसे काठ का उल्ला कहा था. उसे ये भी ध्यान नही था कि उसकी बाइक सड़क पर गिरी पड़ी है और उसके कपड़े हवाओं के ज़ोर से सड़क पर इधर उधर घिसट रहे थे.

लेकिन लड़कियों को उसकी दशा का अनुमान था. उसकी हालत पर एक बार फिर लड़कियाँ खिलखिला कर हंस पड़ी. उसकी चेतना लौटी. उसने अपनी भौंहे चढ़ाई और उस लड़की को घूरा जिसने उसे काठ का उल्लू कहा था. "क्या कहा तुमने? ज़रा फिर से कहना."

" काठ का उल्लू ." वह लड़की पुनः बोली और फिर हंस पड़ी .

" मैं तुम्हे काठ का उल्लू नज़र आता हूँ " युवक ने बिफर्कर बोला .

" और नही तो क्या .... अपनी सूरत देखो पक्के काठ के उल्लू लगते हो ." उसके साथ उसकी सहेलियाँ भी खिलखिलाकर हँसने लगी .

युवक अपमान से भर उठा, उसने कुछ कहने के लिए मूह खोला पर होठ चबाकर रह गया. उसे अपनी दशा का ज्ञान हुआ, वह उन लड़कियों से उलझकर अपनी और फ़ज़ीहत नही करवाना चाह रहा था. वह मुड़ा और अपने कपड़े समेटने लगा. लड़कियाँ हँसती हुई आगे बढ़ गयी.

३

डिंपल जैसे ही हवेली पहुँची ठाकुर साहब को बाहर ही इंतेज़ार करते पाया. उनके साथ में मुनीम जी भी थे. वह जीप से उतरी तो मुनीम जी लपक कर डिंपल तक पहुँचे "आओ बेटा. मालिक कब से तुम्हारा इंतेज़ार कर रहे हैं."

डिंपल ने ठाकुर साहब को हाथ जोड़कर प्रणाम किया और फिर ठाकुर साहब से जाकर लिपट गयी. ठाकुर साहब ने उसे अपनी छाती से चिपका लिया. बरसों से सुलगते उनके दिल को आज ठंडक मिली थी. बेटी को छाती से लगाकर वे इस वक़्त अपने सारे दुखों को भुला बैठे थे. वह डिंपल का माथा चूमते हुए बोले - "डिंपल, तुम्हारा सफ़र कैसा रहा? कोई तकलीफ़ तो नही हुई यहाँ तक आने में?"

" ओह्ह पापा , मैं क्या बच्ची हूँ जो कोई भी मुझे तकलीफ़ दे देगा ?" डिंपल नथुने फुलाकर बोली .

उसकी बात से ठाकुर साहब और मुनीम जी की ठहाके छूट पड़े.

" डिंपल बेटा , तुम्हारे साथ ड्राइवर नही आया वो कहाँ रह गया ?" मुनीम जी डिंपल को अकेला देखकर बोले .

" मैं उसे वही छोड़ आई . उसने मुझे पूरे २० मिनिट वेट कराया . अब उसे कुछ तो पनिशमेंट मिलना चाहिए कि नही ?" डिंपल की बात से मुनीम जी खिलखिलाकर हंस पड़े वहीं ठाकुर साहब बेटी की शरारत पर झेंप से गये .

ठाकुर साहब डिंपल को लेकर हवेली के अंदर दाखिल हुए. घर के सभी नौकर उसे देखने के लिए उसके आदेश पालन के लिए उसके दाएँ बाएँ आकर खड़े हो गये.

ठाकुर साहब डिंपल के साथ हॉल में बैठे. मुनीम जी भी पास ही बैठ गये.

" तुम्हे आज अपने पास पाकर हमे बहुत खुशी हो रही है बेटी ." ठाकुर साहब भावुकता में बोले .

" मुझे भी आपसे मिलने की बड़ी इच्छा होती थी पापा . अब मैं आपको छोड़ कर कहीं नही जाऊंगी ." डिंपल उनके कंधे पर सर रखते हुए बोली .

" हां बेटी , अब तुम्हे कहीं जाने की ज़रूरत नही है . अब तुम हमेशा हमारे साथ रहोगी ."

ठाकुर साहब की बात अभी पूरी ही हुई थी कि हवेली के दरवाज़े से किसी अजनबी का प्रवेश हुआ. उसके हाथ में एक सूटकेस था. बाल बिखरे हुए थे और चेहरे पर लंबे सफ़र की थकान झलक रही थी.

डिंपल की नज़र जैसे ही उस युवक पर पड़ी वह चौंक उठी. ये वही युवक था जिससे वो रेलवे स्टेशन पर उलझी थी. मुनीम जी उसे देखते ही उठ खड़े हुए. युवक ने भीतर आते ही हाथ जोड़कर नमस्ते किया.

" आइए आइए डॉक्टर बाबू . आप ही का इंतेज़ार हो रहा था ." मुनीम जी उस युवक से हाथ मिलाते हुए बोले . फिर ठाकुर साहब की तरफ पलटे - " मालिक , ये अजित बाबू है . मैने इन्ही के बारे में आपको बताया था . बहुत शफ़ा है इनके हाथो में ."

ठाकुर साहब ने जैसे ही जाना की ये डॉक्टर हैं अपने स्थान से उठ खड़े हुए. फिर उससे हाथ मिलाते हुए बोले - "आपको कोई तकलीफ़ तो नही हुई यहाँ पहुँचने में?"

" कुछ खास नही ठाकुर साहब ....." वह डिंपल पर सरसरी निगाह डालता हुआ बोला .

" आप थक गये होंगे . जाकर पहले आराम कीजिए . हम शाम में मिलेंगे ." ठाकुर साहब अजित से बोले .

" जी शुक्रिया ...!" अजित बोला .

" आइए मैं आपको आपके रूम तक लिए चलता हूँ ." मुनीम जी अजित से बोले .

अजित ठाकुर साहब को फिर से नमस्ते कहकर मुनीम जी के साथ अपने रूम की ओर बढ़ गया. उसका कमरा उपर के फ्लोर पर था. सीढ़िया चढ़ते ही लेफ्ट की ओर एक गॅलरी थी. उस ओर चार कमरे बने हुए थे. अजित के ठहरने के लिए पहला वाला रूम दिया गया था.

अजित मुनीम जी के साथ अपने रूम में दाखिल हुआ. रूम की सजावट और काँच की नक्काशी देखकर अजित दंग रह गया. यूँ तो उसने जब से हवेली के भीतर कदम रखा था खुद को स्वर्गलोक में पहुँचा महसूस कर रहा था. हवेली की सुंदरता ने उसका मन मोह लिया था.

" आपको कभी भी किसी चीज़ की ज़रूरत हो बेझिझक कह दीजिएगा ." अचानक मुनीम जी की बातों से वह चौंका . उसने सहमति में सर हिलाया . मुनीम जी कुछ और औपचारिक बाते करने के बाद वहाँ से निकले .

हॉल में अभी भी डिंपल अपने पिता ठाकुर रामप्रताप सिंह के साथ बैठी बाते कर रही थी. नौकर दाएँ बाएँ खड़े चाव से डिंपल की बाते सुन रहे थे. डिंपल की बातों से ठाकुर साहब के होठों से बार बार ठहाके छूट रहे थे.

" बस .... बस .... बस डिंपल बेटा , बाकी के किस्से बाद में सुनाना . अभी जाकर आराम करो . तुम लंबे सफ़र से आई हो थक गयी होगी ." ठाकुर साहब डिंपल से बोले .

" ओके पापा , लेकिन किसी को बस्ती में भेजकर कांचन को बुलावा भेज दीजिए . उससे मिलने की बहुत इच्छा हो रही है ." डिंपल बोली और अपने कमरे की तरफ बढ़ गयी . उसका कमरा सीढ़िया चढ़कर दाईं ओर की गॅलरी में था . वह रूम में पहुँची . डिंपल वास्तव में बहुत थकान महसूस कर रही थी उसने एक बाथ लेना ज़रूरी समझा . डिंपल बाथरूम में घुस गयी . उसने अपने कपड़े उतारे और खुद को शावर के नीचे छोड़ दिया . शा वर से गिरता ठंडा पानी जब उसके बदन से टकराया तो उसकी सारी थकान दूर हो गयी . वो काफ़ी देर तक खुद को रगड़ रगड़ कर शा वर का आनंद लेती रही . फिर वह बाहर निकली और कपड़े पहन कर कांचन का इंतेज़ार करने लगी . कांचन उसकी बचपन की सहेली थी . डिंपल का कांचन के सिवा कोई दोस्त नही थी . वैसे तो डिंपल बचपन से ही बहुत घमंडी और ज़िद्दी थी . पर झोपडे में रहने वाली कांचन उसे जान से प्यारी थी . दोनो के स्वभाव में ज़मीन आसमान का अंतर था . लेकिन दोनो में एक चीज़ की समानता थी . दोनो ही मा की ममता से वंचित थी शायद यही इनकी गहरी दोस्ती का राज़ था . कांचन को हवेली में किसी भी क्षण आने जाने की आज़ादी थी . कोई उसे टोक ले तो डिंपल प्युरे हवेली को सर पर उठा लेती थी . ठाकुर साहब भी भूले से कभी कांचन का दिल नही दुखाते थे . इतने बरस कांचन से दूर रहने के बाद भी डिंपल उसे भूली नही थी . डिंपल शहर से कांचन के लिए ढेरो कपड़े लाई थी , डिंपल उन कपड़ों के पॅकेट को निकाल कर कांचन का इंतेज़ार करने लगी .

इधर अजित पिछले ३० मिनिट से अपने रूम में बैठा उस नौकर की प्रतीक्षा कर रहा था जिसे उसने अपने कपड़े इस्त्री करने के लिए दिए थे. सड़क के हादसे में उसके कपड़ों की इस्त्री खराब हो गयी थी. अभी तक वो उन्ही कपड़ों में था जो हवेली में घुसते वक़्त पहन रखा था. वो कुर्सी पर बैठा उल्लुओ की तरह दरवाज़े की तरफ टकटकी लगाए घुरे जा रहा था.

" ठक्क .... ठक्क ...!" अचानक दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी . डिंपल उठी और दरवाज़े तक पहुँची . दरवाज़ा खुलते ही सामने एक खूबसूरत सी लड़की सलवार कमीज़ पहने खड़ी खड़ी मुस्कुरा रही थी . उसे देखते ही डिंपल के आँखों में चमक उभरी . वो कांचन थी . डिंपल ने उसका हाथ पकड़ा और रूम के भीतर खींच लिया . फिर कस्के उससे लिपट गयी . दोनो का आलिंगन इतना गहरा था कि दोनो की स्तन आपस में दब गयी . डिंपल इस वक़्त ब्लू जीन्स और ग्रीन टीशर्ट में थी . कांचन ने उसे देखा तो देखती ही रह गयी . - " डिंपल तुम कितनी बदल गयी हो . इन कपड़ों में तो तुम बहुत खूबसूरत लग रही हो ."

" मेरी जान ... तू चिंता क्यों करती है . मैं तुम्हारे लिए भी ऐसे ही क ई ड्रेस लाई हूँ . उन कपड़ों को पहनते ही तुम भी मेरी तरह हॉट लगने लगोगी ." डिंपल उसे पलंग पर बिठाती हुई बोली .

" मैं और ऐसे कपड़े ? ना बाबा ना ....! मैं ऐसे कपड़े नही पहन सकती ." कांचन घबराकर बोली - " इन कपड़ों को पहन कर तो मैं पूरे गांव में बदनाम हो जाऊंगी . और हो सके तो तू भी जब तक यहाँ है ऐसे कपड़े पहनना छोड़ दे ."

" कोई कुछ नही बोलेगा , तू पहनकर तो देख . और तू मेरी चिंता छोड़ ... मैं तो अब हमेशा यहीं रहूंगी और ऐसे ही कपड़े पहनुँगी ." डिंपल चहकति हुई बोली .

" ना तो तू सदा यहाँ रह पाएगी और ना ही हमेशा ऐसे कपड़े पहन सकेगी ." कांचन मुस्कुरा कर बोली - " मेरी बन्नो आख़िर तू एक लड़की है , एक दिन तुम्हे व्याह करके अपने साजन के घर जाना ही होगा . और तब तुम्हे उसके पसंद के कपड़े पहनने पड़ेंगे ."

कांचन की बात सुनकर अचानक ही डिंपल के आगे अजित का चेहरा घूम गया. वह बोली - "तुम्हे पता है आज रास्ते में आते समय एक दिलचस्प हादसा हो गया.?"

" हादसा ? कैसा हादसा ?" कांचन के मूह से घबराहट भरे स्वर निकले .

" स्टेशन पर एक बेवकूफ़ मिल गया . उसके पास एक खटारा बाइक थी . उसने मुझे पूरे २० मिनिट अपनी खटारा बाइक की आवाज़ से परेशान किया ." वह मुस्कुराइ .

" फिर ...?" कांचन उत्सुकता से बोली .

" फिर क्या ...! मैने भी उसे उसकी औकात बता दी . और अब वो बेवकूफ़ हमारे घर का मेहमान बना बैठा है . पापा कहते हैं वो डॉक्टर है . लेकिन मुझे तो वो पहले दर्जे का अनाड़ी लगता है ." डिंपल मूह टेढ़ा करके बोली .

" अभी कहाँ है ?." कांचन ने पूछा .

" होगा अपने कमरे में . चलो उसे मज़ा चखाते हैं . वो अपने आप को बड़ा होशियार समझता है ." डिंपल उसका हाथ पकड़ कर खींचती हुई बोली .

" नही .... नही ... डिंपल , ठाकुर चाचा बुरा मान जाएँगे ." कांचन अपना हाथ छुड़ाती हुई बोली . लेकिन डिंपल उसे खींचती हुई दरवाज़े से बाहर ले आई .

गॅलरी में आते ही उन्हे घर का नौकर छोटू सीढ़ियाँ चढ़ता दिखाई दिया. उसके हाथ में अजित के वो कपड़े थे जो उसने इस्त्री करने को दिए थे. वह सीढ़ियाँ चढ़कर बाईं और मूड गया. उसके कदम अजित के कमरे की तरफ थे.

" आए सुनो ...!" डिंपल ने उसे पुकारा .

नौकर रुका और पलटकर डिंपल के करीब आया. "जी छोटी मालकिन?"

" ये कपड़े किसके हैं ?"

" डॉक्टर बाबू के .... उन्होने इस्त्री करने को दिया था . अब उन्हे देने जा रहा हूँ ." नौकर तोते की तरह एक ही साँस में सब बोल गया .

" इन कपड़ों को लेकर अंदर आ ." डिंपल ने उसे उंगली से इशारा किया .

नौकर ने ना समझने वाले अंदाज़ में डिंपल को देखा फिर अनमने भाव से अंदर दाखिल हुआ.

" नाम क्या है तुम्हारा ?" डिंपल ने नौकर से पुछा .

" छोटू ...!" नौकर ने अपने दाँत दिखाए .

" मूह बंद कर ...." डिंपल ने डांता -" ये कपड़े यहाँ रख और जाकर इस्त्री ले आ ."

" लेकिन इस्त्री तो हो चुकी है छोटी मालकिन ?" नौकर ने अपना सर खुज़ाया .

" मैं जानती हूँ . तुम्हे एक बार फिर से इस्त्री करनी होगी . हमारे स्टाइल में ." डिंपल के होंठो में रहस्यमई मुस्कुराहट नाच उठी - " तुम जाकर इस्त्री ले आओ . और अबकी कोई सवाल पुछा ना तो पापा से बोलकर तुम्हारी छुट्टी करवा दूँगी . समझे ?"

" जी ... छोटी मालिकन ." नौकर सहमा - " सब समझ गया . मैं अभी इस्त्री लाता हूँ ." वा बोला और तेज़ी से रूम के बाहर निकल गया .

" तू करना क्या चाहती है ?" कांचन हैरान होकर बोली .

" बस तू देखती जा ." डिंपल के होंठो में मुस्कुराहट थी और आँखों में शरारत के भाव , डिंपल अपनी योजना कांचन को बताने लगी . उसकी बातें सुनकर कांचन की आँखो में आश्चर्य फैल गया .

तभी छोटू दरवाज़े से अंदर आता दिखाई दिया. उसने इस्त्री डिंपल के सामने रखी. डिंपल ने उसे एलेकट्रिक्क पॉइंट से जोड़ा. कुछ देर में इस्त्री भट्टी की तरह गरम हो गयी. उसने एक कपड़ा उठाया उसे खोला और फिर जलती हुई इस्त्री उसके उपर रख दी. नौकर ने कपड़ों की ऐसी दुर्गति देखी तो चीखा. "छोटी मालकिन, मैं आपके पावं पड़ता हूँ. मेरी नौकरी पर रहम कीजिए. इन कपड़ों को देखकर तो डॉक्टर बाबू मालिक से मेरी शिकायत कर देंगे. और फिर मेरी....?"

" तू चुप बैठ ." डिंपल ने आँखें दिखाई . और एक एक करके सभी कपड़ों को गरम इस्त्री से जलाती चली गयी . फिर उसी तरह तह करके रखने लगी . सारे कपड़े वापस तह करने के बाद छोटू से बोली - " अब इसे ले जाओ और उस घोचू के कमरे में रख आओ ."

" हरगिज़ नही ." छोटू चीखा . -" आप चाहें तो मुझे फाँसी पर लटका दीजिए . या मेरा सर कटवा दीजिए . मैं ये कपड़े लेकर अजित बाबू के कमरे में नही जाऊंगा ." वर बोला और पलक झपकते ही रूम से गायब हो गया .

डिंपल उसे आवाज़ देती रह गयी. छोटू के जाने के बाद डिंपल ने कांचन की तरफ देखा और मुस्कुराइ. उसकी मुस्कुराहट में शरारत थी.

" तू मेरी ओर इस तरह से क्यों देख रही है ?" कांचन सहमति हुई बोली .

" वो इसलिए मेरी प्यारी सहेली की अब ये कपड़े उस अकड़ू के कमरे में तुम लेकर जाओगी ."

" क ..... क्या ???" कांचन घबराई - " नही .... नही डिंपल , मैं ये काम नही करूँगी . किसी भी कीमत पर नही . तुम्हे उससे बदला लेना है तुम लो . मैं इस काम में तुम्हारी कोई मदद नही करूँगी ."

" नही करेगी ?" डिंपल ने नथुने फुलाए .

" नही ....!" कांचन उसी विश्वास के साथ पुनः बोली .

" ठीक है तो फिर मैं पंखे से लटककर अभी अपनी जान दे देती हूँ . मैं तुम्हारे लिए सारी दुनियाँ से लड़ सकती हूँ और तुम मेरे लिए एक छोटा सा काम नही कर सकती ." डिंपल मगर्मछि आँसू बहाती हुई बोली - " तुम बदल गयी हो कांचन , अब तुम मेरी वो सहेली नही रही जो मेरी खुशी के लिए दिन रात मेरे साथ रहती थी . मेरे एक इशारे पर कुछ भी कर जाती थी . तूने मेरा दिल दुखाया है कांचन .... अब मैं तुमसे और इस ज़ालिम दुनिया से हमेशा के लिए दूर जा रही हूँ . ज़रा अपना दुपट्टा देना ."

" दुपट्टा ...? दुपट्टा क्या करोगी ?" कांचन ने धीरे से पुछा .

" गले में बाँध कर पंखे से लटकने के लिए . मेरे पास कोई रस्सी नही है ना ."

" क .... क्या ?" कांचन घबराई . उसके पसीने छूट पड़े . वो जानती थी डिंपल बहुत ज़िद्दी है . उसके इनकार करने पर डिंपल अपनी जान तो नही देगी पर उसका दिल

ज़रूर टूट जाएगा . उसके प्रति डिंपल का मन मैला ज़रूर हो जाएगा . वह डिंपल को खोना नही चाहती थी . उसकी समझ में नही आ रहा था कि वो करे तो क्या करे . उसे अपने बचाव का कोई रास्ता नज़र नही आ रहा था . अंत में वो हथियार डालते हुए बोली - " ठीक है डिंपल , तू जो बोलेगी मैं करूँगी . लेकिन फिर कभी अपनी जान देने की बात मत करना ."

" ओह्ह थँक यू कांचन " डिंपल लपक कर कांचन के पास पहुँची . फिर उसे बाहों में जकड़कर उसके गालो को चूमने लगी - " तुम बहुत अच्छी हो , मुझे तुम्हारी दोस्ती पर नाज़ है . अब इस कपड़े को उठाओ और जाकर उस अकड़ू के कमरे में रख दो ."

कांचन अनमने ढंग से आगे बढ़ी, फिर उन कपड़ों को हाथ में उठाकर कमरे से बाहर निकल गयी. उसका दिल जोरों से धड़क रहा था. माथे पर पसीना छलक आया था.

अजित अपने कमरे में पूरी तरह भन्नाया हुआ बैठा था. नौकर को गये लगभग एक घंटा होने को आया था. पर वह अभी तक उसके कपड़े लेकर नही लौटा था. उसने सोचा क्यों ना अब नहा ही लूँ. सुबह से नही नहाने के कारण उसके सर में दर्द होने लगा था. शरीर थकान से चूर था. वह उठा और दरवाज़े की कुण्डी अंदर से खोल दिया. फिर टॉवेल लेकर बाथरूम में घुस गया. उसने अपने कपड़े उतारे और शवर कर नीचे खड़ा हो गया. कुछ देर लगे उसे नहाने में फिर टॉवेल से अपने गीले बदन को पोछने लगा. स्नान करने के बाद वह बहुत हल्का महसूस कर रहा था. अचानक उसे दरवाज़ा खुलने की आवाज़ सुनाई दी. उसे लगा नौकर होगा. इतनी देर से आने की वजह से वह उससे खफा था. उसे डाँट पिलाना ज़रूरी था. वह टॉवेल लपेटकर बाहर निकला. जैसे ही वो बाथरूम से बाहर आया उसने कांचन को देखा. कांचन की पीठ उसकी ओर थी और वह कपड़े रखकर बाहर की ओर जा रही थी.

" सुनो लड़की ...!" अजित की कर्कश आवाज़ उसके कानो से टकराई . उसके बढ़ते कदम रुके . उसकी दिल की धड़कने बढ़ चली . वह खड़ी रही लेकिन पलटी नही . वो अजित को अपना चेहरा नही दिखना चाहती थी .

" इतनी देर क्यों लगाई तुमने ." अजित ने उसे नौकरानी समझकर डांटा .

" जी ... वो .... मैं .... क्या ... वो !" वा हक्लाई . उसके समझ में नही आया कि वह क्या उत्तर दे .

" मेरी तरफ मूह करके साफ साफ बोलो ." अजित चीखा .

कांचन की सिट्टी पिटी गुम हो गयी. बचने का कोई रास्ता नही बचा था. डिंपल की शरारत में वो बलि का बकरा बन गयी थी. उसके पैर काँप उठे. वो पलटी. उसकी नज़र जैसे ही अजित से टकराई वह चौंक पड़ी.

" तुम ....!" जैसे ही अजित की नज़र कांचन के चेहरे से टकराई उसके मूह से बेसाखता निकला .

" जी .... मैं ..!" कांचन भी आश्चर्य से उसे देखती रह गयी . उसने भी नही सोचा था कि उसके साथ ऐसा संयोग हो सकता है .

" तुम वही लड़की हो ना ? जिसने मुझे सड़क पर काठ का उल्लू कहा था ?" अजित कांचन को घूरता हुआ बोला . कांचन को हवेली में देखकर वो बुरी तरह से चौंका था . उसे ये भी ध्यान नही रहा कि वो इस वक़्त किसी लड़की की सामने सिर्फ़ टॉवेल पहने खड़ा है .

कांचन की स्थिति भी बहुत बुरी थी. अपनी ऐसी दुर्गति होते देख उसे रोना आ रहा था. उसने कुछ कहने की बजाए वहाँ से भाग जाने में ही अपनी भलाई समझी. वो पलटी और तेज़ कदमो से भागती हुई कमरे से बाहर चली गयी. अजित खड़ा हक्का बक्का उसे देखता रह गया.

" ये लड़की यहाँ क्या कर रही है ?. इसे तो मैने कुछ लड़कियों के साथ कॉलेज से पढ़ाई करके आते हुए देखा था . तो क्या ये लड़की हवेली में नौकरानी का काम करती है ? लेकिन जो लड़की कॉलेज में पढ़ती हो वो भला किसी के घर नौकरानी का काम क्यों करेगी ?" वो मूर्खों की तरह अपना सर पीटने लगा . कुछ देर बाद उसे अपनी स्थिति का ध्यान हुआ . वो अपने कपड़ों की ओर बढ़ा . उसने पहनने के लिए एक कपड़ा उठाया . पर जैसे ही उसने उसे खोला उसकी खोपड़ी भन्ना गयी . आँखों में खून खौल उठा . उस कपड़े में इस्त्री के साइज़ जितना सुराख हुआ पड़ा था . उसने दूसरा कपड़ा उठाया . उसकी हालत उससे भी बदतर थी . फिर तीसरा कपड़ा उठाया , फिर चौथा , पाँचवाँ , छटा उसके सभी भी कपड़े बीच में से जले हुए थे . अपने कपड़ों की ऐसी दुर्गति देखकर उसका दिमाग़ चकरा गया . गुस्से से उसके नथुने फूल गये . उत्तेजना से उसका चेहरा बिगड़ने पिचकने लगा . आँखें सुलग उठी . वह मुठिया भींच उठा . उसे उस लड़की (कांचन) पर इतना गुस्सा आया कि अगर वो इस वक्त उसके सामने होती तो वो उसका गला दबा देता . लेकिन अफ़सोस वो इस वक़्त यहाँ नही थी . अजित खून का घुट पीकर रह गया . अब उसके सामने एक बड़ी समस्या खड़ी हो गयी थी , वो इस वक़्त पहने तो क्या पहने . उसके पास मात्र एक टॉवेल के कुछ भी पहनने लायक नही रहा था . उसका वो कपड़ा भी जिसे वो पहनकर आया था . बाथरूम में गीले पानी और साबुन के छींटे पड़ गये थे . वह अपना सर पकड़ कर बैठ गया .

४

शाम के ५ बजे थे. हॉल में ठाकुर साहब, डिंपल और मुनीम जी बैठे बाते कर रहे थे. कांचन डिंपल को कल आने का वादा करके अपने घर जा चुकी थी. वे सभी अजित के नीचे आने का इंतेज़ार कर रहे थे. काफ़ी देर तक प्रतीक्षा करने के बाद ठाकुर साहब मुनीम जी से बोले - "मुनीम जी अब तक तो उन्हे नीचे आ जाना चाहिए. आख़िर हमे कब तक इंतेज़ार करना होगा?"

" मैं स्वयं जाकर देखता हूँ मालिक ." मुनीम जी बोले और उठ खड़े हुए . वो सीढ़िया चढ़ते हुए अजित के कमरे की ओर बढ़ गये . थोड़ी देर बाद मुनीम जी ने उपर से किसी नौकर को आवाज़ लगाया . नौकर दौड़ता हुआ उपर पहुँचा . फिर दूसरे ही मिनिट वो भागता हुआ नीचे आया और हवेली से बाहर जाने लगा . ठाकुर साहब ने उसे हवेली के बाहर जाते देखा तो उन्होने टोका - " अरे बबलू कहाँ भागे जा रहे हो ?"

" मालिक , मुनीम के घर जा रहा हूँ . उन्होने अपने घर से कुछ कपड़े मँगवाए हैं ." वो बोला और ठाकुर साहब की इज़ाज़त की प्रतीक्षा करने लगा .

" ठीक है तुम जाओ ." ठाकुर साहब ने नौकर को जाने को बोले . और सोचों में गुम हो गये . उनके समझ में कुछ भी नही आ रहा था . मुनीम जी भी उपर जाकर वही अटक गये थे .

कुछ देर बाद बबलू कुछ कपड़े लेकर हवेली में वापस आया और अजित के कमरे की ओर बढ़ गया. उसके उपर जाने के कुछ देर बाद ही मुनीम जी भी नीचे आ गये. उनके नीचे आते ही ठाकुर साहब बोले - "सब कुशल तो है मुनीम जी? आपने बबलू को अपने घर कपड़े लाने क्यों भेजा?"

" डॉक्टर बाबू के सामने एक समस्या आ खड़ी हुई है मालिक " मुनीम जी अपना माथा सहलाते हुए बोले - " उनके पास पहनने के लिए कपड़े नही हैं ."

" क्या ....? ठाकुर साहब हैरान होते हुए बोले - " पहनने के लिए कपड़े नही हैं . तो क्या महाशय घर से नंगे पुँगे ही आए हैं ?

" जी ... नही ." ये आवाज़ सीढ़ियों की ओर से आई थी . ठाकुर साहब के साथ सबकी नज़रें उस ओर घूमी . अजित सीढ़ियाँ उतरता हुआ दिखाई दिया . उसके बदन पर मुनीम जी के कपड़े थे . उनके कपड़ों में अजित किसी कार्टून की तरह लग रहा था . उसे देखकर एक बार डिंपल के मूह से भी हँसी छूट पड़ी . वहीं ठाकुर साहब अपनी बातों पर झेंप से गये . उन्हे बिल्कुल भी अंदाज़ा नही था कि उनकी बातें अजित के कानो तक जा सकती है .

" माफ़ कीजिएगा डॉक्टर .... असल में हम काफ़ी देर से आपका इंतेज़ार कर रहे थे . आपके नीचे ना आने की वजह से हम परेशान हो रहे थे ." ठाकुर साहब अपनी झेंप मिटाते हुए बोले -" वैसे आपके कपड़ों को क्या हुआ ? मुनीम जी कह रहे थे कि आपके पास कपड़े नही हैं ."

" दर - असल रास्ते में आते वक़्त मेरे साथ एक दुर्घटना घट गयी ." अजित ठाकुर साहब को देखता हुआ बोला -" मुझसे रास्ते में एक जंगली बिल्ली टकरा गयी . उसी के कारण मैं अपना संतुलन खो बैठा और मेरी गाड़ी एक पत्थर से टकरा गयी . मेरा सूटकेस खुलकर सड़क पर बिखर गया और मेरे सारे कपड़े खराब हो गये . यहाँ आने के बाद मैने एक महाशय को कपड़े इस्त्री करने को दिया तो वो साहब कपड़े लेकर गायब हो गये . लगभग एक घंटे बाद कोई नौकरानी मेरे कपड़ों को लेकर आई . जब मैने कपड़े पहनने के लिए उठाया तो देखा मेरे सारे कपड़े जले हुए हैं ." अजित ने अपनी बात पूरी की .

" किसी नौकरानी ने आपके कपड़े जलाए हैं ?" ठाकुर साहब आश्चर्य से बोले - " लेकिन हवेली में तो एक ही नौकरानी है . और वो बहुत सालो से हमारे यहाँ काम कर रही है . वो ऐसा नही कर सकती . खैर जो भी हो हम पता लगाएँगे . फिलहाल आपको जो कष्ट हुआ उसके लिए हम माफी चाहते हैं ." ठाकुर साहब नम्र स्वर में बोले .

" आप मुझसे बड़े हैं ठाकुर साहब ," अजित ठाकुर साहब से बोला फिर अपनी दृष्टि डिंपल पर डाली - " आपको मुझसे माफी माँगने की ज़रूरत नही . जिसने मेरे साथ ये मज़ाक किया है उससे मैं खुद निपट लूँगा ."

उसकी बातों से डिंपल का चेहरा सख़्त हो उठा. वो लाल लाल आँखों से अजित को घुरने लगी. लेकिन अजित उसकी परवाह किए बिना ठाकुर साहब से मुखातिब हुआ - "मैं आपकी पत्नी शारदा देवी को देखना चाहता हूँ. मुझे उनका कमरा दिखाइए."

" आइए ." ठाकुर साहब बोल े . और अजित को लेकर शारदा देव ी के कमरे की ओर बढ़ गय े . उनके पिछे डिंपल और मुनीम जी भी थ े .

ठाकुर साहब शारदा देवी के कमरे के बाहर रुके. दरवाज़े पर लॉक लगा हुआ था. उनका कमरा हमेशा बंद ही रहता था. उनका कमरा दिन में एक बार उन्हे खाना पहुँचाने हेतु खोला जाता था. और ये काम घर की एकमात्र नौकरानी लता के ज़िम्मे था. उसके अतिरिक्त किसी को भी इस कमरे में आने की इज़ाज़त नही थी. वही उनके लिए खाना और कपड़ा पहुँचाया करती थी. हवेली में वही एक ऐसी सदस्य थी जिसे देखकर शारदा देवी को दौरे नही पड़ते थे. वो पागलो जैसी हरकत नही करती थी. वो बिल्कुल सामान्य रहती थी. लता ना केवल उन्हे खाना खिलाती थी बल्कि उन्हे बहला फुसलाकर नहलाती भी थी उसके कपड़े भी बदलती थी. हालाँकि इसके लिए उसे काफ़ी मेहनत करनी पड़ती थी.

नौकर दरवाज़े का ताला खोल चुका था. अजित ठाकुर साहब से बोला - "आप लोग बाहर ही रुकिये. जब मैं बोलू तभी आप लोग अंदर आईएगा."

ठाकुर साहब ने सहमति में सर हिलाया. डिंपल के दिल की धड़कने बढ़ी हुई थी. उसे अपनी मा को देखे हुए एक अरसा बीत गया था. उसे तो अब उनकी सूरत तक याद नही थी. वो अपनी मा को देखने के लिए बहुत बेचैन थी.

अजित अंदर पहुँचा. उसकी दिल की धड़कने बढ़ी हुई थी. किंतु चेहरा शांत था. दिमाग़ पूरी तरह खाली था. उसने शारदा देवी की तलाश में अपनी नज़रें दौड़ाई. शारदा देवी अपने बिस्तर पर एक ओर करवट लिए लेटी हुई नज़र आईं. उनकी पीठ अजित की तरफ थी. कहना मुश्किल था कि वो जाग रही थी या सो रही थी.

अजित ने धड़कते दिल के साथ उनकी ओर अपने कदम बढ़ाया. उसके कदमों की आहट से शारदा पलटी. उसकी गोद में वही कपड़े की गुड़िया थी. अजित को देखते ही शारदा देवी झट से उठ खड़ी हुई. शारदा देवी अपनी बड़ी बड़ी आँखों से अजित को घुरने लगी. अगले ही पल उनकी आँखों में भय उतरा. शारदा देवी ने अपने हाथ में थमी गुड़िया को अपनी छाते से भींचा. अजित शांत था वो उनकी हर गतिविधि को बड़े ही ध्यान से देख रहा था. वह समझ चुका था कि उसे देखकर शारदा देवी डर गयी है. वह अपने हाथ जोड़ते हुए उनके आगे झुका. उसका अंदाज़ ठीक वैसा ही था जैसे राजा महाराजा के सामने लोग झुक कर सलाम करते हैं - "नमस्ते मा जी."

शारदा की आँखें सिकुड़ी. उन्होने आश्चर्य और भय के मिले जुले भाव से अजित को देखा. फिर उनके हाथ भी नमस्ते करने के अंदाज़ में जुड़ गये - "नमस्ते" वह सहमी सी बोली. उनकी आवाज़ में कंपन था - "कौन हैं आप? क्या आप मुझे जानते हैं?"

" हां ." वह शांत स्वर में बोला - " मेरा नाम डॉक्टर . अजित सिन्हा है . मुझे आपकी बेटी डिंपल ने यहाँ भेजा है . आपसे अपनी शादी की बात करने के लिए ."

" डिंपल .... कौन डिंपल ?" वह चौंकी . फिर अपनी गुड़िया को देखते हुए बोली - " मेरी बेटी का नाम डिंपल नही .... रानी है . और ये तो अभी बहुत छोटी है ."

अजित धीरे से मुस्कुराया और दो कदम आगे बढ़ा. - "आपके हाथ में डिंपल की गुड़िया है. डिंपल तो बाहर खड़ी है. और वो बहुत बड़ी हो गयी है."

शारदा देवी ने गर्दन उठाकर दरवाज़े से बाहर देखा. वहाँ कोई नज़र नही आया. उनकी दृष्टि अजित की ओर घूमी. अजित उनके चेहरे पर बदलते भाव को तेज़ी से पढ़ रहा था. उनकी आँखों में अब डर की जगह आश्चर्य और परेशानी ने ले ली थी. - "क्या आप डिंपल से मिलना चाहेंगी?"

शारदा देवी ने धीरे से हां में सर हिलाया. अजित मुस्कुराया और डिंपल को आवाज़ दिया. - "डिंपल....अंदर आ जाओ."

शारदा देवी की नज़रें दरवाज़े की तरफ ठहर गयी. तभी डिंपल दरवाज़े में नज़र आई. वो धीरे धीरे चलती हुई अजित के पास आकर खड़ी हो गयी. उसने बोझिल नज़रों से अपनी मा को देखा. दिल में एक हुक सी उठी, मन किया आगे बढ़कर वो उनसे लिपट जाए. लेकिन वो अजित के आदेश के बिना कुछ भी ऐसा वैसा नही करना चाहती थी जिससे कि बना बनाया काम बिगड़ जाए.

शारदा भी बहुत ध्यान से डिंपल को देख रही थी, उसके माथे पर सिलवटें पड़ गयी थी. वो डिंपल को पहचानने की कोशिश कर रही थी. - "मुझे कुछ भी याद नही आ रहा है. मैने तुम्हे पहले कभी नही देखा. क्या तुम सच में मेरी बेटी डिंपल हो?"

" मा !" डिंपल की रुलाई फुट पड़ी . ममता की प्यासी डिंपल खुद को रोक ना सकी वह आगे बढ़ी और शारदा से लिपट गयी .

" अरे क्या हुआ इसे ? ये क्यों रो रही है ?" शारदा घबराते हुए बोली .

" बहुत दिनो तक आपसे दूर रही थी ना , आज मिली है तो बहुत भावुक हो गयी है ." अजित शारदा देवी से बोला .

शारदा डिंपल को दिलासा देने लगी. वह अपने कमज़ोर हाथों को उसके पीठ पर फेरने लगी. दूसरे हाथ से डिंपल के गालों में बहते आँसू पोंछने लगी. - "मत रो बेटी, लेकिन तू मुझसे इतने दिन तक दूर क्यों रही. अगर मेरी इतनी ही याद आती थी तो पहले ही मिलने क्यों नही आई?"

" मैं शहर में पढ़ाई कर रही थी मा . इसलिए आपसे मिलने नही आ सकी ." डिंपल खुद को संयत करते हुए बोली .

" क्या तुम दोनो साथ ही में पढ़ते हो ?" शारदा डिंपल का चेहरा उठाकर बोली .

" पढ़ते थे ." अजित बोला - " अब हमारी पढ़ाई पूरी हो चुकी है . अब हम आपका आशीर्वाद लेकर शादी करना चाहते हैं . क्या आप डिंपल का हाथ मेरे हाथ में देंगी ?"

" हां ... हां क्यों नही , आख़िर तुम दोनो एक दूसरे से प्यार करते हो . मैं तो तुम्हारे जैसा ही दूल्हा अपनी बेटी के लिए चाहती थी . लेकिन बेटा शादी की बात करने के लिए तुम्हारे घर से कोई बड़ा नही आया . क्या तुम्हारे घर में कोई नही है ?" शारदा देवी ने अजित से पुछा . वो अब पूरी तरह से नॉर्मल होकर बात कर रही थी . डिंपल अभी भी उनसे चिपकी हुई थी .

अजित आगे बढ़ा. और शारदा से बोला - "मेरी मा है मा जी, लेकिन उनकी तबीयत कुछ ठीक नही थी इसीलिए वो नही आ सकी. कुछ ही दिनो में मा भी आ जाएँगी."

" ठीक है कुछ दिन इंतेज़ार कर लूँगी . मैं भी जल्दी से डिंपल का विवाह करके छुट्टी पाना चाहती हूँ ."

" तो अब हमें इज़ाज़त दीजिए ." अजित बोला - " हम फिर आपसे मिलने आएँगे . आप आराम कीजिए . हम लोग दूसरे कमरे में हैं . आपको कभी भी हमारी ज़रूरत हो बुला लीजिएगा ."

" हां ... हां जाओ आराम करो . तुम लोग भी दूर शहर से आए हो थक गये होगे ." शारदा बोली और डिंपल के सर पर हाथ फेरने लगी .

अजित उन्हे फिर से नमस्ते बोलकर डिंपल के साथ बाहर आ गया.

अजित और डिंपल, शारदा देवी के कमरे से बाहर निकले.

बाहर ठाकुर साहब के साथ साथ सभी लोग छुप छुप कर कमरे के अंदर का दृश्य देख रहे थे. ठाकुर साहब तो इतने भावुक हो गये थे कि बड़ी मुश्किल से अपनी रुलाई रोक पाए थे.

अजित के बाहर आते ही ठाकुर साहब बोले - "डॉक्टर अजित, आपको क्या लगता है हमारी शारदा ठीक तो हो जाएगी ना?. पिछले २० सालो में ऐसा पहली बार हुआ है जब हमारी शारदा ने इतनी देर तक किसी से बात की हो. आपको देखकर मेरी उम्मीदे बढ़ चली है. बताइए डॉक्टर....शारदा कब तक ठीक हो पाएगी."

" धीरज रखिए ठाकुर साहब . ईश्वर ने चाहा तो १ महीने में या ज़्यादा से ज्यादा ३ महीने , शारदा जी बिल्कुल ठीक हो जाएँगी ."

" धीरज कैसे रखू डॉक्टर ? २० साल से मैं जिस यातना को झेल रहा हूँ , वो सिर्फ़ मैं जानता हूँ . मेरी पत्नी २० साल से कमरे के अंदर क़ैदी की तरह बंद है . इतना धन दौलत होने के बावजूद हमारी शारदा को कष्ट से जीना पड़ रहा है . ना उसे खाने की सूध है ना पहनने का , उससे अच्छी ज़िंदगी तो हमारे घर के नौकर जी रहे हैं . २० सालों से वो पागलों की ज़िंदगी जी रही है . मुझसे उसका दुख देखा नही जाता डॉक्टर ." ठाकुर साहब अपनी बात पूरी करते करते बच्चों की तरह फफक पड़े .

" संभालिए ठाकुर साहब ..... खुद को संभालिए ." अजित उनके कंधो को पकड़कर बोला - " मैं आपसे वादा करता हूँ कि मैं उन्हे जब तक पूरी तरह से ठीक नही कर दूँगा . मैं यहाँ से नही जाऊंगा ." अजित विश्वास से भरे शब्दों में कहा .

" मुझे आप पर भरोसा है डॉक्टर . मुझे विश्वास हो चला है कि आप मेरी शारदा को ज़रूर ठीक कर देंगे ."

अजित मुस्कुराया. फिर मुनीम जी से मुखातिब हुआ - "मुनीम जी मैं कुछ दवाइयाँ और इंजेक्शन लिख देता हूँ, आप उन्हे शहर से मंगवा दीजिए. और मेरे घर से मेरे कपड़े भी मंगवा दीजिएगा."

" मैं अभी किसी को शहर भेज देता हू डॉक्टर बाबू , २ दिन में आपके कपड़े और दवाइयाँ आ जाएँगी ."

" एक बात और आप सब से कहना चाहूँगा " अजित मुनी म जी को टोकते हुए बोला - " आज के बाद आप लोग मुझे सिर्फ़ अजित कहकर बुलाएँगे . डॉक्टर अजित या कुछ और कहकर नही ."

ठाकुर साहब मुस्कुराए. "ठीक है अजित. हम आपको ऐसे ही बुलाया करेंगे.

कुछ देर बाद नौकर सभी के लिए चाय नाश्ता ले आया. कुछ देर अजित सबके साथ बैठा बाते करता रहा. फिर ठाकुर साहब से इज़ाज़त लेकर अपने रूम में आ गया.

अपनी मा शारदा देवी से मिलने के बाद डिंपल के मन में जो कड़वाहट अजित के लिए थी वो अब दूर हो चुकी थी. वह अब उसे आदर भाव से देखने लगी थी.

५

२ दिन बीत गये . अजित के कपड़े भी शहर से आ गये थे . इन दो दिनो में अजित का अधिकांश समय उसके कमरे में ही गुजरा था . वो सिर्फ़ शारदा देवी को देखने के लिए ही अपने रूम से बाहर आता था . उसे मुनीम जी के कपड़ों में दूसरों के सामने आने में संकोच होता था . अब जब उसके कपड़े आ गये थे तो उसने किशनगढ़ घूमने का निश्चय किया . २ दिनो से हवेली के भीतर बंद रहने से उसका मन उब सा गया था .

वह कपड़े पहनकर बाहर निकला. इस वक़्त ५ बजे थे. उसने नौकर से अपनी बाइक साफ करने को कहा. किशनगढ़ आने से कुछ दिन पहले ही वो अपनी बाइक को ट्रांसपोर्ट के ज़रिए किशनगढ़ भिजवा दिया था. और जब वो किशनगढ़ स्टेशन में उतरा तो मालघर से अपनी बाइक को ले लिया था.

आज उसने बाइक से ही किशनगढ़ की सैर करने का विचार किया. नौकर उसकी बाइक साफ कर चुका था. अजित बाइक पर बैठा और हवेली की चार दीवारी से बाहर निकला. हवेली की सीमा से निकलते ही अजित को दो रास्ते दिखाई दिए. उनमे से एक रास्ता स्टेशन की ओर जाता था. तथा दूसरा रास्ता बस्ती. उसने बाइक बस्ती की ओर मोडी. वो रास्ता काफ़ी ढलान लिए हुए था. बस्ती के मुक़ाबले हवेली काफ़ी उँचाई में स्थित थी. हवेली की छत से पूरा किशनगढ़ देखा जा सकता था.

कुछ दूर चलने के बाद वो रास्ता भी दो रास्तों में बदल गया था. अजित ने बाइक रोकी और खड़े खड़े अपनी नज़रें दोनो रास्तों पर दौड़ाई. बाईं और का रास्ता बस्ती को जाता था. बस्ती ज़्यादा दूर नही थी. लेकिन काफ़ी बड़ी आबादी लिए हुए थी. बस्ती का अंत जहाँ पर होता था उसके आगे खेत और जंगल का भाग शुरू होता था. दूसरा रास्ता पहड़ियों की ओर जाता था. उस ओर उँचे उँचे पहाड़ और गहरी घटियाँ थी. अजित ने दाई और के रास्ते पर बाइक मोड़ दी.

कुछ ही देर में अजित को झरनो से गिरते पानी का संगीत सुनाई देने लगा. कुछ दूर और आगे जाने पर उसे एक बहती नदी दिखाई पड़ी. उसमे कुछ लड़कियाँ आधे अधूरे कपड़ों में लिपटी नदी में तैरती दिखाई दी. उसने बाइक रोकी और दूर से ही उन रंग बिरंगी तितलियों को देखने लगा. अचानक उसकी आँखें चमकी, उन लड़कियों के साथ उसे वो लड़की भी

दिखाई दी जिसने हवेली में उसके कपड़े जलाए थे. लेकिन इतनी दूर से उसे पहचानने में धोका भी हो सकता था. उसने उसे नज़दीक से देखना उचित समझा. वह बाइक से उतरा और पैदल ही नदी की तरफ बढ़ गया.

नदी के किनारे पहुँचकर वह ठितका. उसने खुद को झाड़ियों की औट में छिपाया. यहाँ से वो उन लड़कियों को साफ साफ देख सकता था. उसने हवेली वाली लड़की को साफ पहचान लिया. वो पीले रंग की पेटिकोट में थी. उसकी आधी छाया स्पष्ट दिखाई पड़ रही थी. उसका पानी से भीगा गोरा बदन सूर्य की रोशनी से चमक रहा था. अजित की नज़रें उस लड़की की सुंदरता में चिपक सी गयी. वो खड़े खड़े उन अर्धनग्न लड़कियों के सौन्दर्य का रसपान करता रहा.

अचानक किसी की आवाज़ से वह चौंका. अजित आवाज़ की दिशा में पलटा. सामने एक बच्चा हैरानी से उसे देख रहा था. वो बच्चा ही सही पर इस तरह अपनी चोरी पकड़े जाने पर एक पल के लिए अजित काँप सा गया. फिर खुद को संभालते हुए बच्चे से बोला -
"क्या नाम है तुम्हारा?"

" चिंटू " बच्चे ने उँची आवाज़ में बोला - " और तुम्हारा क्या नाम है ?"

उसकी तेज आवाज़ से अजित बोखलाया. उसने झट से अपना पर्स निकाला और उसमे से १० का नोट निकालकर चिंटू को पकड़ा दिया. नोट हाथ में आते ही चिंटू हंसा.

" क्या तुम मुझसे और पैसे लेना चाहते हो ?" अजित ने घुटनो के बल बैठते हुए कहा
.

" हां ...!" बच्चे ने सहमति में सर हिलाया .

" तो फिर मैं तुमसे जो कुछ भी पूछूंगा , क्या तुम मुझे सच सच बताओगे ?" उसने वापस अपना पर्स निकालते हुए बच्चे से कहा .

चिंटू ने अजित का पर्स देखा और फिर अपने होठों पर जीभ घुमाई. - "हां."

" ठीक है तो फिर उस लड़की को देखो जो पीले रंग की पेटिकोट पहनी हुई है ." अजित ने अपनी उंगली का इशारा कांचन की और किया - " क्या तुम उसे जानते हो ?"

" हां ." बच्चे ने गर्दन हिलाई .

" क्या नाम है उसका ?" अजित ने पुछा .

" पहले पैसे दो . फिर बताऊंगा ." बच्चा शातिर था . अजित ने १० का नोट उसकी और बढ़ाया .

" वो मेरी कांचन दीदी है ." बच्चा १० का नोट अपनी जेब में रखता हुआ बोला .

" तुम्हारी कांचन दीदी ?" अजित उसके शब्दों को दोहराया .

" हां . लेकिन तुम उनका नाम क्यों पूछ रहे थे ?" बच्चे ने उल्टा प्रश्न किया .

" बस ऐसे ही , मन में आया तो पूछ लिया . जैसे तुमने पुछा ."

चिंटू ने अजीब सी नज़रों से उसे देखा.

" अच्छा चिंटू , अब एक काम और करोगे ?"

" पैसे मिलेंगे ?" चिंटू ने वापस अपने होठों पर जीभ घुमाई .

अजित ने वापस १० का नोट उसे थमाया. - "तुम अपनी दीदी के कपड़े मुझे लाकर दे सकते हो?"

" दीदी के कपड़े , नही ..... दीदी मारेगी ." चिंटू डरते हुए बोला .

" तो फिर मेरे सारे पैसे वापस करो ." अजित ने अपनी आँखें दिखाई .

चिंटू कुछ देर अपनी मुट्ठी में बँधे नोट को देखता रहा और सोचता रहा. फिर बोला - "तुम दीदी के कपड़ों का क्या करोगे?"

" कुछ नही .... बस हाथ में लेकर देखना चाहता हूँ कि तुम्हारी दीदी के कपड़े कैसे हैं ."

चिंटू कुछ देर खड़ा रहा. उसके मन में एक तरफ रुपयों का लालच था तो दूसरी तरफ दीदी की डाँट का ख्याल. आख़िरकार उसने रुपयों को जेब में रखा और कपड़ों की तरफ बढ़ा. दूसरे मिनिट में वो कांचन के कपड़े लेकर वापस आया. अजित ने उसके हाथ से कपड़े लिए और बोला - "चिंटू महाराज, अब अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी दीदी तुम्हारी पिटाई ना करे, तो फिर यहाँ से खिस्को."

चिंटू सहमा. उसने भय से काँपते हुए अजित को देखा. - "अब तुम दीदी के कपड़े वापस दो."

" मैं ये कपड़े तुम्हारी दीदी के ही हाथों में दूँगा ."

" लेकिन दीदी मुझे मारेगी ." वह डरते हुए बोला . उसका चेहरा डर से पीला पड़ गया था .

" तुम्हारी दीदी को बताएगा कौन कि तुमने उसके कपड़े मुझे दिए हैं ." अजित ने उसका भय दूर किया - " जब तुम यहाँ रहोगे ही नही तो वो तुम्हे मारेगी कैसे ?"

" लेकिन तुम दीदी को मत बताना कि मैने उनके कपड़े तुम्हे दिए हैं ."

" नही बताऊंगा . प्रॉमिस ." अजित अपना गला छू कर बोला .

अगले ही पल चिंटू नौ दो ग्यारह हो गया. अजित कांचन के कपड़े हाथों में लिए पास की झाड़ियों में जा छुपा और कांचन के बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगा.

अजित झाड़ियों में छिप गया. उसके मन में बदले की भावना थी. इसी लड़की के कारण उसे हवेली में मज़ाक का पात्र बनना पड़ा था. उसने कांचन को सबक सिखाने का निश्चय कर लिया था. वो ये कैसे भूल सकता था कि बिना वजह इस लड़की ने उसके कपड़े जलाए

थे. इसी की वजह से वो दो दिन तक जोकर बना हवेली में फिरता रहा. इन्ही विचारों के साथ वो झाड़ियों में छिपा रहा और कांचन के बाहर आने की राह देखता रहा.

कुछ देर बाद एक एक करके लड़कियाँ बाहर आती गयीं और अपने अपने कपड़े पहन कर अपने अपने घर को जाने लगी. अजित १ घंटे से झाड़ियों की औट से ये सब देख रहा था. अब सूर्य भी अपने क्षितिज पर डूब चुका था. चारो तरफ सांझ की लालिमा फैल चुकी थी. अब नदी में केवल २ ही लड़कियाँ रह गयी थी. उनमें एक कांचन थी दूसरी उसकी कोई सहेली. कुछ देर बाद उसकी सहेली भी नदी से बाहर निकली और अपने कपड़े पहनने लगी. अचानक उसे ये एहसास हुआ कि यहाँ कांचन के कपड़े नही हैं. उसने उसके कपड़ों की तलाश में इधर उधर नज़र दौड़ाई, पर कपड़े कहीं भी दिखाई नही दिए. उसने कांचन को पुकारा. - "कांचन, तुमने अपने कपड़े कहाँ रखे थे? यहाँ दिखाई नही दे रहे हैं."

" वहीं तो थे . शायद हवा से इधर उधर हो गये हों . मैं आकर देखती हूँ " कांचन बोली और पानी से बाहर निकली . वह उस स्थान पर आई जहाँ पर उसने अपने कपड़े रखे थे . वहाँ पर सिर्फ़ उसकी ब्रा और पैंटी थी . बाकी के कपड़े नदारद थे . वह अपने कपड़ों की तलाश में इधर उधर नज़र दौड़ने लगी . वो कभी झाड़ियों में ढूँढती तो कभी पत्थरों की औट पर . लेकिन कपड़े उसे कहीं भी दिखाई नही दिए . अब कांचन की चिंता बढ़ी . वो परेशानी में इधर उधर घूमती रही , फिर अपनी सहेली के पास गयी .
" लता कपड़े सच मच में नही हैं ."

" तो क्या मैं झूठ बोल रही थी ." लता मुस्कुराइ .

" अब मैं घर कैसे जाऊंगी ?."

" थोड़ी देर और रुक जा . उजाला ख़त्म होते ही घर को चली जाना . अंधेरे में तुम्हे कोई नही पहचान पाएगा ."

" तू मेरे घर से कपड़े लेकर आ सकती है ?" कांचन ने सवाल किया .

" मैं ....! ना बाबा ना ." लता ने इनकार किया - " तू तो जानती ही है मेरी मा मुझे आने नही देगी . फिर क्यों मुझे आने को कह रही है ?"

" लता , तो फिर तू भी कुछ देर रुक जा . दोनो साथ चलेंगे . यहाँ अकेले में मैं नही रह सकूँगी ." कांचन ने खुशामद की .

" कांचन , मैं अगर रुक सकती तो रुक ना जाती . ज़रा सी देर हो गयी तो मेरी सौतेली मा मेरी जान ले लेगी ."

कांचन खामोश हो गयी. वो अच्छी तरह से जानती थी, लता की सौतेली मा उसे बात बात पर मारती है. एक काम को १० बार करवाती है. वो तो अक्सर इसी ताक में रहती है कि लता कोई ग़लती करे और वो इस बेचारी की पिटाई करे. उसका बूढ़ा बाप भी अपनी बीवी के गुस्से से दूर ही रहता था.

" क्यों चिंता कर रही है मेरी सखी . मेरी मा न तो तू ऐसे ही मेरे साथ घर चल ." लता ने उसे सुझाव दिया .

" ऐसी हालत में कोई देखेगा तो क्या कहेगा ?" कांचन चिंतित स्वर में बोली .

" कोई कुछ नही कहेगा . उल्टे लोग तुम्हारी इस खूबसूरत काया की प्रशंसा ही करेंगे ." लता उसके पास आकर उसके कंधो पर हाथ रख कर बोली - " सच कहती हूँ , गांव के सारे मजनू तुम्हे ऐसी दशा में देखकर जी भर कर सच्चे दिल से दुआएँ देंगे ."

" लता तुम्हे मस्ती चढ़ि है और यहाँ मेरी जान निकली जा रही है ." कांचन गंभीर स्वर में बोली .

" तुम्हारे पास और कोई चारा है ?" लता उसकी आँखों में झाँकते हुए बोली - " या तो तू ऐसे ही मेरे साथ घर चल ... या फिर कुछ देर रुक कर अंधेरा होने का इंतेज़ार कर . लेकिन मुझे इज़ाज़त दे . मैं चली ." ये कहकर लता अपने रास्ते चल पड़ी . कांचन उसे जाते हुए देखती रही .

अजित झाड़ियों में छिपा ये सब देख रहा था. लता के जाते ही वो बाहर निकला. और धीमे कदमो से चलता हुआ कांचन की और बढ़ा. कांचन उसकी ओर पीठ किए खड़ी थी. अजित उसके निकट जाकर खड़ा हो गया और उसे देखने लगा. किसी नारी को इस अवस्था में देखने का ये उसका पहला अवसर था. कांचन गीले पेटिकोट में खड़ी थी. उसका

गीला पेटिकोट उसके नितंबो से चिपक गया था. पेटिकोट गीला होने की वजह से पूरा पारदर्शी हो गया था. हल्की रोशनी में भी उसके भारी गोलाकार नितंब अजित को साफ दिखाई दे रहे थे. दोनो नितंबो के बीच की दरार में पेटिकोट फस सा गया था. वह विस्मित अवस्था में उसके लाजवाब हुस्न का दीदार करता रहा. अचानक से कांचन को ऐसा लगा कि उसके पिछे कोई है. वह तेज़ी से घूमी. जैसे ही वो पलटी चीखती हुई चार कदम पिछे हटी. वो आश्चर्य से अजित को देखने लगी. अजित ने उसकी चीख की परवाह ना करते हुए उसे उपर से नीचे तक घूरा. उसकी अर्धनग्न स्तन अजित की आँखों में अनोखी चमक भरती चली गयी. उसकी नज़रें उन पहाड़ जैसे सख़्त चुचियों में जम गयी. गीले पेटिकोट में उसके तने हुए स्तन और उसकी स्तनाग्र स्पष्ट दिखाई दे रही थी. अजित ने अपने होठों पर जीभ फेरी.

कांचन की हालत पतली थी. ऐसी हालत में अपने सामने किसी अजनबी मर्द को पाकर उसका दिल धाड़ धाड़ बज रहा था. सीना तेज़ी से उपर नीचे हो रहा था. उसे अपने बदन पर अजित के चुभती नज़रों का एहसास हुआ तो उसने अपने हाथों को कैंची का आकर देकर अपनी छाती को ढकने का प्रयास करने लगी. वो लाज की गठरी बनी सहमी से खड़ी रही. फिर साहस करके बोली - "आप यहाँ इस वक़्त....आपको इस तरह किसी लड़की को घूरते लज्जा नही आती?"

उत्तर में अजित मुस्कुराया. फिर व्यंग भरे शब्दों में बोला - "ये तो वही बात हो गयी. कृष्ण करे तो लीला. हम करे तो रासलीला."

" मैं समझी नह‍ी ." कांचन रूखे स्वर में बोल‍ी .

अजित ने अपने हाथ आगे किए और उसके कपड़े दिखाए. कांचन अजित के हाथो में अपने कपड़े देखकर पहले तो चौंकी फिर आँखें चढ़ाकर बोली -"ओह्ह...तो आपने मेरे कपड़े चुराए थे. मुझे नही पता था आप शहरी लोग लड़कियों के कपड़े चुराने के भी आदि होते हैं. लेकिन ये बड़ी नीचता का काम है. लाइए मेरे कपड़े मुझे दीजिए."

अजित व्यंग से मुस्कुराया. -"मुझे भी नही पता था कि गांव के सीधे साधे से दिखने वाले लोग, अपने घर आए मेहमान का स्वागत उसके कपड़े जलाकर करते हैं. क्या ये नीचता नही है."सहसा उसकी आवाज़ में कठोरता उभरी - "अब क्यों ना मैं अपने उस अपमान का बदला तुमसे लूँ. क्यों ना तुम्हारे बदन से ये आख़िरी कपड़ा भी नोच डालूं."

कांचन सकपकाई. उसकी आँखों से मारे डर के आँसू बह निकले. वो सहमी सी आवाज़ में बोली - "मैने आपके कपड़े नही जलाए थे साहेब. वो तो...वो तो...." कांचन कहते कहते रुकी. वह खुद तो लज्जित हो चुकी थी अब डिंपल को शर्मसार करना ठीक नही समझा.

" वो तो क्या ? कह दो कि वो काम किसी और ने किए थे . जो लड़की मेरे रूम में मेरे जले हुए कपड़े रख के गयी थी वो तुम नही कोई और थी ."

" साहेब .... मैं सच कहती हूँ , मैने आपके कपड़े नही जलाए ."

" तुम्हारा कोई भी झूठ तुम्हारे किए पर परदा नही डाल सकता . तुम्हारे इस गोरे शरीर के अंदर का जो काला दिल है उसे मैं देख चुका हूँ ."

कांचन रुआंसी हो उठी, अजित के ताने उसके दिल को भेदते जा रहे थे. उसने सहायता हेतु चारो तरफ नज़र दौड़ाई पर उसे ऐसा कोई भी दिखाई नही दिया. जिससे वो मदद माँग सके. उसने उस पल डिंपल को जी भर कोसा. काश कि वो उसकी बातों में ना आई होती. उसने एक बार फिर अजित के तरफ गर्दन उठाई और बोली - "साहेब, मेरे कपड़े दे दो. मेरे घर में सब परेशान होंगे." उसकी आवाज़ में करुणा थी और आँखें आँसुओं से डबडबा गयी थी. वो अब बस रोने ही वाली थी.

अजित ने उसके चेहरे को ध्यान से देखा. उसका चेहरा शर्म और भय से पीला पड़ गया था. उसकी खूबसूरत आँखों में आँसू की मोटी मोटी बूंदे चमक उठी थी. उसके होंठ कांप कंपा रहे थे. वो लाचारी से अपने सूखे होठों पर जीभ फ़ीरा रही थी. उसे उसकी हालत पर दया आ गयी. उसने अपने हाथ में पकड़ा कपड़ा उसकी ओर फेंका और बोला - "ये लो अपने कपड़े, पहनो और घर जाओ. मैं उन लोगों में से नही हूँ जो किसी की विवशता का फ़ायदा उठाने में अपनी शान समझते हों. लेकिन घर जाने के बाद अगर फ़ुर्सत मिले तो अपने मन के अंदर झाँकना और सोचना कि मैने तुम्हारे साथ जो किया वो क्यों किया. अब तो शायद तुम्हे ये समझ में आ गया होगा कि किसी के मन को ठेस पहुँचाने से सामने वाले के दिल पर क्या गुजरती है." अजित जाने के लिए मुड़ा, फिर रुका और पलटकर कांचन से बोला - "एक बात और.....अगर तुम किसी के दिल में अपने लिए प्यार ना भर सको तो कोशिश करना कि कोई तुमसे नफ़रत भी ना करे." ये कहकर अजित मुड़ा और अपनी बाइक की तरफ बढ़ गया.

कांचन उसे जाते हुए देखती रही. उसकी आँखों में अभी भी आँसू भरे हुए थे. उसके कानो में अजित के कहे अंतिम शब्द गूँज रहे थे.

" मुझे माफ़ कर दो साहेब ." वह बड़बड़ाई - " मैं जानती हूँ मेरी वजह से आपका दिल टूटा है , भूलवश मैने आपके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाई है . पर मुझसे नफ़रत मत करना साहेब .... मैं बुरी लड़की नही हूँ .... मैं बुरी लड़की नही हूँ साहेब ."

कांचन भारी कदमो से झाड़ियों की ओर बढ़ी और अपने कपड़े पहनने लगी. कपड़े पहन लेने के बाद वो अपने घर के रास्ते चल पड़ी. पूरे रास्ते वो अजित के बारे में सोचती रही. कुछ देर बाद वो अपने घर पहुँची. कांचन ने जैसे ही अपने घर के आँगन में कदम रखा बुआ ने पुछा - "कांचन इतनी देर कैसे हो गयी आने में? कितनी बार तुझे समझाया. सांझ ढले बाहर मत रहा करो. तुम्हे अपनी कोई फिक़र रहती है कि नही?"

कांचन ने बुआ पर द्रष्टी डाली, बुआ इस वक़्त आँगन के चूल्हे में रोटियाँ बना रही थी. चूल्हे से थोड़ी दूर चारपाई पर उसका बाप धनपाल बैठा हुआ था. कांचन उसे बाबा कहती थी. - "आज देर हो गयी बुआ, आगे से नही होगी." कांचन बुआ से बोली और अपने कमरे की ओर बढ़ गयी. उसके मिट्टी और खप्रेल के घर में केवल दो कमरे थे. एक कमरे में कांचन सोती थी, दूसरे में उसकी बुआ शांता, धनपाल की चारपाई बरामदे में लगती थी. चिंटू के लिए अलग से चारपाई नही बिछती थी. उसकी मर्ज़ी जिसके साथ होती उसके साथ सो जाता. पर ज़्यादातर वो कांचन के साथ ही सोता था. कांचन अपने रूम के अंदर पहुँची. अंदर चिंटू पढ़ाई कर रहा था. कांचन को देखते ही वह घबराया. और किताब समेटकर बाहर जाने लगा.

" कहाँ जा रहा है ?" कांचन ने उसे टोका .

" क .... कहीं नही , बाहर मा .... मामा के पास ." वह हकलाया .

" मा के पास या मामा के पास ?" कांचन ने घूरा - " और तू इतना हकला क्यों रहा है ?"

चिंटू सकपकाया. उसके माथे पर पसीना छलक आया. चेहरा डर से पीला पड़ गया, उसने बोलने के लिए मूह खोला पर आवाज़ बाहर ना निकली.

कांचन के माथे पर बाल पड़ गये. वा उसे ध्यान से देखने लगी. "कुछ तो बात है?" कांचन मन में बोली - "इसकी घबराहट अकारण नही है."

चिंटू कांचन को ख्यालो में डूबा देख दबे कदमो से वहाँ से निकल लिया. कांचन सोचती रही. सहसा उसकी आँखें चमकी. जब वो नदी में स्नान कर रही थी तब उसने चिंटू की आवाज़ सुनी थी. पर देख नही पाई थी. -"कहीं ऐसा तो नही इसी ने मेरे कपड़े चुराकर साहेब को दिए हों." वह बड़बड़ाई - "ऐसा ही हुआ होगा. वरना साहेब को क्या मालूम मेरे कपड़े कौन से हैं?"

बात उसके समझ में आ चुकी थी. कांचन दाँत पीसती कमरे से बाहर निकली. चिंटू उसके बाबा की गोद में बैठा बाते कर रहा था. कांचन को गुस्से में अपनी ओर आते देख उसके होश उड़ गये. पर इससे पहले कि वो कुछ कर पाता, कांचन उसके सर पर सवार थी. कांचन ने उसका हाथ पकड़ा और खींचते हुए कमरे के अंदर ले गयी. कमरे में पहुँचकर कांचन ने चिंटू को चारपाई पर बिठाया और अंदर से दरवाज़े की कुण्डी लगाने लगी. चिंटू ये देखकर भय से काँप उठा. उसे समझते देर नही लगी कि आज उसकी पिटाई निश्चिंत है. उसने उस पल को कोसा जब पैसे के लालच में आकर उसने शहरी बाबू की बात मानी थी.

कांचन दरवाज़े की कुण्डी लगाकर उसके पास आकर खड़ी हो गयी. -"क्यूँ रे...तू मुझसे भागता क्यों फिर रहा है?"

" दीदी , क्या तुम सच - मुच मुझे मरोगी ?" चिंटू ने डरते डरते पुछा .

कांचन ने चिंटू के पीले चेहरे को देखा तो उसका सारा क्रोध गायब हो गया. वह मुस्कुराइ, फिर उसके साथ चारपाई में बैठकर उसके गालो को चूमकर बोली -" नही रे, मैं भला तुम्हे मार सकती हूँ, पर तूने ही मेरे कपड़े साहेब को दिए थे ना? सच सच बता, नही तो अबकी ज़रूर मारूँगी"

चिंटू मुस्कुराया. उसने कांचन को देखा और शरमाते हुए बोला - "हां !"

" क्यों दिए थे ?" कांचन फिर से उसके गालो को चूमते हुए बोली .

" नही बताऊंगा , तुम मारोगी ." चिंटू हंसा .

" नही बतायेगा तो मारूँगी ," कांचन ने आँखें दिखाई - " बता ना क्यों दिए थे मेरे कपड़े ?"

" उसने मुझे पैसे दिए और बोला क़ि वो जो कहेगा अगर मैं करूँगा तो वो मुझे और पैसे देगा ." चिंटू ने कांचन को नदी का पूरा वृतांत सुना दिया .

" पैसे कहाँ है ?" कांचन ने सब सुनने के बाद पुछा .

चिंटू ने अपने जेब से पैसे निकालकर कांचन को दिखाया फिर बोला -"दीदी मुझे लगा आप मुझे मारोगी. आज के बाद मैं फिर कभी ऐसा नही करूँगा...सच्ची.!"

कांचन मुस्कुराइ और उसे अपनी छाती से भींचती हुई मन में बोली - "तू नही जानता, तेरी वजह से आज मुझे क्या मिला है." अगले ही पल उसके मन में सवाल उभरा. "लेकिन ऐसा क्या मिला है मुझे जो मैं इतनी खुश हो रही हूँ? साहेब ने तो मुझसे कोई अच्छी बात भी नही की, उन्होने तो मेरा अपमान ही किया है. फिर क्यों मेरा मन मयूर बना हुआ है?"

" नही साहेब ने मेरा अपमान नही किया , उन्होने जो भी कहा मेरे भले के लिए कहा , वे तो अच्छे इंसान हैं , आज अगर वो चाहते तो मेरे साथ क्या नही कर सकते थे . लेकिन उन्होने कुछ नही किया . वे सच में अच्छे इंसान हैं ."

" चलो मान लिया वे अच्छे इंसान हैं . लेकिन मैं क्यों उनके बारे में सोच रही हूँ . मुझे क्या अधिकार है उनके बारे में सोचने का . कहीं ऐसा तो नही कि मैं उनसे प्यार करने लगी हूँ ."

" अगर मैं करती भी हूँ तो क्या बुरा है , प्यार करना कोई बुरा तो नही . प्यार तो एक ना एक दिन सभी को होता है , मुझे भी हो जाने दो ."

कांचन का दिल धड़का. उसके सीने में मीठी मीठी कसक सी हुई. वह अपनी छाती को मसलने लगी. "ये क्या हो रहा है मुझे, मैं क्यों उनके बारे में इतना सोच रही हूँ. कुछ तो हुआ है मुझे, क्या सच में मुझे प्यार हो गया है?

कांचन के मन में प्रेम का अंकुर फुट चुका था. और उसकी वृधि बड़ी तेज़ी से हो रही थी. अजित से नदी में मुलाक़ात उसपर बहुत भारी पड़ी थी. उसे ना तो उगलते बन रहा था ना निगलते. वह पल प्रतिपल अजित के ख्यालो में डूबती जा रही थी. वो चाहकर भी उस विचार से पिछा नही छुड़ा पा रही थी.

चिंटू अपनी दीदी को खोया देख सोच में पड़ गया. कांचन विचारों में थी, कभी उसके होठ मुस्कुरा उठते, तो कभी सख़्त हो जाते. नन्हे चिंटू की समझ में कुछ भी नही आ रहा था. - "क्या हुआ दीदी, तुम चुप क्यों हो गयी?"

चिंटू की बातों से कांचन जागी, उसने चिंटू को देखा जो हैरानी से उसकी ओर ताक रहा था. - "बोलो दीदी, तुम क्यों मुस्कुरा रही थी?" चिंटू ने फिर से पुछा.

" तुम्हे क्या बताऊ चिंटू ? मुझे तो खुद नही पता मुझे क्या हुआ है ? क्या होता जा रहा है ? क्यों मुझे हर चीज़ अच्छी लगने लगी है . वही तुम हो वही ये घर है वही आँगन है , फिर क्यों मुझे हर चीज़ नयी नयी सी लग रही है ? काश कोई मेरे इन सवालों का जवाब बता दे ." कांचन खोई खोई सी बोली , उसकी आवाज़ कहीं दूर से आती प्रतीत हुई .

चिंटू ने पलके झपकाई. उसकी समझ में अब भी कुछ ना आया - "मैं जाके मामा को बताऊ?" वो कांचन की गोद से उठता हुआ बोला.

कांचन सकपकाई. उसने झट से चिंटू का हाथ खींचा और उसे लिए बिस्तर पर फैल गयी. उसे बाहों में भर कर उसके गालो पर ताबड़तोड़ चुंबन धरती चली गयी. -"दीदी छोड़ो मुझे." चिंटू छूटने के लिए मचला, पर कांचन की गिरफ़्त मजबूत थी -"मेरा गाल गीला करोगी तो मैं फिर कभी तुम्हारे पास नही आऊंगा."

" तो किसके गाल गीला करूँ ... बता ?" कांचन उसे लगातार चूमती हुई बोली .

" जाके उस शहरी बाबू के गाल गीले करो , जिसने तुम्हारे कपड़े ले लिए थे ." चिंटू फिर से मचला .

" पर दिए तो तूने ही थे ." कांचन उसे गुदगुदाते हुए बोली .

कुछ देर चिंटू को लाल पीला करने के बाद कांचन ने उसे छोड़ा. चिंटू उसके हाथ से निकलते ही बाहर भागा. कांचन बिस्तर पर गिरकर अजित के बारे में सोचने लगी. अजित के कहे अंतिम शब्द फिर से उसके कानो में गूँज उठे -"अगर तुम किसी के दिल में अपने लिए प्यार ना भर सको तो कोशिश करना की कोई तुमसे नफ़रत भी ना करे."

" साहेब , मैं आपके दिल में अपने लिए प्यार भर कर रहूंगी ." वह बड़बड़ाई . -" एक दिन आएगा साहेब , जब आप इसी कांचन को अपनी बाहों में भर कर झुमोगे . मुझे प्यार करोगे . मैं आपके दिल में अपने लिए इतना प्यार भर दूँगी कि सात जन्म तक आप उस प्यार को निकाल नही पाओगे ." कांचन के होंठ मुस्कुराए . वह तकिये में सर छुपाकर सपनो की दुनिया में खोती चली गयी .

६

इस वक़्त रात के १२ बजने को हैं. डिंपल अपने बिस्तर पर लेटी हुई है. पर उसकी आँखों से नींद गायब है. उसके ख्यालो में भी अजित बसा हुआ है. आप लोग शायद ये सोच रहे होंगे कि वो भी कांचन ही की तरह अजित से प्यार करने लगी है. लेकिन ऐसा नही है, उसके विचारों का आधार कुछ और है, डिंपल को तो प्यार मोहब्बत से नफ़रत है, वो प्यार व्यार को बेवकूफ़ लोगो का विचार भर समझती है. उसका मानना है कि प्यार में इंसान की अक़्ल कम हो जाती है. प्यार सिर्फ़ तनाव देता है और कुछ नही. प्यार करने के बाद इंसान अपनी आज़ादी खो देता है. इंसान दूसरे का दास बनकर रह जाता है. डिंपल के दिल में सिर्फ़ दो लोगों के लिए प्यार था. एक उसके पिता ठाकुर रामप्रताप सिंह, दूजा - कांचन उसकी सहेली. इनके अतिरिक्त उसने किसी को भी अपने दिल में उतरने नही दिया. हां मा के लिए उसका दिल अभी भी खाली है. उसके विचारों में अजित के आने का कारण था कि वो अपने उस जीवन को याद कर रही थी जो उसने शहर में बीताए थे. उसे वहाँ हर चीज़ की आज़ादी थी कोई रोकने वाला नही कोई टोकने वाला नही. चाहें किसी के साथ घुमो, देर रात तक बाहर रहो, दोस्तो के साथ कुछ भी करो, कोई बंदिश नही थी. लेकिन यहाँ ठीक उसके उलटा था. यहाँ डिंपल को वो सब आज़ादी नही मिलने वाली थी. उसने कॉलेज में बहुत मज़े किए थे. अनगिनत लड़कों के साथ शारीरिक संबंध बनाए थे. वो उन लड़कियों में से थी जो कपड़े कम, बिस्तर ज़्यादा बदलती हैं. उसके लिए पुरुषो से दोस्ती केवल शारीरिक संतुष्टि होती थी और कुछ नही. वह अपने शहरी जीवन में सेक्स की इतनी आदि हो चुकी थी कि, वो किसी के साथ भी सेक्स करने से नही हिचकिचाती थी. लेकिन उसने कभी भी अपने उपर किसी को हावी नही होने दिया. उसने कभी दूसरी नशीली चीज़ों को हाथ नही लगाया. शराब सिग्गरेट की वो कभी आदि नही हुई.

उसे शहर से आए ४ दिन हो चुके थे. पिछले ६ दिनो से वो शारीरिक सुख से वंचित थी. यहाँ आने के तीसरे दिन तक तो उसका मन उस ओर नही गया. लेकिन अब वो उसकी कमी महसूस करने लगी थी. आज बिस्तर में लेटे लेटे उसे वो पल याद आ रहे थे जो उसने आनंद के झूले में बीताए थे. उन पलो को याद करके उसका शरीर तप उठा था. शरीर में वासना की लहर तैर रही थी. उसे इस वक़्त सिर्फ़ एक ही चेहरा दिखाई दे रहा था जो उसकी काम वासना को शांत कर सकता था. और वो था अजित. लेकिन वो एक दुविधा में भी थी, वैसे तो वह काई लोगों से सेक्स कर चुकी थी, पर अजित उसे कुछ अलग किस्म का इंसान लगा था. उसे भय था कि कहीं अजित उसके प्रस्ताव को ठुकरा ना दें. लेकिन लाख चाहने पर भी वो अपने अंदर उठती काम वासना को नही दबा पा रही थी. मन पर शरीर का भूख

हावी होती जा रही थी. वह उठी और आईने के सामने खड़ी हो गयी. उसके बदन पर इस वक़्त बेहद पारदर्शी नाइटी थी. वह आईने में खुद को देखने लगी. - "क्या मेरा ये हुस्न अजित को पिघला सकेगा?" उसने अपने तने हुए स्तन को देखा. वो सर उठाए किसी भी चुनौती के लिए तैयार खड़े थे. डिंपल अपने दोनो हाथों को दोनो स्तन के उपर रखकर धीरे से सहलाई. ठीक ऐसे जैसे उन्हे शाबाशी दे रही हो. हाथ का स्पर्श पाकर उसके स्तन और भी कड़क हो उठे. डिंपल मुस्कुराइ. साथ ही उसका दाहिना हाथ नीचे फिसला और सीधे कमर तक पहुँच गया. कमर से होते हुए उसका हाथ उसकी पैंटी तक पहुँचा. उसने उंगली को पैंटी के एलास्टिक पर फसाया फिर धीरे से पैंटी को नीचे खिसकाती चली गयी. पैंटी जाँघो तक पहुँच गयी तो उसने अपने हाथ हटा लिए. उसके बाद आईने में अपनी नग्न सुंदरता को देखने लगी. कुछ देर अपनी ही आँखों से अपनी क़यामत ढाती सुंदरता का रसपान करने के बाद डिंपल ने पैंटी उपर कर ली. फिर पलट कर बिस्तर तक आई. कुछ देर बिस्तर पर बैठ कर सोचती रही कि उसे अजित के पास जाना चाहिए या नही. अंत में उसने अजित के पास जाने का निश्चय किया. डिंपल ने सिरहाने में रखी चादर उठाई और अपने बदन से लपेट ली. फिर उसने घड़ी पर नज़र डाली १२:३० होने को थे. वह धीरे से कमरे से बाहर निकली. गॅलरी में आकर उसने नज़र दौड़ाई. गॅलरी सुनसान थी. वो अपने कमरे का दरवाज़ा भिड़ाया और दबे कदमों से अजित के रूम की तरफ बढ़ गयी. उसे पूरी उम्मीद थी कि अजित इस वक़्त जाग रहा होगा. उसने अपने बढ़ते कदम अजित के कमरे के बाहर रोके. फिर धीरे से दरवाज़े पर दस्तक दी. कुछ देर बाद अंदर से अजित की आवाज़ आई - "कौन है?"

" मैं हूँ डिंपल .... दरवाज़ा खोलो ." डिंपल धीरे से बोली .

कुछ देर बाद अजित ने दरवाज़ा खोला और हैरानी से डिंपल को देखा - "तुम...मेरा मतलब आप.... इस वक़्त?"

" अंदर आने के लिए नही कहेंगे ." डिंपल मुस्कुराते हुए बोली .

" आइए ." अजित दरवाज़े से एक ओर हट - ते हुए बोला .

डिंपल कमरे के अंदर दाखिल हुई और सोफे पर जाकर बैठ गयी. अजित उसके सामने जाकर खड़ा हो गया और सवालिया नज़रों से डिंपल की ओर देखने लगा. उसने अपने दिमाग़ की सारी खिड़कियाँ खोल दी और ये सोचने में लगा कि आख़िर डिंपल इतनी रात गये उसके कमरे में ऐसा रूप धर कर क्यों आई है?. लेकिन लाख दिमागी घोड़े दौड़ाने के

बाद भी उसके समझ में कुछ ना आया उसने डिंपल को देखा. डिंपल उसे ही देख रही थी, अजित को अपनी ओर आश्चर्य से देखते पाकर डिंपल मुस्कुराते हुए बोली - "दरवाज़ा बंद कर लीजिए."

" आप ने गर्मी की रात में चादर क्यों ओढ़ रखी है ?" अजित डिंपल की बात को अनसुना करते हुए उससे पुछा .

" असल में मैने अंदर पारदर्शी नाइटी पहन रखी है . और उन कपड़ों में मेरा आपके पास आना शायद आपको अच्छा नही लगता . इसलिए मैं ये चादर ओढकर रखी है ." ये कहकर डिंपल मुस्कुराइ और अजित को देखने लगी .

" ऐसी क्या बात थी कि आपको ऐसी हालत में इस वक़्त आना पड़ा ?" अजित ने आश्चर्य से पुछा . उसका चेहरा शांत था . हालाँकि डिंपल के मूह से ये सुनकर की उसने पारदर्शी कपड़े पहन रखे हैं , वह अचंभीत था . उसके अंदर का युवा दिल ज़ोरों से धड़का था . पर उसने डिंपल के सामने अपने भाव प्रकट नही होने दिए .

" कुछ खास नही , बस मुझे नींद नही आ रही थी तो सोचा थोड़ी देर आपसे बाते कर लूँ ." डिंपल धीरे से मुस्कुराकर बोली -" मुझे पता था कि आप भी जाग रहे होंगे ."

" मैं जाग रहा हूँ ये आप कैसे जानती थी ?" रवी ने सवाल किया .

" मेरा इस घर में जन्म हुआ है , बचपन भी यहीं बीता है , सभी लोग मुझे जानते हैं , मैं सबको पहचानती हूँ , फिर भी मेरा मन यहाँ नही लग रहा है . खुद को अकेली सी महसूस करती हूँ . दिन तो कैसे भी कट जाता है , पर रात मुश्किल हो जाती है , पूरी रात जागते में गुजरती है ." वह कुछ देर के लिए रुकी , फिर मुस्कुराते हुए बोली -" जब मेरी ऐसी हालत है तो फिर आप तो यहाँ पर अजनबी हैं . आपको भला कैसे नींद आ सकती है ."

" मेरे जागने का कारण कुछ और है डिंपल जी ." अजित गंभीर स्वर में बोला - " मैं आपकी माताजी के बारे में सोच रहा था ."

" ओह्ह ...!" मा के बारे में सुनकर डिंपल का चेहरा लटक गया - " तो फिर शायद मैं आपको डिस्टर्ब कर रही हूँ ."

" नही ऐसा भी नही है ." अजित झेंपते हुए बोला . और डिंपल की ओर देखने लगा . उसकी समझ में नही आ रहा था कि वो डिंपल से क्या कहे . उसका इस वक़्त उसके कमरे में होने से उसे बहुत घबराहट हो रही थी . वो एक सभ्य इंसान था , उसे अपना मान सम्मान बहुत प्यारा था . वो नही चाहता था कि कोई डिंपल को इस वक़्त उसके कमरे में देखे और खा - मखा उसकी इज़्ज़त की धज्जिया उड़े . पर वो सीधे मूह डिंपल को जाने के लिए भी नही कह सकता था . ऐसा करना आचरण के खिलाफ था .

डिंपल सर झुकाए अपनी सोच में गुम थी. उसे भी समझ में नही आ रहा था कि वो अजित से असली बात कैसे कहे. वैसे तो वो बहुत खुले स्वभाव की थी, किसी को कुछ कहने में ज़रा भी नही हिचकिचाती थी. पर यहाँ बात और थी. एक तो वो अजित की शालीनता से डर रही थी, दूसरी ये कि वो इस वक़्त अपने ही घर में थी. उसकी एक ग़लती उसे उसी के घर में अपमानित कर सकती थी.

" आपके घर में कौन कौन हैं ?" डिंपल को कुछ ना सूझा तो उसके परिवार के बारे में पूछ बैठी .

" मेरी मा और मैं ." अजित हौले से मुस्कुराया .

" और आपकी बीवी ?" डिंपल अपनी नज़रें उसके चेहरे पर गढ़ाती हुई बोली .

" बीवी अभी तक आई नही . अर्थात मैने अभी तक शादी नही की "

" ह्म्म्म .... तो महाशय अभी तक गर्लफ्रेंड से ही काम चला रहे हैं ." डिंपल छेड़खानी वाले अंदाज़ में बोली , लेकिन उसकी बातों में कामुकता का मिश्रण था .

अजित डिंपल की स्पष्टवदिता से चौंक उठा. उसे अंदाज़ा नही था कि डिंपल इतनी फ्रँक बात कर सकती है. वो झेंपते हुए बोला - "मेरी कोई गर्लफ्रेंड नही है."

" क ... क्या ?" डिंपल का मूह भाड़ सा खुला . हालाँकि ये जानकार उसके मन में हज़ारों लड्डू फूटे थे . पर चौंकने का नाटक करती हुई बोली - " मैं नही मानती . आप इतने खूबसूरत है , आपकी कोई ना कोई गेर्ल फ्रेंड तो ज़रूर होगी . हां .... आप मुझे ना बताना चाहें तो बात और है ."

" भला आपसे झूठ बोलकर मुझे क्या मिलेगा ?" अजित ने जवाब दिया .

" हो सकता है , आप इसी बहाने मुझसे बचना चाहते हों ." डिंपल असली विषय पर आती हुई बोली .

" म .... मैं कुछ समझा नही ." अजित हकलाया . - " मैं भला आप से क्यो बचना चाहूँगा ? और फिर ... किस लिए ?"

" तो आप मुझसे बचना नही चाहते ?" डिंपल उसकी आँखों में देखती हुई बोली -" तो फिर इतनी दूर क्यों खड़े हैं ? यहाँ मेरे पास आकर बैठिए ."

अजित का दिमाग़ चकरा गया. उसे कुछ भी जवाब देते नही बना. - "डिंपल जी आप क्या बोल रही हैं मेरे समझ में कुछ भी नही आ रहा है. आप जो भी कहना चाहती हैं साफ साफ कहिए."

" इतने भोले मत बनिये अजित जी ." डिंपल खड़ी होती हुई बोली - " क्या आप इतना भी नही समझ सकते कि मैं इस वक़्त यहाँ क्यों आई हूँ ? लेकिन अगर आप साफ साफ ही सुनना चाहते हैं तो सुनिए ." डिंपल ये बोलते हुए अपने तन पे लिपटी चादर एक झटके में उतार कर फेंकी दी - " मैं आपके साथ सेक्स करना चाहती हूँ ."

अजित अवाक ! वो फटी फटी आँखों से डिंपल को देखता रहा. उसने सपने में भी नही सोचा था कि ये लड़की इतनी बेशर्मी के साथ उसके साथ सेक्स करने की बात कर सकती है. उसकी नज़रें उसके चेहरे से फिसल कर नीचे उतरी. उसकी नज़रें डिंपल के स्तन पर पड़ी तो उसके बदन पर चीटिंयां सी रेंग उठी. डिंपल के पारदर्शी लिबास में कुछ भी नही छीप रहा था. उपर का सारा हिस्सा स्पष्ट दिखाई दे रहा था. उसने अंदर ब्रा भी नही पहनी थी. उसके तने हुए स्तन और उसके उपर भूरे रंग के स्तानाग्र साफ दिखाई दे रहे थे. नाइटी इतनी छोटी थी कि सिर्फ़ कमर को ढँक पा रही थी, पर वो ढँकना ना ढँकना एक जैसा ही

था. उसकी पैंटी नाइटी के अंदर से भी साफ दिखाई दे रही थी. अजित की निगाहें उसकी फूली हुई योनी पर पड़ी तो मूह से "आहह" निकलते निकलते बची. उसकी भारी भारी जांघे अजित के अंदर छुपी उसकी युवा भावनाओ को हवा दे रही थी. उसने अपने अंदर कुछ पिघलता सा महसूस किया. उसके कानो की धमनियों से गरम धुआ सा निकलने लगा. उसे अपने पावं की शक्ति कम होती महसूस हुई. इससे पहले कि वो चक्कर खाकर गिर पड़े. उसने अपना चेहरा घुमा लिया. और धीरे से चलते हुए अपने बिस्तर तक पहुँचा और धम्म से बैठ गया.

" क्या हुआ अजित जी ? डिंपल उसके पास आकर बोली .

डिंपल की आवाज़ से अजित ने गर्दन उठाई, उसकी नज़रें डिंपल के नज़रों से मिली. उसकी आँखें नशे की खुमारी से भरी हुई थी. डिंपल उसे देखती हुई अपने एक हाथ से अपनी जाँघो को सहलाने लगी तो दूसरी हाथ को अपने स्तन पर फिराने लगी.

अजित के माथे से पसीना छूट पड़ा. उसका लिंग पाजामे के अंदर से ही फुफ्करे मारने लगा. उसने अपनी निगाहें झुका ली.

" क्या हुआ अजित ? क्यों मुझसे नज़रें चुरा रहे हो ? क्या मैं अच्छी नही लगती आपको ? आप ध्यान से देखो अजित , मेरे अंग अंग में हुस्न भरा हुआ है . मेरे स्तन को देखो , ये कितने कड़क हैं . इन्हे छूकर हाथ लगाकर इसकी कठोरता को महसूस करो अजित ." डिंपल बोली और अजित का हाथ पकड़कर अपने स्तन पर रखना चाही . पर अजित ने अपना हाथ झटक लिया .

" तुम यहाँ से जाओ डिंपल . तुम इस वक़्त होश में नही हो . हम सुबह बात करेंगे ." अजित उसकी ओर से मूह फेरकर बोला .

डिंपल को उसकी बेरूख़ी पर तेज गुस्सा आया पर वो अपने गुस्से को पी गयी. वो आगे बढ़ी और उसके पीठ से लिपट गयी. - "अजित मुझसे मूह ना मोडो, एक लड़की अपनी लोक लाज उतार कर जब किसी मर्द के पास आती है तब वो बहुत मजबूर होकर आती है. ऐसी दशा में उस मर्द के लिए ये ज़रूरी हो जाता है कि वो उसके भावनाओ की लाज रखे. क्या तुम मेरा प्रेम प्रस्ताव को ठुकराकर मेरा अपमान करना चाहते हो?"

" ये प्रेम नही वासना है ." अजित एक झटके से अलग होता हुआ बोला -" तुम जिसे प्रेम कह रही हो वो प्रेम नही , प्रेम और वासना में बहुत अंतर है ."

डिंपल का पारा चढ़ा, वो बिफर कर बोली - "क्या अंतर है?"

" प्रेम और वासना में ये अंतर है कि प्रेम त्याग चाहता है और वासना पूर्ति ." अजित ने जवाब दिया . " प्रेम दो शरीरों के मिलन के बिना भी पूरा होता है , लेकिन वासना दो शरीरों के मिलन के बाद पूरी होती है . पर शायद तुम इस फ़र्क को नही समझ सकोगी . लेकिन मैं इस फ़र्क को समझता हूँ . इसलिए मैं कोई भी ऐसा काम नही करूँगा . जिससे कि बाद में मुझे खुद से शर्मसार होना पड़े ."

अजित की बातें डिंपल को अपने दिल में शूल की तरह चुभती महसूस हुई. अजित के बातें उसके रोम रोम को सुलगाती चली गयी. उसका ऐसा अपमान आज तक किसी ने नही किया था. अपमान तो बहुत दूर की बात है, आज तक किसी में डिंपल को इनकार करने की भी हिम्मत नही हुई थी.

डिंपल कुछ ना बोली, अजित ने उसे कुछ भी बोलने लायक छोड़ा ही नही था. वो बस खड़ी खड़ी कुछ देर अजित को जलती आँखों से घुरती रही, फिर एकदम से पलटी और दरवाज़े से बाहर निकल गयी. उसने ज़मीन पर पड़ी अपनी चादर भी नही उठाई. उसे ऐसी हालत में बाहर निकलते देख अजित सकपकाया. पर वो कुछ कहता उससे पहले ही डिंपल उसके कमरे से बाहर जा चुकी थी. वो उसी हालत में बेधड़क गलियारे से गुजरती हुई अपने रूम में पहुँची. रूम में घुसते ही वो बिस्तर पर गिरी और फुट फुट कर रोने लगी. उसका रोना भी लाजिमी था. उसने अपने जीवन में कभी भी हार नही देखी थी. लेकिन आज वह हारी थी. आज वो पहली बार अपनी मर्यादा से गिरकर किसी के आगे दामन फैलाई थी. पर उसे निराशा और अपमान के सिवा कुछ ना मिला था. वो अपमानित हुई थी. अजित ने उसके अंदर की औरत का अपमान किया था. वासना में जलती औरत का जब कोई निरादर करता है तो वो औरत घायल शेरनी से भी अधिक ख़तरनाक हो जाती है. वो उस साँप की तरह होती है जिसकी पुंछ पर किसी आदमी का पावं पड़ गया हो. वो जब तक अपनी पुंछ पर पावं धरने वाले को डस नही लेती उसे सुकून नही मिलता. ऐसी औरत बदले की भावना में जितना दूसरे का नुकसान करती है उससे कहीं ज़्यादा अपना नुकसान कर लेती है.

डिंपल कुछ देर बिस्तर पर मूह छिपाये रोती रही. फिर अपना गम हल्का करने के बाद उठी और आईने के सामने जाकर खड़ी हो गयी. उसने आईने में खुद को देखा. सब कुछ वैसा ही

था. वही सुंदर शरीर, पहाड़ की तरह सर उठाए उसके उन्नत शिखर, वही समतल चिकना पेट, वही हज़ारो दिलों को पर बिजलियाँ गिराने वाली कमर, वही पैंटी में फूली हुई योनी, वही गोरी गोरी सुडोल जांघे. पर इस वक़्त उसे उसकी सुंदरता, उसके एक एक अंग सब उसे मूह चिढ़ाती नज़र आई. उसकी आँखों से फिर से शोले बुलंद होने लगे. अजित की बातें फिर से उसकी कानो में ज़हर घोलने लगी. वह मुट्ठियां भिचती हुई अपने आप में बड़बड़ाई - "मिस्टर अजित, अगर मैने तुम्हे अपने कदमो में नही झुकाया तो मैं ठाकुर की बेटी नही. मैं तुम्हे इतना मजबूर कर दूँगी कि तुम खुद चलकर मेरी पनाह में आओगे. ये डिंपल की ज़िद है. तुम्हे झुकना ही होगा." उसके इरादे फौलाद की तरह मजबूत थे. वह घूमी और बिस्तर पर पसर गयी. और चादर ओढकर सोने का प्रयास करने लगी.

डिंपल के जाने के बाद अजित ने दरवाज़ा बंद किया और बिस्तर में घुस गया. फिर अपनी आँखें बंद करके सोने का प्रयास करने लगा. आँखें बंद होते ही आँखों के सामने डिंपल का शोले बरसाता शरीर नाच उठा. उसके शरीर के अंगो से निकलती यौवन चिंगारियों की तपिश उसे फिर से झुलसाने लगी. उसके धमनियों में बहता लहू फिर से गरम होने लगा. अजित ने बेशक डिंपल का प्रस्ताव ठुकरा दिया था पर वो उसकी सुंदरता के सम्मनोहरसे नही बच पाया था. वो मजबूत इरादो वाला व्यक्ति था. पर ये भी सच था कि आज उसने जो कुछ देखा था वो उसके लिए बिल्कुल नया था. अजित ने अपने पूरे जीवन में कामवासना में जलती ऐसी लड़की नही देखी थी. क्या वास्तव में आज की लड़कियाँ ऐसी ही होती है. जो माता पिता की परवाह किए बिना किसी के भी सामने अपने कपड़े उतारने में उतावली रहती हैं. वैसे तो अजित मनोचिकित्सक था पर लड़कियों के प्रति उसका ज्ञान कोरा था.

वजह थी उसका शर्मीला स्वभाव....और मा की कड़ी नसीहत! उसकी मा की इच्छा थी कि वो डॉक्टर बने, वो एक साधारण परिवार का होने के बावज़ूद भी उसकी मा ने उसकी पढ़ाई में कोई कमी नही होने दी थी. उसके पिता....जब वो ५ साल का था तभी काम के सिलसिले में बेवतन हुए थे जो अभी तक लौटकर घर नही आए थे. ईश्वर जाने उसके पिता अब ज़िंदा भी हैं या नही. उसकी मा ने खुद लाख दुख उठाकर उसे किसी चीज़ की कमी नही होने दी थी. उसने भी बचपन से ही यह तय कर लिया था कि वो अपनी मा का सपना पूरा करेगा. यही वजह थी कि जब कभी उसके पास से कोई लड़की गुजरती तो वह अपनी आँखें फेर लेता था, कॉलेज की सेक्सी और दिलफेंक लड़कियों को देखकर अपनी निगाहें नीचे कर लेता था. किशोरवस्था तक पहुँचते पहुँचते वह इतना दब्बु स्वभाव का हो गया था कि अगर कोई लड़की उसे पुकार लेती तो उसके पसीने छूट पड़ते थे. हाथ पावं ऐसे फूल जाते थे जैसे उसे किसी योद्धा ने युद्ध के लिए ललकारा हो. उसके इस स्वभाव के कारण उसके दोस्त उसे बहुत चिढ़ाते थे, अपने प्रेम के रस भरे किस्से सुना सुना कर उसे छेड़ते थे. अजित जब अपने दोस्तों के मूह से उनके प्रेम के किस्से सुनता तो उसका मन भी किसी

हसीन लड़की को अपना बना लेने का करता, तब उसका मन भी मचल कर उससे कहता कि तू भी कोई गर्लफ्रेंड बना ले. उस स्थिति में उसकी मा की बाते उसके पावं की बेड़िया बन जाती. वह अपने सीने में उठते अरमानो को अपनी मा के दुखों का ख्याल करके उनपर अंकुश लगा देता. वो किताबी कीड़ा था अपनी तन्हाई को किताबों से दूर करता वही उसकी महबूबा थी. उसने प्यार मोहब्बत के किस्से बहुत पढ़े थे, सेक्स और वासना के किस्से भी दोस्तों से सुन रखे थे. पर डिंपल जैसी लड़की के बारे में ना तो उसने कहीं पढ़ा था और ना ही किसी दोस्त ने उसे बताया था. वो अलग थी.....सबसे अलग !

अजित अपने जीवन में कभी भी विचलित नही हुआ था, उसका दिमाग़ बहुत मजबूत था, पर आज डिंपल ने उसे विचलित कर दिया था. अब उसके दिमाग़ में एक ही प्रश्न घूम रहा था. -"अब उसे क्या करना चाहिए? डिंपल जैसी लड़की शांति से बैठने वाली लड़की नही है, वो फिर प्रयास करेगी, या फिर अपने अपमान का बदला उसे अपमानित करके लेगी. ऐसी स्थिति में उसके बचाव के दो ही विकल्प रह गये थे, या तो वो सारा सच ठाकुर को बता दे ये फिर वो चुप चाप यहाँ से काम छोड़ कर चला जाए. पहला विकल्प उसे घृणित जान पड़ा, डिंपल की असलियत बताकर वो ठाकुर साहब को जीतेज़ी मारना नही चाहता था, वैसे भी शारदा देवी के गम में वे आधे मर चुके थे, अब डिंपल की करतूतों को जानकार तो उस भले इंसान का दम ही निकल जाएगा. अब दूसरा विकल्प था हवेली छोड़ कर जाने का. लेकिन यहाँ से जाने का अर्थ था अपनी डॉक्टरी पेशे का अपमान करना, उसने ठाकुर साहब को वचन दिया था कि वो उनकी पत्नी शारदा को ठीक किए बिना यहाँ से नही जाएगा. ठाकुर साहब पिछले २० वर्षो से इसी आस में जी रहे थे कि कोई डॉक्टर उनकी पत्नी को ठीक कर दे, कितने डॉक्टर्स आए और पैसे खाकर चले गये, वो अपनी गिनती उन डॉक्टर्स में नही करना चाहता था. ठाकुर साहब अजित पर बहुत आस लगाए बैठे थे. अब जो भी हो वो यहीं रहेगा, सिर्फ़ एक लड़की उसकी ज़िंदगी का फ़ैसला नही कर सकती, वो भी एक चरित्रहीन लड़की. हरगिज़ नही!वो हवेली छोड़ कर नही जाएगा, रही बात डिंपल की तो चाहें वो अपने हुस्न की लाखो बिजलियाँ गिरा ले, चाहें वो निर्वस्त्र ही उसके सामने क्यों ना बिच्छ जाए, वो नही हिलेगा. उसने अपने इरादों को मजबूत किया और चादर तानकर सोने का असफल प्रयत्न करने लगा.

६

अगली सुबह अजित अपने नियमित टाइम पर सोकर उठा, वो नहाने के बाद लगभग १० बजे शारदा देवी के कमरे में जूस और दवाइयाँ लेकर गया. ये उसका रोज़ का काम था, उसे दिन में दो बार शारदा देवी को दवाइयाँ और जूस देना रहता था, एक १० बजे सुबह और दूसरी दफ़ा रात को ९ बजे. इस वक़्त डिंपल भी उसके साथ होती थी. आज भी अजित और डिंपल शारदा देवी के कमरे में गये, पर दोनो इस बार एक दूसरे से दूर दूर ही रहे, हां शारदा देवी के सामने अजित डिंपल को अपने पास आने से नही रोक सका. वहाँ वह जब तक रहा डिंपल उसके साथ चिपकी रही. शारदा देवी के कमरे में डिंपल कभी अपना सर अजित के कंधे पर रख देती तो कभी अपने स्तन अजित की बाहों से रगड़ने लगती, तो कभी हस्ते हुए उसकी आँखों में ऐसी भूखी नज़रों से देखती कि अजित की रोंगटे खड़े हो जाते. किसी तरह से वह काम निपटा और अजित अपने कमरे में आया. उसका दिमाग़ भन्ना गया था. दिन भर अपने रूम में पड़ा पड़ा डिंपल के बारे में ही सोचता रहा. पर वो जितना डिंपल के बारे में सोचता उसका दिमाग़ और खराब होने लगता.

लगभग ३ बजे वो हवेली से बाहर निकला. उस वक़्त धूप बहुत तेज़ थी, लेकिन अजित हवेली से बाहर रहकर डिंपल के ख्यालों से पिछा छुड़ाना चाहता था. उसने अपनी बाइक संभाली और पहाड़ियों की ओर निकल गया. घाटियों में पहुँचकर उसने अपनी बाइक रोकी और पैदल ही झरने की तरफ बढ़ गया. कुछ ही मिनिट में वो एक विशाल झरने के निकट खड़ा था. वो खड़े खड़े झील में गिरते झरने को देखने लगा. उसने सोचा यहाँ इतना अधिक शोर होकर भी कितनी शांति है. और हवेली में कोई शोर ना होकर भी मन को शांति नही. वो थोडा और आगे बढ़ा, उसका इरादा झील में गिरते पानी को देखने का था. क्योंकि वो जिस जगह खड़ा था वहाँ से झील की सतह नही दिख रही थी. उसने अपने कदम बढ़ाए. अभी वो दो कदम ही चला था कि उसके दाहिने और उसे किसी के होने का एहसाह हुआ. उसने अपनी गर्दन घुमाई तो उसे एक लड़की पत्थर पर बैठी दिखाई दी. लड़की का आधा शरीर पत्थरों की ओट में छिपा हुआ था. लड़की का सिर्फ़ बायां कंधा ही बाहर था. लेकिन तेज़ हवाओं के झोके से उसके लंबे बाल बार-बार उड़कर वहाँ पर किसी लड़की के होने का प्रमाण दे रहे थे. अजित उस लड़की को देखने की चाह लिए थोड़ा और आगे बढ़ा. अब वो उस लड़की से सिर्फ़ दस कदम पिछे खड़ा था. वहाँ से वो उसे साफ साफ देख सकता था. ना केवल देख सकता था बल्कि अब तो अजित ने उसे पहचान भी लिया था. ये कांचन थी. वो आज भी उसी लिबास में थी जिसे अजित ने उसे सबक सिखाने के लिए, उसके भाई की मदद से चुरा लिए थे. वो कुछ देर उसे देखता रहा, उसे अंदेशा था कि वो उसे पलटकर देखेगी, लेकिन नही, वो किसी गहरी सोच में लग रही थी उसकी आँखें गिरते झरने पर

टिकी हुई थी. सहसा अजित का माथा ठनका. कहीं ऐसा तो नही ये लड़की आत्महत्या करने आई हो. जिस तरह शहरों में बस और ट्रेन के नीचे लेटकर जान देने का रिवाज़ है, उसी तरह गांव में पहाड़ों से छलाँग मारकर और कुएँ में कूद कर जान देने का चलन भी है. अगले ही पल उसके दिमाग़ में सवाल उभरा -"लेकिन ये मरना क्यों चाहती है? इस उमर में ऐसा क्या हो गया कि ये जान देने को तैयार हो गयी. कहीं ऐसा तो नही कि मैने कल जो इसको बुरा भला कहा था उसी से दुखी होकर अपनी जान दे रही हो? होने को कुछ भी हो सकता है? ये गांव के लोग बड़े ज़ज़्बाती होते हैं. इससे पहले कि वो लड़की गहरी झील में समा जाए उसने पुकारा -"ए लड़की, तू मरना क्यों चाहती है?"

अजित की आवाज़ जैसे ही उसके कानो से टकराई, वो चौंकते हुए पलटी. उसके चेहरे पर गहरे दुख की परत चढ़ि हुई थी, आँखे इस क़दर लाल थी मानो वो रात भर सोई ही ना हो. अजित आश्चर्य से उसके चेहरे को देखता रहा.

" आप .....!" कांचन आश्चर्य से अजित को देखती हुई बोली , फिर धीरे से मुस्कुराइ , उसकी मुस्कुराहट भी दम तोड़ते इंसान की तरह थी . जिनमे पीड़ा के अतिरिक्त और कुछ भी ना था . वो आगे बोली - " मैं क्यों मरूँगी ? और आप क्यों चाहते हैं कि मैं मरूं ? क्या आप मुझसे इतनी घृणा करते हैं कि मुझे जीवित देखना भी पसंद नही करते ?"

कांचना की बातें व्यंग से भरी हुई थी. अजित तिलमिला गया. उसे तत्काल कोई उत्तर देते ना बना. वह हकलाते हुए बोला - "मेरा ये मतलब नही था, तुम झरने के इतनी निकट खड़ी थी कि मुझे ऐसा भ्रम हुआ कि तुम अपनी जान देना चाहती हो. आई एम सॉरी." अजित झेंपते हुए बोला.

" मैं इतनी कमजोर लड़की नही हूँ साहेब की किसी के तिरसकार से दुखी होकर अपनी जान दे दूं . मुझे अपनी ज़िंदगी से प्यार है ." कांचन दुखी मन से बोली और वहाँ से जान लगी .

अजित को कांचन की बातों में एक दर्द का एहसास हुआ, उसे ऐसा लगा जैसे वो अंदर ही अंदर सिसक रही हो. वैसे तो अजित निर्दोष था, पर जाने क्यों उसे ऐसा लगा कि कांचन के दुखों का वही ज़िम्मेदार है. उसे कांचन की बाते अपने दिल में चुभती सी लगी. वो कुछ देर खामोशी से उसे जाते हुए देखता रहा फिर पीछे से आवाज़ दिया - "सुनो..."

कांचन उसकी आवाज़ से रुकी, फिर धीरे से पलटी. अजित धीरे से चलकर उसके करीब पहुँचा. -"क्या हुआ? तुम इतनी उदास क्यों हो?"

अजित ने इतनी आत्मीयता से पुछा की कांचन भावुकता से भर गयी, जब किसी दुखी मन को कोई प्यार से दुलारता है तो उसके अपनेपन से उसके स्नेह से वो मन और भी भावुक हो जाता है. कांचन को अजित का यूँ आत्मीयता से पूछना उसे और भी भावुक कर गया. वो अपनी भावनाओ पर काबू ना पा सकी और उसकी आँखें भर आई. वो कुछ भी जवाब देने के बजाए बस गीली आँखों से अजित को देखती रही. वो कहती भी तो क्या? वो खुद भी तो नही जानती थी कि उसे क्या हुआ है. क्यों अचानक से उसकी दुनिया बदल गयी है, क्यों अब वो पहले की तरह हसती बोलती नही है, क्यों अब वो अकेले रहने में सुकून महसूस करने लगी है. क्यों उसका मन हरदम यही चाहता है कि वो कहीं अकेले में बैठकर सिर्फ़ अपने साहेब के बारे में सोचती रहे.

" अरे ..... ये क्या ?" अजित उसकी आँखों की कोरो पर चमक आए आँसू की बूँदो को देखकर बोला - " तुम रो रही हो ? अगर कोई समस्या है तो मुझे बताओ . क्या किसी ने कुछ कहा है ?"

" आप जाओ साहेब , आपको इससे क्या कि मैं रो रही हूँ कि हंस रही हूँ . मुझ ग़रीब के हँसने रोने से आपके सम्मान को कोई ठेस नही पहुँचने वाली ." कांचन रुन्वासि होकर बोली .

" अगर तुम कल की बात को लेकर दुखी हो तो प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो . लेकिन तुम खुद ही सोचो उस दिन हवेली में मेरे कपड़ों के साथ जो हुआ - क्या वो ठीक था ?"

कांचन कुछ ना बोली, बस भीगी पलकों से अजित को देखती रही और सोचती रही. -"साहेब मुझे ग़लत समझते हैं, उन्हे लगता है कि उनके कपड़े मैने जलाए हैं. मुझे अपराधिनी समझते हैं" कांचन के दिल में एक हुक सी उठी, इस एहसास से वो तड़प उठी, आख़िर कैसे बताए अपने साहेब को कि उस दिन हवेली में उसके कपड़े उसने नही जलाए थे. उसके कपड़ों को जलाने वाली डिंपल थी, वो तो बस डिंपल के दबाव में आकर उनके रूम में कपड़े रखने गयी थी. उसके होठ कुछ कहने के लिए हिले पर सिर्फ़ फड़फदा कर रह गये, बोल मूह से बाहर ना निकले.

" क्या तुम सच में इसी लिए दुखी हो कि कल नदी के किनारे मैने तुम्हे कुछ कड़वे बोल कहे थे ?" अजित उसे खामोश देखकर फिर से पुछा .

" नही साहेब .... उस दिन नदी में आपके मूह से निकले कड़वे बोल तो मुझे शहद से भी मीठे लगे थे , मैं तो इसलिए दुखी हूँ कि ..... मैं .... आप .... से ...!" वो इससे आगे ना बोल सकी , ये कहते कहते अचानक से उसके चेहरे का रंग तेज़ी से बदल गया था . जो चेहरा कुछ देर पहले दुख से पीला पड़ा हुआ था , वही चेहरा अब शर्म की लाली से लाल हो उठा था . वो फिर से ज़मीन ताकने लगी .

" मैं आप से क्या ?" अजित थोड़ा हैरान परेशान सा पुछा .

कांचन ने, अजित के पूछे जाने पर अपनी नज़रें उठकर उसके चेहरे पर टिका दी. वो एकटक अपनी बड़ी बड़ी आँखों से अजित को देखती रही. एक बार मन किया कि वो कह दे - "साहेब मैं आपसे प्यार करती हूँ, आपसे शादी करना चाहती हूँ. क्या आप मुझे अपनी दुल्हन बनाओगे? मैं दिन रात आपकी सेवा करूँगी, कभी कोई शिकायत का मौक़ा नही दूँगी. जैसे रखोगे मैं वैसी रह लूँगी. कभी कोई चीज़ नही माँगूंगी. जो दोगे वो रख लूँगी, जो पहनओगे पहन लूँगी. बस आप मेरे हो जाओ और मुझे अपना बना लो." लेकिन वो कह ना सकी -"जाइए...मैं नही बताती, आप बड़े वो हो." कांचन मचलकर बोली और तेज़ी से अपने घर के रास्ते मूड गयी और सरपट भागती चली गयी.

अजित ठगा सा उसे जाते हुए देखता रहा. उसके समझ में अब भी कुछ ना आया था. वो कुछ देर यूँही खड़े खड़े उसकी कही बातों पर सोचता रहा. फिर अपना सर खुजाता हुआ अपनी बाइक की ओर बढ़ गया. उसके दिमाग़ में अब डिंपल की जगह कांचन आ बसी थी.

कुछ देर में वो उस जगह पर आ गया जहाँ पर उसने अपनी बाइक खड़ी की थी, अभी वो बाइक से कुछ दूर ही था कि उसकी नज़र जैसे ही बाइक की ओर गयी उसके बढ़ते हुए कदम थम गये. उसके चेहरे पर उलझन की लकीरे खिंच गयी. उसकी बाइक पर एक देहाती आदमी बैठा हुआ था. उसके बदन पर काले रंग का कुर्ता था और कमर पर लूँगी लिपटी हुई थी. कद कोई ६ फीट के आस-पास होगा. छाती चौड़ी और बदन कसरती था, चेहरे पर बड़ी और घनी मूँछे थी. उसकी आयु कोई ३२-३३ साल के आस-पास रही होगी. वो बाइक पर बैठा हुआ था और उसकी नज़रें गांव के रास्ते पर टिकी हुई थी जैसे किसी की राह देख रहा हो या फिर किसी को जाते हुए देख रहा हो. उसने मूह में पान दबा रखा था. वो रास्ते की ओर देखते हुए बार बार ज़मीन पर पिचकारी छोड़ रहा था. ये बिरजू था. गांव

का सबसे छटा हुआ बदमाश, पैसे लेकर किसी के हाथ पावं तोड़ना, कमज़ोरो को धमकना, उसका पेशा था. वैसे वो औरतों का रसिया था. १८ साल की उमर से ही वो गांव की कुँवारी लड़कियों का रस चूस्ता आया था. गांव की कितनी ही लड़कियों और औरतों को वो अपनी टाँगो के नीचे लिटा चुका था. किसी को सपने दिखाकर तो किसी को बल पूर्वक, तो किसी को इतना मजबूर कर देता था कि वो खुद ही उसकी झोली में आ गिरती थी. गांव के लोग उससे दूर ही रहते थे, उसकी दोस्ती और दुश्मनी दोनो ही दूसरे लोगों के लिए नुकसानदेह थी. इसीलिए कोई उसके खिलाफ बोलने से कतराता था. और फिर उसके सर पर गांव के मुखिया का हाथ भी था. बिरजू उसके लिए काम करता था. वैसे तो मुखिया जी बहुत अच्छे इंसान थे, गांव में सभी से उनके मधुर संबंध थे, पर जाने क्यों वो बिरजू के खिलाफ कुछ भी सुनना पसंद नही करते थे. जब कभी वो बिरजू के खिलाफ गांव के किसी भी इंसान से कुछ सुनते तो उसी पर बरस पड़ते. गांव वाले अपना सा मूह लेकर रह जाते.

बिरजू पिछले १५ सालों में अनगिनत लड़कियों और औरतों का भोग लगा चुका था. लेकिन कुछ सालो से उसकी नज़र एक ही लड़की पर टिकी हुई थी, वो थी कांचन...! जब कभी वो उसके भरे-पूरे शरीर को झटके लेकर अपने पास से गुज़रते देखता, उसके अंदर का जानवर जाग उठता. उस वक़्त उसके मन में बस एक ही विचार आता - किसी भी तरह एक बार वो कांचन की सवारी कर ले. एक बार उसका गदराया शरीर भी भोग लगाने को मिल जाए. लेकिन कांचन के सपने देखना जितना आसान था उसे हासिल करना उतना ही मुश्किल था. कांचन बहुत ही अच्छी लड़की थी, वो जानता था कि राज़ी खुशी से वो कभी भी कांचन की जवानी का रस नही चूस सकता, और ज़बरदस्ती करने का मतलब था अपनी मौत को दावत देना. उसका बाप धनपाल अपने ज़माने में बिरजू से भी बड़ा गुंडा हुआ करता था. बिरजू ने तो अभी तक लोगों के सिर्फ़ हाथ पावं तोड़े थे, पर धनपाल ना जाने कितनी लाशे गिरा चुका था. लेकिन बिरजू के लिए कांचन तक पहुचने के रास्ते में यही एक काँटा नही था. अगर वो किसी तरह धनपाल को रास्ते से हटा भी देता तब भी उसका कांचन तक पहुँचना लगभग नामुमकिन था. वजह थी डिंपल, डिंपल की दोस्ती कांचन की ढाल थी. पूरे गांव के औरत मर्द में एक कांचन ही अकेली ऐसी थी जिसे हवेली में हर तरह का अधिकार हासिल था. वो नौकरों को आदेश दे सकती थी, जब तक चाहे हवेली में रह सकती थी, ठाकुर साहब उसे अपनी बेटी जैसी ही समझते थे. बिरजू जानता था कि कांचन के उपर हाथ धरने का सीधा सा अर्थ है ठाकुर के गिरेबान पर हाथ डालना. और ठाकुर के गिरेबान पर हाथ डालने का मतलब था उसकी मौत ! यही कारण था कि वो कांचन को बस दूर से ही देखकर अपनी प्यास बुझा लेता था. और फिर वो ये भी नही चाहता था कि ठाकुर उसकी असलियत जाने. अभी तक उसकी शिकायत ठाकुर साहब तक नही पहुँची थी. बिरजू के सताए लोग ये सोचकर की ठाकुर साहब २० वर्षो से खुद

दुखों में जी रहे हैं, उन्हे अपने दुख सुनकर उनके दुखों को और बढ़ाना ठीक नही है वे लोग खामोश होकर घर में बैठ जाते.

बिरजू वो मगरमच्छ बन गया था जो धीरे धीरे पूरे गाँव को सफाचाट करता जा रहा था. लेकिन जो बात कांचन में थी वो किसी में ना थी. वो हर रोज़ उसे हासिल करने का कोई ना कोई मंसूबा बनाता पर ठाकुर का विचार आते ही उसके सारे मंसूबे धरे के धरे रह जाते. आज जब उसने कांचन को अकेले इस तरह भटकते देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ. कांचन कभी भी अकेले इस तरह नही घूमती थी. लेकिन जब उसकी नज़र अजित की बाइक पर पड़ी तो उसकी जिज्ञासा और बढ़ गयी कि कांचन किसी से तो मिलने आई थी. वो वहीं बाइक पर बैठकर उस आदमी का इंतेज़ार करने लगा था. वो अभी भी उसी रास्ते की और देख रहा था जिस और से कांचन गयी थी.

जैसे ही उसकी गर्दन सीधी हुई उसकी दृष्टि अजित पर पड़ी. अजित को देखते ही वो अपने काले दाँत दिखा कर हंसा.

अजित लापरवाही से अपनी बाइक के पास पहुँचा. उसने एक सरसरी निगाह से बिरजू को उपर से नीचे तक देखा फिर बोला - "मैने आपको पहचाना नही. आपका परिचय?"

बिरजू अब भी उसकी बाइक पर बैठा रहा, उसने उठना ज़रूरी नही समझा. उसने अजित को देखा और पान की पिचकारी ज़मीन पर मारी, उसका अंदाज़ ऐसा था जैसे उसने अजित पर थुका हो. फिर बोला - "बाबू जी बिरजू नाम है मेरा." उसने मुछो को ताव दिया - "किशनगढ़ का बच्चा बच्चा मुझे जानता है. तीन गांव में मेरे जैसा कोई पहलवान नही."

" बहुत खुशी हुई आपसे मिलकर " अजित ने उत्तर दिया - " अब कृपया करके मेरी बाइक से उठेंगे ?"

" जी बिल्कुल .... ये लीजिए उठ गये ." वह मुस्कुराकर बोला - " मैं तो आपकी बाइक की रखवाली कर रहा था ."

" रखवाली ?" अजित ने आश्चर्य से उसे देखा .

" इस गांव में कुछ लुच्चे घूमते रहते हैं , मौक़ा मिलते ही दूसरो की चीज़ पर हाथ साफ कर देते हैं . आपको इस लिए बता रहा हूँ क्योंकि आप हवेली के मेहमान हो ."

" आपको कैसे मालूम कि मैं हवेली का मेहमान हूँ ?" अजित अपनी बाइक पर बैठते हुए बोला .

" क्या कहते हो बाबूजी , अरे इस गांव में कौन है जो आपको नही जानता ." उसकी बातों में हँसी थी . -" हवेली में कोई आदमी आए और लोगों को मालूम ना हो ऐसा कभी नही हुआ . इस गांव का हर इंसान जानता है कि आप डॉक्टर हो और ठकुराइन का इलाज़ करने आए हो ."

" ओह्ह्ह ....!" अजित के मूह से निकला .

" पर एक बात समझ में नही आई बाबूजी ." बिरजू ने अजित को चुभती नज़रों से घूरते हुए बोला - " आप हवेली में ठकुराइन का इलाज़ करने आए हो , पर यहाँ अकेले में हमारी गांव की लड़की के साथ क्या कर रहे थे ?"

अजित सकपकाया. उसकी समझ में नही आया कि वो क्या कहे, अचानक पुछे गये इस सवाल से उसके हाथ पावं फूल गये. -"देखिए मेरा कांचन से कोई वास्ता नही, मैं घूमने के लिए इधर आया हुआ था, संयोगवश मेरी उससे मुलाक़ात हो गयी."

" आपको कैसे मालूम कि उसका नाम कांचन है ." बिरजू की आवाज़ में पैनापन था .

अजित हड़बड़ा गया. डर की एक चिंगारी उसके शरीर में फैल गयी. उसका डर इसलिए नही था कि वो बिरजू से डर गया था. वो इस बात से डर रहा था कि कहीं उसकी वजह से कांचन गांव में बदनाम ना हो जाए. - "वह खुद बताई थी." अजित हकलाते हुए बोला.

" अरे साहेब आप ज़्यादा टेंशन मत लो , मैं तो मज़ाक कर रहा था ." बिरजू ने फिर से अपने गंदे दाँत दिखा दिए .

अजित भी उत्तर में मुस्कुराकर रह गया. फिर अपनी बाइक स्टार्ट करके हवेली के रास्ते मूड गया.

बिरजू उसे जाते हुए देखता रहा. उसे अजित पर संदेह सा हो रहा था. उसे इस बात की चिंता हो रही थी कि, जिस लड़की को हासिल करने के लिए वो सालो से तड़प रहा है, उसे एक परदेशी ना हासिल कर ले. इस एहसास ने उसके मन का सुकून छीन लिया था कि कुछ देर पहले कांचन इस सुनसान जगह में उस शहरी के साथ अकेली थी. उसका मन तरह तरह की कल्पनाएं करके उसे डराए जा रहा था. उस डॉक्टर ने कांचन के साथ क्या क्या किया होगा, कहीं ऐसा तो नही की कांचन उसके झाँसे में आ गयी हो और अपना जिस्म उसे भोगने के लिए दे दिया हो. इन गांव की भोली लड़कियों का भरोसा नही, शहर के चिकने लोगो को बहुत जल्दी अपना दिल दे देती है. अगर ऐसा हुआ होगा तो मैं उन दोनो को जान से मार डालूँगा, मेरे होते कांचन की जवानी का रस कोई दूसरा नही पी सकता. मुझे तत्काल कुछ करना होगा.

वह सोचता रहा. अजित के बारे में अभी वो कुछ नही कर सकता था. हो सकता है कि अजित ठीक कह रहा हो, बिना सबूत के वो अजित पर हाथ नही धर सकता था. वो कुछ देर सोचता रहा फिर तेज़ी से मुखिया के घर की तरफ बढ़ गया. उसने सोच लिया था कि उसे क्या करना है. अब चाहें कुछ भी हो जाए. वो कांचन को हासिल करके रहेगा.

कुछ ही देर में बिरजू मुखिया के घर में था. इस वक़्त घर में सिर्फ़ मुखिया लाला राई की पत्नी वंदना थी. उसकी उम्र ३५ साल के आस-पास होगी. वंदना बेहद आकर्षक और खूबसूरत महिला थी. ३५ की उमर में भी वो ३० से अधिक की नही लगती थी. बस शरीर थोड़ा भारी था. बिरजू को देखते ही उसकी आँखों की चमक बढ़ गयी. - "आओ राजा....आज पूरे चार दिन बाद आए हो, कहाँ कहाँ मूह मारते फिर रहे हो आजकल?"

बिरजू ने वंदना के करीब जाकर उसे अपने गोद में उठा लिया और सीधा बेडरूम में घुस गया. बिस्तर पर पटकते ही उसके बड़े बड़े स्तन को मसलना शुरू कर दिया. -"क्या कर रहे हो ज़ालिम? क्या आज जान लेने के इरादे से आए हो?" वंदना कराह कर बोली.

पर बिरजू के मन में गुस्सा सवार था. उसे ऐसा लग रहा था कि उसके सामने वंदना ना होकर कांचन लेटी हुई है, और वो उसे इस बात की सज़ा दे रहा है कि उसने किसी शहरी को अपना यार क्यों बनाया.

वह तेज़ी से वंदना को नंगा करता चला गया. उसके बदन से एक एक कपड़ा नोचने के बाद बिरजू उसके स्तन पर टूट पड़ा वो उसके स्तन को बुरी तरह चूसने मसलने लगा. वंदना को शुरू शुरू में दर्द हुआ पर अब धीरे धीरे उसे अच्छा लगने लगा. उसे बिरजू की आक्रामकता

आज एक अलग ही मज़ा दे रही थी. उसकी एक एक हरकत से वो चीख उठती थी. उसका बदन बड़ी तेज़ी से पिघलता जा रहा था. उसकी योनि पानी छोड़ने लगी थी. बिरजू उसके स्तन को चूसना छोड़ उसकी जाँघो तक आया और उसकी जाँघ को चूमने चाटने लगा. वंदना के मूह से कामुक आहें निकलने लगी. - "उफ़फ्फ़....आहह क्या कर रहे हो बिरजू? क्या हो गया है तुम्हे?"

बिरजू कुछ ना बोला अब उसने अपनी जीभ उसकी रस बरसाती योनि पर रख दी, और उसकी मलाई चाटने लगा. वंदना का शरीर धू-धू करके जलने लगा. वंदना भी आज कुछ ज़्यादा ही कामुक सिसकारियाँ निकाल रही थी. बिरजू कुछ देर उसकी योनि चाट लेने के बाद खड़ा हुआ और अपने कपड़े उतारने लगा.

वंदना बिस्तर पर उठ बैठी, और बलिहारी हो जाने वाली नज़रों से बिरजू को देखती रही, उसका फौलादी शरीर देखकर वो हमेशा ऐसी ही मस्त हो जाया करती थी. बिरजू के कपड़े उतरते ही उसने उसका लिंग पकड़ लिया और सहलाने लगी. नर्म गर्म हाथों का स्पर्श पाकर उसका मर्दाना अंग फड़कने लगा. बिरजू देर ना करते हुए वंदना को बिस्तर पर गिराया, फिर उसकी टांगे चौड़ी करके अपना अंग-प्रहरी उसकी योनि द्वार पर टिका कर एक तेज़ धक्के के साथ उसकी गहराइयों में उतार दिया.

" आअहह ....." वंदना के मूह से दबी दबी सी चीख निकली .

बिरजू ने उसकी दोनो टाँगो को पकड़ा और अपनी कमर का तेज़ धक्का देना शुरू कर दिया. उसका हर धक्का इतना शक्तिशाली होता था कि वंदना उसके हर धक्के से उपर सरक जाती थी.

लगभग १५ मिनिट उसकी सवारी करने के बाद बिरजू हाफ्ता हुआ उसके उपर गिरा.

वंदना उसे अपनी बाहों में भिचकर चूमने लगी. यूँ तो उसका और बिरजू का १५ वर्षों का संबंध था. पर आज जो उसने मज़ा दिया था, ऐसा मज़ा उसे आज से पहले कभी नही मिला था. वो बिरजू के बालों पर हाथ फेरते हुए उन पलो में खो गयी, जब वो दुल्हन बनकर इस घर में आई थी. उस वक़्त वो २० साल की थी.शादी से पहले ही वो अनेको मर्दो से जवानी के मज़े लूट चुकी थी.

धनपत जी की ये दूसरी शादी थी, उस वक़्त उनकी उमर ३५ के आस-पास होगी, पहली पत्नी से उनको एक लड़की थी. जिसका नाम धनपत जी ने पायल रखा था. तब वो ५ साल की थी.

धनपत जी के घर में आते ही पहली ही रात को वंदना को ये एहसास हो गया था कि उसके पति में वो दम नही है जिसकी वो आदि हो चुकी थी, कुछ दिन तक तो वो शांत रही फिर अपनी नज़रें इधक़र उधर दौड़ने लगी. और एक दिन बिरजू पर ठहर गयी. बिरजू उस वक़्त १८ साल का था. उसका कसरती बदन शुरू से ही महिलाओं को आकर्षित करता था. वंदना ने उसे देखा तो उसके उपर डोरे डालने लगी, और एक दिन अकेले अपने घर में पाकर उसपर चढ़ बैठी. बिरजू को तो जैसे मूह माँगी मुराद मिल गयी हो, उसने जमकर उसकी चढ़ाई की, उस एक चढ़ाई ने वंदना को बिरजू का गुलाम बना दिया. उस दिन के बाद ये सिलसिला चल पड़ा.

एक दिन इन दोनो को मुखिया ने रंगे हाथों पकड़ लिया. बिरजू तो डर गया , पर वंदना उल्टे मुखिया पर बरस पड़ी. उसे धमकी दी कि अगर उसने बिरजू को यहाँ आने से रोका तो वो पूर गांव में हल्ला कर देगी कि वो नामार्द है. उसकी बाते सुनकर मुखिया के होश उड़ गये. उन्होने सोचा भी नही था कि जिस औरत को अपना मान सम्मान बनाकर अपने घर ले जा रहे हैं वही औरत एक दिन उनके साथ ऐसा भी कर सकती है. वो विवशता के आँसू पीकर रह गये. वो नारी स्वभाव से परिचीत हो गये थे, वो जान गये थे कि ये औरत अपनी काम वासना शांत करने के लिए कुछ भी कर सकती है. कुछ लोगों को अपनी इज़्ज़त अपनी जान से प्यारी होती है, मुखिया भी उन्ही लोगों में से एक थे. उन्होने उस दिन से उसे उसके हाल पर छोड़ दिया. तब से लेकर आज तक बिरजू उनकी पत्नी के साथ चिपका हुआ था. और वंदना के ज़रिए ना जाने कितनी औरतों को लूट चुका था.

वंदना कुछ देर बिरजू के बालों को सहलाती रही फिर बोली - "आज तुम्हे क्या हो गया था रे? एक दम जानवर बन गये थे."

बिरजू बिस्तर पर उठ बैठा और उसके चेहरे को दोनो हाथों से भरकर चूम लिया - "तुम्हे बुरा लगा क्या? अगर ऐसी बात है तो फिर ऐसा नही करूँगा."

वंदना को आश्चर्या हुआ. उसने कभी बिरजू को इतना मीठा बोलते नही सुना था. वो बिरजू को चूमती हुई बोली - "नही राजा मुझे बुरा नही लगा. बल्कि आज तो मुझे वो मज़ा मिला है जो आज से पहले कभी ना मिला था."

" तू चाहती है कि मैं तुम्हे रोज़ ऐसे ही मज़ा दूँ ?" बिरजू उसके स्तन सहलाता हुआ बोला .

" ये भी पूछने की बात है ? मैं तो इस मज़े के लिए कुछ भी कर सकती हूँ ."

" सच कह रही है ?" बिरजू ने उसे टटोला . -" कहीं मुकर गयी तो ?

" जान दे दूँगी , पर इनकार नही करूँगी , बोल के तो देख ." वंदना मचल कर बोली .

" तो फिर सुन .... मुझे कांचन को अपने नीचे लेना है , लेकिन वो प्यार से मानने वाली लड़की नही है , हमें चालाकी और धोखे से काम करना होगा . लेकिन इसके साथ एक और काम हमें करना पड़ेगा . कांचन की बुआ शांता को अपने झाँसे में लेना होगा . अगर वो हमारे हाथ लग गयी तो समझ लो मुझे कांचन मिल गयी . तुम्हे शांता को अपने झाँसे में लेना है ..... कैसे ये तुम जानो . मैं सिर्फ़ इतना बता दूं इस काम के लिए तुम्हारे पास समय बहुत कम है ."

" कांचन का ख्याल छोड़ दे बिरजू , वो तेरे हाथ आने वाली नही है ."

" तू वो कर जो मैने कहा है " बिरजू गुस्से में बोला - " मैं उसे किसी भी कीमत में हासिल करके रहूँगा . मेरे होते कोई और उसका रस पीए .... ये मुझे मंज़ूर नही . अगर वो मेरी ना हुई तो किसी की भी ना होगी ."

" ठीक है राजा , मैं अपना काम कर दूँगी ." वो मुस्कुराकर बोली . और बिरजू को अपने उपर खींचकर गिरा दी .

वे दोनो फिर से एक दूसरे में समाते चले गये.

७

कांचन इस वक़्त अपने घर में चारपाई पर उकड़ू बैठी हुई है. वो उन लम्हो में डूबी है, जब झरने के पास अजित से मिली थी. उसकी मस्तिष्क में अजित के आत्मीयता से कहे गये शब्द घूम रहे हैं, उन्ही बातों को याद करके कभी उसके होठ मुस्कुरा उठते तो कभो वो उदास हो जाती.

वो सोच रही थी - आज कितना अच्छा मौक़ा था....साहेब से अपने दिल की बात कहने का. पर मैं मूर्ख क्यों ना कही उनसे. कह देती तो क्या हो जाता. उफ्फ उन्होने पुछा भी था....पर मैं सोचती रह गयी...और जो बोला भी तो क्या "जाइए...मैं नही बताती, आप बड़े वो हो." मैं ऐसी मूर्खों जैसी बात क्यों कह गयी?. अब साहेब क्या सोच रहे होंगे मेरे बारे में?. क्या साहेब अब भी वहीं होंगे? क्यों ना मैं वापस जाकर देखूं....शायद साहेब मिल जाएँ. लेकिन जो मैं उनसे फिर मिली तो साहेब क्या सोचेंगे? चाहें साहेब जो भी सोचे, पर इसी तरह उनसे मिलूंगी तभी तो वो मेरा हाल जानेगे. जो ना मिली तो वो कैसे जान पाएँगे कि मेरे दिल में क्या है?

" ए कांचन क्या हुआ है तुम्हे ?" अचानक कांचन के कानो से आवाज़ टकराई तो वो चिहुनक - कर पलटी . नज़रें उठी तो देखा सामने बुआ खड़ी थी . और आश्चर्य से उसे देखे जा रही थी .

" कब से खड़ी देख रही हूँ , तू अपने आप हंस रही है , कभी खुद से झुंझला रही है , मैं सामने खड़ी हूँ पर तेरा ध्यान ही नही है मुझपर , सब ठीक तो है ?" बुआ ने सवाल किया .

" नही .... हान्ं .... मैं .... मुझे कुछ नही हुआ है , मैं ठीक हूँ ." कांचन हक्लाई .

" हां .... नही .... मैं ." बुआ हैरानी से कांचन के शब्द दोहराई . फिर कांचन को घुरती हुई बोली - " क्या बोल रही है तू ? साफ साफ बोल . तू इस तरह उदास सी क्यों बैठी थी ? तुझे कुछ तो हुआ है ."

" कुछ भी तो नही हुआ है बुआ . मैं ठीक तो हूँ ." कांचन बोली और कमरे से बाहर जाने लगी .

" अब कहाँ जा रही है ? अभी तो बाहर से आई है तू .... फिर से बाहर क्या करने जा रही है ?" शांता बुआ उसे बाहर जाते देख बोली - " और आज तू कॉलेज क्यों नही गयी ?"

" कॉलेज जाने को मन नही किया , कल चली जाऊंगी , अभी हवेली जा रही हूँ ." ये कहकर वो तेज़ी से बाहर निकल गयी .

कांचन तेज़ी से चलती हुई उसी झरने के पास पहुँची, जहाँ पर वो अजित को छोड़ कर गयी थी. उसे ये उम्मीद थी कि शायद अजित अब भी वहीं हो.

वो उस जगह पर पहुँच कर अपनी निगाहें चारो तरफ दौड़ाने लगी. पर अजित को कहीं ना पाकर उसका दिल बैठ गया. वह एक बार फिर से इधर-उधर चक्कर मार कर अजित को ढूँढने लगी, पर जो था ही नही वो मिलता कैसे. वह निराश होकर एक पत्थर पर बैठ गयी. घर से कितनी उमंगे लेकर आई थी, पर अजित को ना पाकर उसका मन भारी हो गया. अचानक से वो उठी और हवेली के रास्ते अपने कदम बढ़ाती चली गयी.

डिंपल इस वक़्त अकेली हॉल में बैठी हुई थी, उसके हाथ में कोई पुस्तक थी, लेकिन वो पढ़ नही रही थी-बस एक सरसरी सी निगाह डालकर पन्नो को पलटती जा रही थी. उसका मन बेचैन था और वह उस पुस्तक से बहलाने की कोशिश कर रही थी. पर वो पुस्तक उसका मन बहला पाने में नाकाम हो रही थी. डिंपल ने अंत में पुस्तक सेंटर टेबल पर लापरवाही से फेंकी और उठ खड़ी हुई. वह अभी खड़ी होकर कुछ सोच ही रही थी कि हॉल में कांचन दाखिल हुई. उसे देखते ही उसका सारा तनाव छट गया. बेचैन मन को एक राहत सी महसूस हुई.उसका सबसे प्यारा खिलोना जो आ गयी थी, वो चहक कर उसकी और बढ़ी. दोनो सहेलियाँ एक दूसरे की बाहों में समा गयी. फिर डिंपल अलग होती हुई उसकी आँखों में झाँक कर बोली - "इतने दिन बाद क्यों आई? क्या तू भूल गयी कि मैं आई हुई हूँ."

" मेरा जी ठीक नही था . आज तो मैं कॉलेज भी नही गयी ." कांचन ने अपनी सफाई दी .

" क्यों तुझे क्या हुआ ?" डिंपल परेशान होकर बोली - " चल रूम में बैठते हैं ." ये कहकर डिंपल उसका हाथ पकड़कर अपने रूम में आ गयी . फिर उसे बिस्तर पर बिठाती हुई बोली - " अब बता क्या हुआ है तुझे ? तेरा ये फूल सा चेहरा क्यों मुरझा गया है ?"

" क्या बताऊ ? मुझे खुद नही पता मुझे क्या हुआ है ? बस कुछ दिनो से बड़ी विचित्र सी हालत हो गयी है ." कांचन खोई खोई सी बोली .

डिंपल उसका चेहरा ध्यान से देखती रही. फिर आगे बढ़ी और बिस्तर में उसके बराबर बैठ गयी. फिर उसके गले में अपनी बाहें डालकर उसके गालो को चूम ली.

कांचन के लिए ये कोई नयी बात नही थी. जब कभी डिंपल को उसकी कोई बात अच्छी लगती थी, या उसे उसपर प्यार आता था तो वो ऐसे ही उसके गालो को चूम लिया करती थी.

डिंपल ने अपनी बाहों का घेरा हटाया फिर कांचन का चेहरा अपनी ओर करके बोली - "कांचन, क्या तुम्हे पता है...प्यार क्या होता है?"

कांचन उसकी बात पर शर्मा गयी. उसके मानस पटल पर बड़ी तेज़ी से अजित का चेहरा घूम गया. फिर डिंपल को देखती हुई बोली - "मैं ज़्यादा नही जानती, बस इतना जानती हूँ कि जब किसी से प्यार हो जाता है तो बड़ी बुरी हालत हो जाती है, कभी तो सब चीज़ें अच्छी और नही लगने लगती है तो कभी कुछ भी अच्छा नही लगता. दिन और रात एक समान हो जाती है, ना रात को नींद आती है और ना दिन को चैन मिलता है. ना खाने पीने की सुध रहती है, ना पढ़ाई लिखाई में मन लगता है. हर घड़ी प्रेमी का चेहरा आँखों में घूमता रहता है. और मन हर समय उसी के ख्यालो में डूबा रहता है. और भी बहुत कुछ होता है. जो मैं नही जानती कि क्या होता है."

डिंपल मुस्कुराते हुए कांचन की बातें सुन रही थी. जब कांचन रुकी तो उसने झट से उसके गालो को फिर से चूम लिया. फिर बोली - "तुम तो कह रही थी प्यार के बारे में थोड़ा जानती हूँ. क्या ये थोड़ा है?. अब और जानने को क्या रह गया है? इतना ज्ञान तुम्हे कहाँ से मिला?" डिंपल उसकी आँखों में झाँकते हुए बोली - "कहीं तुम्हे भी किसी से प्यार तो नही हो गया? देख...मैं तो प्यार के बारे में एक ही सच जानती हूँ....ये प्यार दर्द और दुख के सिवा आज तक किसी को कुछ नही दिया. और मैं अपनी प्यारी सखी को दुखी नही देखना चाहती. इसलिए मैं तो यही कहूँगी की इस प्यार-व्यार के चक्कर में मत पड़ना."

डिंपल की बात से कांचन ने एक लंबी आह भरी फिर मन में बोली - "अब तो देर हो चुकी है डिंपल, तूने बताने में बहुत देर कर दी. अब तो तेरी ये सखी प्यार में पड़ चुकी है, और दुखी भी है. पर ये दुख बड़ा मीठा है, तेरी इस सखी को तो इस दुख से भी प्यार हो गया है." कांचन के होठ मुस्कुरा उठे.

" अरे क्यूँ मुस्कुरा रही है ? हुआ क्या है तुझे ?" डिंपल उसको मन ही मन मुस्कुराते देख बोली - " सच बता नही तो मारूँगी ."

" मुझे कुछ नही हुआ है डिंपल ." कांचन असली बात छुपा गयी , वो अभी अपने दिल का हाल डिंपल को नही बताना चाहती थी . उसे तो अभी ये भी नही मालूम था कि अजित के मन में क्या है , क्या पता वो उसे स्वीकार ही ना करें , ऐसी दशा में उसकी जगह हसी भी हो सकती थी . वो नही चाहती थी कि उसके साथ डिंपल भी दुखी हो . वह आगे बोली - " मैं तो यूँही तेरी बात सुनकर मुस्कुरा उठी थी .

" चल अब खड़ी हो जा " डिंपल , कांचन को शरारत से देखती हुई बोली - " और अपने कपड़े उतार ."

" क्यों ...?" कांचन कांपति आवाज़ में बोली .

डिंपल मुस्कुराइ. उसे कांचन की इस हालत पर बहुत तेज़ हसी आ रही थी, पर खुद को रोके रखी, फिर बोली - "मेरी जान, ये कपड़े नही उतारेगी तो मेरे लाए कपड़े कैसे पहनेगी?"

" ना ...! मैं वो कपड़े ना पहनुँगी ." कांचन तपाक से बोली और बिस्तर से उठ खड़ी हुई . वह सोच रखी थी कि डिंपल ज़िद करेगी तो वो तुरंत दरवाज़े से भाग जाएगी .

पर डिंपल ने तो आज उसे अपने लाए कपड़े पहनाने का पूरा मन बना लिया था. वो पलक झपकते ही कांचन तक पहुँची और उसके कपड़े उतारने लगी.

कांचन उससे छूटने का प्रयास करती रही. लेकिन डिंपल नही मानी और पहले उसने उसकी पाजामी का नाडा. खींच दिया, कांचन का हाथ अपनी पाजामी की ओर गया तो डिंपल ने उसकी कुरती को उपर करती चली गयी. कांचन ने लाख कोशिशे की पर डिंपल के आगे टिक ना सकी. कुछ ही देर में वो सिर्फ़ ब्रा और पैंटी पहने खड़ी थी. कांचन का बुरा हाल था, जीवन में पहली बार वो किसी के सामने इतनी नंगी हुई थी. डिंपल लड़की ही सही पर फिर भी उसके सामने ऐसी हालत में होने से शर्म से गाड़ी जा रही थी. वो एक हाथ से अपनी छातियाँ और दूसरे हाथ से अपनी पैंटी को ढकने का असफल प्रयास कर रही थी.

डिंपल ने चमकती आँखों से उसके मांसल और गदराए शरीर को उपर से नीचे तक देखा फिर अपने होठों को गोल करके एक खास अंदाज़ में सीटी बजाई. उसका अंदाज़ ठीक वैसा ही था जैसे राह चलती लड़कियों को देखकर आवारा किस्म के लोग सीटी बजाते हैं.

कांचन ने उसकी सीटी की आवाज़ से बड़ी मुश्किल से गर्दन उठाकर उसपर नज़र डाली. उसी क्षण डिंपल ने अपनी एक आँख दबा दी. फिर कामुक आवाज़ में बोली - "हाई मेरी जान, क्या कातिल जवानी है तेरी, तेरे इस रूप को कोई मर्द देख ले तो खड़े खड़े ही उसकी....!" उसने आगे की बात अधूरी छोड़ दी. फिर बोली - "चल अपनी स्तनों से अपने हाथ हटा और अपने स्तन दिखा."

" छची ....!" कांचन हल्के गुस्से में बोली - " तू बहुत बिगड़ गयी है डिंपल , कितनी गंदी बाते करने लगी है . अगर तू ऐसी ही बाते करेगी तो मैं कसम से फिर हवेली नही

आऊंगी ."

डिंपल इस बार गंभीर हुई. - "सॉरी कांचन, अब से नही करूँगी. पर अब मेरे लाए कपड़े पहन ले. और खबरदार जो फिर कभी हवेली ना आने की बात की तो......मारूँगी तुझे."

डिंपल की बात से कांचन का गुस्सा भी गायब हो गया. और वो बारी बारी से उसके लाए कपड़े पहनती रही, कपड़े इतने फॅशनबल थे कि कांचन को बंद कमरे में भी पहनकर शर्म महसूस हो रही थी. पर डिंपल प्यार से उसके लिए लाई थी इसलिए वो इनकार भी ना कर सकी.कांचन जो भी ड्रेस पहनती....पहनने के बाद उसे अजित का ख्याल आ जाता, और वो सोचती - अगर अजित उसे इन कपड़ों में देखेगा तो सच में उसपर लट्टु हो जाएगा.

कुछ देर यूँही कपड़े पहनने और पहनने का सिलसिला चलता रहा. डिंपल, कांचन को इन कपड़ों में देखकर फूले नही समा रही थी, पर कांचन का ध्यान उसकी खुशी में कहाँ था? वो तो अजित के ख्यालो में थी, वो बार बार किसी ना किसी बहाने से रूम से बाहर आती और बिना कारण ही नौकरों को उँची आवाज़ में कुछ ना कुछ लाने को कहती....! उसे ना तो भूख थी और ना ही प्यास...पर फिर भी नौकरों से कभी पानी मांगती तो कभी चाय तो कभी कुछ खाने की चीज़ें. उसके ऐसा करने का मक़सद अजित के कानो तक अपनी आवाज़ पहुँचानी थी. एक घंटे में वो काई बार अंदर बाहर हो चुकी थी. पर अजित के कानो तक उसकी आवाज़ नही पहुँची और ना वो बाहर आया. अब कांचन के अंदर निराशा ने डेरा ज़माना शुरू कर दिया था. वो उदास होती चली गयी. वो यहाँ किस काम से आई थी और क्या करने लग गयी. उसे अजित से ऐसी बेरूख़ी की उम्मीद नही थी. बस एक झलक देखने के लिए उसकी नज़रें उसके दरवाज़े की ओर बार बार जा रही थी. पर उसे निराशा के सिवा कुछ भी नही मिल रहा था. उसका दिल भारी हो गया. आँख से आँसू छलकने को आए पर डिंपल का ध्यान करके रोके रखी.

अचानक ही उसके दिल ने कहा - हो सकता है साहेब हवेली लौटे ही ना हो, हो सकता है साहेब अभी भी उधर ही घूम रहे हो....और ये भी हो सकता है कि शायद वो मेरी राह देख रहे हों. "आहह" शायद ऐसा ही हुआ होगा. मुझे यहाँ आना ही नही चाहिए था. तो फिर मैं डिंपल को बोलकर वापस जाती हूँ. शायद साहेब मुझे मिल जाए.

' डूबते को तिनके का सहारा ' यहाँ ये कहावत कांचन पर लागू होती है . उसका मन हर तरफ से टूट चुका था पर फिर भी हारा नही था , उसे अब भी ये विश्वास था कि वो अजित से ज़रूर मिल सकेगी . और उसे अपने दिल का हाल बताएगी . यही सोचते

हुए वो वापस डिंपल के कमरे में लौटी और उससे घर जाने की बात कह कर हवेली से बाहर निकल आई . और दिल में अपने साहेब से मिलन की आस लिए उबड़ खाबड़ पथरीले रास्तों को छलांगती तेज़ी से घाटियों की ओर भागती चली गयी ..

८

बिरजू ने जैसे ही मुखिया के घर के दरवाज़े के बाहर कदम रखा....उसे मुखिया लाला राई आते दिखाई दिए. उनके साथ उनकी बेटी पायल थी.

पायल इसी साल २० की हुई थी. तीखे नयन नक्श थे. लंबा कद और गठिला गोरा बदन था उसका. बाल काले और कमर तक झूलते हुए थे. वह अपने बालो में जुड़ा करने की आदि नही थी. हमेशा खुले रखती थी. उसके स्तन पूरे उभार लिए हुए और ठोस थे. उन्हे देखकर कोई भी इंसान आहें भर सकता था. पेट समतल और कमर पतली थी. लेकिन उसके नितंब बेहद आकर्षक और उभरे हुए थे. वो हमेशा कुर्ता पाजामा ही पहनती थी. नितंबो के बीच की दरार इतनी गहरी थी कि अक्सर उसकी कुरती उन्ही दरारों में फसि रहती थी. कमर ऐसे बलखाती थी कि देखने वालों के मूह से अनायास ही गर्म आहें फुट पड़ती थी. कुल मिलकर ये कहा जाए कि उसमे जवानी छन्कर आई थी. बिरजू की भूखी निगाहें अक्सर उसकी जवानी को छुप छुप कर पिया करती थी. पर बिरजू के लिए पायल वैसी ही थी जैसे अंडे देने वाली मुर्गी. वो जानता था कि अगर उसने इस मुर्गी को खाया तो आगे से उसे अंडे खाने के लाले पड़ जाएँगे. उसने ढेर सारे अंडे खाने के ग़र्ज़ से इस मुर्गी को बख़्श रखा था.

बिरजू पर नज़र पड़ते ही मुखियाँ के माथे पर बल पड़ गये. कुछ देर पहले बेटी के साथ होने से जो खुशी उनके चेहरे पर फैली हुई थी वो क्षण भर में गायब हो गयी. उन्होने घृणा से अपना मूह फेर लिया. पर बिरजू के लिए तो मुखिया का घृणा भी आशीर्वाद ही था. जैसे ही मुखिया जी पास आए उसने नमस्ते कहने के लिए हाथ जोड़ दिए. - "नमस्ते मुखिया जी." वो मक्कारी हँसी हंसा.

" तू .... इधर क्या करने आया है ?" मुखिया जी सब जानते हुए भी कि बिरजू क्यों आया है , अपनी बेटी की उपस्थिति का ध्यान कर गुस्से में भड़के .

उनका भड़कना दिखावा था. लेकिन उनका गुस्सा सच था. वो सच में बिरजू के साए से भी नफ़रत करते थे.

" सब कुछ जानते ही हैं मुखिया जी फिर भी पूछ रहे हैं ." बिरजू ने अपने दाँत दिखाए - " बरसो से एक ही काम करने आता हूँ , और किस लिए आऊंगा ." उसने अपनी बात पूरी करते हुए पायल को उपर से नीचे तक घूरा .

पायल ने बिरजू के इस तरह देखने पर ध्यान नही दिया. पर मुखिया जी से उसकी गंदी निगाहें छुपि ना रह सकी. अपने सामने अपनी बेटी को घूरते पाकर मुखिया जी की आँखों में बिरजू के लिए खून उतर आया. मन में आया अभी इसी वक़्त वो बिरजू की आँखें निकाल ले. पर वो केवल सोच सकते थे और सोचकर ही रह गये.

बिरजू मुखिया जी के गुस्से का अनुमान लगाकर एक धूर्त मुस्कान छोड़ता वहाँ से निकल गया.

९

अजित इस वक़्त हवेली में अपने कमरे में बिस्तर पर पसरा हुआ था. उसके ज़हन में भोली कांचन का चेहरा घूम रहा था. आज घाटियों में कांचन से संयोगवश हुई मुलाक़ात....एक सुंदर हादसे में बदल चुकी थी. वो ना चाहते हुए भी कांचन के बारे में सोचता जा रहा था. लाख कोशिशों के बावज़ूद भी वो कांचन की भीगे आँखें और उतरा हुआ चेहरा नही भुला पा रहा था. वह सोच रहा था - क्यों ये लड़की आज उदास थी, और मुझे ऐसा क्यों लग रहा है कि उसके दुख का मैं ही ज़िम्मेदार हूँ, लेकिन मैने तो उसके साथ कुछ नही किया, क्या नदी वाली बात उसे इतनी बुरी लगी. अगर वो इतनी ही कोमल है तो मेरे कपड़े जलाए ही क्यों? पर ये भी तो हो सकता है कि उसने किसी के दबाव में आकर मेरे कपड़े जलाएँ हो. लेकिन किसके....?" उसके मंन ने सरगोशी की, तभी उसके ज़हन में एक और चेहरा उभरा - डिंपल, शायद डिंपल ने उसे ऐसा करने पर मजबूर किया हो या फिर डिंपल ने ही उसके कपड़े जलाए हों और कांचन के हाथो मुझ तक भिजवाई हो. निसंदेह ऐसा ही हुआ होगा. बेचारी कांचन.....शायद ये भी नही जानती होगी कि जो कपड़े वो मेरे पास लेकर आ रही है वो जले हुए हैं. मैं कितना बड़ा मूर्ख हूँ.....बिना सच जाने एक उस भोली कांचन का दिल दुखा दिया. शायद यही कारण है कि वो उदास थी. ऊफ्फ ये मैने क्या किया. मैने उसके बारे में कितना ग़लत सोचता था. और अब वो ना जाने मेरे बारे में क्या सोचती होगी. कितनी नफ़रत करती होगी मुझसे. लेकिन आज जब वो झरने के पास मिली तब तो उसकी आँखों में मेरे लिए नफ़रत नही थी, बल्कि उसकी आँखें एक उम्मीद एक आस लिए हुए थी....जैसे वो मुझसे कुछ चाहती हो. लेकिन क्या? वो मुझसे क्या चाहती है? कहीं ऐसा तो नही की वो मुझसे प्यार करने लगी है, लेकिन नही वो मुझसे प्यार करेगी? मैने उसका इतना अनादर किया उसे नदी में अपमान करना चाहा......ऐसे में तो वो मुझसे नफ़रत कर सकती है... प्यार नही. वो इतनी मूर्ख नही कि अपने दिल को दुखाने वाले से दिल लगाए.

अजित काफ़ी देर तक कांचन के बारे में सोचता रहा और फिर सोचते सोचते नींद की गहराइयों में खो गया. इस दरम्यान कांचन आई भी और चली भी गयी. लेकिन वो ना जान सका कि वो पगली उसके प्यार में भटकती उसे ढूँढती फिर रही है

कांचन बेतहाशा भागती हुई उसी झरने के निकट पहुँची. उसने अपनी प्यासी निगाहें चारो तफ़ दौड़ाई. पर अजित कहीं भी दिखाई नही दिया. एक बार उसका मन चाहा कि वो "साहेब" कहकर ज़ोर ज़ोर से पुकारे, अगर अजित यही कहीं होगा तो ज़रूर उसकी आवाज़ सुनकर बाहर निकल आएगा. लेकिन अगले ही पल इस विचार से कि किसी और ने उसे इस तरह पुकारते देखा तो उसकी बड़ी बदनामी होगी उसके होठ सील गये. वो

अपने प्रीतम का नाम पुकार ना सकी. वो इधर उधर घूमती उसे ढूँढती रही. जहाँ कहीं भी उसके होने की संभावना होती वहाँ ढूँढने लगती. ज़रा सी भी कहीं किसी पत्ते की सरसराहट होती या छिपकलियों के चलने से कोई आवाज़ आती वो ऐसे खुशी से पलट-ती जैसे उसके साहेब उसके पिछे खड़े उसे देख रहे हों. काफ़ी देर तक भटकने के बाद भी जब अजित ना मिला तो वो वहीं एक पत्थर पर बैठ गयी. इस वक़्त उसका मन रोने को कर रहा था, दिल चाह रहा था कि वो फुट फुट कर रोए. कैसी बुरी हालत हो गयी थी उसकी, जो लड़की हमेशा हँसती मुस्कुराती रहती थी, आज उसके होंठो से वो मुस्कुराहट गायब हो चुकी थी. वो अपने आप को कोस रही थी कि क्यों उसने ऐसे इंसान से दिल्लगी की जिसे उसकी तनिक भी परवाह नही. वो मन में बोली - "तू मूर्ख है कांचन, जो तू उस निर्दयी का इंतेज़ार कर रही है. भूल जा उसे और जो तू उसे ना भूली तो फिर जीवन भर तू ऐसे ही तड़पति रहेगी, आख़िर तू एक साधारण सी गांव की लड़की है और वो शहर का पढ़ा लिखा बहुत बड़ा डॉक्टर है. तेरे जैसी लड़की के लिए उसके दिल में कोई स्थान हो भी तो कैसे. उसके लिए एक से एक पढ़ी लिखी शहरी लड़की पड़ी होगी, फिर वो तुमसे क्यो प्यार करेगा. तू उसके लायक नही है कांचन, तू उतना ही बड़ा ख्वाब देख जो तेरी औकात है. धरती और आकाश का मिलन ना कभी हुआ है और ना होगा. उससे दिल लगाके तुझे दुख के सिवा कुछ ना मिलेगा. अब भी वक़्त है लौट जा अपने रास्ते."

" तो क्या सच में मुझे साहेब कभी नही मिलेंग े , क्या सच में मेरे सचे प्रेम का कोई महत ् व नह ी , क्या सच में साहेब मुझे अपनी पत्नी स्वीकार नही करेंग े . क्या वास्तव में दौलत ही सब कुछ ह ै , मैं जो इतना टूटकर उन्हे चाहती हूँ इसका कोई मोल नही ह ै ."

कांचन ये सोचते हुए फफक कर रो पड़ी. वह अपने चेहरे को अपने हथेलियों में ढके हुए सिसक पड़ी. उसका दिल इस एहसास से दुखी हो उठा था कि वो ग़रीब है, और इसी ग़रीबी की वजह से अजित उसे नही अपनाएगा. वो मूह छिपाए रोती रही. कुछ देर बाद जब उसकी रुलाई रुकी तो वो अपने मन में बोली - "ठीक है साहेब, मैं जा रही हूँ, आज के बाद मैं कभी आपकी राह नही देखूँगी, मैं कभी आपके लिए अपना दिल नही जलाऊंगी. मेरी आँखें अब कभी आपकी याद से नम नही होंगी. मैं अब कभी आपसे प्यार नही करूँगी."

कांचन अपने आँसू पोछती हुई उठी और घर जाने के लिए पलटी. तभी वो ऐसे चौंकी जैसे उसने दुनिया का सबसे बड़ा आश्चर्य देख लिया हो. उसकी आँखें हैरत से फैलती चली गयी. उसकी आँखें उसे जो कुछ दिखा रही थी उसपर उसे यकीन नही हो रहा था. उसके सामने अजित खड़ा था, और खड़े खड़े उसे एक टक्क देखे जा रहा था.

" आप ...." कांचन के मूह से आश्चर्य और खुशी मिश्रित स्वर फूटे . अजित को अपने सामने पाकर उसे ऐसा लगा जैसे ईश्वर ने उसका रोना सुन लिया और उसके प्रेम देवता को उसके पास भेज दिया . उसकी आँखें जो कुछ देर पहले विरह से गीली हो गयी थी , अब खुशी से छलक पड़ी थी . उसके मोटी जैसे आँसू धूलक कर उसके गालो में फैल गयी थी . वो अपनी उन्ही गीली आँखों से अजित को देखती रही , जो मन कुछ देर पहले उससे दूर भागने की , उससे ना मिलने की , उससे कभी प्यार ना करने की बात कर रहा था अब उसकी और खिंचता जा रहा था . उसका दिल चाहा कि वो आगे बढ़े और अजित से लिपट जाए . पर वो ऐसा करने की साहस ना दिखा सकी . हां उसके चेहरे पर अब खुशी की जगह थोड़ी नाराज़गी उभर आई थी . वह अपनी गर्दन को झटकी और गुस्से से वहाँ से जाने लगी .

जैसे ही वो अजित के पास से होते हुए आगे बढ़ी अजित भी तेज़ी से पलटा. तभी अजित के पावं के नीचे पड़ा छोटा पत्थर खिसक गया. पत्थर खिसकते ही उसका पावं फिसला और वो लड़खड़ा कर गिरा. गिरते ही उसका शरीर तेज़ी से खाई की ओर फिसलता चला गया.

कांचन ने जैसे ही उसके गिरने की आवाज़ सुनी-तेज़ी से पलटी. अजित को खाई की ओर गिरते देख वो चीखी - "सा......साहेब."

अजित को बचाने के लिए वो खाई की और भागी, दूसरे ही पल वो खाई के किनारे खड़ी थी. उसने अजित पर नज़र डाली. अजित एक पत्थर को थामे लटका हुआ था. उसका एक पावं किसी पत्थर का सहारा लिए हुए था तो दूसरा पावं हवा में झूल रहा था. उसके ठीक नीचे गहरी खाई थी.

कांचन ने अजित को इस प्रकार मौत के झूले में झूलते देखी तो उसकी साँसे जहाँ की तहाँ अटक गयी. वो भय से थर थर काँप उठी. वह उसे बचाने के उपाय सोचने लगी. पहले तो उसने अपनी गर्दन उठाकर किसी आदमी की तलाश में चारो तरफ अपनी नज़रें दौड़ाई, लेकिन सांझ के वीराने में उसे कोई भी दूर तक दिखाई नही दिया. निराश होकर उसकी दृष्टि वापस अजित की तरफ घूमी. अजित अभी भी उठने का प्रयास कर रहा था.

अचानक ही कांचन को एक युक्ति सूझी, वो झट से अपने गले में लिपटे दुपट्टे को खींची और उसके आगे पिछे गाँठ बाँधकर अजित की ओर फेंक दी. -"इसे पाकड़ो साहेब."

" नही ....!" अजित इनकार में गर्दन हिलाया . -" इस तरह तो तुम भी नीचे आ जाओगी ."

" मुझपर भरोसा रखो साहेब , मैं आपको कुछ नही होने दूँगी ." कांचन धृड़ता से बोली -" आप मेरे दुपट्टे को पकड़कर उपर उठने की कोशिश करो ."

अजित ने वैसा ही किया एक हाथ से उसके दुपट्टे को थाम लिया और दूसरे हाथ से पत्थर का सहारा लेते हुए धीरे धीरे उपर उठने लगा.

कांचन गांव की मिट्टी खाकर पली थी. वो तनिक भी ना घबराई और अपनी पूरी शक्ति से अजित को उपर खींचती रही. कुछ ही देर में अजित उपर आ गया. वो हाफ्ता हुआ खड़ा हुआ. फिर उसने कांचन पर निगाह डाली. कांचन पसीने से लथपथ गुस्से से उसे घुरे जा रही थी. अजित कुछ कहने के लिए मूह खोला ही था कि कांचन गुस्से में बोली - "इतनी गहरी खाई के नज़दीक खड़े होने की क्या ज़रूरत थी? क्या सोचे थे आप कि ये खाई नही किसी खेत का मेड है......गिरे तो कुछ ना होगा. अगर आज मैं ना होती तो पता नही आपका क्या.....? दूसरों की ना सही कम से कम अपनी तो परवाह किया करो, अगर आपको कुछ हो जाता तो?"

अजित हक्का बक्का कांचन को देखता रहा, वो गुस्से से लाल पीली हो गयी थी. ऐसा लगता था जैसे अभी वो अजित की धुलाई कर देगी. वो उसे ऐसे डाँट पीला रही थी जैसे वो उसके घर का नौकर हो, और उसने कोई बहुत बड़ी नादानी कर दी हो. उसने कांचन का ऐसा रूप पहले कभी नही देखा था. हमेशा शांत और छुइ-मुई सी रहने वाली लड़की इस वक़्त शेरनी का रूप धारण कर चुकी थी. उसके मूह में जो भी आ रहा था अजित को सुनाती जा रही थी. गुस्से से उसका चेहरा लाल भभुका हो गया था, आँखें भट्टी की तरह सुलग उठी थी. साँसे इस क़दर तेज़ हो गयी थी जैसे वो मीलो पैदल चल आई हो. उसका सीना ज़ोर ज़ोर से उपर नीचे हो रहा था. अजित किसी अपराधी की तरह चुप चाप खड़ा उसकी झिड़की सुनता रहा.

कुछ देर बाद जब उसका गुस्सा शांत हुआ तो वह चुप हुई. अजित अभी भी हक्का बक्का उसे देखता जा रहा था. उसके हाथ में अभी भी कांचन का दुपट्टा था जिसे वो मसलते हुए अपनी घबराहट को दूर करने का प्रयास कर रहा था. कांचन की छातियाँ बिना दुपट्टे के उसके सामने तनी खड़ी थी. और गुस्से की अधिकता में उपर नीचे हो रही थी. अजित कुछ देर उसके पसीने से भीग चले चेहरे को देखता रहा फिर बोला - "तुम किस अधिकार से

मुझे इस तरह डाँट रही हो? ये मेरी ज़िंदगी है....मैं चाहें जो करूँ......मेरी मर्ज़ी मैं चाहें कुएँ में कुदू या किसी पहाड़ की चोटी से छलाँग लगाऊ......तुम होती कौन हो मुझे नसीहत देने वाली?" अजित उसकी मनोदशा से परिचीत था. फिर भी उसका मन टटोलने के लिए झूठ मूठ का गुस्सा दिखाया.

कांचन के होंठ काँपे. वो कुछ बोलना चाही पर बोल ना सकी. उसने बोझील नज़रों से अजित को देखा. फिर अपनी नज़रें झुका ली.

" बोलो जवाब दो ." अजित ने फिर से सवाल किया . - " तुम क्या समझकर मुझे इस तरह डाँट रही थी ? मेरी इतनी फिक़्र करने वाली तुम होती कौन हो ?"

कांचन ने फिर से अपनी निगाहें उठाई और अजित के चेहरे पर डाली. उसके मन में आया कि कह दे कि वो उससे प्यार करती है, उसकी जीवन संगिनी बनना चाहती है, उसके बगैर वो जी नही सकेगी, उसे कुछ हुआ तो वो भी मर जाएगी. पर मन के अंदर उठती भावनाओ को वो बाहर ना ला सकी. चुप चाप अपनी गीली आँखों से अजित को देखती रही.

" क्या तुम मुझसे प्यार करती हो ?" अजित उसकी खामोशी का अनुमान लगाकर बोला . -" क्या इसीलिए मेरी फिक़्र करती हो कि मुझे कुछ हो गया तो तुम जी नही पाओगि ? अगर ऐसा है तो मुझसे कहती क्यों नही कि तुम मुझसे प्यार करती हो ."

" सा ...... साहेब ....!" कांचन भर्राये गले से बस इतना ही बोल सकी और फफक कर रो पड़ी .

अजित ने अपने हाथ बढ़ाए और उसके चेहरे को दोनो हाथों से थाम लिया. फिर बोला - "क्यों छुप छुप कर रोती रहती हो? एक बार कहा क्यों नही कि तुम मुझसे प्यार करती हो?"

" साहेब ......!" वो हिचकी लेकर बोली - " मा ..... मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ साहेब . मैं आपके बगैर नही जी सकती साहेब . मुझे अपना लो साहेब , मैं आपकी हर बात मानूँगी साहेब , आप जो कहोगे मैं करूँगी . जैसे रखोगे रहूंगी . कम खाना खाउन्गि , घर के सारे काम करूँगी . मगर मुझे अपना लो साहेब ." ये कहते हुए कांचन ने अजित के आगे अपने हाथ जोड़ दिए .

अजित ने उसके हाथों को पकड़कर चूम लिया. फिर बोला - "मुझे तुमने क्या पत्थर का इंसान समझा है कांचन, क्या मेरे सीने में दिल नही है, जो तुम्हारे बेपनाह प्यार के बदले में तुमसे घर के काम करवाउँगा. तुम्हे कम खाना खिलाउँगा. नही कांचन.....मैं तो तुम्हे सदेव अपने दिल में बसाकर रखूँगा. सदेव अपने दिल में. क्योंकि मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ. दुनिया की कोई ताक़त तुम्हे मेरे दिल से नही निकाल सकती."

" साहेब ...!" कांचन इस खुशी को संभाल ना सकी और बेसाखता उसकी छाती से लिपट गयी .

अजित भी कस्के उसे अपनी बाहों में जाकड़ लिया. दो दिल एक हो गये. कांचन को अजित की बाहों में सिमटकर यूँ महसूस हुआ जैसे उसे सारी दुनिया मिल गयी हो. वो अपनी बाहों का घेरा और मजबूत करती चली गयी. उसे इस वक़्त जो खुशी महसूस हो रही थी, वो मैं शब्दो में बयान नही कर सकता. वो उस पक्षी की तरह थी जो रेगिस्तान में पानी की एक बूँद के लिए भटकता फिरता है पर उसे पानी नही मिलता. और जब मिलता है तो उसके प्यासे मन को जो खुशी मिलती है वही खुशी इस वक़्त कांचन महसूस कर रही थी. आज उसके प्यासे मन को पानी की एक बूँद नही बल्कि पूरा सागर मिल गया था. वो उस सागर की गहराइयों में खो जाना चाहती थी और खो भी गयी थी.

काफ़ी देर तक दोनो लता बेल की तरह एक दूसरे से लिपटे एक दूसरे के दिल की धड़कनो को सुनते रहे. कांचन तो जैसे इस वक़्त सारे संसार को भुला बैठी थी. उसे इस वक़्त जो सुख अजित की बाहों में होने से मिल रहा त्ता, वो उसने इससे पहले कभी महसूस नही किया था.

कुछ देर यूँही लिपटे रहने के बाद अजित ने धीरे से उसे पुकारा - "कांचन."

अजित ने बड़े प्यार से उसे पुकारा था. उसकी आवाज़ जब कांचन के कानो से टकराई तो उसने अपनी बंद पलकें खोली और अजित के चेहरे पर अपनी दृष्टि जमा दी. - "बोलो साहेब."

अजित ने उसके चेहरे को दोनो हाथों में भर लिया और गौर से देखने लगा. कांचन के गालों में बहे आँसू के गीले निशान अब भी मौजूद थे. उसने एक हाथ से उसके गालो में बहे आँसुओ को पोछा. फिर कांचन से बोला - "मुझे माफ़ कर दो. मैने तुम्हे अंजाने में बहुत

कष्ट दिया है ना. मैं यहाँ काफ़ी देर से तुम्हारे पिछे खड़ा तुम्हारी बड़बड़ाहट और तुम्हारा रोना सुन रहा था. मुझे नही पता था कि तुम मुझसे इतना प्यार करती हो"

" सीसी .... क्या ?" " कांचन चौक्ते हुए बोली - " आप मेरे पिछे मेरी बाते सुन रहे थे . जाइए मैं आपसे बात नही करती ." कांचन ने अपने मूह फूला लिया .

" ग़लती हो गयी , अब मुस्कुरा दो ." अजित उसका चेहरा अपनी ओर करके बोला .

कांचन उसकी बात पर धीरे से मुस्कुराइ.

" अब सदा ऐसे ही मुस्कुराती रहना . मैं अब इन आँखों में फिर से आँसू नही देखना चाहता ." अजित मुस्कुराकर उसकी आँखों में झाँकते हुए बोला .

" साहेब मुझे कभी छोड़ के तो नही जाओगे ना ." कांचन गंभीर होकर बोली - " आप नही जानते साहेब , मैं आपके लिए कितना तडपि हूँ . रात - रात भर जागी हूँ , आठो पहर रोती रही हूँ ."

" आहह ..... ये तुमने क्या कह दिया कांचन ." अजित तड़प कर बोला - " मैं संगदिल नही हूँ कांचन . मैं तुम्हे छोड़ कर कहीं नही जाऊंगा . मुझे तुम्हारी ज़रूरत है . बरसो से मैं भी इस सच्चे प्यार की तलाश में भटक रहा था . आज तुम्हारे रूप में मिला है तो भला कैसे छोड़ सकता हूँ . तुमसे ज़्यादा प्यार करने वाली तुमसे अधिक सुंदर मुझे और कहाँ मिलेगी . मैं आज ही मा को ये खबर दे देता हूँ की मैने उनके लिए बहू पसंद कर लिया है . वो जल्दी से आकर अपनी बहू को देख ले . आपकी बहू दुल्हन बनने के लिए बहुत उतावली हो रही "

अजित की बातों में अचानक आई शरारत से कांचन शरमा गयी. वो शरमाते हुए अपना मूह घुमा कर बोली - "धत्त...! मैं क्यों उतावली होंगी. मैं तो जन्म-जन्मान्तर तक अपने साहेब का इंतेज़ार कर सकती हूँ."

" ये तुम मुझे साहेब कहकर क्यों बुलाती हो ." अजित ने आश्चर्य से पुछा . - " तुम्हारे मूह से साहेब सुनकर ऐसा लगता है जैसे मैं कोई मोटा ख़ूसट बुड्ढा धनवान हूँ और तुम मेरी

दासी ."

" दासी ही तो हूँ ." कांचन मुस्कुराइ - " सदा आपके चरणों में रहने वाली दासी ."

" खबरदार ....!" अजित गरजा . -" जो फिर कभी तुमने अपने आपको मेरा दासी कहा . तुम मेरी होने वाली बीवी हो , तुम्हारा स्थान मेरे चरणों में नही मेरे दिल में है . समझी ." अजित कांचन को अपनी छाती से लगाते हुए बोला .

कांचन भावुकता में उसकी छाती में सिमट सी गयी. फिर उसकी छाती से लगी हुई बोली - "मा जी मुझे स्वीकार करेगी ना. कहीं ऐसा तो नही कि वो मुझे ग़रीब जानकार हमारे रिश्ते को इनकार कर दें."

" हरगिज़ नही ." अजित उसके क पा ल चूमते हुए बोला - " मेरी मा मेरी सबसे अच्छी दोस्त हैं , मेरी पसंद ही उनकी पसंद होगी ."

कुछ देर यूँही एक दूसरे से लिपटे दोनो बाते और वादे करते रहे. फिर कुछ देर बाद कांचन बोली -"अच्छा साहेब अब मुझे इज़ाज़त दो, घर में बुआ और बाबा मेरी राह देख रहे होंगे." कांचन गहराते अंधेरे को देखकर चिन्तीत होकर बोली.

वो आज सुबह से ही इधर उधर भागती रही थी. तब उसके मन में अजित बसा था. परंतु अब जबकि अजित ने उसे अपना लिया था. तो उसका ध्यान अपने घर वालों की ओर गया.

" ठीक है ." अजित उसे अपने से अलग करते हुए बोला - " फिर कब मिलोगि ."

" कल शाम को यहीं इसी जगह ५ बजे ." कांचन मुस्कुराकर बोली और अजित से दुपट्टा लेकर अपने गले में डाल ली .

" अरे .... मेरा दूसरा जूता कहाँ गया ." अजित चौंकते हुए बोला . वो जब फिसला था तब उसके पावं से एक जूता निकल गया था . किंतु खाई से उठने के बाद दोनो एक दूसरे में ऐसे खो गये थे कि ना तो अजित को अपने जूते का ध्यान रहा और ना ही कांचन को सांझ ढलने का .

" यहीं कहीं होनी चाहिए ." कांचन बोली और जूते की तलाश में इधर उधर नज़रें दौड़ने लगी .

सूर्यास्त हो चुका था पर अंधेरा इतना भी गहरा नही था की ज़मीन पर पड़ी कोई वस्तु दिखाई ना दे.

कांचन जूते को ढूँढती हुई खाई के करीब पहुँची. उसे अजित का जूता एक पत्थर की औट में दिखाई दे गया. उसने अजित से नज़रें बचाकर फुर्ती से उस जूते को उठाकर अपने दुपट्टे में छुपा लिया. -"साहेब, अब आपका जूता नही मिलेगा. अब रहने दो ज़्यादा मत ढुंढ़ो. दूसरे जूते खरीद लेना. मैं घर जा रही हूँ मुझे देरी हो रही है."

" अरे .... रूको , कुछ देर देख लेते हैं . शायद मिल जाए ." अजित कांचन की ओर पलटकर बोला . सहसा वह चौंका उसे ऐसा लगा जैसे कांचन कुछ छुपाने की कोशिश कर रही है . - " तुम्हारे हाथों में क्या है ? तुम क्या छूपा रही हो ?"

अजित को अपनी ओर बढ़ते देख कांचन तेज़ी से उपर भागी. कुछ दूर जाकर रुकी फिर अजित को उसका जूता दिखाती हुई बोली - "साहेब, आपका जूता मेरे पास है. पर मैं नही दूँगी. अपने लिए दूसरे जूते खरीद लेना." ये कहकर कांचन हंसते हुए अपने घर के रास्ते भागती चली गयी.

" अरे ..... रूको तो , मेरा जूता देती जाओ ." अजित ने पिछे से आवाज़ दिया . पर कांचन नही रुकी . भागती हुई उसकी नज़रों से ओझल हो गयी .

" अज़ीब लड़की है ." अजित बड़बड़ाया . -" उस दिन मेरे कपड़े जला दिए और आज मेरा जूता ले भागी . भला इसे मेरे कपड़ों और जूतों से क्या दुश्मनी हो सकती है ." अजित अपना सर खुजाते हुए सोचा . पर जवाब में ढाक के तीन पात .

वो एक पावं से चलता हुआ किसी तरह अपनी बाइक तक पहुँचा और फिर बाइक स्टार्ट कर हवेली की तरफ बढ़ गया.

१०

रात के ८ बजे हैं, डिंपल इस वक़्त अपने रूम में सोफे पर पसरी हुई है. मन बिल्कुल अशांत है. जब से वो शहर में रहने लगी थी तब से वो हमेशा दोस्तों के बीच रहने की आदि हो गयी थी. शोर शराबा हल्ला गुल्ला, पार्टी, म्यूज़िक, डॅन्स फिर दोस्तों के साथ रात भर मज़े चाहें वो लड़का हो या लड़की, उसे कोई फ़र्क नही पड़ता था कि उसके कपड़े उतारने वाली लड़की है या लड़का, या वो जिसके कपड़े उतार रही है, वो लड़का है या लड़की. वो बस मज़ा चाहती थी, उसके लिए वो कोई भी कीमत चुका सकती थी.

लेकिन आज वो अकेली बिल्कुल अकेली हो गयी है, ना वो लोग हैं ना वो हुल्लड़ ना वो पार्टियाँ ना रात भर के मज़े. वो उस परीन्दे की तरह हो गयी थी जो हमेशा आकाश में अपनी रफ़्तार से उड़ता रहता है, अपनी मर्ज़ी से मंजिले तय करता रहता है. लेकिन जब वो पिंजरे में क़ैद हो जाता है तो सिर्फ़ फड़फड़ाकर रह जाता है. डिंपल क़ैदी तो नही थी पर उसकी फड़फड़ाहट पिंजरे में बंद पक्षी की तरह ही थी.जब तक कांचन उसके साथ होती वो सब कुछ भूल जाती, लेकिन उसके जाते ही वो फिर से अकेली हो जाती. ठाकुर साहब भी उसके साथ सिर्फ़ खाने में ही मिलते थे या फिर दिन के वक़्त हॉल में कुछ देर साथ बैठ लिए, कुछ बाते कर लिए फिर अपने कमरे में बंद हो जाते.

डिंपल का इस माहौल में दम घुटनो लगा था. उसने अजित से इसीलिए नज़दीकियाँ बढ़ानी चाही थी, पर उसने उसका निरादर करके उसे और भी बुरी तरह से तोड़ दिया था. वो अपने उस अपमान का बदला लेना चाहती थी. और हमेशा इसी प्रयास में रहती थी कि कब अजित की कोई कमज़ोरी उसके हाथ लगे और वो अपना शिकंजा उसपर कसे, फिर अपनी मर्ज़ी से उसे नचाए. पर अभी तक उसे निराशा ही हाथ लगी थी.

अचानक वो उठी और कपड़े चेंज करने लगी, शरीर पर मौजूद कपड़े को तन से अलग कर उसकी जगह सलवार कुर्ता पहन कर वो हॉल में आई. उसने गोरप्पा से ये कहकर कि वो बस्ती जा रही है, कुछ देर में लौटेगी. फिर बाहर निकल गयी.

बाहर निकल कर अपनी जीप में बैठी और जीप को बस्ती की ओर भगाती चली गयी. जीप की रोशनी से अंधेरे को चीरती हुई वो कुछ ही देर में बस्ती के आरंभ के छोर तक पहुँच गयी. अभी वो लेफ्ट टर्न लेकर गोलाई घूम ही रही थी कि उसे अपनी दाईं और एक साया दिखाई दिया. उसने तेज़ी से ब्रेक मारा.

" छर्र्रर ...." की आवाज़ के साथ जीप एक झटके में रुकी .

जीप को रुकते देख साया भी अपने स्थान पर खड़ा हो गया. डिंपल उस साए को ध्यान से देखने लगी. अंधेरे में उस काले साए को वो पहचान तो नही पाई पर उसके कद काठी का वो अनुमान लगा चुकी थी.

जीप को रुकते देख साया भी अपने स्थान पर खड़ा हो गया. डिंपल उस साए को ध्यान से देखने लगी. अंधेरे में उस काले साए को वो पहचान तो नही पाई पर उसके कद काठी का वो अनुमान लगा चुकी थी.

उसकी हाइट ६ फीट के आस-पास थी. डिंपल उसे ध्यान से देखती हुई बोली - "कौन हो तुम? सामने आओ"

साया आगे बढ़ा. और जीप के करीब पहुँचा. डिंपल ने उसे ध्यान से देखा तो उसकी सूरत कुछ जानी पहचानी सी लगी. - "तुम कल्लू हो ना?"

" जी हां निकिता जी , मैं कल्लू ही हूँ ." वो सर झुकाकर उदास स्वर में बोला .

कल्लू, गांव का सबसे काला कलूटा बदसूरत हबशी जैसा दिखने वाला युवक था. वो दिखने में जितना बदसूरत था, अंदर से उतना ही खूबसूरत था. वो मुखिया के खेतों में काम कर अपना और अपनी बूढ़ी मा का पेट भरता था.

वो जब ६ साल का था तभी उसके पिता का देहांत हो गया था. उसके पिता खेती के नाम पर थोड़ी सी ज़मीन छोड़ गये थे. जिसे बाद में उसकी मा ने खुद को और कल्लू को ज़िंदा रखने के लिए कब का बेच चुकी थी. अब उसके पास एक छोटा सा मिट्टी का झोपड़ा के अतिरिक्त कुछ भी ना था.

बचपन से लेकर जवानी तक कल्लू ने सिर्फ़ दुख ही देखे थे. अपनी बदसूरत चेहरे की वजह से वो बालपन से ही गांव के दूसरों बचों से अपमानित होता आया था. बचपन में वो जिसकी तरफ भी दोस्ती के लिए हाथ बढ़ता वो घृणा से अपना हाथ पीछे खींच लेता. वो एक ऐसा अकेला पक्षी था कि जिस डाल पर बैठता सभी उसे तन्हा छोड़कर उड़ जाते.

किशोर अवस्था में पहुँचने के बाद उसके दुख और बढ़ गये. गांव में किसी भी लड़के को हंस के किसी लड़की के साथ बात करते देखता या किसी को किसी लड़की के साथ अकेले

घूमते देखता तो उसकी आत्मा सिसका उठती. हर लड़के की तरह उसका भी मन करता कि कोई उसे भी प्यार करे, कहीं दूर खेत खलिहानो में कोई उसका भी इंतेज़ार करे. कभी वो भी किसी लड़की के साथ किसी झरने के निकट बैठकर उसके ज़ुल्फो से खेले. कोई उसके लिए भी रूठे और वो मनाए. पर उसके तक़दीर में ये सब नही था.

गांव की सभी लड़कियाँ उससे दूर भागती थी. कोई भी लड़की उससे प्रेम करना तो दूर सीधे मूह उससे बात तक नही करती थी. भला कौन लड़की उस बदसूरत से दिल लगाती, हर लड़की की चाह होती है कि उसका होने वाला पति खूबसूरत हो, पढ़ा लिखा हो, उँचे कुल का और धनवान हो.

लेकिन उसके पास इनमें से कुछ भी नही था. ना तो उसके पास वो रूप जिसपे कोई कुँवारी मरती, और ना ही वो पढ़ा लिखा और धनवान था.

लेकिन गांव की उन लड़कियों के बीच एक ऐसी भी लड़की थी, जिसे कल्लू बहुत पसंद करता था. वो थी कांचन.

पूरे गांव में वही एक ऐसी लड़की थी जो कल्लू से हंस के बात करती थी, कभी उससे मूह नही चुराती थी. जब कभी वो मिल जाता तो उससे प्यार से हाल-चाल पुछ लेती थी.

कांचन की यही अच्छाई कल्लू को भा गयी थी और वो मन ही मन कांचन से प्यार करने लगा था. लेकिन वो अपने दिल की बात कभी कांचन से कह नही पाया. बस दूर से देखकर अपने दिल की प्यास बुझा लेता.

वो ये अच्छी तरह से जानता था, कि चाँद और चकोर का मिलन ना कभी हुआ है ना कभी होगा.

कांचन ग़रीब ही सही पर उससे लाख गुना अच्छी थी, वो सुंदर थी, पढ़ी लिखी थी. उसका और कांचन का कोई मेल नही था. उसे डर था की अगर उसने कांचन से अपने दिल की बात कही तो कहीं ऐसा ना हो कि वो बुरा मान जाए. और जो वो बुरा मान गयी तो फिर कभी उससे बात नही करेगी. जो अभी थोड़ी बहुत उससे बात चीत होती है कहीं वो भी ना बंद हो जाए...

वो कांचन को पाने से कहीं ज़्यादा खोने से डरता था. उसकी एक ग़लती उसे कांचन से सदा सदा के लिए दूर ना कर दे, यही सोचकर उसने अपने दिल में मचलती भावनाओ को कभी अपने होंठो तक आने नही दिया था.

वो दिन भर जानवरों की तरह खेतों में मेहनत करता और रात में कांचन को अपने ख्यालो में बसाकर अपने प्यासे मन को तृप्त करने का प्रयास करता. पर तन्हाई में कांचन की याद

उसके प्यासे मन की प्यास को और बढ़ा देती. दर्द जब हद से बढ़ जाता तो बच्चो की तरह फुट फुट कर रो पड़ता. पर अपने दिल का दर्द किसी को नही बताता.

उसके इस दर्द को उसके सिवा कोई नही जानता था. किसी को उस अभागे इंसान से सरोकार हो भी कैसे सकता था.

उसके अकेलेपन के दर्द से अगर कोई परिचीत था तो सिर्फ़ उसकी मा थी. वो जब कभी कल्लू को उदास देखती तो उसे अपनी ममता के आँचल में लेकर उसे बहलाती. वो बदसूरत ही सही पर उस मा के दिल का टुकड़ा था. उसका सहारा था. लेकिन उसकी मा को भी इस बात की हरदम चिंता रहती थी कि उसके ग़रीब बदसूरत बेटे को कौन अपनी बेटी देगा? क्या उसका बेटा हमेशा अकेला ही रहेगा?

लेकिन वो अपनी चिंता कल्लू पर प्रकट नही करती.

दोनो मा बेटे जब भी एक दूसरे के सामने होते एक दूसरे से अपने अपने दुख छुपाकर एक दूसरे पर अपना प्यार लुटाते.

इस वक़्त वो धनपाल के घर जा रहा था, बुखार से उसका बदन तप रहा था, और सर्दी से बदन थर-थर काँप रहा था. सर्दी से बचने के लिए उसने अपने बदन पर एक फटा पुराना शॉल ओढ़ रखा था. बुखार इतना तेज़ था कि उससे चला भी नही जा रहा था, पर धनपाल के बुलावे पे वो इस हालत में भी मिलने जा रहा था.

बस्ती में दो लोग ऐसे थे जिनका कहा कल्लू कभी नही ठुकराता था. एक तो मुखिया लाला राई, जो उसे मज़दूरी देता था. तो दूसरा धनपाल, धनपाल की बात वो इसलिए नही टालता था क्योंकि वो कांचन का पिता था.

आज जब धनपाल ने उसे बुलाया तो ऐसी दशा में भी उसके घर जाने के लिए निकल पड़ा था.

उसका घर बस्ती के आखरी छोर पर था., अभी वो अपने घर से निकल कर सड़क तक पहुँचा भी नही था कि जीप के रुकने की आवाज़ से उसके बढ़ते कदम रुक गये थे. फिर डिंपल के आवाज़ देने पर उसकी जीप के निकट जाकर खड़ा हो गया था.

" उफ्फ .... तुमने तो मुझे डरा ही दिया था ." डिंपल लंबी साँस छोड़कर बोली - " ऐसा रूप धरकर कहाँ जा रहे हो ?"

" जी .... धनपाल काका के घर जा रहा हूँ . उन्होने किसी काम से बुलाया है ."

" ओह्ह्ह ..... इस तरह शॉल ओढकर क्यों जा रहे हो ?"

मुझे थोड़ा बुखार है जी." कल्लू शॉल को संभालते हुए बोला - "ईसलिए शॉल ओढ़े रखा हूँ."

" तो आओ मेरी जीप में बैठ जाओ , मैं भी कांचन के घर ही जा रही हूँ ." डिंपल बोली और उसे सीट पर बैठने का इशारा किया .

" मैं ऐसे ही चला जाऊंगा डिंपल जी . आप कष्ट ना करो "

" अरे ... जब मैं उधर ही जा रही हूँ तो मेरे साथ चलने में क्या परेशानी है ." डिंपल भड़की . उसे कोई इनकार करे तो उसका गुस्सा सातवें आसमान पर पहुँच जाता था . वो आगे बोली - " चुपचाप मेरे साथ गाड़ी में बैठो ."

कल्लू इस बार इंकार नही कर सका. आगे बढ़कर जीप में उसके बराबर बैठ गया. आज उसने जीवन में पहली बार किसी चार पहिए वाली गाड़ी पर बैठा था.

डिंपल ने उसके जीप में बैठते ही जीप को आगे बढ़ा दी.

कुछ ही देर बाद जीप कांचन के घर के सामने जाकर रुकी. पहले डिंपल उतरी और आँगन के दरवाज़े को धकेल कर अंदर दाखिल हो गयी. कल्लू भी उसके पिछे पिछे आँगन में आया.

आँगन में शांता बुआ रोटी पका रही थी. पास की चारपाई पर धनपाल बैठा हुक्का पी रहा था.

डिंपल को देखते ही बुआ हैरत से भरकर धनपाल से बोली - "भैया देखो तो सही कोई लड़की आई है."

शांता की बात सुनते ही धनपाल ने दरवाज़े की तरफ गर्दन घुमाया. डिंपल मुस्कुराती हुई उसकी ओर चली आ रही थी. उसपर नज़र पड़ते ही धनपाल बोला - "अरे शांता ये तो डिंपल है, क्या तुम इसे नही पहचान पाई?"

शांता ने आश्चर्य से धनपाल को देखा. फिर अपनी निगाहें डिंपल पर जमा दी. वो कुछ बोलती उससे पहले डिंपल उनके करीब आकर बोली - "नमस्ते काका. नमस्ते बुआ." उसने

हाथ जोड़कर दोनो को बारी बारी से नमस्ते किया. फिर झुक कर धनपाल के पावं छू लिए.

" कितनी बड़ी हो गयी है तू डिंपल ." बुआ आश्चर्य से बोली - " कितनी छोटी थी जब तू यहाँ आई थी ."

डिंपल बुआ की बातों से मुस्कुरा उठी. - "कांचन कहाँ है बुआ?"

" दीदी यहाँ है ." चिंटू की आवाज़ से डिंपल की गर्दन घूमी , बरामदे में उसे चिंटू और कांचन खड़े दिखाई दिए . वे दोनो डिंपल की आवाज़ सुनकर बाहर निकले थे .

डिंपल को देखते ही कांचन उसकी ओर लपकी. फिर उसका हाथ पकड़कर बोली - "आज मेरे घर का रास्ता कैसे भूल गयी?"

" आ गयी , अकेले मेरा जी नही लग रहा था . सोचा तुमसे मिल आऊ " डिंपल ने उत्तर दिया .

" दीदी मेरे लिए क्या लाई हो शहर से ?" चिंटू डिंपल की कुरती खींचता हुआ बोला .

डिंपल उसे बताने लगी. डिंपल के आने से सब के सब उसी के संग रंग गये थे. पास ही थोड़ा हट के बुखार से थर थर कांपता कल्लू खड़ा था पर उसकी ओर किसी का ध्यान नही जा रहा था.

कुछ देर कल्लू खड़े खड़े उन्हे देखता रहा फिर धनपाल के निकट गया, जो सभी के हँसी में शामिल हुआ ये भूल गया था कि उसने कल्लू को अपने घर बुलाया है और वो कब का आया हुआ है. - "काका...आपने मुझे बुलाया था?"

कल्लू की बात से धनपाल के साथ साथ सभी का ध्यान उसकी ओर गया.

" अरे कल्लू तुम कब आए ?" धनपाल चौंकते हुए बोला .

" मैं डिंपल जी के साथ साथ ही आया हूँ काका ." कल्लू ने जवाब दिया .

" माफ़ करना कल्लू , मैं तुम्हे देख नही पाया था ." धनपाल झेंपते हुए बोला - " पर तुम्हे हुआ क्या है ? तुम शॉल ओढकर क्यों आए हो . तबीयत तो ठीक है तुम्हारी

?"

धनपाल की बात सुनकर चिंटू और शांता की हँसी छूट गयी. कांचन ने चिंटू को इस बात पर हल्की सी चपत लगाई और कल्लू को देखने लगी.

" थोडा सा बुखार है काका . सुबह तक उतर जाएगा ." कल्लू ने बताया - " आप बताओ काका .... मुझे क्यों बुलाया था ?"

" मुखिया जी से पता चला तुम कल खाद लेने नगर जा रहे हो . सोचा था एक बोरी खाद अपने लिए भी मग़वा लूँ ." धनपाल ने उत्तर दिया . - " पर अब तुम बीमार हो तो जाओगे कैसे ?"

" सुबह तक ठीक हो जाऊंगा ." कल्लू ने जवाब दिया . - " कल निकलने से पहले आपसे मिल लूँगा . अब इज़ाज़त दीजिए ."

" ठहरो ..... कुछ देर बैठो . एक गिलास गरम दूध हल्दी डाल के देता हूँ .... पीलो , सुबह तक बुखार उतर जाएगा ." धनपाल ने उसे रोकते हुए कहा . फिर कांचन को दूध गरम करने को बोला .

कुछ ही देर में कांचन ने गरम दूध का गिलास उसे पकड़ाया. कांचन के हाथ से गिलास लेते हुए कल्लू का हाथ ज़ोर से काँपा. एक मीठा सा दर्द उसके सीने में हुआ. इस एहसास से की कांचन उसे दूध का गिलास पकड़ा रही है....वो बुखार में होने के बाद भी रोमांचित हो उठा. उसने एक नज़र उठाकर कांचन के चेहरे को देखा फिर उसके हाथ से गिलास ले लिया.

दूध पीने तक कांचन वहीं उसके पास खड़ी रही. वो धीरे धीरे दूध को अपने हलक के नीचे उतारने के बाद खाली गिलास कांचन को पकड़ाया. दूध पीने के बाद उसकी इच्छा कुछ देर और वहाँ बैठने की हो रही थी. वो कुछ देर और कांचन को देखना चाहता था. पर घर के लोग उसे ग़लत ना समझे ये सोचकर वो उठ खड़ा हुआ. फिर धनपाल से सुबह मिलने की बात कहकर बाहर निकल गया.

डिंपल कुछ घंटा भर कांचन के घर रहने के बाद हवेली लौट आई. जब वो हवेली से निकली थी तब बेहद तनाव में थी किंतु जब वो कांचन के घर से निकली तो हर तनाव से दूर थी.

जब हवेली पहुँची तब डिनर के लिए नौकरों ने खाना सज़ा दिया था. ठाकुर साहब सोफे पर बैठे उसका इंतेज़ार कर रहे थे.

डिंपल के हॉल में कदम रखते ही ठाकुर साहब ने पुछा - "इस वक़्त कहाँ से आ रही हो डिंपल? क्या कांचन के घर गयी थी."

" हां पापा ." डिंपल मुस्कुराती हुई बोली और अपनी बाहों का हार उनके गले में डाल दिया .

" तुम्हारे चेहरे की खुशी देखकर ही मैं समझ गया था , तुम कांचन के घर से आ रही हो ." ठाकुर साहब उसके गाल सहलाते हुए बोले - " सब ठीक तो है वहाँ ?"

" हां ..... सभी ठीक हैं , शांता बुआ भी ठीक है धनपाल काका की तबियत भी अच्छी है . कुछ भी नही बदला जैसे में ६ साल पहले देखकर गयी थी सब वैसे ही हैं ." डिंपल एक एक करके सबकी हाल बताने लगी - " बस चिंटू बदल गया है . पहले उसके नाक से पानी बहता रहता था और हकला के बोलता था अब तो किसी को बोलने नही देता ." ये कहकर डिंपल चुप हुई .

" चलो अच्छा किया तुम उनसे मिल आई ." ठाकुर साहब प्यार से बोले - " आओ अब बाकी की बातें खाने के टेबल पर करेंगे ."

डिंपल मुस्कुराती हुई डाइनिंग टेबल की ओर बढ़ गयी. फिर अपनी कुर्सी खींचकर उसपर बैठ गयी.

" बबलू " ठाकुर साहब ने पास ही खड़े एक नौकर से बोले - " अजित को बुला लाओ . उससे कहो हम खाने की मेज पर उनका इंतेज़ार कर रहे हैं ."

" जी मालिक ." बबलू बोला और अजित के कमरे की तरफ बढ़ गया .

कुछ ही देर में अजित सीढ़ियाँ उतरता दिखाई दिया. उसने खाने की मेज के पास आकर मुस्कुराते हुए ठाकुर साहब को प्रणाम किया फिर एक नज़र डिंपल पर डालकर उसे हेलो बोलते हुए अपनी कुर्सी खिच कर बैठ गया.

डिंपल की इच्छा तो नही हो रही थी कि उसके हेलो का जवाब दे. पर ठाकुर साहब की मौजूदगी का ख्याल करके उसे ज़बरदस्ती हेलो कहना पड़ा.

नौकरों के द्वारा खाने को प्लेट्स में निकालने के बाद तीनो लोग खाने में व्यस्त हो गये. ठाकुर साहब तो बस नाम मात्र के खा रहे थे. किंतु अजित खाने के मामले में कोई समझौता नही करता था.

" आपका यहाँ मन तो लग रहा है ना अजित ?" ठाकुर साहब खाने के मध्य में अजित से मुखातीब हुए .

अजित ने थाली से नज़र हटाकर ठाकुर साहब को देखा फिर मुस्कुराकर बोला - "मन क्यों नही लगेगा ठाकुर साहब. यहाँ का वातावरण तो किसी का भी मन मोह लेगा. ये जगह प्राकृतिक सुंदरता से रंगा हुआ है. और मैं प्राकृतक प्रेमी हूँ." ये कहने के बाद अजित ने डिंपल की ओर देखा. फिर आगे बोला - "मुझे शहर की बनावटी सुंदरता से कहीं अधिक गांव की नॅचुरल खूबसूरती अच्छी लगती है."

अजित की बात का अर्थ समझकर डिंपल का चेहरा गुस्से से तमतमा गया. पर अपने पापा का ख्याल करके वो अपने गुस्से पर तेज़ी से नियंत्रण कर ली.

" ह्म् म्म ..... आप ठीक कह रहे हैं ." ठाकुर साहब ने अजित की बात पर सहमति जताते हुए बोले - " हमें भी ये जगह बहुत पसंद आई थी . इसीलिए हम यहीं आकर बस गये ."

" तो क्या ..... ये जगह आपके पुरखो की नही है ?" अजित ने जिज्ञासा से पुछा .

" नही ....!" ठाकुर साहब बोले - " हम बनारस के रहने वाले हैं . वहाँ अभी भी हमारे पुरखों की ज़मीनें हैं . हम यहाँ एक बार किसी काम से आए थे . हमें ये जगह अच्छी लगी और हमने यहाँ ज़मीन खरीद ली . फिर इस हवेली का निर्माण कराया ." हवेली की बाबत बोलते हुए ठाकुर साहब का चेहरा उदास हो गया . पर अजित इसकी वजह नही जान पाया . और ना ही डिंपल .

अजित के मन में एक बार आया कि वो इसका कारण पूछे पर इस समय ये पूछना उसे उचित नही लगा. खाने के मध्य में किसी को कष्ट पहुचाने वाली बाते नही पूछनी चाहिए. लेकिन अजित के मन में ऐसे काई सवाल थे जिनका जवाब सिर्फ़ ठाकुर साहब दे सकते थे. उसे शारदा देवी की बीमारी के संबंध में भी जो बातें बताई गयी थी वो उसके गले नही उतर रही थी.

ठाकुर साहब ने उसे बताया था कि शारदा जब प्रेग्नेंट थी तभी एक दिन वो सीढ़ियाँ उतरते वक़्त फिसल गयी थी. जिसकी वजह से शारदा देवी को हॉस्पिटल ले जाया गया था.

उसी हॉस्पिटल में मुनीम जी की पत्नी भी बच्चे की डिलीवरी के लिए भरती थी. और दुर्भाग्यवश उसी दिन दोनो की डिलीवरी भी हुई. उस दिन मुनीम जी की पत्नी ने मुर्दा बच्ची को जन्म दिया. ये खबर लेकर जब नर्स हमारे पास आई और बच्चे के मरने की बात कही तो शारदा को लगा कि उसके गिरने की वजह से उसकी बेटी मर गयी. बस उस बात को वो सह ना पाई और अपना मानसिक संतुलन खो बैठी.

वो अपने विचारों से बाहर निकला तो देखा कि डिंपल उसे आश्चर्य से घुरे जा रही थी. उसने झेंपते हुए अपनी दृष्टि खाने की थाली पर टिका दी.

कुछ देर बाद खाने की मेज से सभी उठ खड़े हुए और अपने अपने रूम की तरफ बढ़ गये.

११

दिन के ११ बजे हैं. शांता नदी जाने की तैयारी कर रही है. इस वक़्त कांचन और चिंटू कॉलेज गये हुए हैं. धनपाल अपने खेतों में काम करने गया हुआ है. शांता अकेली घर में बैठी उकताने की बजाए नदी में जाकर नहाना ज़्यादा बेहतर समझी. उसने अपने पहनने के लिए कपड़े निकाले और बाहर से घर का ताला लगाकर नदी के रास्ते बढ़ गयी.

गांव के सभी औरत मर्द नदी में ही नहाया करते थे. नदी में औरतो के लिए अलग घाट थी और मर्दों के लिए अलग. औरतों के घाट के तरफ मर्द नही जाते थे और मर्द के घाट की तरफ औरतें.

शांता अभी बस्ती से निकल कर कुछ ही दूर चली थी कि पिछे से किसी ने उसे नाम लेकर पुकारा - "अरी ओ शांता, ज़रा धीरे चलो.....मैं भी साथ आ रही हूँ."

शांता पिछे मूडी तो देखा वंदना तेज़ तेज़ चलती चली आ रही है.

" अरी आराम से भाभी . इतनी भी जल्दी क्या है . मैं खड़ी तो हूँ ." वंदना के निकट आते ही शांता वंदना से बोली .

" अरी बहनी , तू नही जानती ..... मैं अकेली होने से कितनी डरती हूँ ." वंदना हाफ्ति हुई बोली . - " मैं कब से सोच रही थी नदी जाऊ , पर कोई साथी नही मिल रही थी . तुम्हे जाते देखी तो भागी भागी आई ."

" भाभी अभी तो दिन है ..... क्या दिन के उजाले में भी डरती हो ?" शांता हंसते हुए बोली और धीरे धीर पग बढ़ने लगी .

वंदना भी उसके कदम से कदम मिलाती हुई चलने लगी.

" मैं दिन या रात से नही अकेलेपन से डरती हूँ पगली ." वंदना हंसते हुए बोली .

" मैं समझी नही भाभी , क्या कहना चाहती हो ?" शांता थोड़ी हैरान होकर बोली .

" बहनी , तेरी मेरी तो एक जैसी कहानी है . फिर भी तू नही समझी ?" वंदना आश्चर्य प्रकट करती हुई बोली .

" क्यों मेरा मज़ाक उड़ा रही हो भाभी ?" वंदना के हँसते खेलते जीवन की तुलना अपनी बेरंग ज़िंदगी से किए जाने पर वह आहत होकर बोली - " सब कुछ तो है तुम्हारे पास . मुखिया दद्दा जैसा प्यार करने वाला पति है , बड़ा घर है तुम्हारे पास , पायल जैसी सुंदर और सुशील बेटी पाई हो . और क्या चाहिए तुम्हे ?"

" मैं भी वही कमी महसूस करती हूँ बहिन , जो तुम महसूस करती हो ." वंदना अचानक से गंभीर होती हुई बोली - " हां बहिन , मेरे पास सब कुछ होते हुए भी कुछ नही है . पति हैं पर सिर्फ़ दिखाने के लिए और लोगों को बताने के लिए . बेटी है पर फिर भी बांझ कही जाती हूँ ." ये कहते हुए वंदना सिसक पड़ी .

" तो किसी डॉक्टर के पास क्यों नही जाती ." शांता भावुक होकर बोली .

" डॉक्टर क्या करेगा बहिन ? जब बीज ही नही बोए जाएँगे तो फल कहाँ से आएगा ."

" तो क्या दद्दा से ...?" शांता बोलते बोलते रुकी .

" उनसे कुछ नही होता बहिन , वैसे तो गांव भर में बहुत अकड़ कर चलते हैं , पर बिस्तर पर आते ही ढीले पड़ जाते हैं ." वंदना अपने आँसू पोछती हुई बोली . - " मुझमे और तुम में बस इतना ही फ़र्क है कि मेरा पति मेरे साथ है और तुम्हारा पति तुमसे दूर .

" तो क्या शादी से अब तक तुम ......?" शांता की आँखें नम हो गयी . उसके दुख में उसे अपने दुख की परछाई नज़र आई . -" तुम अब तक कैसे जीती रही भाभी ?"

" ना .... बहिन , मैं इतनी सहनशील औरत नही हूँ ." वंदना शांता से बोली - " शादी के एक साल तक मैं सब सहती रही . लेकिन कब तक ....? आख़िर कब तक अपनी देह जलाती ? कब तक दूसरे की ग़लती की सज़ा खुद को देती ? मैने अपने सुख का मार्ग बहुत जल्दी ढूँढ लिया . उन दिनो बिरजू को मुखिया जी ने नया नया काम

पर रखा था . एक दिन उसे किसी बहाने घर के अंदर बुलाई और कर ली मनमानी .
उस दिन से लेकर आज तक वही मेरी देह को ठंडक पहुँचा रहा है ."

वंदना के इस रहस्योउद्घाटन से शांता हैरान रह गयी. उसके बढ़ते कदम धरती पर जाम गये. वो अपने मूह पर हाथ रखे वंदना को किसी अजूबे की तरह देखने लगी.

उसे हैरान परेशान सा देख वंदना के कदम भी थम गये. लेकिन उसके मन में कोई लज्जा भाव नही आया. वो धीरे से फीकी हँसी हँसी. फिर बोली - "और क्या करती मैं. मैं भला उनकी चिंता करती भी तो क्यों? जिन्होने मेरे दुख का सामान किया. क्या मेरे पिता ने मेरा विवाह करने से पहले ये सोचा कि इस रिश्ते से मेरी बेटी का जीवन सुखमय रहेगा या नही. क्या मेरे पति ने कभी ये सोचा कि वो अपने से आधी उमर की लड़की को पत्नी बनाकर उसे सुखी रख पाएँगे या नही.

नही सखी, ना तो मेरे पिता ने मेरे सुख का सोचा ना मेरे पति ने. पिता को सर का बोझ उतारना था सो उतार लिए. पति को नयी नवेली दुल्हन मिली स्वीकार कर लिए.

ज़रा सोचो बहिन, अगर कोई ३५ साल की औरत किसी २० साल के लड़के से विवाह करे तो लोग कहेंगे की कैसी औरत है इस उमर में ठूकने चली है. कोई वेश्या ही ऐसी घृणित कार्य करेगी, ये औरत नही औरत के नाम पर कलंक है, ऐसी औरत के साए से दूर रहना चाहिए. लेकिन यही काम कोई मर्द करे तब लोग कहते हैं वाह क्या मर्द है इस उमर में भी जवान बीवी ले आया है.

तब समाज में उसकी प्रतिष्ठा और बढ़ जाती है, बिस्तर में बीवी चाहें अंगारों पर लेटती हो. पर यें बाहर अपनी मूच्छे उँची करके घूमते हैं.

ज़रा अपने बारे में सोच....! तेरा पति तुम्हे छोड़ गया है, वहाँ ना जाने क्या क्या करता होगा. कभी किसी लड़की के साथ सोता होगा तो कभी किसी के साथ. और भी ना जाने कितने बुरे ऐब पाले होंगे वहाँ.

पर जिस दिन वो लौट के आएगा. ना तो तुम ये पुछोगि कि इतने दिन तुम किसके साथ सोए किसके साथ जागे. और ना ये समाज पुछेगा. लेकिन यही काम अगर तू करेगी तो हज़ार मूह एक साथ सवाल करेंगे. पति धक्के मार कर घर से बाहर निकाल देगा. सारे समाज में तुम्हारी थू थू हो जाएगी. क्योंकि तुम औरत हो."

शांता कुछ ना बोली. वह खामोशी से वंदना की बातों को सच्चाई की तराजू पर तौलती रही. वंदना के मूह से निकले एक एक बात में सच्चाई छीपि हुई थी. उसे वंदना से सहानुभूति हो हो चली थी.

" बोल बहनी , जो मैं झूठ बोलती हूँ तो अपनी चप्पल मेरे सर पर दे मारो ." वंदना उसे खामोश देख आगे बोली - " मैने तो इन मर्दों की परवाह करना बंद कर दिया है . अब परिणाम जो भी हो मुझे फिक़्र नही . मैं तो अपनी ज़िंदगी जी रही हूँ और ऐसे ही जियूंगी ."

" पर भाभी औरत की कुछ मर्यादायें भी तो होती है ?" शांता ने मन में उठते प्रश्न को वंदना के सामने रखा .

" ये भी मर्दों के बनाए हुए हैं ." वंदना जवाब में बोली - " बहनी , हमारी विवशता यह है कि हमें मर्दों ने इतना डरा रखा है कि हम अपनी खुशी कम और उनके सम्मान की ज़्यादा सोचते हैं . सच पुछो तो हम अपने लिए जीते ही नही हैं . हमारी खुशी भी उनकी मर्ज़ी की दास है और हमारा मान सम्मान भी उनकी जागीर है . हमारा अपना कुछ है ही नही . ना ये समाज ना ये घर .....! हम केवल वस्तु हैं . जब जिसकी मर्ज़ी हुई उपयोग कर लिया .

मैं सच कहती हूँ बहनी, आज मेरे दिल में मुखिया जी से कहीं ज़्यादा बिरजू के लिए सम्मान है. क्योंकि मुझे अब तक जितनी भी खुशी मिली है बिरजू से मिली है, पति से सिर्फ़ दुख और झिड़की के कुछ ना मिला है. मैं तो कहती हूँ तू भी किसी का हाथ पकड़ ले. क्यों अपनी जवानी गला रही है? अभी भी तुझमे बहुत आकर्षण बाकी है, किसी भी मर्द का मन हिला सकती है"

" ना भाभी ." वंदना की बात से शांता घबराकर बोली - " मुझसे ये सब ना होगा . अब थोड़ी से ज़िंदगी बची है कैसे भी काट लूँगी ."

" शांता क्यों अपनी जवानी बर्बाद कर रही है उस शराबी के इंतेज़ार में . छोड़ दे उसका इंतेज़ार और थाम ले किसी का हाथ , मैं तुम्हे दूसरा विवाह करने की बात नही कह रही हूँ , सिर्फ़ किसी की बाहों में सिमट कर सुख भोगने की बात कर रही हूँ . सच बता क्या तेरा मन नही करता कि तुझे कोई प्यार करे , तेरे इन खूबसूरत होंठों का रस पीए , कोई

तेरे इन नाज़ुक अंगो पर हाथ धरे " ये कहते हुए वंदना ने अपने एक हाथ से उसके स्तन दबा दिए .

" भाभी ..... ये क्या कर रही हो ?" शांता चिहुन्क कर पीछे हटी . वंदना के छुने से उसके पूरे बदन में एक सनसनाहट सी भर गयी . उसकी आँखें उत्तेजना में भारी हो गयी थी . वह काँपते होंठों से शांता से बोली - " मेरे सोए अरमान ना जगाओ भाभी , मैं बदनामी से डरती हूँ . मुझसे वो सब ना होगा जो तुम कर लेती हो ."

" बहनी , क्यों एक दिन की बदनामी के डर से अपनी सारी ज़िंदगी को जहन्नुम बनाती हो . अभी तुम्हारी उमर ही कितनी हुई है ? तू अभी भी खूब मज़े ले सकती है . छोड़ दे दुनिया की परवाह ..... जी ले अपनी ज़िंदगी . तू कहे तो मैं तेरी मदद कर दूँ . बिरजू बहुत दमदार मर्द है . उसका मर्दाना अंग बहुत शानदार है ." वंदना ने एक आ भरी फिर बोली - " ज़ालिम क्या रगड़ता है बिस्तर पर , सखी सच कहती हूँ , जब वो देह पर चढ़कर उच्छलता है तो मैं संसार को भूल जाती हूँ . एक बार तू उसकी सेवा लेकर देख .... फिर देख वो कैसे तेरी सालों की प्यास बुझता है ."

शांता की आँखें नशे में लाल हो गयी. बदन में वासना लहू बनकर दौड़ उठा. शरीर इतना गरमाया कि उसकी योनि गीली हो गयी. वंदना की बातों से एक बार उसके विचारों में बिरजू का मजबूत शरीर घूम गया. उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कुछ देर पहले जिस स्तन को वंदना ने दबाया था अब उसी स्तन पर बिरजू के हाथ रेंग रहे हों. इस एहसास से उसके विचार और गहराए.....अब उसे लगने लगा जैसे बिरजू के हाथ उसके समस्त शरीर को छु रहे हों, उसे कभी अपने स्तन पर बिरजू के कठोर हाथों का स्पर्श महसूस होता तो कभी अपने नितंबो पर उसके हाथों की थपकी. तो कभी उसे ये लगता कि बिरजू उसे अपनी बाहों में जकड़े हुए उसके होंठो को चूस रहा है.

शांता ने लाख प्रयास किए कि वह अपने दिमाग़ में आते बिरजू के विचारों को झटक दे. पर बिरजू उसके मस्तिष्क पर हावी होता जा रहा था.

शांता ने अपनी भारी होती पलकों को खोलकर वंदना पर निगाह डाली. वो हौले हौले मुस्कुरा रही थी.

" क्या हुआ बहिन , तू एकदम से चुप क्यों हो गयी ." वंदना शांता के चेहरे पर बदलते भाव को देखती हुई बोली .

" कुछ नही भाभी ." शांता धीरे से बोली और काँपते पैरों से नदी की ओर बढ़ गयी .

वंदना भी उसके बराबर चलती हुई नदी की ओर बढ़ती रही. कुछ ही देर में दोनो नदी पहुँच गयी. रास्ते भर वंदना शांता से उसी संबंध में बाते करती रही, और उसके सोए अरमान जगाती रही. किंतु नदी तक पहुँचते ही उसे चुप हो जाना पड़ा. क्योंकि नदी में पहले से कुछ औरतें मौजूद थी. और वो नही चाहती थी कि उसकी बातें कोई और भी सुने.

वंदना तो चुप हो गयी पर शांता के दिल में तूफान जगा गयी. जिस आग को शांता १० सालों से दबा रखी थी, आज उसे वंदना ने हवा दे दी थी. शांता का मन अशांत हो चुका था. वो नहाते वक़्त भी वंदना की बातों पर विचार करती रही.

१२

ठाकुर रामप्रताप सिंह अपने कमरे में बैठे मुनीम जी की राह देख रहे थे. उन्होने ५ मिनिट पहले छोटू को उनके निवास पर बुलाने हेतु भेजा था. उनके चेहरे से बेचैनी झलक रही थी पर चिंता नाम मात्र की भी नही थी. वो कुर्सी से उठे और सिगार जलाकर खिड़की के पास खड़े हो गये और बाहर का नज़ारा देखने लगे.

उन्होने अभी सिगार का एक लंबा कस लिया ही था कि दरवाज़े से मुनीम जी अंदर प्अजितष्ट हुए. कदमों की आहट से ठाकुर साहब पलटे. मुनीम जी पर नज़र पड़ी तो वापस अपनी कुर्सी पर आकर बैठ गये.

मुनीम जी अभी भी खड़े थे. ठाकुर साहब के कुर्सी पर बैठते ही मुनीम जी उनसे बोले - "कोई चिंता सरकार?"

" नही मुनीम जी . ईश्वर की कृपा से जब से अजित आया है तब से सब कुछ ठीक होता रहा है . हम एक अच्छे और महत्वपूर्ण विषय पर आपके साथ बात करना चाहते हैं ."

मुनीम जी खड़े खड़े सवालिया नज़रों से ठाकुर साहब को देखते रहे. उनके समझ में कुछ भी ना आया था.

" आप बैठ जाइए ." ठाकुर साहब मुनीम जी को कुर्सी की ओर इशारा करके बैठने को बोले .

मुनीम जी पास पड़ी कुर्सी को अपनी ओर खींचकर बैठ गये. - "आगे बोलिए सरकार. मेरे लायक जो भी सेवा हो आदेश दीजिए."

" आदेश नही मुनीम जी हम आपकी राई जानना चाहते हैं ." ठाकुर साहब सिगार का अंतिम कश लेकर उसे एश ट्रे में बुझाते हुए बोले - " आपको अजित कैसा लगता है ?"

" अजित ." मुनीम जी चौंककर बोले - " आप किस संबंध में पूछ रहे हैं ?"

" डिंपल के संबंध में ." ठाकुर साहब अपने मन की बात मुनीम जी के सामने प्रकट किए - " हमारी डिंपल के लिए अजित कैसा रहेगा ? हमें उसके घर संपति से कोई लेना देना नही , वो डॉक्टर है और अच्छे विचार रखता है . हमारे लिए यही काफ़ी है ."

" सरकार , आप तो मेरे मन की बात ताड़ गये ." मुनीम जी खुशी से चहक कर बोले - " मुझे तो अजित उसी दिन भा गया था जब मैं उनसे देल्ही में मिला था . निकी और अजित की जोड़ी तो लाखों में एक रहेगी . बिल्कुल देर ना करें . आज ही इस संबंध में अजित से बात कर लें ."

" ठीक है आज शाम को ही अजित और डिंपल को बिठाकर दोनो की मर्ज़ी जान लेते हैं ." ठाकुर साहब फिर से सिगार की तरफ हाथ बढ़ाते हुए बोले .

" जो आज्ञा ." मुनीम जी उठते हुए बोले .

फिर ठाकुर साहब से इज़ाज़त लेकर दरवाज़े बाहर निकले. दरवाज़े से बाहर कदम रखते ही उनकी नज़र डिंपल से टकराई. वो दरवाज़े के बाहर खड़ी मुनीम जी और ठाकुर साहब की बातें सुन रही थी.

वो किसी काम से ठाकुर साहब के पास आ रही थी जब दरवाज़े के बाहर से अपने और अजित के संबंध में ठाकुर साहब के मूह से कुछ कहते सुनकर दरवाज़े के बाहर ठिठक गयी थी. फिर कुछ देर उसी अवस्था में रहकर उसने सारी बातें सुन ली थी. अब जब मुनीम जी ने उसे खड़े देख लिया था तो वो एकदम से शर्मा गयी और तेज़ी से अपने कमरे की ओर भाग गयी.

मुनीम जी को ये समझते देर नही लगी कि डिंपल इस रिश्ते के लिए राज़ी है. वो मुस्कुराते हुए अपने रास्ते बढ़ गये.

डिंपल सीधा अपने कमरे में आकर बिस्तर पर गिरी. फिर एक लंबी साँस छोड़ने के बाद अपने पापा और मुनीम जी के मूह से सुनी बातें याद करने लगी. वो खुश थी, लेकिन उसे ये समझ में नही आ रहा था कि वो खुश क्यों है? जिस इंसान से वो अपने तिरस्कार का बदला लेना चाहती थी उसी इंसान के साथ अपने विवाह की बात सुनकर उसका मन इतना प्रसन्न क्यो हो रहा है? वह तो अजित को नीचा दिखाना चाहती थी, फिर आज क्यों उसे अपनी माँग में सजाने की सोच रही है? शायद ये अजित की अच्छाई थी जिसने डिंपल के मन से सारा मैल निकाल दिया था. डिंपल का मन ये जान चुका था कि अजित लाखों में एक है. जो इंसान उसके नग्न शरीर को त्याग दे वो कोई साधारण इंसान हो ही नही सकता. अजित की यही अच्छाई उसकी खुशी का कारण था. वो इस बात से आनंद महसूस कर रही थी कि अजित जैसा सभ्य पुरुष उसका पति होने वाला है.

डिंपल अपने ख्यालो में अजित को बसा कर मन ही मन मुस्कुराइ फिर मन में बोली - "अब कहो मिस्टर अजित, अब मुझसे भाग कर कहाँ जाओगे? अब ऐसे बंधन में बाँधने वाली हूँ कि ज़िंदगी भर मेरे साथ रहना पड़ेगा. फिर देखना कैसे बदला लेती हूँ तुमसे. बहुत सताया है तुमने मुझे.....अब मैं सताऊंगी तुम्हे."

अगले ही पल उसके मन में विचार आया क्यों ना वो अभी उसके कमरे में जाकर उसे इस रिश्ते की बात बताए. उसे छेड़ उसे परेशान करें.

वो मुस्कुराती हुई उठी और अपने कमरे से बाहर निकल गयी. फिर अपने कददम अजित के कमरे की तरफ बढ़ाती चली गयी. कुछ ही देर में वो अजित के कमरे के बाहर खड़ी थी. अभी वो दरवाज़े पर दस्तक देना ही चाहती थी की उसकी नज़र दरवाज़े की कुण्डी पर गयी जो बाहर से बंद थी.

दरवाज़ा बंद देख डिंपल के माथे पर शिकन उभरी. उसने अपनी घड़ी में समय देखा. इस वक़्त ५ बजे थे. वो कुछ देर खड़ी सोचती रही फिर सीढ़ियों से उतरती हुई हॉल में आई. उसने एक नौकर से अजित के बारे में पुछा तो पता चला कि वो अपनी बाइक से कहीं गया हुआ है.

डिंपल सोच में पड़ गयी. कुछ दिनो से वह नोटीस कर रही थी कि अजित शाम को अक्सर हवेली से बाहर जाने लगा है. लेकिन वो कहाँ जाता था क्यों जाता था इस बात को जानने का प्रयास उसने कभी नही किया था. पर जाने क्यूँ आज उसके मन में एक अंजानी सी शंका घर करती जा रही थी.

वह बेचैनी से हॉल में टहलती हुई एक ही बात सोचती जा रही थी - 'कहीं अजित का किसी लड़की के साथ कोई चक्कर तो नही चल रहा है? लेकिन उसे ऐसा करने की ज़रूरत ही क्या है. अगर वो सच में औरत की कमी महसूस करता होता तो वो मेरे पास आता. मैं तो उसके लिए हर घड़ी उपलब्ध थी. मुझे ठुकराकर उसे कहीं और भटकने की ज़रूरत क्या है?

" कुछ भी हो सकता है डिंपल ." उसके मन ने धीरे से सरगोशी की - " मिज़ाज़ और मौसम के बदलते देर नही लगती . तू इस तरह आँख मुन्दे पड़ी रहेगी तो ऐसा ना हो कि पक्षी दाना कहीं और चुग जाए . तुम्हे सच्चाई का पता लगाना ही होगा कि वो शाम को कहाँ जाता है ? कहीं ऐसा ना हो कि वो तेरे सामने साधु का ढोंग करता हो और बाहर भँवरा बनकर गांव के फूलों का रस चूस्ता फिरता हो ."

इस विचार के साथ ही डिंपल का चेहरा सख़्त हो उठा. वह तेज़ी से हवेली से बाहर निकली. फिर अपनी जीप में बैठ कर जीप को घाटियों की ओर भागती चली गयी.

अजित पिछले २५ मिनिट से झरने के निकट पत्थरों पर बैठा कांचन का इंतेज़ार कर रहा था.

कल वो इसी जगह मिलने की बात कहकर गयी थी. पर अजित को इंतेज़ार करते लगभग आधा घंटा बीत जाने के बाद भी वो अभी तक नही आई थी.

अजित उल्लू की तरह गिरते झरने को टकटकी लगाए घुरे जा रहा था. उसके मन की पटल पर कभी रोमीयो, कभी फरहाद तो कभी मजनू और रांझा की अनदेखी तस्वीरें घूम रही थी. इसलिए नही की वो अपनी तुलना उन महान प्रेमियों से कर रहा था, बल्कि इसलिए की आज सही मायने में उनके दर्द का एहसास उसे हुआ था.

आज उसने जाना था कि जुदाई क्या होती हा?, तन्हाई में बैठकर अपने सनम का इंतेज़ार करना क्या होता है? आज वो ये जान गया था कि क्यों प्यार करने वाले अपने कपड़े फाड़ लेते हैं?. क्यों पागलों की तरह गलियों में घूमते हैं? क्यों तन्हाई में बैठकर पत्थरों पर सर पटकते हैं?

क्योंकि आज उसे भी प्यार हो गया था. आज उसे भी किसी का इंतेज़ार करना पड़ रहा था.

उसने आज से पहले किताबों में, फिल्मों में और दोस्तों से इन महान प्रेमियों के बारे में बहुत कुछ देखा सुना और पढ़ा था. लेकिन कभी उनके सच्चे प्यार की तड़प को महसूस नही कर सका था. उसे महसूस होता भी तो कैसे? बिना जले जैसे जलन का ज्ञान नही होता. वैसे ही बिना प्यार किए प्यार की तड़प का एहसाह नही होता. इस बात पर किसी शायर ने कहा है.

" वही महसूस करते हैं खलिश दर्द ए मोहब्बत की .

जो अपने से बढ़कर किसी को प्यार करते हैं."

आज उसे भी उस दर्द से दो चार होना पड़ गया था. वो पत्थरों पर बैठा कभी अपने बाल नोच रहा था तो कभी झुँझलाकर पिछे देखता जा रहा था.

इस बार भी वो झंझलाहट से भरकर अपनी गर्दन जैसे ही पिछे घुमाया उसकी आँखें खुशी से चमक उठी. उसे कांचन गिरती पड़ती पत्थरों से बचती बचाती अपनी और आती दिखाई दी. वो खुशी से पत्थरों पर खड़ा हो गया और कांचन को देखने लगा.

कांचन नीले रंग की सलवार कमीज़ पहनी हुई थी. उन कपड़ों में बहुत सुंदर लग रही थी. दुपट्टा गले से लिपटकर पिछे झूल रहा था. टाइट कुरती में उसके पर्वत शिखर अपनी आकर में साफ़ दिखाई पड़ रहे थे.

कांचन हाफ्ति हुई अजित के पास आकर खड़ी हो गयी. फिर अजित को देखकर धीरे से मुस्कुराइ.

" क्या टाइम हो रहा है ?" अजित ने अपनी कलाई में बँधी घड़ी कांचन को दिखाते हुए पूछा . - " पिछले आधे घंटे से पागलों की तरह यहाँ बैठा तुम्हारा इंतेज़ार कर रहा हूँ . तुम्हे तो मेरी कोई फिक़्र ही नही है . क्या यही प्यार है तुम्हारा ." अजित के शब्दों में ना चाहते हुए भी क्रोध समा गया था .

कांचन अजित के मूह से निकले कठोर शब्दों से सहम गयी. उसने सोचा भी नही था कि यहाँ आते ही उसे अपने साजन से ऐसी झिड़की सुनने को मिलेगी. जब वो घर से निकली थी तब दिल में हज़ारों उमंगे थी, रास्ते भर चहकति हुई, मन में हज़ार अरमान सजाती हुई आई थी. पर यहाँ आते ही उसके मन में अरमानो के जितने भी फूल खिले थे वो सब एक झटके में मुरझा गये. वो धीमे स्वर में अजित से बोली -"ग़लती हो गयी साहेब. मुझे माफ़ कर दो. बुआ ने किसी काम से रोक लिया था." ये कहते हुए कांचन की गर्दन शर्मिंदगी से नीचे झुक गयी.

कांचन का उतरा हुआ चेहरा देखकर अजित को अपनी भूल का एहसाह हुआ. उसका सारा गुस्सा एक पल में गायब हो गया. उसका मन ये सोचकर ग्लानि से भर गया कि बिना कारण जाने उसने कांचन को डाँट पिला दी.

वह धीरे से कांचन के पास आया.कांचन अब भी गर्दन झुकाए खड़ी थी.उसने अपने हाथ से उसकी ठोडी को छुआ और उसका चेहरा उपर उठा लिया. कांचन की आँखें गीली हो चली थी. उसकी पलकों के बीच मोती जैसी दो बूंदे चमक उठी थी. उसकी आँखों में आँसू देखकर अजित खुद से झल्लाया. दिल में आया अपनी इस ग़लती पर अपना सर पत्थरों पर मार दे. उससे ऐसी नादानी हुई कैसे? वह उसकी आँखों से आँसू पोंछता हुआ बोला - "मुझे माफ़ कर दो कांचन, मैं आइन्दा तुमपर कभी गुस्सा नही करूँगा. प्रॉमिस. तुम चाहो तो मैं अपनी इस ग़लती के लिए कान पकड़कर उठक बैठक लगा सकता हूँ. पर प्लीज़ मुझे माफ़ कर दो और एक बार प्यार से मुस्कुरा दो."

अजित की इन बातों से कांचन सच में मुस्कुरा उठी. उसके अंदर की सारी पीड़ा क्षनभर में दूर हो गयी. वह अपनी झिलमिलाती आँखों से अजित का चेहरा ताकने लगी. फिर याचनापूर्ण लहजे में बोली - "साहेब, मुझे कोई भी कष्ट दे देना, पर मुझसे कभी अलग मत होना. मैं आपके बगैर जी नही सकूँगी."

" तो क्या मैं जी सकूँगा तुम्हारे बगैर ?" अजित ने ये कहते हुए उसके माथे को चूम लिया . - " आओ .... वहाँ बैठते हैं ."

अजित ने अपने बाईं और खड़े एक विशाल पेड़ की ओर इशारा किया फिर उसका हाथ पकड़कर उस और बढ़ता चला गया. पेड़ के नीचे एक बड़ा सा समतल पत्थर बिछा हुआ था. पत्थर इतना बड़ा था कि ३ आदमी आराम से सो सकते थे. पत्थर से दो कदम आगे गहरी खाई थी. अजित पेड़ की जड़ से पीठ टिका कर बैठ गया. कांचन उससे थोड़ी आगे होकर बैठी और वहाँ से दूर तक फैली फूलों की घाटी को देखने लगी.

वैसे तो कांचन पहले भी इस खूबसूरती को देख चुकी थी. पर आज उसके देखने में अंतर था. आज उसे इन हसीन वादियों में प्यार का रंग घुला हुआ दिखाई पड़ रहा था. वह जिधर भी नज़र घुमाती सभी पेड़, पत्ते, पौधे, फूल उसे हँसते खिलखिलाते नज़र आ रहे थे.

सूरज क्षितिज की ओर बढ़ रहा था. वातावरण में लालिमा फैलती जा रही थी. सांझ की लालिमा से यह घाटी और भी सुंदर होती जा रही थी.

कांचन सब कुछ भुलकर कर खोई हुई थी. उसे यह भी होश नही था कि उसके पिछे बैठा अजित उसे कब से एक टक देखे जा रहा है.

अजित भी उसके सुंदर मुखड़े को देखते हुए सब कुछ भुला बैठा था. तभी कांचन उसकी ओर पलटी.

अजित को यूँ अपनी ओर देखते पाकर उसकी आँखों में शर्म उभर आई. वो धीरे से शरमा कर बोली - "क्या देख रहे हो साहेब?"

" वही जो तुम देख रही हो ." अजित ने उसके चेहरे पर अपनी निगाह जमाए हुए कहा .

" मैं तो इस घाटी की सुंदरता देख रही थी ." कांचन मुस्कुराइ - " लेकिन आप तो ....!" उसने बात अधूरी छोड़ दी और अपनी नज़रें नीची कर ली ..

" तो मैने ग़लत क्या बोला है . मैं भी तो सुंदरता ही देख रहा था ."

" धत्त ....!" कांचन शरमाई .

" सच कहता हूँ कांचन . तुम्हारी जैसी सुंदर लड़की सारे संसार में ना होगी ." अजित उसकी सुंदरता में खोता हुआ बोला .

" आप १ नंबर के झूठे हैं ." कांचन अपनी खूबसूरत आँखें अजित के चेहरे पर टिकाकर बोली - " मैं जानती हूँ मैं ज़्यादा सुंदर नही हूँ . मैं तो डिंपल जितनी भी सुंदर नही हूँ . और शहर में तो मुझसे भी सुंदर - सुंदर लड़कियाँ रहती होंगी . कभी कभी मैं सोचती हूँ आप शहर जाकर मुझे भूल तो नही जाएँगे ."

" आहह .... ये तुमने क्या कह दिया कांचन ? तुम्हे ऐसा क्यों लगता है कि मैं तुम्हे छोड़ दूँगा ?" अजित खिसक कर उसके समीप जाता हुआ बोला - " क्या तुम्हे मुझपर भरोसा नही है ? यदि ऐसा है तो फिर मैं तब तक शहर नही जाऊंगा . जब तक तुम्हे अपनी पत्नी ना बना लूँ . अब तुमसे शादी करने के बाद तुम्हे अपने साथ लेकर ही शहर जाऊंगा ."

" लेकिन मा जी ?" क्या उनके बगैर शादी करेंगे आप ?

" मा को भी यहीं बुला लेता हूँ ." अजित उसके गालो को थाम कर बोला .

अजित की बातों से कांचन का चेहरा खिल गया. उसने अपना सर अजित के कंधे पर रख कर अपनी आँखें बंद कर ली.

अजित ने एक हाथ से कांचन का कंधा थाम लिया और दूसरे हाथ से उसके बालों को सहलाता रहा. उसे अपनी किशोरवस्था के वो पल याद आने लगे जब उसके दोस्त उसका मज़ाक उड़ाया करते थे. वह अपने अकेले पन से कितना घबराया घबराया रहता था. तब उसने कभी नही सोचा था कि कोई लड़की उससे भी प्यार कर सकती है. कोई उसकी भी मुनीमी हो सकती है. लेकिन आज किस्मत ने कांचन से उसको मिलाकर उसकी सारी

शिकायतों को दूर कर दिया था. कभी कभी उसे लगता था वो कोई गहरी नींद सो रहा है, अभी आँख खुलेगी और सब कुछ ख़त्म हो जाने वाला है.

उसे कांचन पर बेहद प्यार आ रहा था. वह खुद को उसके प्यार का ऋणी समझ रहा था. उसने कांचन को देखा. वह अभी भी आँखें बंद किए हुए उसके कंधे पर सर रखे पड़ी थी.उसने प्यार से उसके सर को चूम लिया.

चुंबन के एहसास से कांचन का ध्यान भी भंग हुआ. शायद वो भी किसी विचारों में लीन थी. वह धीरे से बोली - "साहेब, मा जी कब आएँगी?"

" आज ही मैं उन्हे फोन करके सब कुछ बता देता हूँ . और उन्हे यहाँ आने के लिए आग्रह करता हूँ ." अजित उसके गालों को सहलाते हुए बोला - " उनके आते ही हम जल्द से जल्द विवाह सुत्र में बँध जाएँगे ."

" मा जी . मुझ जैसी गांव की लड़की को अपनी बहू तो स्वीकार करेंगी ना ?" कांचन ने फिर से चिन्तीत होकर कहा .

" तुम मा की चिंता क्यो कर रही हो ? वो पुराने ज़माने की संस्कारों वाली औरत हैं . उन्हे ज़्यादा तड़क भड़क पढ़ी लिखी हाइ प्रोफाइल लड़की नही चाहिए . उन्हे तुम्हारी जैसे सुशील शर्मीली संस्कारों वाली बहू चाहिए . उन्हे अपनी बहू में सिर्फ़ २ गून चाहिए . पहला वो लड़की घर के लोगों की इज़्ज़त करे , दूसरा घर का काम करे , ठीक से घर का ख्याल रखे और अपने हाथों से खाना बनाकर उन्हे खिलाए . मा हमेशा अपने हाथों से खाना बनाकर खाती आई हैं . उन्हे अपनी बहू के हाथ से खाना खाने का बहुत शौक है . बस ! अब इतना तो तुम्हे आता ही होगा ?" ये कहकर उसने कांचन को देखा .

कांचन ने हां में सर हिला दी. पर अंदर ही अंदर उसे रोना आ रहा था. उसने अपनी सारी उमर चिंटू के साथ खेलने कूदने में बीताई थी. कभी कभार ही घर का कोई काम करती थी. और रही बात खाना बनाने की तो उसे सिर्फ़ चाय के अतिरिक्त कुछ भी ना आता था. अजित की बातें सुनकर वह चिंता से भर उठी थी. दिल कर रहा था अभी भाग कर घर जाए और बुआ से खाना बनाना सीखे.

" अरे हां .....!" अचानक अजित चौंक कर कहा - " खाने से मुझे याद आया . गांव की लड़कियाँ जब अपने साजन से मिलने आती है तो साथ में उनके खाने के लिए हलवा , पूरी ..... नही पूरी नही , खिचड़ी ...... नही खिचड़ी भी नही .... हां याद आया खीर .... खीर लेकर आती हैं . तुम लेकर नही आई ?"

कांचन की मुसीबत और बढ़ गयी एक तो वो पहले इस चिंता से परेशान थी कि उसे खाना बनाना नही आता, अब अजित के लिए रोज़ खीर बनाकर कैसे लाएगी?

उसके समझ में नही आ रहा था कि वो अजित को क्या जवाब दे. अगर वो ये कहती है कि कल खीर बनाकर लाएगी तो उसे रोज़ ही खीर लाना पड़ेगा. और अगर ये कहती है कि उसे खीर बनाना नही आता तो कहीं अजित नाराज़ ना हो जाए.

" क्या सोच रही हो ?" अजित ने उसे टोका . " तुम्हे खीर तो बनाना आता है ना ? मुझे बचपन से ही खीर बहुत पसंद है ."

" हां आता है साहेब , मैं कल आपके लिए खीर बनाकर लाऊंगी ." कांचन बोल तो दी . पर बोलने के बाद गहरी चिंता में पड़ गयी . - " साहेब , अब मैं घर जाऊ ? बुआ ने जल्दी घर आने को कहा था ."

अजित ने कांचन को देखा. उसके चेहरे पर परेशानी के भाव थे, पर वो उसका सही कारण नही जान सका. उसने मुस्कुरा कर कहा - "ओके. लेकिन कल जल्दी आना और खीर लाना मत भूलना."

" जी ." कांचन ने हामी में सर हिलाया . फिर जाने के लिए उठ खड़ी हुई .

अजित भी जूते पहनकर खड़ा हो गया. फिर साथ साथ दोनो उपर आने लगे. अचानक अजित ने कांचन से कहा - "अरे ये तो ग़लत बात हो गयी, हमारी प्रेम की पहली मुलाक़्क़त पूरा होने को है और हमने एक दूसरे को कोई निशानी तक नही दी."

" निशानी ?" कांचन चौंक कर पलटी . उसने सवालिया नज़रों से अजित को देखा .

" मैने किताबों में पढ़ा है , प्रेम की पहली मुलाक़ात में प्रेमी एक दूसरे की किस करके प्रेम की निशानी देते हैं , चुंबन के बिना प्रेम अधूरा माना जाता है . लेकिन हमने तो किस किया ही नही "

कांचन अजित की बात से शरमा गयी. और नीचे देखने लगी.

" क्या हुआ ?" अजित उसके चेहरे को दोनो हाथों से भर कर उपर उठाते हुए पुछा . - " अगर तुम्हारी इच्छा ना हो तो कोई ज़बरदस्ती नही ."

कांचन को लगा अगर आज उसने इनकार किया तो कहीं ऐसा ना हो उसके प्रति अजित का प्रेम कम हो जाए. - "मैने मना कब किया है साहेब." ये कहकर उसने शर्म से अपनी आँखें बंद कर ली.

अजित ने उसके चेहरे को देखा, जहाँ शरम के साथ समर्पण का भी बहुत गहरा छाप चढ़ा हुआ था. उसने अपना चेहरा झुकाया और कांचन के काँपते होंठो पर अपने होंठों को रख दिए.

कांचन का पूरा शरीर काँप गया. वह अजित की बाहों में सिमट सी गयी.

अजित ने एक लंबा चुंबन लेने के बाद उसके होंठों से अपने होंठ अलग किए. फिर कांचन की आँखों में झाँका. उसकी आँखों में शर्म और उत्तेजना से लाल हो गयी थी.

" अब मिलन पूरा हुआ ." अजित मुस्कुराकर कहा . " अब तुम घर जा सकती हो ."

कांचन कुछ देर भारी पलकों से अजित को देखती रही फिर एकदम से मूडी और अपने रास्ते भागती चली गयी.

अजित उस और मूड गया जिधर उसकी बाइक थी. वह जैसे ही अपनी बाइक के पास आया. उसके पैरो तले से ज़मीन निकल गयी.

डिंपल अपनी जीप में बैठी उसका इंतजार कर रही थी. जिस जगह अजित और कांचन खड़े होकर किस कर रहे थे. वो जगह जीप से ज़्यादा दूर नही थी. वहाँ से थोड़ा नीचे उतरते ही डिंपल उन्हे साफ देख सकती थी.

अजित बाइक तक आया. फिर डिंपल को देखा. उसकी आँखें शोला उगल रही थी. चेहरा गुस्से से फट पड़ने को तैयार था.

अजित उसकी आग उगलती आँखें और गुस्से से भरी सूरत देखकर समझ गया कि डिंपल ने उसे कांचन के साथ देख लिया है.

इस तरह अपनी चोरी पकड़े जाने से उसकी सिट्टी-पिटी गुम हो गयी थी. लेकिन उसने अपनी घबराहट डिंपल पर ज़ाहिर नही होने दिया. उसने लापरवाही से डिंपल को देखते हुए कहा - "डिंपल जी, आप यहाँ, इस वक़्त?"

" मुझे आप मत कह ो ." डिंपल गुस्से से चीख ी . - " जब मैं तुम्हे पसंद ही नही तो फिर ये झूठे सम्मान किस लिए ?"

उसके गुस्से को देखकर अजित हैरान रह गया. उसने सोचा भी नही था कि डिंपल उसपर इस तरह भड़क सकती है. लेकिन वो उसके गुस्से की परवाह किए बिना बोला - "मैं कुछ समझा नही."

" नही समझ े ?" डिंपल व्यंग से मुस्कुराइ . फिर उसी कुटिलता के साथ बोली - " अगर तन्हाई में छूपकर पाप करना ही था तो मुझे ठुकराकर मेरा अपमान किस लिए किया थ ा ?"

" क्या बकवास कर रही हो तुम ?" अजित की सहनशक्ति जवाब दे गय ी . वह अपने स्थान से खड़े खड़े चीख ा .

डिंपल की बातों का मतलब समझते ही उसे तेज़ गुस्सा आया था. उसे इस बात का गुस्सा नही था कि डिंपल ने उसे चरित्रहीन कहा था, उसे गुस्सा इस बात का था कि डिंपल ने उस मासूम, दिल की भोली, बेकसूर कांचन के दामन पर कीचड़ उछालने की कोशिश की थी. जो उसकी दोस्त भी थी.

" अगर ये बकवास है तो तुम दोनो यहाँ अकेले में क्या कर रहे थे ?" डिंपल ने चुभती नज़रों से उसे घूरा .

" मैं तुम्हारे किसी भी सवाल का जवाब देने के लिए विवश नही हूँ ." अजित ने उसे दो टुक जवाब दिया और बाइक की तरफ मूड गया .

" ये क्यों नही कहते , तुम्हारे पास सफाई देने के लिए शब्द ही नही बचे हैं ." डिंपल ने उसे मुड़ते देख खीजकर कहा .

उसकी बातों से चिढ़कर अजित पलटा. पर गुस्से की अधिकता में कुछ कह नही पाया. बस दाँत पीस कर रह गया. द्वेष भावना से पीड़ित नारी को कोई समझाए भी तो कैसे. उनके अक़्ल पर ऐसा पत्थर पड़ा होता है कि लाख कोशिश कर लो पर वो पत्थर नही हटा-ती. उसने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी.

अजित एक व्यंग भरी मुस्कुराहट डिंपल पर छोड़ता हुआ वापस अपनी बाइक की ओर बढ़ गया.

डिंपल अजित के इस उपेक्षित व्यवहार को सह ना सकी. वह गुस्से से जीप से उतरी और लपक कर उस तक पहुँची. - "मैं पूछती हूँ.....ऐसा क्या है कांचन में जो मुझमें नही? क्या मैं सुंदर नही? क्या मैं जवान नही? देखो मुझे और बताओ. क्या कमी है मुझमें?" ये कहते हुए डिंपल ने उसके सामने अपनी छातियाँ तान दी.

उसके ऐसा करने से सफेद टीशर्ट में कसे उसके स्तन अपने पूरे आकार का प्रदर्शन कर उठे.

ना चाहते हुए भी अजित की निगाहें उसके पर्वत की तरह उठे स्तन पर चली गयी. उसके उभरे हुए स्तन को अपनी आँखों के इतने समीप महसूस कर अजित का पूरा शरीर सिहर उठा. पर दूसरे ही पल उसने अपनी नज़रों को स्तन से हटा लिया.

" तुम में सबसे बड़ी कमी यह है कि तुम वासना से पीड़ित लड़की हो ." अजित ने डिंपल की आँखों में तैरती वासनात्मक लहरों को देखते हुए कहा - " तुम अपनी तुलना कांचन से कर भी कैसे सकती हो ?"

" मैं वासना से पीड़ित हूँ तो तुम क्या हो ? तुम भी तो कुछ देर पहले किसी की गर्म बाहों में पड़े हुए थे ." डिंपल जलकर बोली - " तुम मेरे सामने साधु बनते हो और मेरी पीठ पिछे अय्याशी करते हो . क्या मैं नही जानती ?"

" बंद करो अपनी ये बकवास ." अजित गुस्से से चीखा . - " मुझपर ना सही पर थोड़ा विश्वास कांचन पर तो रखो ."

" वो तो भोली है तुम्हारी बातों में आ गयी होगी . लेकिन इतना याद रखो .... तुमने मुझे ठुकराकर किसी और को अपनाया तो मैं तुम्हे चैन से रहने नही दूँगी ." डिंपल अपने दाँत चबाते हुए बोली .

अजित के प्रति उसकी तड़प अब केवल शारीरिक सुख भर का नही रह गया था. अब वो अजित को अपने पति के रूप में हासिल करना चाहती थी. लेकिन आज अजित का झुकाव खुद की बजाए कांचन की ओर देखकर वह गुस्से से भर उठ थी.

वो खुद को कांचन के मुक़ाबले हर दृष्टि से बेहतर समझती थी. कांचन ना तो उसकी जितनी पढ़ी लिखी थी, ना ही उसकी जितनी धनी थी, ना उसका घर उसके घर से बड़ा था, ना वो डिंपल से अच्छे कपड़े पहनती थी, ना तो डिंपल से बेहतर बात करने का ढंग जानती थी. अजित उसका मेहमान था उसके घर रहता था उसका ख़ाता था. फिर भी वो उसके बजाए कांचन से प्यार करता था. डिंपल का अहंकारी नारी स्वभाव इसी बात से दुखी था.

वो कांचन को अपना दुश्मन नही समझ रही थी, लेकिन वो इस बात को सह नही पा रही थी कि जो कांचन सदा उसकी मोहताज रही, जिस कांचन को उसने झोपडे से उठाकर हवेली में स्थान दिया. जिसके साथ उसने अपनी थाली बाटी, जिसके लिए उसने हर फ़र्क को मिटाया, आज वही कांचन उस पर भारी पड़ रही थी. उसका अभिमानी मन इसी बात से आहत था.

अजित ने उससे अधिक उलझना ठीक नही समझा. वो पलटा और अपनी बाइक पर जा बैठा.

" कहाँ जा रहे हो ?" डिंपल उसकी कलाई पकड़कर गुर्राई .

" तुम्हे रात यही गुजारनी हो तो शौक से गुजारो . मैं अपने रास्ते चला ." वह बोला और बाइक की चाभी घुमाया .

" तुम ऐसे नही जा सकते ." डिंपल फुफ्कारी .

" तो ....?" अजित ने आश्चर्य से घूरा .

" तुम्हे मुझे भी होठों पर वैसा ही किस करना होगा जैसा तुमने कांचन को किया था ." ये कहते हुए डिंपल ने अपने होंठों को उसके होंठों के करीब ले गयी .

" हरगिज़ नही ." अजित ने इनकार में अपनी गर्दन हिलाई .

" अजित ." डिंपल किसी नागिन की तरह फुफ्कारी . - " मैं अपनी कसम खाकर कहती हूँ . अगर तुमने मुझे किस ना किया तो मैं अभी इसी वक़्त अपनी जीप सहित इस पहाड़ी से नीचे कूद जाऊंगी ."

" मज़ाक बंद करो और घर चलो ." अजित ने विचलित होकर कहा . उसे डिंपल के चेहरे की सख्ती अंदर तक हिला गयी थी .

" तुम्हे लग रहा है मैं मज़ाक कर रही हूँ ." डिंपल दाँत पीसती हुई बोली . उसकी आँखों के शोले भड़क उठे - " तो ठीक है , अगर तुम मेरी बातों की सच्चाई परखना ही चाहते हो तो एक क़दम यहाँ से आगे बढ़कर दिखाओ . मैं अगर इस पहाड़ी से ना कूदी तो मैं ठाकुर रामप्रताप सिंह की बेटी नही ." वो चट्टान की तरह ठोस शब्दों में बोली - " लेकिन याद रखो अजित . तुम्हे अपनी इस भूल पर ज़िंदगी भर अफ़सोस होगा . क्योंकि मैं मज़ाक नही करती ."

अजित सर से पावं तक काँप गया. उसने ध्यान से डिंपल को देखा. डिंपल इस वक़्त बेहद गुस्से में थी. उसकी आँखों में गुस्से के साथ साथ एक गहरे दर्द की परत भी चढ़ि हुई थी. अजित मनोचिकित्सक था उसे समझते देर नही लगी कि डिंपल को अगर उसने और आहत किया तो ये सचमुच में अपनी जान दे देगी.

प्यार में अपमानित स्त्री, काम-अग्नि में जलता देह कुछ भी कर सकता है. वो एक बार पहले भी डिंपल का नाज़ुक मौक़े पर तिरस्कार कर चुका था. अजित नही चाहता था कि उसकी एक भूल से कोई बड़ी आफ़त उसके गले पड़े. उसकी ग़लती से डिंपल को कुछ हुआ तो वो ठाकुर साहब को क्या जवाब देगा? क्या बीतेगी ठाकुर साहब पर जब उन्हे ये मालूम होगा कि जिस इंसान को वो डॉक्टर जानकार अपनी पत्नी का इलाज़ कराने लाए थे उसने खूनी बनकर उन्ही की बेटी का खून कर दिया.

अजित इस एहसास से पुनः काँप उठा. उसने विवशता से अपने होंठ चबाने शुरू कर दिए. उसे अपने बचाव का कोई भी मार्ग दिखाई नही दे रहा था.

उसने डिंपल को देखा वो अभी भी उसके सर पर सवार थी. वो अपनी जलती हुई आँखों से उसे घुरे जा रही थी.

" ठीक है ." अजित बुझा बुझा सा बोला - " लेकिन इसके बाद तुम कोई भी बहस नही करोगी और सीधा हवेली लौट जाओगी ?"

" मुझे मंज़ूर है ." डिंपल अपने होंठों पर विजयी मुस्कुराहट लाते हुए बोली .

अजित ने जवाब में अपने होंठ उसकी ओर बढ़ा दिए. डिंपल ने उसके गर्दन को पिछे से पकड़ा और अपने होंठों को उसके होंठों से मिला दिया. फिर किसी पके हुए आम की तरह उसके होंठों को चूसने लगी. अजित के पूरे शरीर में तेज़ सनसनाहट भरती चली गयी. डिंपल के शरीर की गर्मी उसके मूह के रास्ते उसके शरीर में उतरने लगी. उसकी आँखें नशे में बंद होने लगी. उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे वो किसी और ही दुनिया में पहुँच गया हो.

डिंपल होंठ चूसने के मामले में महारत रखती थी. वो उसी प्रकार धीरे धीरे उसके होंठों को चुस्ती रही. फिर पूर्ण तृप्ति के बाद वो अजित से अलग हुई.

डिंपल के अलग होते ही अजित ने नशे में बंद होती अपनी भारी पलकें खोलकर उसे देखा. उसके चेहरे में जीत की खुशी थी तो वहीं उसके होंठ अपनी कामयाबी पर गर्व से मुस्कुरा उठे थे.

अजित की गर्दन शर्म से झुक गयी. वह कुछ देर यूँही उसके चेहरे को देखता रहा. डिंपल उसे देखकर मुस्कुराती रही. अजित ने उसकी ओर से अपनी गर्दन घूमाकर बाइक को एक जोरदार किक मारी. अभी वो आगे बढ़ना ही चाहता था कि डिंपल की आवाज़ उसके कानो से टकराई. - "ठहरो."

" अब क्या हुआ ?" अजित ने सवालिया नज़रों से उसे घूरा .

" तुमने ये तो बताया ही नही कि किसका स्वाद - सुगंध अच्छा था ? इस शहरी गुलाब का या उस पहाड़ी फूल का ?" डिंपल के होठों पर मुस्कुराहट थी .

अजित उसकी ओर देखकर व्यंग से मुस्कुराया. फिर बोला - "शहर के गमलों में खिलने वाले किसी भी फूल में वो सुगंध कहाँ? जो पहाड़ी के आँचल पर खिले फूलों में होती है?"

उसकी इस कटाक्ष से डिंपल का पूरा शरीर अपमान से सुलग उठा. लेकिन इससे पहले कि वो अजित को कोई जवाब देती. अजित एक झटके से आगे बढ़ चुका था. डिंपल गुस्से से उसे जाते हुए देखती रही.

कांचन जब तक अपने घर पहुँची, सांझ ढल चुकी थी. शांता बुआ ने रात का खाना पकने के लिए मिट्टी के चूल्हे में आग लगा चुकी थी.

धनपाल अभी भी घर नही लौटा था. चिंटू शायद अंदर पढ़ाई कर रहा था.

कांचन शांता को ढूँढती अंदर रसोई तक आई. शांता पतीले में चावल पकने के लिए पानी भर रही थी. उसने शांता को पुकारा - "बुआ....आज क्या बना रही हो खाने में?"

कांचन की आवाज़ से शांता ने पलटकर उसे देखा. उसकी आँखों में अभी भी वही सवाल था. साथ ही चेहरे पर थोड़ी बेचैनी भी व्याप्त थी. - "क्यों पूछ रही है? तुम्हे तो मेरे हाथ का बना हर चीज़ अच्छा लगता है?"

" बुआ ....!" कांचन अपनी उंगलियों में दुपट्टा घूमाते हुए बोली - " बुआ आज खीर बनाओ ना . मेरा मन आज खीर खाने का हो रहा है ."

" खीर ...?" शांता ने आश्चर्य से उसे देखा - " लेकिन खीर के लिए सामान कहाँ है ?"

" तो ले आओ ना बुआ . जो सामान चाहिए . आज मेरा बड़ा मन हो रहा है ...."
कांचन तपाक से बोली . और फिर अपनी उंगलियां में दुपट्टा घुमाने लगी .

शांता ने हैरानी से कांचन को देखा. आज उसे कांचन कुछ अज़ीब सी लग रही थी. इतनी बेचैनी खाने के लिए उसके मन में कभी नही होती थी. जो बना के दे दिया वो खा लेती थी. पर आज जाने क्यों वो खीर खाने के लिए इतनी ज़ोर दे रही है?

शांता मन में सोचने लगी - अभी इसकी उमर ही कितनी हुई है, सिर्फ़ शरीर से बड़ी हुई है. अक़्ल तो अभी भी बच्चों जितनी ही है. शायद इसने किसी के घर में खीर बनते देखा हो. और इसका खीर खाने का मन मचला हो. -"आज तुझे खीर खाने की इतनी अधिरता क्यों है भला? शांता ने पुछा.

" बहुत दिन हो गये हैं ना इसलिए ....!" कांचन भोलेपन से बोली - " क्या .... नही बनाओगी बुआ ?"

" बनाऊंगी कैसे नही . तू जो इतनी प्यार से बोल रही है ." शांता ने मुस्कुराते हुए कहा - " कुछ चीज़ें बताती हूँ .... उसे बनिये की दुकान से लेती आ ."

कांचन ने हां में गर्दन हिलाई. फिर शांता की बताई चीज़ों को याद कर तेज़ी से आँगन के दरवाज़े से बाहर निकल गयी. तब तक शांता दूसरे कामो में व्यस्त हो गयी.

लगभग ३० मिनट बाद कांचन लौटी. उसके हाथ में थेले भर का सामान था. उसे देखकर शांता की आँखें हैरत से चौड़ी हो गयी. - "इतना सारा क्या उठा लाई तू?"

शांता ने तो उसे एक दिन का सामान लाने को कहा था. पर कांचन तो दूर की सोच कर गयी थी और पूरे हफ्ते भर का सामान उठा लाई थी. वो बुआ से बोली - "अभी ले आई तो अच्छा किया ना बुआ." फिर कभी खाने का मन हुआ तो?"

" तो तब ले आती ." शांता ने थेले का सामान जाँचते हुए कहा . - " अब ये रखे रखे खराब नही हो जाएँगा ?"

कांचन खामोश हो गयी. अब वो कैसे समझाती बुआ को कि उसे अब रोज़ ही खीर खाने का मन होने वाला है.

उसे उदास देख शांता बोली - "अच्छा ही किया बेटी जो तू ले आई. रोज़ रोज़ दुकान जाने से समय हर्ज़ होता है. अब जब भी तेरा मन खीर खाने का करे मुझे बता देना मैं बना दिया करूँगी."

शांता कांचन से थेला लेकर उससे सामान निकालने लगी. उससे कभी कांचन की उदासी नही देखी जाती थी. बिन मा की लड़की को वो उदास देख भी कैसे सकती थी. बचपन से ऐसे ही उसकी ज़रा ज़रा सी बातों का ख्याल करती आई थी. जैसे वो उसी की कोख से जन्मी हो. शांता कभी कभार चिंटू पर बरस पड़ती थी तो कभी उसकी शरारत पर मार भी देती थी, पर कांचन को कभी भूल से भी नही डांटती थी. आज भी वो उसके उदास चेहरे को देख तड़प उठी थी.

कांचन अभी भी शांता के पिछे खड़ी उसे सामान निकालते देख रही थी.

शांता ने उसे खड़ा देखा तो मुस्कुराकर बोली - "बेटी...मैं खीर बना दूँगी. थोड़ी देर तक तू चिंटू के साथ बैठकर पढ़ाई कर. खीर बनते ही मैं तुम्हे बुला लूँगी."

" मैं तुम्हे खीर बनाते देखना चाहती हूँ बुआ ." कांचन ने आग्रह किय ा . - " खीर कैसे बनाई जाती ह ै ..... मैं सीखना चाहती ह ूँ ."

" क्यों सीखना चाहती ह ै ?" शांता ने पुछा - " क्या तुम्हे ये लगता है मैं तुम्हे फिर कभी खीर बनाकर नही ख ि लाऊंग ी ?."

" ऐसी बात नही है बुआ . मैं अब घर के सारे काम सीखना चाहती ह ूँ . तुमने तो मुझे अभी तक कुछ भी नही सिखाय ा ." कांचन ने शिकायत क ी .

उसे सच में इस बात का दुख था कि बुआ ने उसे कभी घर का कोई काम करने नही दिया. खाना बनाना नही सिखाया. कुछ नही तो खीर ही बनाना सीखा देती. कम से कम वो अपने हाथों से बनाई खीर तो अजित को खिला सकती थी.

वहीं शांता खड़े खड़े उसे हैरत से देखे जा रही थी. उसे आज कांचन के स्वभाव में काफ़ी परिवर्तन दिखाई दे रहा था. पहले खीर खाने के लिए उतावलापन और अब घर के कामो के प्रति लगाव....."कुछ तो हुआ है इसे." वह मन में सोची.

" ये तुम्हे अचानक से घर के कामों को सीखने का मन क्यों हुआ ?" शांता ने मुस्कुराते हुए पुछा .

" जो ना सीखी तो ...... जब मैं ससुराल जाऊंगी तब मेरी सास मुझे डाँट नही लगाएगी ? कहेंगी नही कि .... मुझे घर का कोई काम नही आता ." कांचन बिना रुके कहती रही . - " तब तुम्हारी कितनी बदनामी होगी बुआ ? फिर सास मुझे घर से भी निकाल देंगी . इसलिए अब मैं रोज़ आपके साथ खाना बनाना सीखूँगी और घर के दूसरे काम भी ."

भोली कांचन की भोली बातें सुनकर एक ओर जहाँ शांता मंद मंद मुस्कुरा रही थी तो वही दूसरी ओर इस बात से चकित भी थी कि आज कांचन को इतनी सारी बातें कहाँ से सीखने को मिल गयी. पहले तो ये कभी इस तरह की बातें नही करती थी

" क्यों हंस रही हो बुआ .?" शांता को हँसते देख कांचन के चेहरे पर लाज की लाली फैल गयी .

" ऐसे ही ." शांता ने मुस्कुराकर जवाब दिया . फिर उसके झुके चेहरे को ठोडी से पकड़कर उठाते हुए आगे बोली . - " वो सब तो ठीक है , मैं तुम्हे सब सिखा दूँगी . पर तुम्हारे मन में ये सास का डर भरा किसने ?"

कांचन के आगे अजित का चेहरा घूम गया. पर बुआ से उसके बारे में कह ना सकी. लाज की गठरी बनी खामोशी से शांता को देखती रही.

" ठीक है रहने दे मत बता . आ मेरे साथ बैठ , तुझे आज खीर बनाकर दिखाती हूँ . फिर अपनी ससुराल में बनाना अपनी सास के लिए ." शांता ये कहते हुए कांचन का हाथ पकड़कर चूल्हे तक ले गयी . फिर उसे एक एक करके सारी विधि बताने लगी और कांचन उसके बताए अनुसार खीर बनाने लगी .

कांचन पूरे ध्यान से शांता की बताई बातों को मन में उतारती रही. कांचन इस काम में ऐसी खोई कि चिंटू के बार बार बुलाने पर भी उसके पास नही गयी. रोज़ इस वक़्त वो चिंटू को पढ़ाती थी, पर आज उसने भाई की तरफ देखा तक नही.

अंततः ! कांचन की मेहनत पूरी हुई और उसकी मीठी खीर बनकर तैयार हुई.

इतने में धनपाल भी लौट आया था. आँगन में पावं धरते ही खीर की सुगंध उसकी नाक से टकराई.

" ओह्ह्ह ...... तो आज घर में खीर बनाई जा रही है ." धनपाल नाक सूंघते हुए चूल्हे तक आया . -" बड़ी अच्छी सुगंध आ रही है ."

" सुगंध कैसे नही आएगी भैया . कांचन के हाथ का बना जो है ." शांता ने पानी का लौटा धनपाल को देते हुए कहा .

" क्या .....!" धनपाल का मूह से खुशी से भरा स्वर निकला . उसने कांचन को देखा जो होठों में मुस्कुराहट और आँखों में शर्म लिए पिता की ओर देखे जा रही थी . - " ये जान कर तो मेरी भूख दुगुनी हो गयी है . मैं खाना तो थोड़ी देर में खाऊंगा ..... पर अभी थोड़ी सी खीर कटोरी में ले आ . ज़रा देखूं तो मेरी बेटी ने कैसी खीर बनाई है ."

धनपाल के कहने की देरी थी और कांचन खीर निकालने दौड़ पड़ी. रसोई से कटोरी लाकर उसमे खीर भरी और धनपाल को पकड़ा दी. फिर धनपाल के खाने के बाद अपनी प्रशंसा सुनने के लिए पास ही खड़ी हो गयी.

धनपाल ने चम्मच से खीर उठाकर अपने मूह में लिया. फिर अपनी जीभ चलाते हुए उसने कांचन को देखा जो टकटकी लगाए उसी को देख रही थी. उसके मन में हज़ारों शंकाए थी......जाने बापू को खीर कैसी लगी होगी. कहीं ऐसा ना हो बापू नाराज़ हो जायें. लेकिन अगले ही पल उसकी सारी शंकाए बेजान साबित हुई.....जब उसकी नज़र धनपाल के होंठों पर फैलती मुस्कुराहट पर पड़ी.

" बापू बताओ ना खीर कैसी लगी ?" कांचन से और ना रहा गया . उसके मन में अपनी मेहनत का परिणाम जानने की उत्सुकता चरम पर थी .

" स्वादिष्ट .... बेहद स्वादिष्ट !" धनपाल गदगद होकर बोला - " मुझे तो विश्वास ही नही हो रहा है कि मेरी बेटी इतनी अच्छी खीर बना सकती ह ै ."

कांचन भाव-विभोर हो गयी. अपने बापू के मूह से अपने हाथ से बनाई खीर की प्रशंसा सुनकर उसका रोम रोम पुलकित हो उठा. मन मयूर की तरह नाचने को हुआ. पर पिता का ध्यान करके अपनी खुशी अपने दिल में दबा गयी.

उसकी खुशी केवल इसलिए नही थी कि उसने अच्छी खीर बनाई थी और उसके पिता ने उसकी सराहना की थी. उसकी खुशी का कारण था अजित.....! वो ये सोचकर खुश हो रही थी कि कल वो अपने प्रीतम को अपने साहेब को अपने हाथों से खीर बनाकर खिला सकेगी. उसके मूह से अपने लिए सच्ची प्रशंसा सुनेगी. उसे इस बात की खुशी थी कि अब वो अजित को अपना सकेगी. कहने को तो उसने सिर्फ़ खीर बनानी सीखी थी....पर कोई उसकी नज़र से देखे तो जान पाए कि उसकी उस खीर में कितनी भावनाएँ छिपि हुई थी.

१३

अजित जब हवेली पहुँचा तो डिंपल भी उसके पिछे पिछे हवेली में दाखिल हुई.

हॉल में ठाकुर साहब के साथ मुनीम जी बैठे हुए थे. वे आपस में कुछ बातें कर रहे थे जब अजित ने उन्हे हाथ जोड़कर ग्रीट किया.

अजित और डिंपल को एक साथ बाहर से आते देख ठाकुर साहब की आँखें खुशी से मुस्कुरा उठी. - "आओ अजित, हम तुम्हारा ही इंतेज़ार कर रहे थे. तुमसे कुछ आवश्यक बातें करनी है." ठाकुर साहब अजित से संबोधित हुए.

अजित की आँखें आश्चर्य से सिकुड गयी. पास ही खड़ी डिंपल की ओर नज़र घूमी तो उसके होंठों पर एक विषैली मुस्कान थिरकते पाया. उसने फिर से अपनी नज़रों का रुख़ ठाकुर साहब के चेहरे पर किया. उनके चेहरे पर गहरे संतोष का भाव था. किशनगढ़ आने के बाद आज पहली बार उसने ठाकुर साहब को इतना प्रसन्न देखा था. लेकिन उनके संतोष का कारण उसकी समझ से परे था.

" बैठो अजित . खड़े क्यों हो ?" ठाकुर साहब अजित को खड़ा देख बैठने का इशारा किए .

" जी धन्यवाद ." अजित ठाकुर साहब को उत्तर देकर धीमे कदमो से चलते हुए सोफे पर जाकर बैठ गया . फिर सवालिया नज़रों से ठाकुर साहब की ओर देखा - " कहिए मुझसे किस संबंध में बात करना चाहते थे आप ?" अजित ने पुछा .. उसके चेहरे पर डिंपल के साथ हुई झड़प का तनाव अभी भी फैला हुआ था .

" बात आप ही से संबंधित है अजित ." ठाकुर साहब बोले - " आप जब से इस हवेली में आए हैं . हमारे लिए हर चीज़ शुभ होती जा रही है . सच कहूँ तो अब हमें ऐसा लगने लगा है जैसे हमारी हर खुशी आपसे होकर ही जाती है "

" मैं कुछ समझा नही ....? आप कहना क्या चाहते हैं ?" अजित चौंकते हुए कहा .

" अजित बात यह है कि .....!" ठाकुर साहब बात अधूरी छोड़कर अपने स्थान से उठ खड़े हुए . फिर चहलकदमी करते हुए एक स्थान पर खड़े हो गये और कुछ सोचने लगे .

उन्हे खड़ा होता देख मुनीम जी भी सोफा छोड़ दिए. लेकिन अजित अपनी जगह बैठा ठाकुर साहब की ओर देखता रहा. ठाकुर साहब उसकी ओर पीठ किए खड़े थे और उनके दोनो हाथ पिछे बँधे हुए थे.

" दर - असल .... हम डिंपल का विवाह करना चाहते हैं ." ठाकुर उसी अवस्था में खड़े खड़े बोले . वो जो कुछ भी कहना चाहते थे उसके लिए सीधे मूह अजित से बात करना उन्हे सहज नही लग रहा था .

" ये तो बहुत खुशी की बात है ठाकुर साहब ." अजित जबरदस्ती मुस्कुराने की कोशिश करते हुए कहा . उसने एक सरसरी निगाह डिंपल पर डाली जो उसी की ओर देख रही थी .

" आप ठीक कह रहे हैं अजित ." ठाकुर साहब अजित की तरफ पलटकर बोले - " ये वाक़ई खुशी की बात है , लेकिन हमारी खुशी अभी अधूरी है , ये तभी पूरी होगी जब इसमे आपकी मर्ज़ी भी शामिल हो जाएगी ."

" म .... मेरी मर्ज़ी ?" अजित हकलाया . - " मैं कुछ समझा नही . आप किस मर्ज़ी की बात कर रहे हैं ?"

" अजित , हमे ज़्यादा घुमा फिरकर बात करना नही आता ." ठाकुर साहब अजित की घबराहट को नज़र - अंदाज़ करते हुए बोले - " असल बात यह है कि हम डिंपल के लिए आपकी रज़ामंदी चाहते हैं . हमें डिंपल के लिए जैसा वर चाहिए था वो सारे गूण आप में हैं . सच तो यह है अजित कि जिस दिन आपने शारदा के सामने दामाद होने का नाटक किया .... उसी दिन से हम भी आपको दामाद के रूप में देखने लगे हैं . अब अगर आपको ऐतराज़ ना हो तो , हम इस रिश्ते को पक्का करना चाहते हैं ."

अजित सोच में पड़ गया ! उसने सोचा भी नही था कि ठाकुर साहब उसे इस तरह लपेटे में लेंगे. अजित असमंजस में पड़ गया. वो ठाकुर साहब को सब के सामने ना कहकर उनका अपमान नही करना चाहता था. और हां वो कह नही सकता था.

" क्या हुआ अजित ? किस सोच में पड़ गये ?" अचानक ठाकुर साहब की आवाज़ से अजित चौंका . ठाकुर साहब की नज़रें उसपर गढ़ी हुई थी .

" ठाकुर साहब , मैं आप सब की बहुत इज़्ज़त करता हूँ , प्लीज़ .... मेरी बात का बुरा मत मानीएगा ." अजित ने नम्र स्वर मे ठाकुर साहब से कहा -" मैं इस वक़्त आपके इस सवाल का जवाब नही दे सकता . मेरी कुछ मजबूरियाँ हैं . मुझे थोड़ा वक़्त चाहिए ." उसने एक सरसरी सी निगाह डिंपल पर डालकर आगे बोलने लगा - " फिलहाल मैं आपसे एक बात की इज़ाज़त चाहता हूँ . मैं अपनी मा को यहाँ बुलाना चाहता हूँ .... अगर आप लोगों को कोई परेशानी ना हो तो ?"

" कोई बात नही अजित , हमें कोई जल्दी नही है . आप ठीक से विचार कर लीजिए फिर हमें बता दीजिएगा ?" ठाकुर साहब उसकी झेंप मिटाते हुए बोले - " अब रही बात आपकी माताजी के आने की तो उन्हे ज़रूर बुलाए .... उनसे मिलने की इच्छा तो हम भी रखते हैं . उनसे मिलकर हम बेहद खुश होंगे ."

" आपका धन्यवाद .... ठाकुर साहब ." अजित ने खड़ा होते हुए कहा - " मैं कल ही मा को फोन करके यहाँ बुला लेता हूँ ."

" अजित बाबू ." अचानक से मुनीम जी बोले - " मैं दो एक दिन में किसी काम से शहर जाने वाला हूँ . अगर आप उचित समझे तो आपकी माताजी मेरे साथ ही आ जाएँगी . मेरे होते उन्हे कोई परेशानी भी नही होगी ."

" इससे अच्छी बात और क्या होगी मुनीम जी . उनके अकेले आने को लेकर मैं चिंतित था . पर अब मेरी चिंता दूर हो गयी ." अजित ने मुनीम जी का आभार प्रकट किया .

" ठीक है अजित , अब आप जाइए आराम कीजिए . अब हम इस संबंध में आपकी माताजी के आने के बाद ही बात करेंगे ." ठाकुर साहब अजित से बोले .

" जी ... बहुत अच्छा , नमस्ते ." अजित हाथ जोड़ते हुए ठाकुर साहब और मुनीम जी को प्रणाम किया . फिर एक नज़र डिंपल पर डालकर सीढ़ियों की तरफ बढ़ गया .

" आपको क्या लगता है मुनीम जी ? क्या अजित इस रिश्ते के लिए हां कहेगा ?""
अजित के जाने के बाद ठाकुर साहब सोफे पर बैठते हुए मुनीम जी से पूछे .

" वो हां नही कहेगा पापा !" मुनीम जी से पहले डिंपल बोल पड़ी .

डिंपल की बात पर मुनीम जी और ठाकुर साहब एक साथ चौंक कर उसकी तरफ पलटे. दोनो की नज़रें एक साथ डिंपल के चेहरे पर पड़ी. उसके चेहरे पर उदासी के घने बादल मंडरा रहे थे. वो बेबसी से अपने होंठों को काट रही थी.

डिंपल की ऐसी हालत देखकर दोनो ही भौचक्के से रह गये. डिंपल अपने होंठों को चबाते हुए आगे बोली - "अजित की पसंद मैं नही हूँ पापा. उसकी पसंद कांचन है." इतना कहकर डिंपल ने अपनी गर्दन घुमा ली. जैसे उसे भय था कि कहीं उसकी आँखें पीड़ा से ना छलक पड़े. वो अपने पिता को अपने आँसू नही दिखाना चाहती थी.

" ये तुम क्या कह रही हो डिंपल ?" ठाकुर साहब घायल नज़रों से डिंपल की ओर देखते हुए बोले .

" यही सच है पापा , इसे स्वीकार कर लीजिए . अजित से अब इस संबंध में बात करना बेकार है . उसके सपने उसके अरमान ..... इस हवेली में रहने वाली डिंपल के लिए नही , उस झोपडे में रहने वाली कांचन के लिए हैं ." ये कहते हुए डिंपल का स्वर भारी हो गया . उसे अपने आँसू छुपाना मुश्किल जान पड़ने लगा . - " मैं अपने कमरे में जा रही हूँ पापा ." डिंपल बोली और तेज़ी से सीढ़ियों की तरफ बढ़ गयी .

ठाकुर साहब और मुनीम जी पत्थर की मूर्ति बने उसे जाते हुए देखते रहे.

" ये सब अचानक क्या हो गया मुनीम जी ?" होश में आते ही ठाकुर साहब मुनीम जी से बोले - " हमारे पिछे इतना सब कुछ होता रहा और हमें इसकी खबर ही ना हुई ."

" इसका ज्ञान तो मुझे भी नही था सरकार .... पर आप निश्चिंत रहें . बात अभी भी बन सकती है ." मुनीम जी ठाकुर साहब को दिलासा देते हुए बोले - " बस मुझे इस वक़्त डिंपल बेटा से मिलने की इज़ाज़त दीजिए . मैं पहले उनके दिल का हाल जान लूँ ."

" जाइए ..... मुनीम जी , जाकर डिंपल को देखिए . मेरी तो कुछ भी समझ में नही आ रहा है . पता नही क्यों खुशी हमें रास नही आती ." ठाकुर साहब हताश होकर बोले .

" मेरे होते .... इस बार खुशी दरवाज़े से नही लौटेगी सरकार ....! आप हिम्मत ना हारें ." मुनीम जी ने उन्हे फिर से आश्वासन दिया - " मैं पहले डिंपल बेटा से मिल लूँ फिर आप से बात करता हूँ ." इतना कहकर मुनीम जी डिंपल के कमरे की तरफ बढ़ गये .

दरवाज़े पर पहुँचकर मुनीम जी ने धीरे से दरवाजे को हाथ लगाया तो दरवाज़ा खुलता चला गया. मुनीम जी की नज़र अंदर पहुँची. डिंपल बिस्तर पर औंधे मूह पड़ी हुई थी.

" डिंपल बेटा ." मुनीम जी दरवाज़े से ही बोले . उनकी आवाज़ से डिंपल पलटी , दरवाज़े पर खड़े मुनीम जी पर नज़र पड़ी तो बिस्तर पर उठकर बैठ गयी .

" डिंपल बेटा .... हमें बताइए ..... पूरी कहानी बताइए ..... आपके , अजित और कांचन के बीच जो कुछ भी है वो सब हमें बताइए ." मुनीम जी अधिरता के साथ बोले .

" वे दोनो एक दूसरे से प्यार करते हैं अंकल ...." डिंपल मुनीम जी की ओर देखकर भारी स्वर में बोली - " मैं अपनी आँखों से उन दोनो का मिलन देख चुकी हूँ ."

" पर तुम क्या चाहती हो बेटा ?" मुनीम जी डिंपल के सर पर हाथ फेरते हुए बोले - " कोई कुछ भी चाहे .... पर होगा वही जो तुम चाहोगी . ये मेरा वचन है ." अचानक मुनीम जी की आवाज़ में कठोरता उभरी .

डिंपल ने आश्चर्य से मुनीम की ओर देखा. उनकी बूढ़ी आँखों में भी इस वक़्त चिंगारी दहक उठी थी. डिंपल उनकी आँखों में झाँकते हुए धीरे से बोली - "मैं कांचन का बुरा नही चाहती अंकल.....पर मैं अजित के बगैर नही जी सकती. शुरू में मैं अजित को पसंद नही करती थी पर पता नही क्यों मैं जितना उससे दूर होने की कोशिश करती.....वो मुझे उतना ही मेरे करीब महसूस होता. धीरे धीरे मैं कब उससे प्यार करने लगी मैं नही जान पाई. इसका एहसास मुझे उस दिन हुआ जब आपके और पापा के मूह से अजित से अपनी विवाह की बात सुनी. पर तब तक बहुत देर हो चुकी थी. अजित किसी और का हो चुका था."

" उसे तुम्हारा ही होना है डिंपल " मुनीम जी डिंपल के सर को अपने पेट से सटा कर उसके बालों को सहलाते हुए बोले . - " वो किसी और का हो ही नही सकता . मैं उसे किसी और का होने नही दूँगा ." मुनीम जी जबड़े भिचकर बोले .

" अंकल ....." डिंपल मुनीम जी के गुस्से से भरे शब्द सुनकर काँप उठी . -" क्या आप ..... कांचन को हानि पहुँचाएंगे . वो मेरी दोस्त है ..... इसमे उसका कोई कुसूर नही , वो तो ये भी नही जानती कि मैं अजित से प्यार करती हूँ ."

डिंपल के मूह से सहमा सा स्वर सुनकर मुनीम जी मुस्कुराए. - "आप चिंता मत कीजिए डिंपल बेटा. हम भी कांचन का बुरा नही चाहते.....और उसका बुरा करने की तो हम सोच भी नही सकते. पर कुछ ऐसा ज़रूर करेंगे कि....अजित कांचन को छोड़कर आपके पास चला आए."

" क्या ये संभव है अंकल ....?" डिंपल ने आश्चर्य से मुनीम जी की और देखा . - " अजित कांचन से बहुत प्यार करता है . वो उसे कभी नही छोड़ेगा ."

" आप उसकी चिंता मत करो बेटा ....!" मुनीम जी धीरे से मुस्कुराए . फिर डिंपल का चेहरा अपने हाथों में लेकर उसकी आँखों में झाँकते हुए बोले - " बस आप एक वादा करो कि जब तक हम शहर से नही लौट आते ..... तब तक आप अपनी ओर से कोई भी कदम नही उठाएँगे . जो कुछ अजित और कांचन के बीच चल रहा है चलने दीजिए . आप सिर्फ़ मूक दर्शक बने देखते रहिए ."

" ठीक है अंकल ...." डिंपल ने मुनीम जी की बात पर हामी भरी - " आप जैसा कहते हैं मैं वैसा ही करूँगी . मैं आपके शहर से लौट के आने तक कुछ नही करूँगी . पर आप जल्दी लौटकर आईएगा ."

" बिल्कुल बेटा ..... सिर्फ़ तीन चार दिन लगेंगे मुझे . लेकिन एक और बात का भी ध्यान रखें . इस कमरे में आपके और मेरे बीच जो भी बातें हुई .... उसके बारे में मालिक को मत बताना ." मुनीम जी ने सरगोशी की - " अगर मालिक पूछें तो आप कह देना ..... जिसमें अजित और कांचन की खुशी है उसी में आपकी भी खुशी है . आप उनके रिश्ते से खुश हैं . मालिक तो पहले से ही बहुत दुखी हैं ..... आपके दुख की भनक भी उन्हे लगी तो वे टूट जाएँगे . आप सदा उनके सामने मुस्कुराते रहिएगा ."

" जी .... समझ गयी अंकल ..." डिंपल ने सहमति में अपनी गर्दन हिलाई .

" ओके बेटा .... अब मैं चलता हूँ . अपना ख्याल रखना ." ये कहकर मुनीम जी डिंपल के कमरे से बाहर निकल गये .

अजित अपने कमरे में बैठा गहन विचारों में डूबा हुआ था. उसके समझ में नही आ रहा था कि......मा के आने के बाद वो ठाकुर साहब को क्या जवाब देगा. ठाकुर साहब की आशायें उसके साथ जुड़ी हुई थी. वो किस प्रकार उन्हे मना कर सकेगा. वे बेचारे पहले ही एक लंबे अरसे से पत्नी के दुख से पीड़ित हैं...उन्हे कितना कष्ट होगा जब वो डिंपल के साथ विवाह से इनकार करेगा?.

" जो भी हो .....!" अजित मन में बड़बड़ाया . - " मैं कांचन के साथ अन्याय नही कर सकता . डिंपल अमीर बाप की बेटी है . उसके लिए आसानी से अच्छे रिश्ते मिल जाएँग . लेकिन कांचन ...? वो झोपडे में रहने वाली एक ग़रीब किसान की बेटी है . पर यहाँ बात सिर्फ़ अमीरी ग़रीबी की भी नही है . कांचन मुझसे प्यार करती है . दिन रात एक ही सपना देखती है ...... मैं उसे अपनी दुल्हन बनाकर अपने घर ले जाऊंगा . डिंपल के लिए तो मैं सिर्फ़ एक ज़िद हूँ . लेकिन कांचन के लिए उसकी ज़िंदगी .

दुनिया इधर की उधर हो जाए पर मैं कांचन का साथ नही छोड़ूँगा. हां...ठाकुर साहब का दिल ज़रूर दुखेगा. पर वे समझदार इंसान हैं मेरी भावनाओं को समझ जाएँगे. अब मुझे सिर्फ़ मा को मनाना है"

उसने तय कर लिया था कि वो कांचन के लिए ज़रूरत पड़ी तो मा का भी विरोध करेगा. वैसे उसे अपनी मा पर पूरा भरोसा था कि वो उसकी खुशियों के विरुद्ध नही जाएगी.

कांचन की याद आते ही उसके होंठो पर मुस्कुराहट फैल गयी. उसकी प्यारी सूरत का स्मरण होते ही उसकी सारी चिंताए दूर हो गयी. मस्तिष्क का सारा भार उतर गया. वो कांचन की यादों में खोता चला गया.

१५

दिन के १ बजे थे. शांता अपनी धुन में नदी की ओर जाने वाली कच्ची और उबड़ खाबड़ पगडंदियों पर चली जा रही थी. वो इस वक़्त अपने भैया धनपाल के लिए खाना पहुँचाने खेत गयी थी. उसे खाना खिलाने के बाद अब वो नदी की ओर जा रही थी.

शांता रोज़ इसी वक़्त धनपाल के लिए खाना लेकर खेत जाती थी. पर आज उसने खेतों में थोड़ा काम भी कर लिया था. सिर्फ़ एक घंटे की मेहनत ने उसे पूरी तरह थका डाला था. वो पसीने से तर-बतर हो चुकी थी. ऐसी स्थिति में घर जाने से पहले उसने नदी में जाकर स्नान करना उचित समझा.

वो किसी गहरी सोच में गुम रास्ते में चली जा रही थी कि तभी उसके कानो से एक मर्दाना स्वर टकराया. वह आवाज़ की दिशा में मूडी. जैसे ही उसकी नज़र आवाज़ देने वाले पर पड़ी उसके दिल की धड़कने बढ़ गयी. जाने क्या बात थी कि उसे देखते ही शांता सिहरन से भर गयी थी.

" अच्छा तो तू है " शांता ने अपनी सांसो को काबू में करते हुए कहा - " पापी बिरजू , क्या ऐसे आवाज़ देते हैं किसी को ? तूने तो मुझे डरा ही दिया था ."

" ग़लती हो गयी बुआ . वैसे जा कहाँ रही हो ?" बिरजू ने अपने काले दाँत दिखाते हुए हंसा .

" तुम्हे उससे क्या लेना देना ? मैं कहीं भी जाऊ . तू क्यूँ पुछ रहा है ?" बुआ ने सवाल किया .

" इसलिए बुआ कि अगर हमारी मंज़िल एक है तो क्यों ना हम साथ साथ चलें ." बिरजू ने दो अर्थी शब्दो में कहा .

" तुझ जैसे पापी के संग से मैं अकेली भली " शांता उसे अज़ीब सी नज़रों से देखते हुए बोली .

" मैने ऐसा क्या किया है बुआ जो तुम मुझे पापी कह रही हो ?" बिरजू उसके निकट पहुँचता हुआ बोला . -" ना तो मैने तुम्हे कभी छेड़ा है .... ना परेशान किया है , ना कभी तुमसे कुछ गंदा बोला है और ना ही कभी तुम्हारे शरीर को छुआ है . फिर क्यों मुझे पापी कहती हो ?" बिरजू ने शांता के शरीर को उपर से नीचे तक घूरा .

शांता उसकी कामुक नज़रों की चुभन अपने बदन पर महसूस करके हौले से थर-थारा उठी. बिरजू की प्यासी नज़रों को अपने नाज़ुक अंगो पर थिरकते देख उसके बदन में तेज़ सनसनाहट भरती चली गयी. उसे वो पल याद आ गये जब वो बिरजू के एहसास मात्र से गीली हुई थी. कितना उन्मादी पल था वो. कैसी मस्ती में डूब गयी थी वो. आज फिर वैसा ही खुमार धीरे धीरे उसपर हावी होता जा रहा था. उसकी पलकें नशे से भारी होने लगी थी.

शांता ने अपनी भारी होती पलकें खोलकर बिरजू की ओर देखा. फिर बोली - "सबसे पहले तो तू मुझे बुआ मत कहा कर......! सिर्फ़ ३ साल छोटा है तू मुझसे."

" तो क्या कहूँ ? शांता कहूँ ...?" बिरजू ने शांता के बदलते हाव भाव को देखते हुए कहा .

वो एक पक्का शिकारी था. उसने शांता की आँखों में फैलती वासनात्मक लहरों को देख लिया था. उसके बदन में बढ़ती गर्मी को वो महसूस करने लगा था. उसे शांता के दिल में उठती चिंगारी को थोड़ी और हवा देने की ज़रूरत थी. फिर उस चिंगारी को शोला बनते देर नही लगना था. वो ये भी जान गया था कि शांता उसके बातों का विरोध भले ही करे.....पर हो-हल्ला नही करेगी.

" जो जी में आए कह ..... पर बुआ मत कहा कर ." शांता काँपते स्वर में बोली .

" तो ठीक है शांता ..... अब बता दो .... कहाँ जा रही हो ?" बिरजू ने कामुक स्वर में कहा .

" तू आख़िर चाहता क्या है ये बता ?" शांता उसकी आँखों में झाँकते हुए बोली .

" चाहता तो बहुत कुछ हूँ .... पर जो भी तुम खुशी से दोगि मैं ले लूँगा ..... शांता ." वह ढिठई के साथ बोला . उसने शांता शब्द पर फिर से ज़ोर दिया .

शांता सर से पावं तक काँप गयी. उसे बिरजू के साहस पर आश्चर्य हुआ. पर जाने क्यों उसे बिरजू पर गुस्सा नही आया..उसने बिरजू की आँखों में झाँका, वहाँ उसे वासना के अतिरिक्त कुछ भी नज़र ना आया. वह कुछ ना बोली. बस स्तब्ध होकर बिरजू के चेहरे को देखती रही. उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था. बिरजू की आँखों की तपिश वो अपने अंदर महसूस करने लगी थी.

तभी, अचानक वो हुआ जिसकी कल्पना शांता ने नही की थी. बिरजू ने उसे एक हाथ से गर्दन से पकड़ा और उसके होंठो पर अपने होंठ रख दिया.

शांता.....अवाक ! ये सब कुछ इतना जल्दी हुआ था कि उसे कुछ भी समझ में नही आया था. बिरजू उसके होंठों को कुचलना आरंभ कर चुका था.

शांता छटपटाई !

इससे पहले कि वो कुछ और कर पाती. बिरजू ने एक और कहर ढाया. अपना एक हाथ उसके स्तन पर रखकर दबा दिया.

शांता का शरीर ही नही उसकी आत्मा तक काँप उठी. वासना की तेज़ लहर उसके शरीर में बिजली की गति से फैल गयी. पर उसका विरोध अब भी जारी था. शांता पूरी शक्ति लगाकर उससे छूटने का प्रयास कर रही थी.....किंतु बिरजू के मजबूत हाथों की पकड़ से खुद को आज़ाद नही कर पा रही थी.

बिरजू ने उसके होंठ चूसना और स्तन दबाना जारी रखा. बिरजू के कठोर हाथों का स्पर्श अब उसे गरमाने लगी थी. अब उसके होंठ भी बिरजू के होंठों से जुड़ने लगे थे. उसका विरोध अब दिखावा मात्र का रह गया था. बिरजू ने अपने दूसरे हाथ को गर्दन से हटाकर उसके नितंबो पर रख दिया और उसे अपनी कमर से सटा लिया. शांता उससे सॅट-ती चली गयी. बिरजू उसके नितंबो को मसलने और दबाने लगा.

बिरजू के होंठ अब उसके गर्दन और छाती के आस-पास घूमने लगे थे. शांता के मूह से आनंद मिश्रित सिसकारी फूटने लगी थी. बिरजू के हाथ उसके समस्त अंगो को टटोलने में लगे हुए थे. शांता की आँखें कब की बंद हो चुकी थी. शांता बिरजू के छेड़छाड़ से सूखे पत्ते की तरह उड़ती जा रही थी.

बिरजू ने अब देर करना उचित नही समझा. उसने अपने दोनो हाथों को शांता के नितंबो पर रखा और उसे उपर उठा लिया. उसे अपने हाथों में उठाए हुए वह झाड़ियों की तरफ बढ़ गया. बिरजू ने उसे लिए हुए ज़मीन पर लंबा होता चला गया. बिरजू ने उसे लिटते ही अपना एक हाथ उसकी जांघों पर रख दिया.

सहसा ! शांता की चेतना लौटी !

उसने बिरजू को एक तेज़ धक्का दिया और झट से खड़ी हो गयी.

बिरजू ने आश्चर्य से उसे देखा.

शांता अपनी उखड़ी साँसों को नियंत्रित करने का प्रयास कर रही थी. उसकी आँखें नशे की खुमारी से लाल और भारी हो गयी थी.

" क्या हुआ शांता ?" बिरजू ना खुशमाद भरे स्वर में पुछा .

" म ...... मैं ये नही कर सकती बिरजू ." वह लड़खड़ाती आवाज़ में बोली .

" क्यों .....? क्या दिक्कत है ?" बिरजू ने अधीर होकर पुछा .

" मैं इस वक़्त .... दिन के उजाले .... इस तरह खुले में ये नही कर सकती . मुझे माफ़ कर दो ." शांता बोली और बिरजू के उत्तर की प्रतीक्षा किए बगैर तेज़ी से नदी की ओर भागती चली गयी .

बिरजू अपनी मुट्ठियां भिचता हुआ उसे जाता देखता रहा. वो चाहता तो उसके साथ ज़ोर ज़बरदस्ती कर सकता था. पर उसे शांता को प्यार से ही हासिल करना था.

शांता नदी पहुँची. उसने आनन फानन में अपने कपड़े उतारे और नदी में कूद गयी. वह छाती भर पानी में खड़ी होकर अपने जलते बदन को ठंडा करने का प्रयास करने लगी. वह पानी के नीचे सिर्फ़ पेटिकोट पहनी हुई थी.

शांता अपने बदन को सहलाते हुए अपने अंगो को छेड़ने लगी. उसका एक हाथ उसके स्तन को कस रहा था तो दूसरा उसकी योनि द्वार में दस्तक दे रहा था.

शांता की बेचैनी बढ़ती ही जा रही थी. उसने अपने हाथ की उंगलियों से अपनी योनि को कुरेदना शुरू किया. बरसो से प्यासी उसकी योनि छुने मात्र से ही पिघल गयी.

शांता स्खलन चाहती थी. उसके शरीर में जो आग इस वक़्त लगी हुई थी...वो स्खलन के बिना शांत होने वाली नही थी. उसने देर ना करते हुए अपनी एक उंगली योनि के अंदर डाल दी. उंगली योनि में प्रवेश करते ही उसके मूह से आनंद भरी हल्की सी चीख निकल गयी.. साथ ही उसकी आँखें मस्ती में बंद होती चली गयी.

आँखें बंद होते ही उसके मानस्पटल पर बिरजू की तस्वीर उभरी. शांता के हाथ और तेज़ी से हरकत में आए. उसने अपनी दूसरी उंगली को भी योनि द्वार के अंदर थेल दिया. फिर उंगली की रफ़्तार बढ़ाई. उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसकी योनि पर बिरजू के हाथ मचल रहे हों. कुछ ही देर में उसका बदन थर-थाराया... फिर एक जोरदार चीख के साथ उसका यौवन रस योनि के रास्ते बहकर पानी में मिल गया. वह हाफ्ति हुई नदी की सतह से जा मिली.

इस वक़्त दिन के तीन बजे हैं. शांता अपने कमरे में बिछि चारपाई पर लेटी गहन चिंता में डूबी हुई है. शांता की सोच का आधार वो हादसा है जो बिरजू के साथ नदी के रास्ते में पेश आया था.

वह सोच रही थी कि आज वो कैसे बहक गयी. वो इतनी बेबस कैसे हो गयी कि बिरजू जैसा बदनाम इंसान उसके अंगो को छुता रहा....मसलता रहा और वो उसका विरोध तक ना कर सकी. वो इतनी कमज़ोर तो पहले ना थी.....फिर आज वो इतनी कमज़ोर कैसे हो गयी कि एक पराया इंसान उसके साथ मनमानी करता रहा और वो उसे मनमानी करने देती रही."

शांता बुरी औरत नही थी. वह एक अच्छे चरित्र की महिला थी. उसने अपनी जवानी के दिनो में भी कभी ऐसा घृणित काम नही किया था, यही कारण था कि आज की घटना को याद करके उसकी आत्मा लहुलुहान हुई जा रही थी. पर इसमे उसका कोई दोष नही था. आख़िर वो भी हाड़ माँस की बनी हुई थी. भावनाए उसकी भी मचलती थी. वह भी किसी को पा लेना चाहती थी. उसका शरीर भी किसी मर्द के शरीर के नीचे दबकर पीसना चाहता था. ये प्राकृतिक ज़रूरत थी....इसमे उसका वश नही था.

शांता पिछले ८ सालों से शारीरिक सुख से वंचित थी. एक युवा शरीर आख़िर कब तक भूखा रह सकता था. उसे कभी ना कभी तो टूटना ही था.

वह २८ साल की थी जब उसका पति उसे छोड़ गया था. उसका व्याह पड़ोस के गांव में रहने वाले हरिया चौधरी से हुआ था. उस वक़्त हरिया की माली हालत बहुत अच्छी थी. शांता के साथ साथ धनपाल भी इस रिश्ते से प्रसन्न था.

विवाह के कुछ ही दिनो बाद हरिया एक साथ कई बुरी आदतों का शिकार हो गया. शराब के साथ साथ बाहरी औरतों का स्वाद भी लेने लगा. एक बार इन चीज़ों में जो डूबा तो उसे काम-काज का भी होश नही रहा. नतीज़ा ये निकला कि उसकी माली हालत बिगड़ने लगी. देखते ही देखते साल दो साल के अंदर उसके पास कुछ भी नही बचा. ना घर ना कारोबार. लेकिन शराब की आदत अब भी बनी हुई थी. घर की बिगड़ती हालत और पति की आदतों से तंग आकर शांता अपने भाई के घर चली आई. शांता के घर छोड़कर जाने के बाद हरिया भी उसके पीछे पीछे अपनी ससुराल आ धमका और वहीं रहने लगा. लेकिन ससुराल में भी उसकी आदत नही सुधरी. यहाँ भी शराब और औरतों का रसपान करता रहा. धनपाल उसकी आदतों से परिचीत था पर बेहन का ख्याल करके वह भी ज़्यादा नही बोलता था.

पर एक दिन उसकी और हरिया की जमकर लड़ाई हो गयी. परिणामस्वरूप धनपाल ने उसकी जी भर पीटाई कर दी. सरे आम हुई अपनी पीटाई से आहत होकर हरिया शांता को छोड़कर चला गया. वो जाने से पहले शांता को ये कहकर गया कि अब वो कभी लौटकर नही आएगा. लेकिन उस वक़्त शांता ने उसकी बातों को गंभीरता से नही लिया. उसे लगा सांझ ढले तक जब हरिया का गुस्सा और नशा उतरेगा तो वो घर लौट आएगा. पर ऐसा हुआ नही. उस दिन का गया हरिया आज तक लौटकर नही आया था. कोई नही जानता था कि वो कहाँ गया? और कब आएगा?. वो ज़िंदा भी है या नही ये भी एक रहस्य बना हुआ था. शांता पिछले ८ सालों से विधवाओं जैसी ज़िंदगी जी रही थी. जब हरिया शांता को छोड़कर गया तब चिंटू २ साल का था और शांता २८ साल की थी.

२८ साल की भरी जवानी में पति के बगैर जीना क्या होता है ये शांता ही जानती थी . उसने एक एक दिन बिस्तर पर किस तरह गुज़ारे थे .... ये कोई उसकी जैसी औरत ही समझ सकती है . वह मजबूत इरादों वाली औरत थी . लेकिन पिछले कुछ दिनो से वह खुद को बहुत कमज़ोर समझने लगी थी . शायद बढ़ती उमर के साथ उसका अकेलापन अब उसे और तड़पाने लगा था .

शांता अपने इन्ही विचारों में गुम थी कि अचानक किसी के पुकारने की आवाज़ से वह चौंकी. उसकी नज़र दरवाज़े की ओर उठी तो वहाँ कांचन को खड़ा पाया. उसके चेहरे पर उलझन के भाव थे. उसकी आँखों में एक सवाल था और होंठ कुछ कहने के लिए फद्फडा रहे थे. - "क्या हुआ कांचन? कोई परेशानी है? कुछ चाहिए तुम्हे? यहाँ आओ." शांता ने एक साथ कई प्रश्न पूछ डाले.

कांचन भीतर आई. फिर बुआ को देखकर धीरे से मुस्कुराकर बोली - "बुआ, तुम कहीं जाने वाली हो इस वक़्त?"

" नही तो . क्यों पूछ रही है ? क्या कोई काम था ?" शांता चारपाई पर उठकर बैठते हुए बोली .

" तुम कहती थी ना बुआ .... मैं कभी घर पर नही रहती इसलिए तुम कहीं जा नही पाती हो . अभी मैं घर पर हूँ .... तुम्हे इस वक़्त कहीं जाना हो तो जा सकती हो ." कांचन किसी नन्हे बचे की तरह मासूमियत के साथ बोली .

उसकी बातों से शांता के होंठ मुस्कुरा उठे. वह प्यार से कांचन को देखते हुए बोली - "नही बेटी मैं कहीं नही जा रही. मैं बहुत थक चुकी हूँ इसलिए आराम करना चाहती हूँ. तुम जाकर अपने कमरे में आराम करो. मैं इस वक़्त कहीं नही जाना चाहती."

शांता की बातों से कांचन का चेहरा उतर गया. कांचन के उतरे चेहरे पर शांता की नज़र पड़ी. पर इस वक़्त शांता अलग ही चिंता में डूबी हुई थी. कांचन के चेहरे पर छाई उदासी को वो नही देख पाई. वह वापस चारपाई पर लेट गयी.

कांचन कुछ देर यूँही व्याकुलता के साथ खड़ी सोचती रही फिर एक नज़र शांता पर डालकर बाहर निकल गयी. बाहर बरामदे में आकर वो बेचैनी से टहलने लगी. रह रहकर उसकी नज़र मिट्टी की दीवार पे तंगी घड़ी की ओर जा रही थी. घड़ी की सुइयों की खट्ट-खट्ट.....उसके सीने में दस्तक देकर उसके दिले की धड़कानों को बढ़ाती जा रही थी.

उसे ५ बजे अजित से मिलने जाना था. वह अजित को आज अपने हाथों से बनाई खीर खिलाना चाहती थी. पर समस्या यह थी कि शांता के होते वो खीर नही बना सकती थी. यदि शांता ने उसे खीर बनाते देख लिया तो तरह तरह के सवाल पूछने लगेगी. किंतु खीर तो उसे बनाना ही था. बिना खीर के वो अजित से मिलने नही जा सकती थी.

कांचन इसी उधेड़बुन में बरामदे के चक्कर काटती रही. कुछ देर बाद वो फिर से शांता के कमरे के दरवाज़े तक गयी. उसने अंदर झाँका. शांता आँखें बंद किए चारपाई पर एक और करवट लिए सो रही थी. शांता को सोता देख कांचन के दिमाग़ में तेज़ी से विचार कौंधा. उसने धीरे से शांता के रूम का दरवाज़ा भिड़ा दिया फिर खीर बनाने की सारी सामग्री निकाल कर आँगन में आ गयी. कुछ ही देर में उसने चूल्हा भी जला लिया. जब तक चूल्हे में आग पकड़ती तब तक वह दूसरे कार्यों में लग गयी. उसने तय कर लिया था कि शांता के जागने से पहले ही वह खीर बना लेगी. वह तेज़ी से अपने हाथ चला रही थी. साथ ही मन ही मन यह प्रार्थना करती जा रही थी कि आज उसकी बुआ को कुंभकरण की नींद लग जाए. और ५ बजे से पहले उसकी आँख ना खुले.

लगभग १ घंटे की मेहनत के बाद कांचन ने खीर बना ली. फिर उसने खीर को एक छोटे से बर्तन में रखकर बाकी सारे बर्तन धोने बैठ गयी. ताकि बुआ को ये पता ना चले कि उसने खीर बनाई है.

सारे काम निपटने के बाद उसने घड़ी में टाइम देखा ४:१५ बज चुके थे. शांता अभी भी गहरी नींद सो रही थी. उसने आँगन में आकर आकाश की ओर देखा. आकाश की और नज़र जाते ही उसका दिल धक्क सा कर उठा. आकाश से सुर्य गायब हो चुका था. और उसकी जगह काले बादलों ने अपनी चादर फैलानी शुरू कर दी थी.

कांचन परेशान हो गयी. अभी अजित से मिलने जाने में ४५ मिनिट का समय बाकी था. अगर उससे पहले वर्षा शुरू हो गयी तो उसे बड़ी परेशानी होने वाली थी. वह असहनी भाव से आकाश को देखती रही. खीर बनाने के बाद जो खुशी उसके चेहरे पर छाई थी अब वो छट चुकी थी, अब उसकी जगह उदासी के बादल छाने लगे थे. कांचन उदास मन से बरामदे में आई और बेचैनी के साथ टहलने लगी. रह रहकर उसकी नज़र घड़ी की ओर जाती. आज घड़ी की सूइयां भी जैसे थम सी गयी थी.

कांचन एक बार फिर आँगन में मौसम का हाल देखने गयी. आकाश की ओर देखते ही उसका मुख सुखकर पतला हो गया. आकाश में लहराते काले बादल और भी घने हो गये थे. वह सोच में पड़ गयी - "अब मुझे साहेब से मिलने चले जाना चाहिए....कहीं ऐसा ना हो बारिश शुरू हो जाए.....और बारिश की शोर से बुआ जाग जाए. ऐसी हालत में बुआ मुझे घर से बाहर जाने नही देगी. हां यही ठीक रहेगा....इससे पहले की बारिश शुरू होकर मेरी भावनाओ पर पानी फेरे मैं इसी वक़्त निकल जाती हूँ."

कांचन तेज़ी से किचन तक आई. पहले उसने खीर का डब्बा उठाकर अपने दुपट्टे के अंदर छुपाया. फिर शांता के कमरे के अंदर निगाह डाली. शांता अभी भी सो रही थी. कांचन ज्यों का त्यों दरवाज़ा धीरे से बंद करके आँगन में आ गयी. चिंटू खेलने बाहर गया हुआ था. कांचन आँगन के दरवाज़े को धीरे से भिड़ा कर तेज़ी से घाटी की ओर जाने वाले रास्ते पर बढ़ गयी.

कुछ ही देर में कांचन उस स्थान पर पहुँच गयी जहाँ वह रोज़ अजित से मिला करती थी. वह झरने के किनारे स्थित उसी पत्थर पर बैठ गयी जिसपर रोज़ ही बैठकर गिरते झरने को देखा करती थी. उसके बदन में इस वक़्त गुलाबी रंग की कुरती और उसी रंग की पाजामी थी. उसके हाथों में खीर का वही डब्बा था जिसे वा अजित के लिए घर से लेकर आई थी.

कांचन पत्थर पर बैठी बार बार पिछे मुड़कर देखती जा रही थी. उसे अजित का बेसब्री से इंतेज़ार था. बार बार वह खीर के डब्बे को देखती और मंद मंद मुस्कुराती. साथ ही ये भी सोचती जा रही थी कि पता नही उसका बनाया खीर अजित को पसंद आएगा भी या नही.

खीर बनाने के बाद कांचन ने उसे चखा था. उसकी बनाई खीर रात में बुआ के निर्देश पर बनाई खीर जितनी स्वादिष्ट नही लगी थी. जल्दबाज़ी में कांचन से खीर उतनी अच्छी नही बन सकी थी.....जितनी अच्छी रात वाली खीर थी.

खीर के साथ साथ एक और चिंता कांचन को परेशान किए जा रही थी. उसकी दूसरी चिंता आकाश में मंडराते काले बादल थे जो तेज़ी के साथ वातावरण को अपनी चपेट में लेटे हुए उसे भयानक रूप प्रदान करते जा रहे थे. तेज़ हवाओं की साय साय और मौसम के बदलते तेवर से कांचन का नन्हा सा दिल बैठा जा रहा था.

अभी वह गर्दन उठाए आकाश में उड़ते बादलों को देख ही रही थी कि वर्षा की दो मोटी बूंदे उसके चेहरे पर आकर गिरी. फिर देखते ही देखते बूँदा- बाँदी भी शुरू हो गयी.

कांचन जहाँ खड़ी थी उससे थोड़ी दूर खोहनुमा बड़ा सा पत्थर था. पत्थर इतना बड़ा था कि उसके नीचे दर्ज़नो आदमी बारिश से अपना बचाव कर सकते थे. कांचन का मन उस पत्थर की आड़ में जाने को हुआ पर अगले ही पल इस विचार ने उसके पावं रोक दिए कि अगर इस वक़्त साहेब आ गये और उसे ना देख पाए तो कहीं ऐसा ना हो कि साहेब निराशा में वापस लौट जाएँ. वे तो यही समझेंगे कि बारिश की वजह से कांचन आई नही होगी. ऐसे में उसका मिलन साहेब से नही हो सकेगा.

कांचन वहीं खड़ी रही. उसने पत्थर की शरण लेने का विचार त्याग दिया.

बारिश की बूंदे अब तेज़ होने लगी थी. कांचन को खीर की चिंता हुई, कहीं ऐसा ना हो बारिश में भीगकार उसका खीर ठंडा हो जाए. उसने अपना दुपट्टा गले से उतारकर खीर के डब्बे को अच्छी तरह से लपेटने लगी. फिर एक नज़र रास्ते की ओर डालकर उसी पत्थर पर उकडू बैठ गयी. वह खीर के डब्बे को अपनी कोख में छुपाये हुए थी. उसे खुद के भीगने की चिंता नही थी....उसे चिंता थी तो खीर की. उसे ये भी चिंता नही थी कि इस तरह भीगने से वो बीमार पड़ सकती है.....उसे चिंता थी तो इस बात की कि कहीं भीगने से खीर ठंडा ना हो जाए......कहीं खीर के ठंडा होने से उसका स्वाद ना बिगड़ जाए. कहीं साहेब ये ना कह दे कि कांचन तुम्हे खीर बनाना नही आता. उसे इस वक़्त खुद से ज़्यादा खीर की चिंता थी. वह उसी प्रकार बैठी बारिश में भीगति रही.

वर्षा अपने पूरे यौवन पर पहुँच चुकी थी. मूसलाधार बारिश और बहती तेज़ हवाओं की साईं साईं से वातावरण संगीतमय हो उठा था. लेकिन बारिश का यह संगीत इस वक़्त कांचन को बिल्कुल भी अच्छा नही लग रहा था. वह तो बारिश की ठंड और तेज़ हवाओं के थपेड़ों से मरी जा रही थी. हवाओं के साथ पानी की छीटें जब उसके शरीर से आकर टकराते तो उसे ऐसा प्रतीत होता मानो किसी ने उसके शरीर में एक साथ सैंकड़ो सुई चुभो दी हों. उसका शरीर ठंड से सिकुड़ता जा रहा था. पूरे बदन में तेज़ कंपकंपी सी हो रही थी. दाँत ऐसे बज रहे थे जैसे वे अभी जबड़े से निकलकर बाहर आ जाएँगे.

पूरे एक घंटे तक कांचन उसी पत्थर पर बैठी भीगति बारिश की मार सहती रही. एक घंटे तक वर्षा धरती को जलमग्न करने के बाद चली गयी. बारिश के रुकते ही कांचन काँपते पैरों के साथ खड़ी हुई. फिर आँखों में अपने साहेब को देखने की आस लिए उस रास्ते की तरफ निगाह डाली, जिस और से अजित आने वाला था. पर अजित दूर दूर तक कहीं दिखाई नही दिया. उसकी आँखें पीड़ा से गीली हो गयी. उसका साहेब अभी तक नही आया था.

एक तो बारिश की मार, उसपर अजित का ना आना. कांचन को अंदर तक पीड़ा पहुँचती चली गयी. वह काफ़ी देर तक टक-टॅकी लगाए उसी रास्ते की और देखती रही. उसका मन निराशा से भरता जा रहा था. उसे लगने लगा था कि उसके साहेब अब नही आएँगे. वे इतनी बारिश में यहाँ आने की मूर्खता नही दिखाएँगे. साहेब उसकी तरह मुनीमे नही हैं जो ऐसे मौसम में उससे मिलने आएँगे. पर दूसरा मन ये कह रहा था कि साहेब ज़रूर आएँगे. वो तुमसे प्यार करते हैं, वो तुम्हे इस तरह नही सता सकते, तू थोड़ा इंतजार कर वो ज़रूर आएँगे.

कांचन अपने गीले वस्त्रो में चिपकी पुनः उसी पत्थर पर बैठ गयी. सर को घुटनों पर रखा और सिसक पड़ी. उसे इस वक़्त ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसका सब कुछ छीन लिया हो.......जैसे वो पूरी तरह से लूट चुकी हो.......उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वो बीच सागर में अकेली किसी नाव में बैठी डूब रही हो पर कोई उसे बचाने वाला नही. कांचन ठंड से कांपति सिसकती रही.

कांचन अपने गीले वस्त्रो में चिपकी पुनः उसी पत्थर पर बैठ गयी. सर को घुटनों पर रखा और सिसक पड़ी. उसे इस वक़्त ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने उसका सब कुछ छीन लिया हो.......जैसे वो पूरी तरह से लूट चुकी हो.......उसे ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वो

बीच सागर में अकेली किसी नाव में बैठी डूब रही हो पर कोई उसे बचाने वाला नही. कांचन पत्थर पर बैठी ठंड से कांपति सिसकती रही.

कुछ पल और बीता. अब बारिश का शोर ख़त्म हो गया था. पक्षी अपने घोसलों से निकलकर खुशी से इधर उधर चहकने लगे थे. बारिश के बाद हर वास्तु साफ सूत्री और धूलि हुई दिखाई दे रही थी. हवाओं में खुशबू फैल चुकी थी. माहौल ऐसा खुशनुमा हो गया था कि कोई भी थका हारा इंसान यहाँ आ जाए तो यहाँ का मनोहारी दृश्य देखकर उसकी सारी थकान उतर जाए.

किंतु कांचन को इन चीज़ों से तनिक भी राहत ना थी. प्रकृति में बिखरा सारा सौंदर्या उसे इस वक़्त फीका फीका सा लग रहा था. पक्षियो का कलरव उसके कानो में जैसे ज़हर घोल रहा था. यहाँ का हर वास्तु उसे उसकी इच्छाओं के विपरीत जान पड़ता था.

कांचन अभी अपनी उन्ही दशा में गुम थी कि उसे अपने पिछे किसी के कदमों की आहट सुनाई दी. वह झटके से खड़ी हुई. पलट कर देखा तो उसे अजित आता हुआ दिखाई दिया.

अजित अपनी पतलून उपर उठाए गीले मिट्टी में सम्भल संभलकर कदम रखता हुआ उसकी ओर बढ़ा चला आ रहा था. उसे देखते ही कांचन के आँसू और भी तेज़ हो गये. पर इस बार ये खुशी से बरस रहे थे.

कांचन अजित को देखकर उसकी ओर ऐसी लपकी जैसे वो कोई नन्ही बच्ची हो. और किसी ने उसे अकेला किसी घने जंगल में छोड़ दिया हो. जहाँ वो घंटो तक डरी सहमी अकेली बहतकती रही हो. और अब अजित को देखकर उसके शरण में आने के लिए दौड़ पड़ी हो.

अजित ने उसे अपनी ओर बेतहाशा आते देखा तो उसने भी अपनी बाहें फैला दी. कांचन उसकी बाहों में सिमटती चली गयी. उसे यह भी ध्यान नही रहा कि उसके कपड़े गीले हैं. जो इस वक़्त अजित के कपड़ों से मिलकर उसे भी गीला करते जा रहे हैं.

किंतु अजित को उसके गीले होने का एहसास हो गया था. उसने आश्चर्य से कांचन को देखा. वा उसकी छाती में मूह छिपाए सूबक रही थी. उसे रोता देख अजित घबरा गया. वह कांचन को रोता नही देख सकता था. उसने कांचन को कसकर अपनी बाहों में भीच लिया.

वह डारी सहमी सी लग रही थी. अजित उसे कुछ देर रोने देता रहा. और ये सोचता रहा कि कांचन रो क्यों रही है? वह गीली कैसे हो गयी?

उसने एक हाथ से कांचन को अपनी छाती से भीछे रखा और दूसरे हाथ से उसका चेहरा उपर उठाया. तत्पश्चात उसके गालो को सहलाते हुए पुछा - "क्या हुआ कांचन? क्यों रो रही हो? तुम भीग कैसे गयी?"

" मैं आपकी राह देख रही थी साहेब ...... लेकिन जब आप समय पर नही आए , तब मैं बहुत घबरा गयी थी ." कांचन भर्राये स्वर में बोली .

" मैं हवेली से निकला ही था कांचन ... कि उसी वक़्त बारिश शुरू हो गयी . और मैं वहीं रुक गया ." अजित उसकी आँखों से आँसू पोछते हुए बोला - " लेकिन तुम भीग कैसे गयी ? क्या तुम्हे बारिश में भीगना अच्छा लगता है ?"

कांचन ने गीले आँखों से अजित को देखते हुए इनकार में गर्दन हिलाई.

" तो फिर भीगी क्यों ? किसी पेड़ के नीचे क्यों नही गयी ?" अजित ने फिर से पुछा .

" आपकी खातिर ...."

" मेरी खातिर ....? मतलब ?" अजित ने ना समझने वाले भाव से कांचन को देखा .

" मैं यहाँ बहुत पहले आ गयी थी . मेरे आने के कुछ ही देर बाद बारिश शुरू हो गयी . मेरा मन हुआ कि मैं पत्थर की ओट में चली जाऊ . फिर मैं सोची की जो मैं चली गयी .... और उसी वक़्त आप आ गये तो कहीं ऐसा ना हो कि आप मुझे ना पाकर लौट जायें . इसलिए मैं उसी उँचे पत्थर पर बैठी रही . और फिर भीग गयी ." ये कहकर कांचन अजित को देखने लगी .

कांचन की बातें सुनकर अजित का दिल भर आया. उसे कांचन पर बे-तहाशा प्यार आया. उसने कस्के कांचन को अपनी बाहों में समेट लिया और फिर उसके माथे को चूमते हुए बोला -"तुम्हे ऐसा क्यों लगा कि मैं तुमसे मिले बगैर चला जाऊंगा? तुम क्या समझती हो मैं

तुमसे प्यार नही करता? मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ. इसलिए अब एक बात का ध्यान रखना. मेरी खातिर अब कभी अपने आप को कष्ट मत देना. अब तुम्हारी जान सिर्फ़ तुम्हारी नही है. इसे कष्ट दोगि तो मैं तुमसे नाराज़ हो जाऊंगा." अजित बोला और ढीले हाथों से उसके एक गाल को नोच दिया.

कांचन मुस्कुरा उठी.

" साहेब ..." कांचन अपने हाथ में पकड़े डब्बे को खोलते हुए बोली - " मैं आपके लिए खीर लाई हूँ . इसे आपके लिए मैने अपने हाथों से बनाई है . ये अभी भी गरम है साहेब . मैने खीर के डब्बे को भीगने नही दिया ."

उसने खीर का डब्बा खोलकर अजित को दिखाया.

अजित आश्चर्य से कभी कांचन को, तो कभी खीर के डब्बे को देखता रहा. उसे ताज़ूब हुआ कि मज़ाक में कही गयी बात को कांचन ने कितना दिल से लिया. और वो उसके लिए खीर बना लाई. उसपर तेज़ बारिश में वो खुद भीग गयी पर खीर को भीगने नही दिया. वो सोचने लगा - "कितना प्यार करती है कांचन मुझे. मेरी छोटी छोटी खुशी को कितना दिल से सम्मान देती है. मुझे कोई कष्ट ना हो इसके लिए खुद कष्ट उठा लेती है."

इस एहसास से अजित का दिल उसके प्रति श्रद्धा से भर गया. उसे खुद पर गर्व महसूस हुआ कि उसे कांचन जैसी साफ दिल की बे-इंतेहाँ प्यार करने वाली लड़की मिली.

" क्या हुआ साहेब ?" अजित को खामोश देख कांचन बोली . उसका दिल अनायास ही किसी अंजानी आशंका से धड़क उठा था . - " खाकर देखो ना साहेब .... मैने खुद बनाई है ."

अजित मुस्कुराया. फिर कांचन के हाथ से डब्बा लेते हुए बोला -"ज़रूर खाऊंगा. खीर तो मेरा फेवरेट है. और फिर तुम बनाई हो तो इसका स्वाद भी बेहतर होगा."

कांचन धीरे से मुस्कुराते हुए अपना सिर हिलाई. पर अंदर ही अंदर ये सोचकर घबरा रही थी कि जाने अजित को उसकी खीर कैसी लगेगी? वह व्याकुलता से भरी अजित को देखे जा रही थी. अजित ने खीर के डब्बे में उंगली घुसाया फिर खीर को अपने मूह में भर लिया.

कांचन की उत्सुकता बढ़ गयी. वह टक-टॅकी लगाए देखती रही. उसका दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे अभी उसकी पसलियां तोड़कर बाहर आ जाएगा.

" उम्म्म ...... वाहह ....!" अजित ने चटकारा लिया . - " मेरी तो किस्मत खुल गयी कांचन , तुम कितना स्वादिष्ट खीर बनाती हो . आहा ..... अब तो विवाह के बाद रोज़ तुम्हारे हाथ की बनी खीर खाऊंगा ."

कांचन का चेहरा खुशी से खिल गया. उसके मुरझाए हुए चेहरे की रौनक लौट आई. अपने साहेब के मूह से अपनी प्रशंसा पाकर उसका रोम रोम महक उठा.

हालाँकि खीर उतनी स्वादिष्ट नही थी. अजित ने बस कांचन को खुश करने के लिए......बढ़कर तारीफ़ की थी. वो नही चाहता था कि कांचन के दिल को ज़रा भी ठेस पहुँचे. इच्छा ना होते हुए भी अजित सारा खीर चाट कर गया. कांचन बलिहारी हो जाने वाली नज़रों से उसे खीर खाते हुए देखती रही. जो मन अभी कुछ देर पहले तरह तरह की शंकाओं से पीड़ा ग्रस्त था अब वो खुशी के झूले में सवार आकाश की बुलंदियों में सैर कर रहा था. अब उसे किसी चीज़ की चिंता नही थी. माहौल फिर से सुहाना हो उठा था. पक्षियो का कलरव अब उसे अच्छा लगने लगा था. प्रकृति में बिखरा सौंदर्या अब उसकी आँखों को भी भाने लगा था.

" पीने के लिए पानी कहाँ है ?" अचानक अजित की आवाज़ से कांचन चौंकी . साथ ही हड़बड़ाई .

वह तो जल्दबाज़ी में पानी लाना ही भूल गयी थी. कांचन दायें बायें देखने लगी. उसका चेहरा फिर से उदास होता चला गया. अजित को समझते देर नही लगाई. वह तपाक से बोला - "कोई बात नही, अच्छा हुआ तुम पानी नही लाई. पानी पीने के बाद मेरे मूह से खीर का स्वाद चला जाता. जो कि मुझे अच्छा नही लगता." ये कहकर अजित एक गड्ढे में जमे बारिश के पानी से हाथ धोने लगा.

" साहेब , मैं आपके लिए कल फिर से खीर बनाकर लाऊंगी साथ में पानी भी ." कांचन अजित के पास जाते हुए बोली .

" नही .... बिल्कुल नही ." अजित खड़ा होकर रुमाल से अपना मूह साफ करते हुए बोला - " अब तुम्हे खीर लाने की ज़रूरत नही है . आज के बाद तुम मेरे लिए कोई भी

परेशानी नही उठाओगी . अब जो भी खिलाना पिलाना हो विवाह के बाद मेरे घर आकर खिलाना . अब तुम सिर्फ़ एक ही काम करो . मुझसे प्रेम करो . मेरे पास आओ . मेरे साथ बैठो और बातें करो ." अजित ये कहते हुए उसके चेहरे को दोनो हाथों से भर लेता है . और उसकी आँखों में झाँकने लगता है .

कांचन की निगाहें भी अजित पर ठहर जाती है. वह भी अपनी आँखों में शर्म लिए अपनी उठी गिरती पलकों के साथ अजित को देखने लगती है.

तभी ! दूर कहीं जोरदार बिजली कड़कती है और कांचन चिहुनकर अजित से लिपट जाती है. अजित भी उसे अपनी मजबूत बाहों में भीच लेता है.

मौसम एक बार फिर से करवट लेता है. पर इस बार भयंकर गर्जना के साथ. आकाश में बादल फिर से मंडराने लगते हैं. और कुछ ही पलों में फिर से बूँदा बाँदी शुरू हो जाती है.

अजित कांचन को लेकर तेज़ी से उस पत्थर की ओर बढ़ा, जो झरने के बिल्कुल निकट था और जिसमें बारिश से बचने के लिए खोहनुमा स्थान था. वहाँ तक पहुचने में उन्हे मुस्किल से दो मिनिट लगे. पर इतनी ही देर में बारिश की तेज़ बूंदे उन्हे भीगा चुकी थी. कांचन तो पहले ही भीगी हुई थी किंतु अब अजित भी लगभग भीग चुका था.

१६

कल्लू की आँखे नम थी. ऐसा बारिश की बूँदों की वजह से नही था. उसकी आँखें उस पीड़ा से गीली हुई थी जो इस वक़्त उसका दिल महसूस कर रहा था.

कल्लू काफ़ी देर से कांचन और अजित को छुप-छुप कर देख रहा था. वो वहाँ उस वक़्त से था जब कांचन अकेली खड़ी अजित का इंतेज़ार कर रही थी.

कांचन को अकेली बेचैनी से वहाँ देखकर कल्लू समझ गया था कि कांचन वहाँ किसी से मिलने आई है. पर किससे मिलने आई है यही जानने की उत्सुकता उसे वहाँ रोके रखी थी. वह छूपकर सब कुछ देखता रहा था. कांचन अकेली बारिश में नही भीगी थी. वह भी भीगा था. कांचन के साथ उसकी आँखों से भी आँसू बहे थे ये सोचकर कि जिसे वा बचपन से प्यार करता आया है. जिसे देखकर वह अब तक जीता आया है वो किसी और के लिए बेक़रार है. वह वहीं झाड़ियों के पिछे खड़ा बारिश में भीगते हुए कांचन का रोना उसका सिसकना, फिर अजित का आना उससे कांचन का लिपटना, उसे खीर खिलाना. और फिर गुफा के अंदर जाना. वो सब कुछ अपनी आँखों से देख चुका था. और ये सब देखकर उसका मंन टूटकर रोने को कर रहा था. लेकिन आज वो अकेला नही रोना चाह रहा था. आज वो एक कंधा ढूँढ रहा था जिसपर अपना सर रखकर जी भर-कर रो सके.

वह वहाँ से बोझील कदमो के साथ मुड़ा. उपर चढ़ा तो देखा सामने डिंपल खड़ी उसे घुरे जा रही है. उसकी आँखों में अनगिनत सवाल थे. उसे देखते ही कल्लू सकपका गया. फिर अपनी नज़रें नीची करके तेज़ी से अपने रास्ते बढ़ गया. डिंपल पलटकर उसे जाते हुए देखती रही.

पत्थर की शरण में आते ही अजित और कांचन अपने अपने कपड़ों से पानी झाड़ने लगे. दोनो बिल्कुल पास पास खड़े थे. सहसा अजित की नज़र कांचन की ओर उठी. उसपर नज़र पड़ते ही उसका शरीर हौले से काँप उठा. कांचन के गीले कपड़ों के अंदर से झाँकते उसके उरोज साफ दिखाई पड़ रहे थे.

कांचन का ध्यान उस ओर नही था, वो गर्दन को झुकाए अपने बालों से पानी झाड़ने में व्यस्त थी. बालों से पानी निकालने के लिए वो बार-बार अपने सर को झटक रही थी. उसके ऐसा करने से उसके उन्नत उरोज लहरा उठते थे. अजित विस्मित सा उसके सौंदर्य पर्वतों

को देखता रहा. उसके बदन में तेज़ सनसनाहट सी होने लगी. उसने कांचन पर से नज़रें हटाकर बारिश की गिरते बूँदों पर टीका दी. फिर वहीं पत्थर से टेक लगाकर ज़मीन पर बैठ गया.

कांचन भी थोड़ी देर में उसके पास आकर उससे सटकार बैठ गयी. कांचन काफ़ी ठंड का अनुभव कर रही थी. वह बार बार ठंड से झुरजुरी ले रही थी.

अजित ने उसे ध्यान से देखा वो इस वक़्त बहुत खूबसूरत लग रही थी. उसके चेहरे पर एक दो गीले बाल चिपके हुए थे जिससे उसके चेहरे की सुंदरता और भी बढ़ गयी थी. वह अपलक कांचन को देखता रहा.

" ऐसे क्या देख रहो हो साहेब ?" कांचन अजित को अपनी और देखते पाकर शरमाते हुए उससे पूछ ी .

" कांचन ." अजित उसके खूबसूरत चेहरे को निहारता हुआ बोल ा . - " क्या तुम्हे किसी ने बताया है कि तुम कितनी सुंदर ह ो ?"

कांचन अजित के इस सवाल से शरमा गयी. वैसे तो उसकी सुंदरता की प्रशंसा सभी ही करते थे. पर अजित के मूह से अपनी खूबसूरती की तारीफ़ सुनकर कांचन का दिल झूम उठा. वह अजित के मूह से और अधिक प्रशंसा सुनना चाहती थी. - "साहेब आप बहुत अच्छे हो, आप बहुत अच्छी बातें करते हो. आपके मूह से अपने बारे में सुनना मुझे बहुत अच्छा लगता है. दिल करता है आप बस बोलते जायें और मैं बैठी सुनती रहूं."

" तुम बहुत अच्छी हो कांचन ." अजित उसके चेहरे पर बिखरे बालों को हटाते हुए कह ा . फिर एक लंबी साँस छोड़ते हुए आगे बोला - " कभी कभी सोचता हूँ कांचन , अगर तुम मुझे ना मिलती तो मेरा क्या होत ा ? कहाँ जाता म ैं ? कैसा होता मेरा जीवन ? तुमने जो प्यार का नज़राना मुझे दिया ह ै , मैं उसे कभी नही भुला सकत ा . तुम्हारा उपकार है मुझपर .... कि तुमने मुझे अपने क़ाबिल समझ ा ."

" ये क्या कह रहे हो साहेब ? मैं इस लायक नही कि आप पर उपकार कर सक ूँ . धन्य तो मैं हुई जो मुझे आप जैसा साथी मिल ा ."

" तुम नही जानती कांचन , तुम्हे पाकर मैने क्या पाया है . मेरी सुनी ज़िंदगी तुम्हारे आने से आबाद हुई है कांचन . तुमसे पहले मेरी ज़िंदगी वीरान रेगिस्तान जैसी थी ." अजित भावुकता से भर कर बोला .

" साहेब ......!" कांचन अजित के कंधे पर अपना सर रखते हुए बोली - " मैं प्यार , मोहब्बत , नज़राना इनके बारे में ज़्यादा नही जानती , बस इतना जानती हूँ कि आप ही मेरी दुनिया हो , आपके बगैर मैं नही जी सकती . मुझसे कभी कोई भूल हो जाए तो जो जी चाहे सज़ा दे देना , पर कभी मुझसे रूठ मत जाना . नही तो मैं मर जाऊंगा
."

अजित ने कांचन को अपनी बाहों में समेट लिया. कांचन भी बिना लोक लाज के उसकी बाहों में सिमट गयी. अजित की बाहों में आकर कांचन खुद को हर तरह से सुरक्षित महसूस करती थी. उसके मजबूत बाहों के घेरे में आकर उसे किसी चीज़ का भय नही रहता था. वो हर भय से मुक्त हो जाया करती थी.

कांचन अपनी आँखों को बंद किए उसके गर्म बाहों में पड़ी रही. उन दोनो के लिए वो पल जैसे थम सा गया था. वे खामोश थे किंतु उनकी धड़कने आपस में बातें कर रही थी. दोनो आँखें बंद किए एक दूसरे से लिपटे पड़े रहे. उन्हे किसी चीज़ का होश नही था. ना उन्हे समय का ज्ञान था. ना ही मौसम का.

लगभग १ घंटा बीत चुका था. बारिश का शोर भी थम चुका था. अंधेरा उजाले को निगलता जा रहा था.

कुछ देर बाद अजित की आँख खुली. उसने बाहर नज़र दौड़ाया. मौसम साफ देखकर उसने धीरे से कांचन को पुकारा. - "कांचन उठो, देखो बाहर बारिश थम चुकी है. और सांझ भी ढल चुकी है. तुम घर नही जाओगी?"

अजित की आवाज़ से कांचन सचेत हुई. वा अजित से अलग होते हुए बाहर नज़र दौड़ाई. - "हाय राम ! कितनी देर हो गयी. बुआ तो मेरी जान ले लेगी." ये कहते हुए कांचन अपने खीर के डब्बे को हाथ में लेकर खड़ी हो गयी. फिर अजित को देखकर बोली. - "साहेब अब मुझे जाना होगा. नही तो सच में बाबा और बुआ बहुत परेशान होंगे."

" ठीक है . आओ चलें ." अजित बोला और कांचन का हाथ पकड़कर बाहर निकल गया .

सड़क तक आने के बाद कांचन अजित से विदा लेकर घर के रास्ते बढ़ गयी. अजित भी बाइक पर बैठकर हवेली की ओर बढ़ गया.

कल्लू तेज़ी से अपने घर की ओर बढ़ा चला जा रहा था. उसका दिल छल्नि छल्नी हो चुका था. वो इस वक़्त खुद को बहुत अकेला महसूस कर रहा था. इतना अकेलापन उसे आज से पहले कभी महसूस नही हुआ था. क्योंकि तब उसके साथ उसके अरमान होते थे, उसके सपने होते थे. किंतु आज वो सब कुछ उससे छिन गया था. अब ना तो उसके पास वो अरमान रहे थे और ना ही वो सपने.

वो ये बात शुरू से ही जानता था कि कांचन और उसका कोई मेल नही है. वो उसकी कभी नही हो सकती.....पर फिर भी उसके दिल में एक आस थी, जो उसके जीने का सहारा थी. वो कांचन को अपना मान कर तरह तरह की कल्पनायें किया करता था. रोज़ नये ख्वाब बुना करता था. अपने उन्ही ख्वाबों और कल्पनाओ के सहारे अपना दिन बीताया करता था. लेकिन अब कल्लू फिर से वैसी कल्पनायें नही कर सकता था. क्योंकि अब वो ये जान चुका था कि कांचन के दिल की धड़कनो को सुनने का अधिकार किसी और को है. उसके सुंदर शरीर को घेरे में लेने वाली मजबूत बाहें किसी और की हैं. उसके फूल से भी कोमल होंठों को चूम सके वे होंठ किसी और के हैं.

अपनी इन्ही विचारों में कराहता सिसकता कब वो अपने टूटे फुट झोपडे तक पहुँचा उसे पता ही ना चला. वह दरवाज़ा तेलकर अंदर दाखिल हुआ.

उसकी मा एक टूटी फूटी चारपाई पर लेटी हुई थी . घर में जहाँ तहाँ बारिश का पानी जमा पड़ा था. उसके खपरैल की छत से अभी भी बारिश का जमा पानी बूँद बूँद बनकर टपक रहा था.

कल्लू के आने की आहट से उसकी मा जाग कर चारपाई पर उठ बैठी. कल्लू भारी कदमो से चलता हुआ अपनी मा के पास पहुँचा. फिर वहीं मा के पैरों के पास गीली ज़मीन पर बैठते हुए अपना सर मा के घुटनो पर रख दिया. उसकी मा अपनी बूढ़ी और कमज़ोर उंगलियों को उसके बालों पर फेरने लगी.

जैसे दाई की नज़र से पेट नही छिपता वैसे ही मा के सामने उसके बच्चे की उदासी नही छिपती. कल्लू की मा एक नज़र में जान गयी कि आज कल्लू परेशान है. वैसे तो वो कल्लू की पीड़ा से परिचित थी. पर उसके दिल में कांचन के लिए जो तड़प थी उससे अंजान थी.

" क्या हुआ कल्लू ? तू इतना उदास क्यों है ?" उसके सर के गीले बालों को सहलाते हुए उसकी मा ने पुछा .

" मैं उदास नही हूँ मा . आज मैं बहुत थक गया हूँ . आज तुम्हारी गोदी में सर रखकर सोने का बड़ा मन कर रहा है . मुझे अपनी गोदी में लो ना मा ." कल्लू ने लाख चाहा पर उसकी आवाज़ में करुणा आ ही गयी .

उसकी मा समझ गयी. आज फिर किसी ने उसके जिगर के टुकड़े का दिल दुखाया है. आज फिर किसी ने इसकी ग़रीबी का मज़ाक उड़ाया है. वह झुककर उसके माथे को चूमते हुए बोली. - "मेरे लाल.....मैं जानती हूँ आज फिर किसी ने तुम्हे सताया है. आजा मेरी गोद में अपना सर रख ले."

कल्लू उठा और चारपाई पर लेट गया. फिर अपना सर अपने मा की गोद में रखकर अपनी आखों को बंद कर लिया. आँखें बंद करते ही कांचन और अजित का प्रेम भरा मिलाप उसके आगे नाच उठा.. उसके सीने में एक दर्द सा उठा और उसकी आँखें डबडबा आई. उसका गला ऐसे सुख गया जैसे महीनो से प्यासा हो. उसने लाख चाहा रोकले पर आँखों से आँसू छलक ही पड़े. उसकी आँखों से बहते हुए आँसू उसकी मा के दामन को भिगोने लगे.

बेटे की आँख से बहते आँसू देख उसकी ममता भी रो पड़ी. पर सिवाए उसे दिलासा देने के वह और कुछ भी ना कर सकी.

कुछ देर तक मा की गोद में सर रखे आँसू बहाने के बाद कल्लू के दिल का गुबार थोड़ा कम हुआ. वह उसी तरह अपनी मा के गोद में सर को रखे सो गया.

१७

दिन के ११ बजे होंगे. डिंपल अपनी जीप में बैठकर हवेली से निकली. उसकी दिशा सरपंच के खेत थे. उसके दिलो दिमाग़ पर कल से एक ही व्यक्ति छाया हुआ था. वो था कल्लू.

कल शाम को जब उसका सामना कल्लू से हुआ था तब उसकी आँखों में एक ऐसी दर्द की परछाई देखी थी जो रह रह कर उसे बेचैन किए जा रही थी. जब भी आँखें बंद करती उसे कल्लू का उदास चेहरा और पीड़ा भरी आँखें दिखाई देते.

कल से वो ना तो अजित के बारे में सोच पाई थी और ना ही कांचन के बारे में. वैसे भी मुनीम जी ने उसे उनके बारे में कोई भी निर्णय लेने से मना किया था. वो तो बस मुनीम जी के लौटने की राह देख रही थी. किंतु आज उसे कल्लू से मिलने की इच्छा हो रही थी. उसे कल्लू के दुख का कुछ कुछु अनुमान हो गया था. और अब उसके देख को अपने दुख से मिलान कर रही थी.

कुछ ही देर में उसकी जीप कच्चे उबड़ खाबड़ रास्तों से होते हुए उस जगह पहुँची जहाँ पर सरपंच के खेत थे.

कल्लू उसे दूर से ही दिखाई दे गया. वो नंगे बदन चिलचिलाती धूप में गीले खेत की मिट्टी काटने में व्यस्त था. आस पास के खेतों में एक भी आदमी दिखाई नही दे रहा था. सरपंच जी कल्लू से कोई ना कोई काम हमेशा लेते रहते थे. कल्लू भी कभी मना नही करता था. उन्ही के खेतों में काम करके उसके घर का चूल्हा जलता था. सरपंच जी से बहुत कम पैसे मिलते थे. पर उसके अलावा कल्लू के पास और कोई चारा भी नही था. कोई दूसरा उसे काम दे नही सकता था. गांव के दूसरे लोग अपने खेतों में खुद ही काम किया करते थे. ले देकर एक मुखिया जी ही थे जिनके पास कुछ करने को मिल जाता था. कोई दूसरा काम वो कर नही सकता था, क्योंकि वो नीर मूर्ख अज्ञानि था. मा को छोड़ कर गांव से बाहर काम पर जाने की भी उसकी हिम्मत नही होती थी. यही कारण था कि दिन दोपेहर रात....जब कभी मुखिया जी किसी काम को कहते वो बिना कोई सवाल किए उस काम में लग जाता. इस वक़्त भी वो उन्ही के आदेश से काम पर लगा हुआ था. वह पसीने से तार-बतर था. पसीने से भीगा उसका काला बदन सूर्य की रोशनी से चमक रहा था.

डिंपल जीप से उतरी और खेत की आधे टेढ़े मेढ़ो पर चलते हुए कल्लू तक पहुँची. कल्लू अपने काम में ऐसे खोया हुआ था कि उसे डिंपल के आने का पता तक ना चला.

डिंपल उसे फावड़ा चलाते हुए देखती रही. कल्लू के हाथ जब फावड़ा लेकर उपर उठाते तो उसके बदन की सारी नशे फेडक उठती.भुजायें फूलकर चौड़ी हो जाती. उसे बचपन से ही मेहनत करते हुए लोगों को देखना अच्छा लगता था. लेकिन इस वक़्त उसे बेहद आश्चर्य हो रहा था कि उसके आए हुए १० मिनिट हो चुके थे पर कल्लू ने पलटकर उसे देखा तक नही था.

कल्लू पसीने से लथ-पथ फावड़ा चलाए जा रहा था. वह अपने हाथों को फावड़ा सहित उपर तक उठाता और ज़ोर से मिट्टी पर दे मारता. वह मिट्टी पर फावड़ा ऐसे मार रहा था जैसे उस मिट्टी से उसका जनम का बैर हो.

कुछ देर डिंपल उसे फावड़ा चलाते हुए देखती रही फिर धीरे से उसे आवाज़ दी. - "कैसे हो कल्लू?"

डिंपल की आवाज़ से कल्लू चौंककर पिछे मुड़ा. डिंपल पर नज़र पड़ते ही उसकी आँखों में आश्चर्य समाया. वह काँपते स्वर में बोला - "आप?"

डिंपल की नज़र उसके चेहरे पर जम गयी. वह कल्लू को ध्यान से देखने लगी. उसकी आँखें सूजी हुई और लाल थी. ऐसा लगता था जैसे वो रात भर सोया नही था, या देर रात तक रोता रहा था. उसकी आँखों में अभी भी वही पीड़ा व्याप्त थी. जो कल शाम को थी. डिंपल ने पुछा - "तुम इतनी धूप में काम क्यों कर रहे थे?"

डिंपल की बात पर कल्लू धीरे से मुस्कुराया. उसकी मुस्कुराहट में व्यंग था. वह खुद की लाचारी पर व्यंग से मुस्कुराया था. - "ग़रीब मजदूर, धूप और बारिश की परवाह करने लगे तो उसके घर का चूल्हा कभी नही जलेगा डिंपल जी." उसकी आवाज़ में कंपन था. वह आगे बोला - "आप बताइए? आप यहाँ किस लिए आई हैं?"

" मैं तुम्ही से मिलने आई हूँ, कुछ बातें करनी थी तुमसे." डिंपल ने उसे उत्तर दिया - " क्या तुम मेरे साथ उस पेड़ के नीचे बैठ सकते हो? यहाँ बहुत धूप है, मैं ज़्यादा देर यहाँ खड़ी नही रह सकती."

" जी चलिए ." कल्लू बोला और फावड़ा वहीं छोड़कर मे ढ पर रखा तथा गम्छा हाथ में उठाए पेड़ की छाँव तले आया . फिर डिंपल से पुछा -" कहिए क्या कहना चाहती हैं आप ?"

" कल जब मैं तुम्हे झरने के किनारे देखी थी तब तुम बहुत उदास से थे . तुम्हारी आँखों में मैने एक गहरी पीड़ा देखी थी . लेकिन मैं उसका कारण नही जान सकी . मुझे बताओ कल तुम किस लिए उदास थे ?" डिंपल कल्लू के चेहरे पर अपनी नज़रें जमाए रखी .

" क्या करेंगी आप ये जानकार ....?" कल्लू एक फीकी मुस्कुराहट छोड़ता हुआ बोला - " दुख और उदासी तो ग़रीबों का गहना है डिंपल जी . इनके बिना तो वो विधवाओ जैसा लगता है ."

" कल्लू ..... मैं तुम्हारी पीड़ा समझती हूँ . क्योंकि आज कल मैं भी उसी पीड़ा को भोग रही हूँ ." डिंपल कल्लू की बातों से भावुक होकर बोली - " तुम कांचन से प्यार करते हो ना ?"

कल्लू चौंका ! उसने आश्चर्य से डिंपल को देखा. उसे डिंपल के चेहरे पर घनी उदासी के बादल दिखाई दिए. उसकी भी आँखों में वही पीड़ा का अनुभव किया. जिस पीड़ा से वह पूरी रात कराहता रहा था.

" हां कल्लू , मैं अजित से प्रेम करती हूँ . उससे शादी करना चाहती हूँ . पर वो मुझसे नही कांचन से प्यार करता है ." डिंपल कल्लू की उलझन दूर करते हुए बोली - " मैं कल तुम्हे देखते ही जान गयी थी कि तुम कांचन से प्रेम करते हो . लेकिन ये बात मैं तुम्हारे मूह से सुनना चाहती थी . बोलो प्रेम करते हो ना कांचन से ?"

कांचन की याद से उसकी आँखें डबडबा आई. वैसे तो वो सुबह से ही कांचन के ख्यालो में डूबा हुआ था. पर अब डिंपल का स्नेह पाकर उसकी पीड़ा बाहर छलक आई थी. उसके कुछ बोलने से पहले ही उसकी आँखों से आँसू की दो मोटी-मोटी बूंदे निकल कर उसके गालों में फैल गयी. वह बेबसी में अपने होठ चबाने लगा. उसने डिंपल को देखा. डिंपल उसे ही देख रही थी. कल्लू डिंपल से कुछ कहना चाहा पर उसके गले ना उसका साथ नही दिया.

" कुछ ना कहो कल्लू , मैं सब समझ गयी . तुम्हारी आँख से बहते आँसुओ ने मुझे वो सब कह दिया जो मैं जानना चाहती थी ." कल्लू की पीड़ा की आँच से डिंपल का नारी हृदय पिघल गया . कल्लू के दुखो का अनुभव करके उसकी आँखे भी बरस पड़ी .

" डिंपल जी . मैं बहुत अभागा इंसान हूँ , बचपन से मुझे सिवाए दुख के कुछ भी ना मिला . जो भी मुझसे मिला सबने मेरा तिरस्कार किया किसी ने मुझे गले से नही लगाया ." कल्लू भर्राये स्वर में बोला - " आज मैं सिर्फ़ इसलिए नही रो रहा हूँ कि मैं बचपन से जिसे चाहता आया हूँ वो किसी और को चाहती है . बल्कि आज मेरी आँखें इसलिए रो रही है कि आज किसी ने मुझसे पुछा कि मैं दुखी क्यों हूँ . किसी ने ये जानने का प्रयास किया कि मैं क्या चाहता हूँ . डिंपल जी ...... जब आपसे कोई कड़वी बात कहता होगा तब आप बहुत दुखी होती होंगी , तब आपका मन रोने को करता होगा . लेकिन मैं उस वक़्त दुखी होता हूँ जब कोई मुझे सहानुभूति दिखाता है . मुझसे ढंग से प्यार से बातें करता है . क्योंकि मुझे इसकी आदत नही है डिंपल जी . मैं बचपन से लोगों की गालियाँ फटकार - दुतकार खा - खाकर बड़ा हुआ हूँ . किसी की सहानुभूति मुझे अच्छी नही लगती . लोगों की प्यार भरी बातें मुझे रुला देती है . इसलिए मैं आपसे हाथ जोड़कर निवेदन करता हूँ कि मुझसे ऐसे बोल ना बोलिए जो मेरी पीड़ा को बढ़ा दे . कांचन को चाहना मेरी भूल थी . मैं अब उसे भूलना चाहता हूँ . आप भी भूल जाइए की आपने क्या देखा . क्या नही देखा . मुझ ग़रीब पर रहम कीजिए और अपनी हमदर्दी से मुझे दूर रखिए . मैं सह नही सकूँगा .... मर जाऊंगा मैं ." ये कहकर कल्लू फफक पड़ा .

एक खंजर सा डिंपल के सीने में धस्ता चला गया. वह पीड़ा से कराह उठी. उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उसके सीने में खंजर घुसाकर उसके दिल को कुरेद रहा रहा हो. "ये क्या हो रहा है मुझे." वह बड़बड़ाई - "ये कैसी पीड़ा है जो मेरी छाती में उठ रही है?. क्या ये कल्लू की पीड़ा है या कुछ और है?" डिंपल छटपटाई. वह अपनी छाती को मसलने लगी. उसे अपने अंदर कुछ बदलता सा महसूस हुआ. वो नही जान पाई उसे क्या हो रहा है पर वो तड़प रही थी.

कल्लू की सिसकियाँ थमी तो उसने डिंपल को देखा. डिंपल के चेहरे पर नज़र पड़ते ही उसकी आँखों में आश्चर्य उभरा. डिंपल की आँखों में आँसू थे. - "डिंपल जी आप......आप क्यो रो रही हैं?"

" बस ऐसे ही रोने का मन हुआ ." डिंपल अपने आँसुओ को पोछते हुए बोली - " लेकिन आज के बाद तुम कभी खुद को अकेला मत समझना . आज के बाद मैं तुमसे रोज़ मिलूंगी और ऐसे ही रुलाने वाली बातें करूँगी . तुम्हे बाद में जितना रोना हो रो लेना ." डिंपल बोली और पलटकर जाने लगी .

कल्लू स्तब्ध सा खड़ा डिंपल को जाते हुए देखता रहा. अचानक डिंपल मूडी. फिर वो तेज़ी से चलते हुए कल्लू तक आई और बोली. - "मुझे किस करो."

" जी ....!" कल्लू हकलाया .

" किस का मतलब नही समझते ?" डिंपल ने पलकें झपकई . - " मैं चुम्मि की बात कर रही हूँ . चुमो मुझे ."

कल्लू का सर चकराया. उसके समझ में नही आ रहा था कि अच्छी भली डिंपल को क्या हो गया? वह काँपते स्वर में बोला - "डिंपल जी, क्यों मुझ ग़रीब का मज़ाक बना रही हैं आप?"

" देखो मुझे मज़ाक पसंद नही . मैं जो कुछ कह रही हूँ बहुत सीरियस्ली कह रही हूँ ." डिंपल ने गंभीरता से कहा .

कल्लू मूर्खों की तरह डिंपल को देख रहा था. उके समझ में नही आ रहा था कि डिंपल उसपर इतनी दया क्यों दिखा रही है? वह हैरान परेशान खड़ा रहा.

" देखो मैं तुम पर कोई तरस नही खा रही हूँ , और ना ही ये समझना कि मैं तुमसे प्रेम करने लगी हूँ . बस अभी मेरा मन कर रहा है तुम्हे किस करने को . इसलिए कह रही हूँ . किस मी ." डिंपल ने आँखें दिखाई .

कल्लू अब भी असमंजस में पड़ा हुआ था. डिंपल आगे बढ़ी और उसकी गर्दन को पकड़कर अपने होंठ उसके होंठों से सटा दिए.

एक लंबा चुंबन उसके होंठों पर धरने के बाद उससे अलग हुई. फिर मुस्कुराते हुए बोली - "अब कैसा महसूस कर रहे हो?"

कल्लू कुछ ना बोला. वो पागलों की तरह डिंपल को देख रहा था.

डिंपल एक मुस्कुराहट छोड़ती हुई वहाँ से चल दी.

डिंपल को गये हुए १० मिनिट बीत चुके थे पर कल्लू अभी भी उसी स्थान पर खड़ा गहरी सोच में डूबा हुआ था. उसके मस्तिष्क में कुछ देर पहले की घटना का चलचित्र चल रहा था. उसे अब भी अपनी आँखों देखी पर विश्वास नही हो रहा था. उसे लग रहा था जैसे कुछ देर पहले जो कुछ यहाँ हुआ वो एक सपना था. डिंपल का यहाँ आना. उसके साथ अप्नत्व से भरी बातें करना, और फिर अमीरी ग़रीबी, और गोरे काले की भेद को मिटाकर उसके होंठों को चूमना. ये सब उसे सपना सा जान पड़ रहा था.

हां सच में उसके लिए ये सपना ही था. जो आदमी बचपन से लोगों की स्नेह और प्यार के लिए तरसता रहा हो. जिसे लोगों ने सदा जग हसाई का साधन समझा हो. बार- बार जिसका तिरस्कार किया गया हो. जिसके रंग रूप का कदम कदम पर मज़ाक बनाया गया हो. वो भला इसे हक़ीक़त मान भी कैसे सकता था. उसके लिए तो ये सपना ही हो सकता था.

कल्लू ये सोचकर हैरान था कि आज तक गांव में कांचन को छोड़ कर किसी दूसरी लड़की ने उसके साथ ढंग से बात तक नही की थी. उस जैसे अभागे इंसान पर आज डिंपल ने इतना प्यार लूटाया क्यों? उसके जिस काले और भद्दे सूरत को देखकर गांव की सभी लड़कियाँ मूह फेर लिया करती थी आज डिंपल ने उसे चूमा क्यों?

कल्लू के पास इसका उत्तर नही था. पर इस विचार ने उसकी आँखों में फिर से आँसू भर दिए थे कि वो हर किसी के लिए नफ़रत का पात्र नही है. वो भी इंसान है, उसे भी अधिकार है की वो किसी को चाहे, किसी को प्यार करे, किसी के सपने देखे. हर वो खुशी हाशील करे जो दूसरे करते हैं.

कल्लू गीली आँखों से उसी रास्ते की ओर देख रहा था जिस और डिंपल गयी थी. आज उसका मन डिंपल के प्रति श्रधा भाव से भर गया था. उसके लिए वो किसी देवी से कम नही थी. जिसके अंदर ना तो दौलत की अकड़ थी और ना ही खूबसूरती का घमंड.

कुछ देर तक यूँही रास्ता निहारने के बाद कल्लू. फिर से खेत पर पसीना बहाने चला गया.

डिंपल जब से कल्लू से मिलकर आई थी तब से उसकी के बारे में सोच रही थी. उसकी ज़िंदगी के बारे में जानकार उसे बड़ा दुख हुआ था. वह सोच रही थी - 'कैसे कोई इंसान इतना दुख झेलकर भी ज़िंदा रह सकता है. बचपन से ही वो अकेलेपन का शिकार रहा है.

अकेलापन का दर्द क्या होता है ये मैं खूब जानती हूँ. मैं तो सिर्फ़ मम्मी पापा से दूर होकर उदास रहती थी. जीवन नीरस सा लगता था. पर कल्लू तो सारी ज़िंदगी अकेला जीया है. कोई साथी नही कोई दोस्त नही. कैसा दुखदायी रहा होगा उसका जीवन? लोग उसे हीन भावना से क्यों देखते हैं? बदसूरत है तो क्या हुआ? क्या वो इंसान नही है? मैं दूसरों की तरह कभी उसका दिल नही दिखाऊंगी. लेकिन आज मुझे हो क्या गया था? मैं उसकी बातें सुनकर अज़ीब सा महसूस करने लगी थी. ऐसा लगता था कोई मेरे शरीर में घुसकर मेरे मन के तारों को छेड़ रहा हो. जाने मुझे क्या हो गया था. वो कैसी पीड़ा थी जो मेरे दिल में उठी थी. वो किस तरह की भावना थी जिसके बहाव में बहकर मैं उसके होंठों को किस कर बैठी थी. मुझे ये भी ध्यान नही रहा कि वो कितना गंदा और मैला कुचेला है.

" बीबी जी " अचानक दरवाज़े पर छोटू की आवाज़ गूँजी .

डिंपल ने चौंक कर दरवाज़े की तरफ देखा. वहाँ पर उसे छोटू खड़ा दिखाई दिया. - "क्या है छोटू?" डिंपल ने पुछा.

" बीबीजी .... खाना यहीं लगा दूं या बैठक में आएँगी ." छोटू धीमे स्वर में पुछा .

" यहीं ले आओ ." डिंपल छोटू से बोली और उठकर बिस्तर पर बैठ गयी .

थोड़ी देर में छोटू उसका लंच रखकर चला गया. उसे बहुत जोरों की भूख लगी थी. उसने कल्लू से संबंधित सारी बातों को दिमाग़ से झटका और फिर खाने में व्यस्त हो गयी.

१८

शांता के कदम वंदना के घर की तरफ उठते जा रहे थे. आज शांता का मन उससे कुछ बातें करने का हो रहा था. कुछ ही देर में उसके कदम शांता के दरवाजे पर जाकर रुके. अमूमन गांव के लोग घर के दरवाज़े खुले ही रखते हैं पर वंदना अपने घर का दरवाज़ा हमेशा बंद ही रखती थी.

शांता ने दरवाज़े की कुण्डी बजाई. थोड़ी देर की प्रतीक्षा के बाद दरवाज़ा खुला. दरवाज़ा वंदना ने ही खोला था.

" आओ बहिन , आज हमारे घर का रास्ता कैसे नाप ली .?" वंदना उसे देखते ही मुस्कुराकर बोली .

" अकेली घर पर जी नही लग रहा था भाभी . सोची थोडा तुमसे मिल आउ . अंदर आने की आज्ञा हो तो पावं धरू ?" शांता ने दरवाज़े से खड़े खड़े कहा .

" अरे कैसी बात कर रही हो बहिन ? अंदर आओ ...... तुम्हे आज्ञा की क्या ज़रूरत है ? ये तो तुम्हारा ही घर है ." वंदना ये कहते हुए शांता का हाथ पकड़ कर अंदर ले गयी .

शांता उसके साथ चलते हुए बैठक तक आई फिर एक और पड़े सोफे पर बैठ गयी. इस घर में वो पहले भी आ चुकी थी. पर उस वक़्त जब वंदना दुल्हन बनकर इस घर में आई थी. उसके बाद से उसका इस घर में दोबारा आना नही हुआ.

मुखिया जी ने घर में साजो सजावट के सारे सामान रख छोड़े थे. किसी चीज़ की कमी नही थी इस घर में. शांता घर की वैभवता को कुछ देर निहारती रही.

" क्या लोगि बहिन ?" वंदना ने उसे टोका .

शांता मुस्कुराकर उसकी ओर देखते हुए बोली - "कुछ नही भाभी. व्यर्थ में परेशानी ना उठाओ. मैं तो बस तुमसे मिलने आई थी."

" तो फिर अपना कष्ट बताओ बहिन . उसका भी इलाज़ करा दूँगी ." वंदना रहस्यमयी मुस्कुराहट छोड़ते हुए बोली .

" मुझे कोई कष्ट नही भाभी . तुम लोगों के होते मुझे कोई कष्ट हो सकता है भला ." शांता फीकी मुस्कान लिए बोली .

" ना बताना हो तो ना सही ." वंदना मूह बनाकर बोली - " पर मैं तुम्हे भी जानती हूँ और तुम्हारे कष्ट को भी ."

शांता कुछ ना बोली. सिर्फ़ एक लंबी साँस लेकर रह गयी. कष्ट तो उसे सच में था. वो यूँही मिलने नही आई थी. उसे उसका अकेलापन वंदना के पास खींच लाया था. वो किसी का सान्निध्य चाहती थी. चाहें वो वंदना हो या बिरजू. लेकिन कहते हुए डरती थी. वो बेशर्मी के साथ अपनी पीड़ा वंदना के सामने नही रख सकती थी. उसमे इतनी निर्लजता नही थी.

" क्या सोचने लगी बहिन ?" वंदना ने उसे खोया हुआ देख पूछा - " कुछ बोलो बतियाओ . जो दिल में लेकर आई हो कह दो बहिन . शायद मैं कोई मदद कर सकु " वंदना उसके जाँघो पर हाथ धरते हुए बोली .

शांता सोचती रही !

" किसी और का साथ चाहिए तो वो भी कर सकती हूँ . वो भी अभी ." वंदना उसके जांघों पर हाथ फेरते हुए बोली .

शांता ने आश्चर्य से उसे देखा. वंदना के होंठ शरारत से मुस्कुरा रहे थे.

वंदना की बातें और उसकी हरकतें दोनो ही शांता के शरीर को गरमाने में लगे थे.

" सच कह रही हूँ . बिरजू यहीं है . अंदर कमरे में ." वंदना उसके कान में फुस्फुसाइ . शांता के पूरे शरीर में चिंगारी दौड़ गयी . इस एहसास से कि बिरजू अंदर कमरे में है , ये सोचकर की उसके आने से पहले वंदना बिरजू के साथ बंद कमरे संभोग कर रही थी ...... उसकी देह सुलग उठी . साँसे गर्म होकर तेज़ तेज़ चलने

लगी . शरीर भट्टी की तरह तपने लगा और उसके कानो से गर्म धुआँ सा निकलने लगा .

" चल ....." वंदना उसकी मनोदशा का अनुमान कर उसका हाथ पकड़कर उठाते हुई बोली - " किसी को कुछ पता नही चलेगा की अंदर क्या हो रहा है . तू जब तक चाहे अपने अरमान पूरे करती रह . मैं बाहर पहरा देती हूँ ."

" नही भाभी .... मैं ये नही कर सकूँगी ." शांता ने घबराकर अपनी कलाई छुड़ानी चाही पर असफल रही . उसका दिल ज़ोरों से धड़क रहा था . शांता लाचारी से वंदना को देखते हुए बोली - " मैं सच कहती हूँ मुझसे ये नही होगा . मैं लाख दुखी सही पर अपने माथे पर कुलटा होने का टीका नही लगा सकती ."

शांता कह तो गयी. पर उसकी बातों में वो स्थिरता नही थी जो एक पतिव्रता नारी में होती है. उसका शरीर पुरुष संसर्ग के लिए तड़प रहा था. वह चाह रही थी कि अभी दौड़कर अंदर जाए और बिरजू से अपने तड़पते मन की प्यास बुझा लें. भूल जाए कि लोग क्या कहेंगे क्या सोचेंगे. बस आज वो किसी की हो जाए. जो आग कुछ दिनो से उसके शरीर को धीरे धीरे जला रही थी, उस आग को बिरजू के शरीर से लिपटकर बुझा ले.

वंदना को शांता की मनोदशा का पूरा ज्ञान हो गया था. वो ये समझ चुकी थी शांता का इनकार दिखावा है. उसने शांता को और समझाना उचित नही जाना. वह उसे खिचते हुए कमरे के अंदर ले गयी.

अंदर बिरजू बिस्तर पर लेटा हुआ था. शांता को अंदर आते देख उसकी कामुक आँखें खुशी से चमक उठी. वहीं शांता का दिल जोरों से धड़क उठा. उसका पूरा शरीर घबराहट और उत्तेजना से बुरी तरह काँप रहा था.

" शांता अब लोक लाज छोड़ दे . अब तो मिलन की बेला है . देख कैसे तैयार बैठा है तेरा रसिया ." वंदना बिरजू को देख एक कुटील मुस्कुराहट होंठों पर लाकर बोली . - " बिरजू ख्याल रखना इसका . बहुत दुखी है बेचारी . इसका सारा दुख आज दूर कर देना . कोई शिकायत नही मिलनी चाहिए ."

वंदना ये कहकर बाहर चली गयी. जाते जाते दरवाज़ा भिड़ा गयी.

बिरजू शांता को देखकर नशे से भर उठा. वो किसी शराबी की तरह झूम कर उठा और शांता की तरफ बढ़ा.

बिरजू को अपनी ओर बढ़ते देख शांता का दिल जोरों से धड़का. पावं थर-थर काँपने लगे. उसे ऐसा महसूस हुआ जैसे उसके टाँगों की शक्ति ख़त्म हो गयी हो और वो अभी लहराकार गिर पड़ेगी.

बिरजू आगे बढ़ा और शांता को कमर से थाम लिया. फिर उसे एक झटके में खुद से सटा लिया.. शांता के लिए अब पिछे हटना संभव नही रह गया था. उसकी युवा भावनाएँ उसके मस्तिष्क का साथ छोड़ चुकी थी. शांता अपने बदन को बिरजू के बदन से मिलाती चली गयी.

बिरजू ने शांता को अपने मजबूत बाहों से उठाया और बिस्तर पर गिरा दिया. फिर स्वयं पलंग पर चढ़कर शांता के उपर झुकता चला गया. अगले ही पल शांता के होंठ उसके होंठों की गिरफ़्त में थे. शांता की गर्म साँसे बिरजू के चेहरे से टकरा रही थी. और बिरजू मुनीमवार उसके होंठों को चूस्ता जा रहा था. साथ ही अपने हाथों से उसके कमर और जाँघो को सहला रहा था.

शांता लगभग होश खो चुकी थी. यही दशा बिरजू की भी थी. वह शांता के होंठों को चूस्ते हुए उसकी गर्दन तक आया और अपने जलते हुए होंठों से उसकी गर्दन को चूमने लगा.

" क्या जिस्म पाया है तुमने कांचन , तुम नही जानती तुम्हारे इस शरीर ने मेरी काई रातों की नींद उड़ा रखी थी . आज मैं सारी थकान तुमपर उतारूँगा ." ये कहते हुए बिरजू उसके ब्लाउस के बटन्स खोलने लगा .

शांता के दिमाग़ को एक तेज़ झटका लगा. उसने मदहोशी में भी जो शब्द सुने थे वो अब भी उसके कानो में गूँज रहे थे. बिरजू ने उसे कांचन कहकर संबोधित किया था.

जब इंसान किसी के बारे में हद से ज़्यादा सोचने लगता है तब वो किसी दूसरे के नाम की जगह में उसका नाम ले लेता है. बिरजू से भी यही भूल हो गयी थी. उसने शांता के नाम की जगह कांचन का नाम ले लिया था. जिसे सुनकर शांता के होश उड़ गये थे.

किंतु बिरजू को शायद अपनी भूल का एहसास ना था. उसकी उंगलिया तेज़ी से शांता के ब्लाउस के बटन्स खोलते जा रहे थे. तभी शांता ने अपने हाथो से एक ज़ोर का धक्का बिरजू को दिया. बिरजू संभाल ना सका और बिस्तर से नीचे जा गिरा. शांता फुर्ती के साथ खड़ी हुई और चिंगारी बरसाती आँखों से फर्श पर फैले बिरजू को घुरने लगी.

बिरजू हक्का-बक्का उसे ही देख रहा था. शांता की आग उगलती आँखें देखकर उसके पसीने छूट पड़े थे. किंतु अचानक से हुए इस तब्दीली का कारण अभी तक उसके समझ में नही आया था. वह लड़खड़ाते शब्दों में बोला - "क....क्या हुआ शांता?"

" क्या चल रहा है तेरे दिमाग़ में ?" शांता ने गुस्से से बिरजू को घूरा . - " कांचन का नाम तेरे होंठों पर आया कैसे ? कहीं तू कांचन के बारे में कुछ ग़लत तो नही सोच रहा है ?"

" कैसी बातें कर रही हो शांता ?" बिरजू ने घबराहट में अपनी थूक निगली . - " मैं भला कांचन के बारे ग़लत क्यों सोचूँगा . भूल से कांचन का नाम मेरी जीभ पर आ गया होगा . पर सच कहता हूँ , मेरे मन में उसके लिए कोई बुरे विचार नही ."

" यही तेरे लिए उचित रहेगा बिरजू . कांचन के बारे में सोचने की भूल भी मत करना ." शांता ने धमकी भरे स्वर में से कहा - " अब मैं जा रही हूँ .. पर जाने से पहले आख़िरी बार तुम्हे सचेत किए देती हूँ . जो तूने कांचन को छुने की भी कोशिश की . तो फिर तू बहुत बुरी मौत मरेगा ."

शांता ये कहते हुए दरवाज़े से बाहर निकल गयी. हॉल में वंदना ने उसे टोका. पर शांता ने कोई जवाब नही दिया और सीधा अपने घर को बढ़ गयी.

वह रास्ते भर इसी बात को सोचती जा रही थी. उसका मन ये मानने को तैयार ही नही था कि बिरजू के मूह से कांचन का नाम भूलवश निकला होगा. - 'ज़रूर उसके मन में कांचन के प्रति बुरे विचार होंगे, तभी उसके मन की बात उसके होंठों पर आ गयी.' शांता मन ही मन बोली - 'अब मुझे सतर्क रहना होगा. कहीं ऐसा ना हो वो पापी कांचन के साथ कुछ बुरा कर जाए. कांचन मेरी बेटी नही है तो क्या हुआ? उसे मैने चिंटू से ज़्यादा प्यार किया है. मेरे होते कोई उसपर बुरी नज़र रखे, उससे पहले मैं उसकी आँखें निकाल लूँगी.'

शांता इन्ही विचारों में चलते हुए अपनी चौखट तक पहुँची. फिर बाहर का दरवाज़ा थेल्कर आँगन में दाखिल हुई. पर जैसे ही वो आँगन में आई उसकी नज़र फटी की फटी रह गयी. उसकी आँखें उसे जो दिखा रही थी उसपर उसे विश्वास नही हो रहा था. शांता फटी - फटी आँखों से अपने पति हरिया को देख रही थी. जो इस वक़्त बरामदे में बिछि चारपाई पर लेटा हुआ था. उसकी नज़रें उपर छप्पर की ओर उठी हुई थी. शांता के आने की आहट से उसका ध्यान टूटा. उसने पलटकर शांता की और देखा. शांता पर नज़र पड़ते ही वह चारपाई पर उठ बैठा.

शांता काँपते पैरों से उसके पास जाकर खड़ी हो गयी. वह अब भी विस्मित नज़रों से अपनी पति को देख रही थी. उसे अब भी जैसे अपनी आँखों देखी पर यकीन नही हुआ था.

हरिया उसे देखकर मुस्कुराया. तत्पश्चात बोला - "कैसी हो शांता? कहाँ चली गयी थी? मैं कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ. पूरा घर खाली पड़ा है, धनपाल दद्दा कहाँ हैं. कांचन और चिंटू भी दिखाई नही दे रहे हैं. कुछ बोलो भी इस तरह चुप क्यों खड़ी हो?" हरिया ने एक साथ कई सवाल पूछ डाले.

शांता से कुछ कहते ना बना, उसे तो ये भी समझ में नही आ रहा था कि ऐसी घड़ी में वो क्रोध करे या खुशी जताए.

" क्या मुझे देखकर तुम्हे खुशी नही हुई जो इस तरह चुप हो गयी हो ?" हरिया चारपाई से खड़ा होते हुए बोला - " मैं जानता हूँ मैने तुम्हे बहुत कष्ट दिया है . मेरा पाप क्षमा के लायक नही , फिर भी कर सको तो मुझे क्षमा कर दो ." हरिया ने शांता के आगे अपने हाथ जोड़ दिए .

" ऐसे ना कहिए ." शांता अपने पति के उठे हुए हाथों को पकड़ते हुए बोली - " ईश्वर की कृपा से आप लौट आएँ हैं , यही मेरे लिए बहुत है . अब मेरे आगे हाथ जोड़कर मुझे अपराधिनी मत बनाइए ." शांता ये कहते हुए सिसक पड़ी .

ऐसा नही था कि शांता अपने पति से नाराज़ नही थी. उसने ८ साल तन्हाई में गुज़ारे थे, एक-एक दिन सौ-सौ बार मरी और जीई थी. लेकिन कुछ देर पहले बिरजू के बहकावे में आकर उसने जो ग़लती की थी उसके अपराध बोध से वह दबी हुई थी. वो अपने पति की नींदा कर भी कैसे सकती थी जबकि वह खुद दोषी थी.

उसका दिल वर्षों से पति से विरह की आग में जल रहा था. वह आयेज बढ़ी और हरिया के चरनो में झुक गयी. हरिया ने उसे उठाया और अपने सीने से लगा लिया.

तभी खुले दरवाज़े से कांचन अंदर आई, उसकी आहट से दोनो अलग हुए.

" इसे पहचाना आपने ?" शांता मुस्कुराकर कांचन की ओर इशारा करते हुए हरिया से बोली - " ये कांचन है ."

" क्या ...? कितनी बड़ी हो गयी है ये तो ." हरिया ने कांचन को देखकर शांता से कहा .

कांचन पास आकर आश्चर्य से हरिया को देखने लगी.

" कांचन तुमने पहचाना इन्हे ? ये तुम्हारे फूफा हैं ." शांता कांचन को देखकर बोली .

कांचन ने हरिया को ध्यान से देखा. वह जब १२ साल की थी तब उसने अंतिम बार हरिया को देखा था. तब हरिया ३० साल का था. इतने वर्षों बाद भी उसके अंदर कुछ खास परिवर्तन नही आया था. वही रंग रूप, वही कद-काठी. सिर्फ़ सर के बाल कहीं - कहीं से सफेद हो गये थे.

कांचन आगे बढ़ी और हरिया के पावं छु लिए. हरिया ने उसे आशीर्वाद दिया. फिर चिंटू के बारे में पुछा. वो अभी तक कॉलेज से नही लौटा था.

" शांता तुमने तो मुझे माफ़ कर दिया , अब धनपाल दद्दा आए मिलकर माफी माँग लूँ तो मेरा कार्य पूरा हो जाएगा ." हरिया ने शांता से कहा .

" वो इस वक़्त भैया खेतों में होंगे . शाम तक लौट आएँगे ." शांता ने उसे बताया .

" मैं शाम तक का इंतेज़ार नही कर सकता . मैं अभी उनके पास जाकर उनके चरण च्छुकर आता हूँ ." हरिया बोला और घर से बाहर निकल गया .

१९

अजित कांचन से मिलने के बाद जब हवेली पहुँचा तो उसकी खुशी की सीमा ना रही. हाल में कदम रखते ही उसकी नज़र अपनी मा पर पड़ी. जो इस वक़्त सोफे पर बैठी ठाकुर साहब से बातें कर रही थी. पास ही दूसरे सोफे पर मुनीम जी और डिंपल भी बैठी थी.

अजित पर नज़र पड़ते ही वो भी खुशी से उठ खड़ी हुई.

" मा ..." अजित ये कहते हुए आगे बढ़ा और अपनी मा से लिपट गया . - " कैसी हो मा ? आपको आने में कोई तकलीफ़ तो नही हुई ?"

" मैं ठीक हूँ मेरे बच्चे ." यशोदा जी ने अजित के माथे को चूमते हुए कहा - " तू सुना तू कैसा है ?"

" मैं ठीक हूँ मा ." अजित ने मुस्कुराकर उत्तर दिया और वहीं सोफे पर उनके बगल में बैठ गया .

कुछ देर हॉल में औपचारिक बातें करने के बाद अजित अपनी मा को अपने कमरे में ले गया.

" अब बताओ मा तुम कैसी हो ?" अजित मा को सोफे पर बिठाते हुए पुछा .

" मेरी चिंता कब तक करता रहेगा ?" अजित की मा ने प्यार से उसके सर पर हाथ फेरा . - " तू मेरे लिए कोई बहू क्यों नही ले आता . जो मेरा ख्याल रखे ."

" तुम आ गयी हो तो तुम्हे तुम्हारी बहू से मिलवा ही दूँगा मा ." अजित ने शरमाते हुए कहा . - " मैने तुम्हारे लिए बहू पसंद कर ली है , वो बहुत अच्छी है , तुम इनकार नही कर सकोगी ."

" तुम्हारी पसंद को तो मैं देख चुकी हूँ और वो मुझे भी पसंद आ गयी है ." अजित की मा ने स्नेह से भारी दृष्टि अजित पर डालते हुए कहा .

" तुम किस की बात कर रही हो मा ?" अजित ने आश्चर्य से मा को देखा .

" मैं ठाकुर साहब की बेटी डिंपल की बात कर रही हूँ , क्या तू किसी और की बात कर रहा है ?"

" हां मा ." अजित ने उत्तर दिया - " डिंपल मेरी पसंद नही है , मेरी पसंद कोई और है ."

" कौन है वो ?" मा ने पुछा .

" उसका नाम कांचन है , बस्ती में रहती है , उनके पिता खेती करते हैं , मा नही है , उनकी बुआ है जो उसी घर में रहती हैं और उन्होने ही कांचन को मा की तरह पाला है ." अजित ने एक ही साँस में सब कुछ मा को बता दिया .

" अजित , तू ठाकुर साहब जैसे खानदानी आदमी को छोड़ कर ..... एक हल चलाने वाले मामूली इंसान से रिश्ता जोड़ना चाहता है , तुझे हो क्या गया है ? तू आकाश को देखना छोड़ कर धरती की ओर क्यों देख रहा है ?" यशोदा जी सोफे से उठते हुए बोली .

" मा , जिन्हे तुम एक मामूली सा हल चलाने वाला कह रही हो ..... अगर ये लोग हल चलना छोड़ दे तो वही आकाश में उड़ने वाले लोग मूह के बाल धरती पर आकर गीरेंगे ." अजित भी सोफे से उठकर मा के नज़दीक जाते हुए बोला . - " मा इंसान काम से छोटा बड़ा नही होता . विचारों से होता है . मेरी नज़र में वो छोटा है . जिसके विचार छोटे हों . और तुम्हारे विचार तो बड़े उँचे होते हैं मा . फिर आज इस तरह की छोटी बातें क्यों कर रही हो ? क्या तुम चाहती हो मैने जो वादा कांचन से किया है उसे तोड़कर उसकी नज़रों में गिर जाऊ ? फिर तुम बताओ मा कि मेरे ऐसा करने के बाद छोटा कौन होगा वे लोग या हम ?" अजित अपनी मा के कंधो को पकड़कर गंभीर स्वर में बोला .

" लेकिन .... बेटे !" यशोदा जी ने कुछ कहना चाहा . लेकिन कहते - कहते रुक गयी .

" मा , तुम अमीरी - ग़रीबी को परे रखकर एक बार कांचन से मिल लो , अगर वो तुम्हे अच्छी ना लगे तो फिर जो तुम कहोगी मैं वो करूँगा ." अजित ने मुस्कुराते हुए कहा .

" ठीक है .... मैं कल उसके घर जाऊंगी . पर तुम मेरे साथ नही रहोगे , और ना ही उसे बताओगे कि मैं उससे मिलने आने वाली हूँ . मैं देखना चाहती हूँ वो मुझसे कैसे बर्ताव करती है ." यशोदा जी ने रूखे स्वर में कहा . वह अब भी अजित के फ़ैसले से खुश नही थी .

" थँक यू मा ." अजित खुश होते हुए बोला - " तुम जो कहोगी मैं वो करूँगा . मैं जानता हूँ कांचन तुम्हे बहुत पसंद आएगी ." अजित मा से लिपट ' ते हुए कहा .

" बस ..... बस , ज़्यादा खुश होने की ज़रूरत नही है . अगर वो मुझे अच्छी नही लगी तो मैं कतयि उसे अपनी बहू नही स्वीकार करूँगी ." यशोदा जी मूह फुलाकर बोली .

अजित मा की इस बात पर मुस्कुरा दिया.

कांचन आज कॉलेज नही गयी थी. उसका मन आज कल पढ़ाई पर लगता ही नही था. अक्सर कॉलेज ना जाने के लिए कोई ना कोई बहाने बनाया करती थी. आज तो उसके पास अच्छा बहाना था. आज वो सबेरे ही बुआ से बोली कि आज वो कॉलेज नही जाएगी. क्योंकि फूफा जी आएँ हैं. उनके साथ कुछ देर बातें करूँगी. शांता ने भी उसपर ज़ोर नही डाला. कांचन की देखा देखी चिंटू भी स्कूल नही गया. उसे भी खेलने का बहाना चाहिए था. धनपाल भी आज के दिन घर पर ही था. सिर्फ़ हरिया जी कहीं को गये हुए थे.

इस वक़्त घड़ी पे ११ बजे थे, शांता खाना बना चुकी थी और नदी जाने की तैयारी कर रही थी. धनपाल अंदर चारपाई पर लेटा सो रहा था. और कांचन सुबह से ही घर के कामो में लगी हुई थी. शांता उसे मगन से घर के काम करते देख बहुत खुश हो रही थी, पर चिंटू खुश नही था. वह पिछले कुछ दिनो से परेशान था. वह परेशान इस लिए था कि आज कल दीदी उसके साथ नही खेलती. पहले जब भी वो कांचन से खेलने को कहता वो तुरंत उसके साथ खेलने लग जाती थी. पर पिछले कुछ दिनो से कांचन ने उसके साथ खेलना बंद कर दिया था. अब वह अकेला सा हो गया था. उसके समझ में नही आ रहा था की दीदी आज कल मेरे साथ क्यों नही खेलती, वा या तो घर के काम करती रहती है या अकेली पड़ी खोई - खोई रहती है.

कांचन इस वक़्त बरामदे के छप्पर पर बने मकड़ी के जालों को झाड़ू से साफ कर रही थी वो एक लकड़ी के स्टूल पर खड़ी थी.. चिंटू उसके पास आकर खड़ा हो गया. कांचन ने उसकी ओर देखा तक नही.

चिंटू कुछ देर कांचन को देखता रहा फिर साहस करके बोला - "दीदी चलो आज कंचा खेलते हैं. तुम कितने दिनो से मेरे साथ कंचा नही खेली हो"

कांचन ने एक नज़र चिंटू को देखा फिर बोली - "देख तो रहा है मैं घर के काम कर रही हूँ, फिर क्यों तू मुझसे खेलने को कह रहा है?"

" दीदी , तू अब मेरे साथ क्यों नही खेलती ? पहले तो रोज़ खेला करती थी . मा कहती थक जाती थी पर तू कभी घर का काम नही करती थी . अब क्यों करती हो घर का काम ?" चिंटू ने शिकायत की .

उत्तर में कांचन मुस्कुराइ फिर बोली - "क्या सारी उमर खेलती रहूंगी, घर का काम कब सीखूँगी? अब मैं तेरे साथ नही खेल सकती? तू किसी और के साथ क्यों नही खेलता?"

" अब क्यों नही खेल सकती मेरे साथ ? मुझे तुम्हारे साथ खेलना अच्छा लगता है दीदी , चलो ना दीदी ." चिंटू ने कांचन के टाँगों को पकड़ कर ज़ोर से हिलाते हुए कहा .

चिंटू के हिलने से वह लड़खड़ाई और गिरते - गिरते बची.

" चिंटू क्या कर रहा है , ऐसे मत हिला मुझे , मैं गिर जाऊंगी ." कांचन घबराकर बोली .

" मेरे साथ खेलो नही तो मैं गिराऊंगा ." चिंटू फिर से कांचन के पावं को हिलाते हुए बोला

चिंटू के हिलाने से कांचन लड़खड़ाई, उसके लड़खड़ाते ही स्टूल का पावं एक ओर से उठा, अगले ही पल कांचन ज़मीन पर चारो खाने चित पड़ी थी.

उसे गिरता देख चिंटू के होश उड़ गये. उसे समझते देर नही लगी कि अब उसकी पिटाई होनी सुनिश्चित है. वह बाहर की ओर भागा.

कांचन भी अपनी पीठ सहलाते हुए तेज़ी से उठी और झाड़ू लेकर चिंटू के पिछे दौड़ी. चिंटू बाहर के दरवाज़े तक पहुँच चुका था. कांचन भी उसके थोड़ी पिछे थी. चिंटू ने दरवाज़ा पार किया और कांचन ने झाड़ू घुमाया. तभी अचानक से दरवाज़े पर अजित की मा प्रकट हुई. कांचन की नज़र उनपर पड़ी, यशोदा जी ठीक कांचन के झाड़ू के निशाने पर थी. कांचन ने अपने हाथ रोकने चाहे.....पर उसके हाथों की गति इतनी तेज़ थी कि वा अपने हाथों में लहराती हुई झाड़ू को रोक नही पाई. यशोदा जी की आँखें हैरत से फैलती चली गयी.वो तेज़ी से पिछे हटीं.

कांचन का झाड़ू सनसानता हुआ उनके चेहरे को हवा देता निकल गया. और सीधा दरवाज़े के खुले पट से जा टकराया.

यशोदा जी गिरते गिरते बची. उन्होने संभलते हुए आश्चर्य से कांचन को देखा.

उस अजनबी औरत को देखकर कांचन की बोलती बंद हो गयी. ये सोचकर कि अभी वो इस औरत को झाड़ू मार देती खुद से शर्मिंदा हो गयी. उसके तत्काल समझ में नही आया कि वो इस औरत से क्या कहे.

" ये क्या मूर्खता है लड़की ." यशोदा जी कांचन के गंदे हुलिए और उसके गँवारो जैसी हरकत पर गुस्से से चीखी . - " क्या तुम्हारे यहाँ घर आए मेहमान का ऐसे स्वागत करते हैं ?"

" म .... माफी चाहती हूँ मा जी . मुझसे भूल हो गयी . मैं आपको देख नही पाई थी ." कांचन शर्मिंदा होते हुए बोली .

" क्या तुम्हारा ही नाम कांचन है ?" यशोदा जी ने अगला सवाल किया . और फिर से कांचन को उपर से नीचे तक घूरा .

" ज .... जी हां ." कांचन थूक निगलकर बोली . यशोदा जी के मूह से अपना नाम सुनकर उसकी आँखें हैरत और घबराहट से चौड़ी हो गयी थी .

" तुम्हारे बाबा और बुआ हैं घर पर ? मुझे अजित ने यहाँ भेजा है . मैं उसकी मा हूँ ." यशोदा जी ने अपना परिचय दिया .

" क .... क्या ....? आ ..... आप ...... साहेब की मा जी हैं ?" कांचन का चेहरा खुशी से खिल उठा . पर ये खुशी क्षण भर के लिए थी . अगले ही पल इस विचार के आते ही की उसने अभी भी इनपर झाड़ू से हमला किया था . उसके चेहरे से सारी खुशी गायब हो गयी ..

इस एक पल में सैंकड़ों बुरे विचार उसके कोमल मन में आकर चले गये. ये जान लेने के पश्चात कि जिस औरत को अभी वो झाड़ू मारने वाली थी वो अजित की मा है.....कांचन के हाथ पावं फूल गये थे.

उसने झट से अपने दोनो हाथों को उन्हे प्रणाम करने हेतु जोड़ दिए. उसके ऐसा करने से उसके हाथ में थमा झाड़ू एक बार फिर से यशोदा जी के आगे लहरा गया. कांचन फिर से

बौखला गयी, उसने झाड़ू को एक ओर फेंका और अपनी छाती से बँधे दुपट्टे को खोलकर घूँघट ओढ़ ली.

यशोदा जी खड़ी-खड़ी कांचन की हरकतों को देख रही थी.

कांचन ने घूँघट काढने के बाद काँपते स्वर में बोली - "आ.....आप अंदर आइए ना माजी. आप बाहर क्यों खड़ी हैं?"

यशोदा जी आँगन में दाखिल हुई. एक नज़र उन्होने पूरे आँगन पर घुमाया फिर अपनी नज़रें कचे मिट्टी से बने खपरैल के घर पर टीका दी.

कांचन उनके पिछे ही खड़ी थी. वह बुरी तरह से घबराई हुई थी. उसकी समझ में नही आ रहा था कि वो क्या कहे क्या करे. उसकी जगह कोई और होता तो अब तक यशोदा जी के बैठने के लिए चारपाई या कोई कुर्सी ले आता. पर कांचन को इतनी अक़ल ना थी. और जो थी भी तो इस वक़्त काम नही कर रही थी. वह सहमी सी खड़ी सोचती रही.

" अपने बाबा और बुआ को मेरे आने की सूचना दो ." यशोदा जी ने कांचन को तुच्छ नज़रों से देखते हुए कहा .

" जी ..... अभी बुलाई ." कांचन तेज़ी से बोली , फिर अंदर को भागी .

" बुआ ...." बरामदे में पहुँचते ही कांचन ने उँची आवाज़ में शांता को पुकारा . उसकी आवाज़ में तेज़ कंपन थी .

" क्या हुआ कांचन ?" बुआ कपड़ों की गठरी हाथ में लिए बाहर निकली .

" बुआ साहब की मा जी आई हैं . वो तुमसे और बाबा से मिलना चाहती हैं ." कांचन घबराते हुए बोली .

" कौन साहेब ? किसकी बात कर रही तू ?" शांता आश्चर्य से कांचन को देखते हुए बोली .

" बुआ , मैं हवेली के डॉक्टर साहेब की बात कर रही हूँ . उनकी मा जी आईं हैं ."
कांचन रुन्वान्सि होकर बोली .

" लेकिन वो हमारे घर क्यों आईं हैं ?" बुआ ने अगला सवाल किया - " और तू इतनी
घबराई हुई क्यों है ?"

" बुआ मा जी मुझे देखने आईं हैं . साहेब मुझे जानते हैं , वो मुझसे शादी करना चाहते
हैं . इसीलिए उन्होने मा जी को यहाँ भेजा है ." कांचन धड़कते दिल से बोली .

" क्या ...?" बुआ ने आश्चर्य से कांचन को देखा -" पर तूने पहले क्यों नही बताया
हमें ?

कांचन की नज़रें शर्म से झुक गयी.

" ठीक है .... तुम अंदर जाओ . मैं उन्हे देखती हूँ ." शांता कांचन के भावों का
अनुमान लगाकर बोली .

कांचन सहमति में सर हिलाई और तेज़ी से अंदर चली गइई.

शांता अंदर से एक धूलि हुई चादर उठा लाई और बरामदे में खड़ी चारपाई को गिरा कर
उसपर बिछा दी फिर यशोदा जी के पास गयी.

" नमस्ते जी ." शांता यशोदा जी के पास जाते हुए बोली . उसके शब्दों में आदर के
पुट थे . उनमें मिशरी से भी अधिक मिठास थी . और होती भी क्यों ना बात कांचन की
ज़िंदगी की थी .

यशोदा जी शांता की तरफ पलटी. एक नज़र उन्होने शांता के पहनावे पर डाला फिर जवाब
में उन्होने भी हाथ जोड़ दिए - "नमस्ते."

" आप अंदर आइए बेहन जी ." उसने यशोदा जी से कहा और उनको लेकर अंदर
बरामदे तक आई . फिर उन्हे चारपाई पर बैठने का आग्रह किया .

यशोदा जी सकुचाती हुई चारपाई पर बैठ गयी.

शांता अंदर जाकर पानी और थोड़ा नाश्ता लेकर आ गयी. कुछ ही देर में धनपाल भी बदन पर कुर्ता डाल कर बाहर आ गया.

कांचन अंदर ही दुब्कि पड़ी थी. और दरवाज़े से कान लगाए बाहर होने वाली बातों को सुनने का प्रयास कर रही थी. उसका दिल रह रह कर ज़ोरों से धड़क उठता था. मन में तरह-तरह के सैंकड़ों विचार आ रहे थे. उसका नन्हा मन अनेकों शंकाओ के झूले में झूल रहा था. उसे लग रहा था वो अब गिरी- तब गिरी.

बार बार मन में एक ही बात सोचे जा रही थी. -"क्यों मैं चिंटू को मारने दौड़ी, भाई ही तो था मेरा, जो मैं उसे माफ़ कर देती तो कितना अच्छा होता. ना मैं उसे मारने को जाती ना माजी के सामने मुझे शर्मिंदा होना पड़ता. अब ना जाने मा जी मेरे बारे में क्या सोच रही होंगी? अब तो मा जी मुझे अपनी बहू कभी स्वीकार नही करेंगी. मुझसे कितनी बड़ी भूल हो गयी."

कांचन मन ही मन ईश्वर से प्रार्थना करने लगी - 'हे प्रभु इस बार मुझे बचा लो, कोई चमत्कार कर दो, मा जी के दिल में मेरे लिए प्यार भर दो, कसम खाती हूँ आज के बाद अपने छोटे भाई पर कभी नाराज़ नही होउंगी, कभी उसे नही मारूँगी. उसकी हर ज़िद्द सहूंगी. ज़रा भी गुस्सा नही करूँगी. बस इस बार बचा लो मेरे प्रभु'

अचानक ही उसके कानो से यशोदा जी की आवाज़ टकराई. वो कह रही थी - "धनपाल जी मेरा एक ही बेटा है, बड़े कष्ट से पाला है उसे. हज़ार दुख उठाए हैं मैने उसके लिए. मैं उसकी खुशी चाहती हूँ, और इसीलिए आपके द्वार तक आई हूँ."

" ये तो हमारे लिए बड़े सौभाग्य की बात है बेहन जी की आप मुझ ग़रीब के घर आईं . वरना हमारे ऐसे नसीब कहाँ की अपनी बेटी का रिश्ता आप जैसे लोगों के घरों में कर सकें ." धनपाल ने यशोदा जी की बातों का उत्तर दिया . वो यशोदा जी के नज़दीक ही स्टूल पर बैठा हुआ था . शांता उसके बगल में खड़ी थी .

" मैने अमीरी - ग़रीबी को कभी महत्व नही दिया है . सच पूछिए तो हम लोग भी कोई बड़े धनी नही हैं , फाकों की ज़िंदगी भी देखी है मैने . हां अब हालत पहले से सुधर गये

है . मैं तो हमेशा यही सोचती आई हूँ कि अजित की शादी ऐसे घर में करूँ जहाँ सभ्य और संस्कारी लोग रहते हों . फिर चाहें वो हल चलाने वाले किसी किसान का घर हो या महलों में रहने वाले राजा का . मेरे लिए दोनो समान हैं ." यशोदा जी सपाट लहज़े में बोली .

" आप धन्य हैं बेहन जी , ईश्वर ने आपको बहुत अच्छा दिल और उँचे विचार दिए है ." धनपाल ने अपने शब्दों में आदर और शीतलता भरते हुए कहा . वो नही चाहता था कि उसके किसी भी बात से यशोदा जी कोई ठेस पहुँचे . वह आगे बोला - " मेरी कांचन के तो भाग्य खुल गये जो वो आपके घर की बहू बनने जा रही है . आप जैसा कुटुम्ब हमें मिला , ईश्वर से हमें और कुछ नही चाहिए ."

" मैं इस संबंध में २ दिन बाद उत्तर दूँगी . मैने कल एक पंडित जी को बुलवाया है , उनसे मिलने के बाद ही आपको बता सकूँगी . फिलहाल तो मैं आप लोगों से मिलने आई थी . और अब जाने के अनुमति चाहती हूँ ." यशोदा जी चारपाई से उठते हुए बोली .

" जी जैसी आपकी इच्छा . पर कुछ भोजन ... पानी करके जाती तो हमारा मान बढ़ जाता ...!" धनपाल ने झिझकते हुए यशोदा जी से आग्रह किया .

" क्षमा चाहती हूँ आप लोगों से . खाने के लिए मैं किसी और दिन आपके घर आ जाऊंगी . आज के दिन मैं ठाकुर साहब से ये कह के आई हूँ कि दोपेहर का भोजन मैं हवेली में ही करूँगी ." यशोदा जी बोली और धनपाल तथा शांता को नमस्ते कहकर बाहर जाने लगी .

शांता और धनपाल उन्हे बाहर तक छोड़ने आए. बाहर हवेली का ड्राइवर जीप लिए खड़ा था. यशोदा जी ने जीप में बैठने से पहले अंतिम बार धनपाल और शांता को नमस्ते किया फिर जीप में बैठकर हवेली को मूड गयी.

कुछ ही देर में यशोदा जी हवेली में दाखिल हुई. उन्हे हॉल में डिंपल बैठी दिखाई दी.

यशोदा जी को देखकर डिंपल झट से सोफे से उठ खड़ी हुई. और फिर अपने होंठो पर मुस्कान भरते हुए उन्हे नमस्ते किया.

यशोदा जी धीरे से चलती हुई डिंपल के पास गयी. और प्यार से उनके सर पर हाथ फेरा. उनके इस स्नेह से डिंपल की आँखें भर आई.

यशोदा जी बिना कुछ बोले मूडी और अपने कमरे की ओर बढ़ गयी. डिंपल भीगी पलकों से उन्हे जाते हुए देखती रही.

" क्या हुआ मा ? तुम्हे कांचन कैसी लगी ? कुछ बताओ भी . जब से कांचन से मिलकर आई हो चुप बैठी हो , कुछ बोलो ना मा .?" अजित ने व्याकुलता के साथ अपनी मा से पुछा .

अजित इस वक़्त यशोदा जी के कमरे में उनके बराबर सोफे पर बैठा हुआ था. यशोदा जी उदास और खामोश थी. अजित ने कई बार उनसे कांचन के बारे में पुछा पर उन्होने कोई जवाब नही दिया. थक हार कर अजित भी चुप बैठ गया.

" मुझे कांचन पसंद नही ." कुछ देर खामोश रहने के बाद यशोदा जी ने चुप्पी तोड़ते हुए कहा .

" क .... क्या ?" अजित ने चौक कर मा को देखा - " लेकिन क्यों मा ? आख़िर उसमे बुराई क्या है ?" अजित ने आश्चर्य से कहा .

" ये कहो कि उसमे अच्छाई ही क्या है ?" यशोदा जी गुस्से से खड़ी होते हुए बोली - " किसी चीज़ का सालीक़ा नही है उसके अंदर , गँवारो जैसी कपड़े पहनती है , मूर्खों जैसी हरकतें हैं उसकी , ना बात चीत का तरीका जानती है ना बड़ों का लिहाज़ , तुम कैसे उस लड़की को हमारे घर की बहू बनाने के लिए तैयार बैठे हो ?"

" मा तुम कांचन से ही मिलकर आ रही हो ना ? या किसी और लड़की से ?" अजित ने आश्चर्य से मा को देखा - " मुझे लगता है तुम किसी ग़लत घर में चली गयी होगी . तुम जो बता रही ऐसा एक भी दोष कांचन में नही है ."

" मज़ाक बंद करो अजित ...!" यशोदा जी गुस्से में बोली - " तुम्हारी आँखों में प्यार का नशा चढ़ा हुआ है . इसलिए तुम सही ग़लत के फ़र्क को भूल गये हो . मैं इस विषय में अब और कुछ कहना सुनना नही चाहती . बेहतर होगा कि तुम कांचन का ख्याल दिल से निकाल दो और डिंपल से शादी के लिए हां कह दो ."

" नही मा , कांचन कोई वस्तु नही जो आपको पसंद आए तो ही घर में लाउ . वो एक जीती जागती लड़की है , वो नादान है , भोली है , कम पढ़ी लिखी है , ग़रीब है पर बुरी नही , वो लाखों में एक है उसका दिल हीरे की तरह है , और सबसे बड़ी बात तो यह है की वो मुझसे बेपनाह प्यार करती है , ऐसी लड़की को मैं तन्हा कष्ट उठाने के लिए नही छोड़ सकता ." अजित दृढ संकल्प में बोला . उसके शब्दों में चट्टान सी सख्ती थी .

यशोदा जी अजित से कुछ कहती उससे पहले दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी.

अजित दरवाज़े की तरफ बढ़ा.

अजित ने दरवाज़ा खोला. बाहर मुनीम जी खड़े थे.

" आप ....! आइए अंदर आइए ." अजित ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा . - " कोई आवश्यक काम था तो आप मुझे बुला लेते ."

" नही अजित बाबू .... बस आप लोगों का हाल जानने आ गया ." मुनीम जी अंदर आते हुए बोले - " सब कुशल तो है यहाँ ? आप लोगों को कोई दिक्कत हो तो मुझसे बिना किसी झिझक के कह दीजिएगा . हवेली का पुराना वफ़ादार हूँ . मैं आप लोगों की सेवा में तत्पर हाज़िर रहूँगा ."

" आप जैसे सच्चे लोग संसार में बहुत कम ही देखने को मिलते हैं . ईश्वर की कृपा से हमें कोई परेशानी नही हां ज़रूरत पड़ी तो हम आपकी मदद ज़रूर लेना चाहेंगे ."

यशोदा जी मुनीम को सम्मानित करती हुई बोली .

किंतु मुनीम जी के कानो तक यशोदा जी की बात नही पहुँची, उनका ध्यान कही और था. अचानक ही उन्होने कुछ ऐसा देख लिया था कि उनके चेहरे का रंग उड़ गया था.

" ये तस्वीर किनकी है ?" मुनीम जी ने बिस्तर के सिरहाने स्टूल पर रखे एक फोटो फ्रेम की और इशारा करते हुए पुछा .

" ये मेरे पति हैं " ये कहते हुए यशोदा जी गंभीर हो उठी .

जबकि मुनीम जी ये सुनते ही बुरी तरह से चौंक पड़े. गनीमत थी कि अजित और यशोदा जी की नज़र फोटो की तरफ थी इसलिए उनका चौंकना दोनो ही नही देख पाए.

" पर आपके पति हैं कहाँ ? पहले कभी इनका ज़िक्र नही सुना आप लोगों से ." मुनीम जी अपने मन की घबराहट छुपाते हुए बोले .

" अब पता नही कहाँ हैं आज कल ...... अजित जब ६ साल का था तभी उन्हे किसी काम के सिलसिले में घर से दूर जाना पड़ा . तब के गये आज तक नही लौटे हैं ." यशोदा जी पीड़ा से कराह कर बोली . उनकी आँखों के कोरों पर आँसू की बूदे छलक आई . अजित ने आगे बढ़कर मा को दिलासा दिया .

" ओह्ह .... माफ़ कीजिएगा . मैने अंजाने में आपके दुख को छेड़ दिया ." मुनीम जी शर्मिंदा होते हुए बोले . - " अच्छा अब मैं चलता हूँ . और हां आप लोगों को किसी भी चीज़ की दिक्कत हो तो ज़रूर कहिएगा ."

" जी शुक्रिया ." यशोदा जी ने उत्तर दिया .

" नमस्ते आज्ञा चाहता हूँ ." मुनीम जी बोले फिर एक नज़र अजित पर डालकर तेज़ी से बाहर निकल गये .

अजित उन्हे जाते हुए देखता रहा.

डिंपल अपने बिस्तर पर गुम्सुम लेटी हुई थी. उसकी आँखें शुन्य में टिकी हुई थी. ऐसा नही कि वो चिंतित थी. वो केवल ख्यालो में खोई हुई थी. आज उसके ख्यालों में पिछले ३ दिनो से बसा रहने वाला ग़रीब कल्लू नही था. बल्कि खूबसूरत व्यक्तित्व का स्वामी अजित था.

जब से अजित की मा आई थी, डिंपल का मन बार बार अजित की और जा रहा था. वो अजित के बारे में अधिक सोचना नही चाहती थी. पर दिल पर किसका ज़ोर चला है. वह तो एक ऐसा बेलगाम घोड़ा है जो अपनी मर्ज़ी से जिस और चाहे सरपट भागता है और अपनी मर्ज़ी से लौट आता है.

डिंपल का दिल भी एक बार फिर बेलगाम होकर अजित की तरफ भागा जा रहा था. कल्लू के दुख से रु-बरु होने के बाद अजित के प्रति उसके जो अरमान सो गये थे. अब यशोदा जी के आते ही फिर से जाग उठे थे. अब उसका मन फिर से उसे हासिल करने को मचल उठा था.

डिंपल काँच की बनी भीतरी छत (सीलिंग) को घूरते हुए इन्ही विचारों में खोई हुई थी कि तभी दरवाज़े पर किसी ने दस्तक दी.

" कौन ह ै ?" डिंपल बिस्तर पर उठकर बैठते हुए बोल ी .

बाहर जो शख़्श था वो डिंपल के सवाल का जवाब देने के बजाए धीरे से दरवाज़ा खोलकर अंदर आया. डिंपल उसे देखते ही संभलकर बैठ गयी. ये मुनीम जी थे. यशोदा जी और अजित से मिलने के बाद वो सीधा डिंपल के पास आए थे.

मुनीम जी डिंपल के बराबर बिस्तर पर जाकर बैठ गये. फिर अपना दायां हाथ उसके सर पर प्यार से फेरते हुए बोले - "कैसी हो डिंपल बेटा?"

" अच्छी हूँ अंकल ." डिंपल ने फीकी मुस्कुराहट के साथ कह ा .

" तुम चिंता ना करो बेट ा , जब ता ये बूढ़ा जी रहा है तब तक तुम्हारे अधिकारों पर कोई दूसरा डाका नही डाल सकत ा ."

" क्या बात है अंकल ? आप कुछ परेशान लग रहे हैं ." डिंपल मुनीम जी की उतरी हुई सूरत को देखकर बोली .

" डिंपल बेटा , मैं आपके पास आने से पहले अजित और उनकी माता जी के साथ बैठा हुआ था ."

अजित का नाम सुनते ही डिंपल ने अपनी नज़रें नीचे कर ली. अजित के ज़िक्र से उसका चेहरा फिर से उदास हो गया.

" क्या कहा उन्होने ?" डिंपल मुनीम जी के चेहरे को देखते हुए बोली .

" कुछ खास बातें नही हुई , मैं बस उनसे दुआ सलाम करके निकल आया . पर तुम चिंता ना करो ..... मैं सब ठीक कर दूँगा ." मुनीम जी उसे तसल्ली देते हुए बोले .

जवाब में डिंपल ने खामोशी से अपनी गर्दन झुका दी.

" अच्छा अब मैं चलता हूँ ." मुनीम जी उठते हुए बोले - " मैं बस तुम्हे देखने और ये कहने आया था कि तुम बेफिक़्र रहो . अजित को तुमसे कोई अलग नही कर सकता ."

डिंपल इस बार भी कुछ ना बोली. बस मुनीम जी के उठते ही वो भी उठ खड़ी हुई.

मुनीम जी मुड़े और दरवाज़े से बाहर निकल गये.

मुनीम जी के जाते ही डिंपल वापस बिस्तर पर फैल गयी और पुनः उन्ही विचारों में खो गयी.

२०

कांचन झरने के किनारे उसी पत्थर पर बैठी हुई थी. जहाँ अक्सर बैठकर अजित का इंतेज़ार किया करती थी.

उसके मन में एक उदासी सी छाई हुई थी. आज सुबह की घटना का असर अब भी उसके मस्तिष्क पर शेष था. जब से यशोदा जी उसके घर आई थी, तब से वो मुस्कुराना भूल गयी थी. आज सुबह यशोदा जी के जाने के बाद वो काफ़ी देर तक सिसकती रही थी. उसके दिल में एक अंजान सा भय समा गया था. उसे ऐसा अनुभव हो रहा था जैसे अब वो कभी अजित से नही मिल सकेगी. इस एहसास से कि अब उसे अजित के बिना ही जीना पड़ सकता है उसके आँसू नही थम रहे थे.

शांता बुआ काफ़ी देर तक उसे समझाती रही थी.

धनपाल का दिल भी अपनी जान से प्यारी बेटी को रोता देख उदास हो गया था. उसके ईए संसार में कांचन से कीमती कुछ भी ना था. वा तो कांचन की खुशी के लिए अपने शरीर के माँस तक को बेच सकता था. परंतु कांचन के इस पीड़ा का इलाज़ उसके पास भी नही था. लेकिन उसने ये ज़रूर तय कर लिया था कि चाहें उसे यशोदा जी के पावं पर क्यों ना गिरना पड़े, वो गिरेगा, पर अपनी बेटी की खुशियों को आग लगने नही देगा.

उसने कांचन से अजित के बारे में कुछ भी पूछना आवश्यक नही समझा. कांचन का उदास चेहरा और उसकी आँखों से बहते मोती सरीखे आँसू इस बात के साक्षी थे कि वो अजित से कितना प्यार करती थी.

धनपाल और शांता ने कांचन को समझा बुझाकर चुप तो करा दिया था पर उसकी उदासी दूर नही कर पाए थे.

कांचन सारा दिन उदास रही थी. चिंटू की शरारातें भी उसके होंठों की हँसी को वापस नही ला पाई थे

कांचन को इंतेज़ार करते हुए ३० मिनिट से भी ज़्यादा वक़्त हो चला था. वह बार-बार अपनी नज़र उठाकर रास्ते की ओर देखती....किंतु अजित को ना आता देख उसकी उदासी

बढ़ जाती.

' कहीं ऐसा ना हो की साहेब मुझसे मिलना ही ना चाहते हों ? कहीं माजी ने साहेब से ये ना कह दिए हों कि मैने उन्हे झाड़ू से मारा है - जो माजी ने सच - मच में यही बात साहेब से कही होंगी तो फिर साहेब मुझे कभी माफ़ नही करेंगे . वे तो मुझसे नाता ही तोड़ लेंगे .' लेकिन ईश्वर जानता है कि मैं झाड़ू माजी के लिए नही उठाई थी , वो तो मैं चिंटू को मारना चाहती थी . तभी माजी सामने आ गयीं ,

और फिर मेरा झाड़ू माजी को लगा भी नही था. क्या इतनी सी बात के लिए साहेब मुझे छोड़ देंगे. उन्होने तो मुझे जीवन भर साथ देने का वादा किया है. क्या वो अपना वादा भूल जाएँगे? क्या सच में मैं उनसे अब कभी नही मिल सकूँगी? जो सच में साहेब मुझे छोड़ गये तो मेरा क्या होगा.?' कांचन के शंका पूर्ण विचार उसका पीछा नही छोड़ रहे थे.

कांचन यूँही गुमशुम, उदास सी बैठी रही. इस वक़्त वा खुद को बहुत अकेला और कमज़ोर महसूस कर रही थी. शरीर हौले हौले ऐसे काँप रहा था जैसे हवा का एक मामूली सा झौंका उसे उड़ा ले जाएगा.

" कांचन !" सहसा उसके कानो से अजित का स्वर टकराया .

कांचन अजित की आवाज़ से चौक-कर पलटी. फिर अजित पर नज़र पड़ते ही वह झटके से खड़ी हुई. पर हमेशा की तरह दौड़कर उसकी छाती से नही लगी. आज उसके कदम जहाँ के तहाँ चिपके रह गये. वह उसी जगह से खड़े खड़े अजित की टक-टॅकी लगाए देखने लगी. उसकी आँखों में गीलापन था. कांचन अपनी भीगी पलकों से अजित को ठीक वैसे ही देख रही थी जैसे कोई मरने वाला ज़िंदगी की और हसरत से देखता है.

अजित को अपने पास देखकर उसका मन भावुकता से भर उठा था. देखते ही देखते उसके अंदर की पीड़ा आँसू बनकर बाहर निकली और उसके गुलाबी गालों में फैल गयी.

" कांचन क्या हुआ ?" अजित एक दम से उसके पास जाते हुए बोला

" साहेब ..... मुझे माफ़ कर दो , मेरी वजह से माजी का अपमान हुआ और वो मुझसे नाराज़ होकर मेरे घर से लौट गयी . पर साहेब ...... मैं सच कहती हूँ मैने कुछ भी

जानकार नही किया . मुझसे ये ग़लती अंजाने में हुई थी . आप जो भी मन करे मुझे इसकी सज़ा दे दो पर मुझसे मूह मत फेरो . मैं आपके बगैर नही जी ...." इसके आगे के शब्द उसके गले के भीतर ही घुट कर रह गये . अजित ने फुर्ती से अपना हाथ उसके मूह पर रख दिया था .

" कुछ ना कहो कांचन ....!" अजित उसे कंधे से पकड़ अपने करीब लाते हुए कहा . फिर उसे उसी प्रकार पकड़े हुए खाई के और करीब ले गया .

" ये देख रही हो कांचन ?" अजित ने अपनी उंगली का इशारा गिरते झरने की ओर करते हुए कहा . - " ये ठीक तुम्हारी तरह है . और मैं उस झील की भाँति हूँ . जिसकी गोद में ये झरना गिर रहा है . जैसे इस झरने के बिना उस झील का कोई वज़ूद नही वैसे ही तुम्हारे बिना मेरा भी कोई वज़ूद नही . मैं जानता हूँ कि तुम किस बात से उदास हो , तुम शायद ये सोच रही होगी की मैं कहीं मा के दबाव में आकर तुमसे अपने संबंध ना तोड़ लूँ ., नही कांचन .... आज मैं इस प्रकृति में मौजूद हर चीज़ को , ये नदियाँ , पर्वत , झील , झरने , दूर तक फैली हुई ये वादियाँ इन सब को साक्षी मानकर कहता हूँ कि मैं तुम्हारा साथ कभी नही छोड़ूँगा . चाहें उसके लिए कोई भी कीमत चुकानी पड़े . पर तुम्हारा साथ कोई अन्याय नही करूँगा "

" साहेब ...!" कांचन फफक - कर बोली और अजित से लिपट गयी . अजित ने उसे अपनी छाती में छुपा लिया .

कांचन अजित की मजबूत बाहों के घेरे में अपनी सारी पीड़ा भूल गयी थी. वह जब भी अजित के बाहों में होती थी उसे किसी चीज़ का भय नही रहता था. वह बिल्कुल उसी प्रकार निश्चिंत हो जाया करती थी. जैसे कोई दूधमुहा बच्चा अपनी मा की गोद में जाकर निश्चिंत हो जाता है.

कुछ देर यूँही लिपटे रहने के बाद अजित ने उसे पुकारा. - "कांचन....जब मा तुम्हारे घर आई थी तब हुआ क्या था? मा जब हवेली लौटी तो काफ़ी उखड़ी हुई थी."

अजित की बात सुनकर कांचन ने अपना चेहरा उपर उठाया. फिर अजित को देखते हुए बोली - "माजी क्या कह रही थी साहेब? वो तो मुझपर बहुत बिगड़ रही होंगी"

" नही ..... ऐसा नही है . पर नाराज़ ज़रूर थी . वैसे हुआ क्या था ?"

कांचन पहले घबराई फिर झिझकते हुए सुबह की घटना ज्यों का त्यों अजित को सुनाने लगी.

उसकी पूरी बात सुन लेने के बाद अजित हंसते हुए कांचन से कहा - "तो तुम मा को झाड़ू से मारने वाली थी. फिर तो मा का गुस्सा जायज़ है."

" साहेब मैं माजी से माफी माँगना चाहती हूँ . वो मुझे माफ़ तो कर देंगी ना ?" कांचन घराहट भरे स्वर में बोली .

" हां क्यों नही ." अजित ने प्यार से कांचन के गाल थपथपाते हुए कहा - " मा नाराज़ ज़रूर है पर मैं जानता हूँ वो करेगी वही जो मैं चाहूँगा . क्योंकि उन्होने मुझे बचपन से ही बहुत प्यार किया है . लेकिन उन्हे मनाने में थोड़ा समय लगेगा . और जब तक मैं मा को मना ना लूँ हम पहले की तरह नही मिल सकते . ऐसे माहौल में मिलना ठीक नही रहेगा ."

" लेकिन ...... मैं आपसे मिले बिना नही रह सकूँगी साहेब ." कांचन जुदाई की बात से घबरा उठी .

" कुछ दिन के लिए हमें दूरी बनानी ही होगी कांचन ." अजित ने उसे समझाया . - " मैं नही चाहता कि हमारी अधिरता हमारे लिए कोई नयी परेशानी लेकर आए ."

" ठीक है साहेब ." कांचन मायूस होकर बोली - " जो आप ठीक समझे ."

" उदास ना हो कांचन ..... सब ठीक हो जाएगा ." अजित कांचन को गले लगाते हुए कहा .

कांचन उसके गले लगकर सूबक उठी. अजित उसे दुलारता रहा .

इस वक़्त २ बजे हैं. धनपाल अपने खेत में काम पर लगा हुआ है. किंतु उसका मन काम पर नही है, कारण है कांचन....! जो अभी कुछ देर पहले चिंटू के साथ उसे खाना खिलाने आई थी. वैसे तो उसके लिए रोज़ शांता खाना लेकर आती थी. पर आज उसने कांचन और चिंटू को भेज दिया था. संभवतः....ऐसा उसने हरिया जी के साथ कुछ पल बिताने के लिए किया होगा.

कांचन कुछ खोई खोई और उदास सी थी. उसके अंदर कल शाम से ही उदासी छाई हुई थी जब अजित ने कहा था कि अब वे दोनो कुछ दिनो तक नही मिल सकेंगे. वह धनपाल के सामने ब्लात मुस्कुराने की कोशिश कर रही थी. ताकि धनपाल को उसकी उदासी का पता ना चले.

कांचन और चिंटू के जाते ही धनपाल अपने काम पे लग गया. किंतु कांचन से मिल लेने के बाद उसका मन काम पर नही लग रहा था. आज उसे कांचन उदास सी लगी थी. कांचन की उदासी उससे छुपि नही रह पाई थी. धनपाल इसी बात की चिंता में डूबा हुआ था कि अगर यशोदा जी ने इस रिश्ते से इनकार कर दिया तो कांचन कैसे जी पाएगी? वह मन ही मन प्रण कर रहा था - "कुछ भी हो मैं कांचन को दुखी नही देख सकता.....उसके लिए मुझे जो भी करना पड़े मैं करूँगा. पर उसे उसकी सारी खुशियाँ देकर रहूँगा."

अभी धनपाल इन्ही विचारों में गुम था कि उसके कानो से जीप की आवाज़ टकराई. उसने आवाज़ की दिशा में नज़र दौड़ाया तो उसे मुनीम जी की जीप आती दिखाई दी.

मुनीम जी पर नज़र पड़ते ही धनपाल के माथे पर बल पड़ गये और चेहरे पर चिंता की लकीरें खींच गयीं.

जीप कुछ दूरी पर आकर रुकी. मुनीम जी जीप से उतरे और धनपाल की तरफ देखने लगे.

धनपाल फावड़ा ज़मीन पर रखकर मुनीम जी के तरफ बढ़ गया. वो समझ चुका था कि मुनीम जी उसी से मिलने आएँ हैं. हालाँकि उसके अतिरिक्त कुछ और भी लोग थे जो कुछ-कुछ फ़ासले में अपने खेतों में काम कर रहे थे. पर मुनीम जी का उन लोगों से कभी कोई संबंध नही रहा था.

" नमस्ते मुनीम जी ." धनपाल मुनीम जी के निकट जाकर बोला .

उसने मुनीम जी को ध्यान से देखा. उनके चेहरे पर परेशानी के भाव थे.

" नमस्ते !" मुनीम जी धनपाल के नमस्ते का उत्तर देते हुए बोले - " कैसे हो धनपाल ?"

" अच्छा हूँ , मालिक की कृपा है . आप सुनाए ..... आपको कौनसा कष्ट आन पड़ा है , जो आज २० साल बाद मेरी खबर लेने की सोचे ?" धनपाल के शब्दों में व्यंग का पुट था .

" मैं कांचन के बारे में तुमसे कुछ बातें करने के लिए आया हूँ ."

" कांचन ?" उसके मूह से बेशखता निकला . मुनीम जी के होंठों से कांचन का नाम सुनकर वह बुरी तरह से चौंक उठा था . उसका दिल किसी अंजानी आशंका से जोरों से धड़क रहा था . वह सवालिया नज़रों से मुनीम जी की तरफ देखते हुए बोला - " मैं समझा नही ? आप कांचन के बारे में क्या बात करना चाहते हैं ?"

" धनपाल मेरी बात का बुरा मत मानना . मैं बहुत विवश होकर यहाँ तक आया हूँ ." मुनीम जी अपने शब्दों में पीड़ा भरते हुए बोले ."

" मुनीम जी , आप जो भी कहना चाहते हैं साफ साफ कहिए . पहेलियों की भाषा ना तो मुझे पहले कभी समझ में आई और ना अब आ रही है ." धनपाल बेचैनी से भरकर बोला .

" ठाकुर साहब डिंपल का विवाह अजित से करना चाहते हैं . इस रिश्ते से अजित की मा भी खुश हैं . लेकिन तुम्हारी बेटी कांचन अजित और डिंपल के आड़े आ रही है . धनपाल मैं कांचन का बुरा नही चाहता पर उसकी वजह से डिंपल की ....!"

" बस मुनीम जी ." धनपाल तैश में आकर गरजा . - " आप किसका कितना भला चाहते हैं ये मैं खूब जानता हूँ . रही बात कांचन की ...... तो मैं एक बात आपको बता देना चाहता हूँ . कांचन मेरा गुरूर है . उसके उपर किसी भी तरह का लान्छन मैं सहन नही करूँगा . कांचन और अजित एक दूसरे से प्यार करते हैं . बीच में तो डिंपल आ रही है . या शायद आप आने की कोशिश कर रहे हैं "

" अपनी हद में रहकर बात करो धनपाल ." मुनीम जी क्रोध में चीखे . - " कांचन तुम्हारी बेटी है और डिंपल की दोस्त है इसीलिए यहाँ तक आया हूँ , नही तो यहाँ तक आने की ज़रूरत भी ना पड़ती मुझे . आगे तुम खुद समझदार हो . तुम चाहो तो मैं तुम्हे कुछ पैसे भी दे सकता हूँ . कहीं कोई दूसरा अच्छा सा लड़का देखकर कांचन की शादी कर दो ."

" संसार की कोई भी वस्तु , मुझे कांचन से अधिक प्रिय नही है . उसकी खुशी के लिए मैं खुद को बेच सकता हूँ ." धनपाल का स्वर चट्टान की तरह सख़्त था . - " एक बात आप अपने मन में अच्छी तरह उतार लीजिए मुनीम जी . अगर कांचन को हल्की सी भी खरोंच तक आई तो हवेली की दीवारें ढह जाएँगी . इंट से इंट बजा दूँगा हवेली की . मैं आज भी वही धनपाल हूँ , थोड़ा बूढ़ा ज़रूर हुआ हूँ पर इतना भी नही कि अपनी बेटी की रक्षा ना कर सकूँ ."

धनपाल के गुस्से से भरी सूरत देखकर मुनीम जी उपर से नीचे तक काँप गये. वो धनपाल के गुस्से से परिचित थे. उन्होने मौक़े की नज़ाकत को समझा और नर्म स्वर में बोले - "तुम नाहक बिगड़ रहे हो धनपाल. मैने तो सदेव तुम्हारा भला चाहा है. कभी कांचन और डिंपल में कोई फ़र्क नही समझा. पर शायद तुम मुझे समझ नही पाए. ठीक है, अब मैं चलता हूँ. ईश्वर तुम्हारा भला करे." ये कहकर मुनीम जी जाने के लिए मुड़े.

" विधाता पर मुझे पूरा भरोसा है मुनीम जी ." धनपाल उत्तर में बोला - " वो बड़ा ही न्यायी है . जिसकी जो मंज़िल है उसे वहाँ तक ज़रूर पहुँचाएगा . नमस्ते !"

मुनीम जी एक पल ठहरकर धनपाल की तरफ देखे. फिर तेज़ी से जीप में सवार हो गये. उनके बैठते ही जीप वापस मूडी और देखते ही देखते धनपाल की नज़रों से ओझल हो गयी.

धनपाल चिन्तीत मुद्रा में खड़ा उन्हे जाते हुए देखता रहा.

कांचन इस वक़्त गांव के मंदिर की सीढ़ियाँ चढ़ रही है. उसके हाथ में पूजा की थाली है. सफेद सलवार कमीज़ में वो किसी अप्सरा की तरह सुंदर लग रही है. और अपने कपड़ों की ही भाँति साफ और स्वच्छ दिखाई दे रही है.

आज उसका मन किया कि वो मंदिर जाकर पूजा करे. और अपने प्यार की सलामती की प्रार्थना करे.

वो मंदिर पहुँची. अंदर आरती की, प्रार्थना किया फिर पूजारी जी से आशीर्वाद लेकर बाहर निकली.

जैसे ही वो मंदिर की सीढ़ियाँ उतरने को हुई. उसे अजित की मा सीढ़ियाँ चढ़ती दिखाई दी. उनपर नज़र पड़ते ही कांचन घबरा गयी. उसके समझ में नही आया अब वो क्या करे. वह सोचने लगी - कहीं ऐसा ना हो माजी मुझे देखकर उस दिन का बदला ले. और मुझे जली कटी सुनाने लग जायें.

कांचन उनसे छुपने के लिए जगह ढूँढने लगी. तभी यशोदा जी की नज़र कांचन से टकराई. कांचन ने उन्हे अपनी ओर देखते पाया तो भय से काँप उठी. हाथ ऐसे काँपने लगे जैसे थाली अभी उसके हाथों से छूट कर गिर पड़ेगी.

वह जड़वत खड़ी उन्हे अपने नज़दीक आते देखती रही.

यशोदा जी उसके करीब आईं. कांचन को उपर से नीचे तक घूरा.

कांचन की सिटी-पिटी गुम हो गयी. उसने भय से अपनी नज़रें झुका ली.

" क्या माँगने आई थी ?" यशोदा जी ने कांचन की हालत पर गौर करके व्यंग से बोली .

" ज ...... जी ..... मैं ...." उसकी जीभ लड़खड़ाई . उसने सहमी सी निगाह से यशोदा जी को देखा .

" तुम इतनी घबरा क्यों रही हो ? मैं कोई शेर नही हूँ जो तुम्हे खा जाऊंगी ."

यशोदा जी की बात सुनकर कांचन की हालत और भी पतली हो गयी. वो इस वक़्त सच-मुच खुद को खुले जंगल में किसी शेरनी के बीच महसूस कर रही थी. भय के कारण उसकी सूरत रोनी सी हो गयी थी.

" मुझे तुमसे कुछ बातें करनी है . आओ कुछ देर मेरे साथ वहाँ बैठो ." यशोदा जी उसे सीढ़ियों के किनारे बने चबूतरे की और इशारा करती हुई बोली तथा खुद चबूतरे की तरफ बढ़ गयी .

कांचन किसी यंत्रचलित मशीन की तरह उनके पिछे चलती हुई उनके पास खड़ी हो गयी.

" बैठ जाओ ." यशोदा जी ने कांचन को खड़ा देख बैठने का इशारा किया .

कांचन झिझक और डर के साथ चबूतरे पर बैठ गयी.

" कांचन कितना प्रेम करती हो अजित से ?" यशोदा जी कांचन के भय से पीले पड़े चेहरे को देखती हुई बोली .

कांचन यशोदा जी के पूछे गये प्रश्न से बौखला गयी. उसे तत्काल कोई उत्तर देते ना बना. वह कहती भी तो क्या? क्या प्यार कोई वस्तु है जिसकी तोल-मोल की जाए. जो प्यार का हिसाब रखते हैं वो मेरी नज़र में व्यापारी हो सकते हैं.....प्रेमी नही. और कांचन का प्यार तो भक्ति की तरह था जिसकी ना तो कोई सीमा थी ना ही आकर. वह चुप रही. उसके पास यशोदा जी के प्रश्ना का कोई उत्तर नही था.

" बताओ .... चुप क्यों हो गयी ?" यशोदा जी कांचन को खामोश देख फिर से पुछि . - " क्या तुम्हे नही पता कि तुम अजित से कितना प्रेम करती हो ?"

कांचन विवशता में अपने होंठ चबाने लगी. उसे लगा मा जी उस दिन झाड़ू वाली बात से खफा हैं और कदाचित् इसीलिए वो मुझे पसंद नही करती. उसने उस दिन की ग़लती की क्षमा माँगनी चाही - "म....मा जी मैं उस दिन के लिए आपसे माफी मांगती हूँ. उस दिन मुझसे भूल हो गयी थी. पर सच कहती हूँ वो भूल मुझसे अंजाने में हुई थी."

" मैं तो उस दिन की बात ही नही कर रही हूँ , मैं तो बस ये पूछ रही हूँ कि तुम अजित से कितना प्रेम करती हो , और उसके लिए क्या क्या कर सकती हो ? यशोदा जी उसी लहज़े में बोली .

" मैं उनसे बहुत प्रेम करती हूँ . और साहेब भी मुझसे उतना ही प्रेम करते हैं . माजी मैं फिर कभी कोई ग़लती नही करूँगी .... इस बार मुझे माफ़ कर दीजिए ." कांचन भीगी पलकों के साथ हाथ जोड़ते हुए यशोदा जी से बोली .

" अगर तुम सच में अजित से प्रेम करती हो और उसे खुश देखना चाहती हो तो मेरा कहा मनोगी ?"

" आप कहिए तो सही , मैं साहेब और आपकी खुशी के लिए कुछ भी कर सकती हूँ ." कांचन बिना कुछ सोचे यशोदा जी को खुश करने के लिए हामी भर दी . उसे लगा शायद यशोदा जी उसे एक मौक़ा देना चाहती हैं .

" तो फिर सुनो ! अगर तुम सच में अजित से प्रेम करती हो और उसकी खुशी चाहती हो तो तुम्हे अजित की ज़िंदगी से दूर जाना होगा . सुना है त्याग करने से प्यार और भी पवित्र हो जाता है ." यशोदा जी शुष्क स्वर में बोली .

कांचन को लगा जैसे यशोदा जी ने उसके सीने में अंदर तक कोई छुरा घोंप दिया हो. वा तड़प कर रह गयी. उसने दम तोड़ती नज़रों से यशोदा जी के तरफ देखा. उसके होंठ कुछ कहने के लिए काँपे.....पर मूह से बोल ना फूटे. सीने में अतः पीड़ा का अनुभव हुआ. उसका मन चाहा अभी यही दहाड़े मार-मार कर रोए. और मा जी से कहे कि वो उनके साथ ऐसा ज़ुल्म क्यों कर रही हैं, ऐसा कौन सा गुनाह कर दिया है उसने जिसकी इतनी बड़ी सज़ा वो उसे देना चाह रही हैं.

" मा जी मैं साहेब के बगैर नही जी सकूँगी , मुझे उनसे दूर मत कीजिए . साहेब भी मुझसे बहुत प्रेम करते हैं ." कांचन उनके आगे हाथ जोड़े विनती की .

" उसकी आँखों में तो तुम्हारी सुंदरता का लेप चढ़ा हुआ है , इसलिए वो सही और ग़लत के फ़र्क को नही देख पा रहा है . किंतु मैं उसकी मा हूँ , मैं जानती हूँ उसके लिए क्या सही है और क्या ग़लत है ." यशोदा जी कांचन की हालत की परवाह किए बिना

कहती रहीं - " मैं तुमसे केवल इतना कहना चाहती हूँ कि आगे से तुम कभी अजित से नही मिलोगि . या मिल भी गयी तो उससे प्रेम नही जताओगी . अगर तुम ऐसा कर सकी तो मैं समझूंगी कि तुम अजित से सच्चा प्यार करती हो . नही तो मैं समझूंगी कि तुम्हारा प्यार एक दिखावा है ..... सिर्फ़ उँचे घर में रिश्ता करने के लिए प्यार का ढोंग कर रही हो ."

" म ...... मा जी ." कांचन कराह कर बोली .

" कांचन मैं तुमसे कोई दुश्मनी नही निकाल रही हूँ .... एक सच है जिससे तुम्हारा परिचय करा रही हूँ . तुम उस समाज के लायक नही हो जिसमें अजित को जीना है . अजित से शादी करके तुम तो हास्य का कारण बनोगी ही साथ में अजित भी बनेगा . २ दिन में ही उसके अंदर का प्रेम छछू - मंतर हो जाएगा और वो तुमसे घृणा करने लगेगा . हां तुम्हारे स्थान पर डिंपल होगी तो अजित को कभी शर्मिंदा नही होने देगी . वो उसी समाज में रहती है . उसे पता है उस समाज में कैसे जिया जाता है . फिर तुम ये क्यों नही सोचती , जिस ठाकुर साहब ने तुम्हे बेटी जैसा प्यार दिया क्या तुम उनकी खुशियाँ छीन कर ठीक करोगी ?." ये कहकर यशोदा जी रुकी और कांचन के उत्तर की प्रतीक्षा करने लगी .

" डिंपल और साहेब का विवाह ?" कांचन यशोदा जी को देखती हुई आश्चर्य से बड़बड़ाई . - " मैं कुछ समझी नही मा जी ?"

" क्या तुम नही जानती डिंपल अजित से प्रेम करती है ?" यशोदा जी ने सवालिया नज़रों से कांचन की ओर देखा . - " हम सब इस रिश्ते से खुश हैं . सब की मर्ज़ी यही है कि अजित की शादी डिंपल से हो . सिर्फ़ तुम्ही हो जो इस रिश्ते में बाधा बन रही हो . अजित की ज़िद्द है की वो तुमसे ही शादी करेगा . जाने तूने उसे कौन सी घुट्टी पिला दी है ."

कांचन स्तब्ध थी !

" मैने तो सुना है तुम डिंपल की दोस्त हो ?" यशोदा जी आगे बोली - " क्या तुम्हे अपने दोस्त की खुशियाँ छीनते अच्छा लगेगा ?"

कांचन के सामने एक के बाद एक विस्फोट होते जा रहे थे. यशोदा जी के इस रहस्योदघाटन से वो दंग रह गयी थी की डिंपल अजित से प्रेम करती है और ठाकुर साहब उन दोनो का विवाह करना चाहते हैं.

यशोदा जी ने कांचन के चेहरे का परीक्षण किया. उसके चेहरे की रंगत उड़ी हुई थी. वो किसी गहरी सोच में डूबती जा रही थी. यशोदा जी ने उसे ढील देना उचित नही समझा उन्होने अपना फँदा और कसा. वह आगे बोली - "ज़रा सोचो कांचन, ठाकुर साहब २० साल से एक लंबी पीड़ा भरी ज़िंदगी जी रहे हैं. बेटी की शादी की बात सुनकर उनके चेहरे पर बरसों बाद मुस्कुराहट लौटी है.....जब उन्हे ये पता चलेगा कि तुम्हारी वजह से डिंपल की शादी टूट गयी है तो क्या गुज़रेगी उनपर? कैसा आघात पहुँचेगा उनके दिल पर जब डिंपल अपनी ज़िंदगी से निराश होकर अपनी जान दे देगी? क्या वो जी सकेंगे? नही कांचन.......ठाकुर साहब ये पीड़ा सहन नही कर सकेंगे. उनकी छाती फट जाएगी. इतना जान लो कांचन अब हवेली में जो भी अच्छा बुरा होगा उसकी ज़िम्मेदार तुम होगी. सिर्फ़ तुम......!"

" बस कीजिए मा जी . अब और कुछ मत कहिए ." कांचन तड़प कर बोली - " अगर आप लोगों को लगता है कि मेरे हट जाने से आप सब खुश रह सकेंगे तो जाइए ...... मैं आज के बाद कभी साहेब से नही मिलूंगी . आज के बाद मैं उनके लिए मर गयी . अब कांचन कभी आप लोगों के रास्ते नही आएगी ." कांचन ये कहते हुए फफक पड़ी . वा दोनो हाथों से अपना चेहरा छुपाकर रोने लगी .

यशोदा जी को उसका रोना अंदर तक हिला गया. पर उन्होने अपने अंदर की नारी को बाहर नही आने दिया. वह कुछ देर उसे रोते हुए देखती रही फिर धीरे से उसके कंधों को पकड़ कर बोली - "कांचन.....मुझे माफ़ कर दो. मेरी वजह से तुम्हारा दिल दुखा. पर मैने वही कहा जो सच है. अब तुम अपने घर जाओ......और मेरी तरफ से कोई मैल मत रखना."

कांचन कुछ ना बोली. अपने आँसू पोछती हुई उठ खड़ी हुई और काँपते पैरों के साथ सीढ़ियाँ उतरने लगी.

वह दुखी थी बेहद दुखी ! यशोदा जी के मूह से निकले एक एक शब्द उसके कानों में ज़हर घोलते जा रहे थे.

वह भारी कदमो से चलती हुई घर के रास्ते बढ़ी चली जा रही थी. मन पूरी तरह अशांत था. लड़खड़ाते कदमो से चलती हुई बस एक ही बात सोचे जा रही थी. - "ये क्या हो रहा है मेरे साथ? मा जी क्यों नाराज़ हो गयीं मुझसे? सिर्फ़ एक छोटी सी ग़लती के लिए माजी मुझे इतनी बड़ी सज़ा क्यों दे रही हैं? क्या मैं इतनी बुरी हूँ? या मेरा ग़रीब होना बुरा हो गया? हां यही बात होगी.....माजी मुझे अपने समाज के लायक नही समझती. अगर मैं डिंपल की तरह अमीर होती तो माजी मुझे अपनी बहू ज़रूर स्वीकार कर लेती. मेरे बाबा के पास पैसे नही है ना इसलिए उनको मैं पसंद नही. उन्हे डिंपल पसंद है क्योंकि ठाकुर साहब के पास बहुत पैसे हैं.

डिंपल की याद आते ही कांचन का दिल और दुखी हो गया. जिस सहेली को उसने अपनी जान से ज़्यादा प्यार किया आज वही उसकी जान की दुश्मन बन गयी थी.

हां ! वो डिंपल ही तो थी जिसकी वजह से उसे अजित से अलग किया जा रहा था. डिंपल ने जाने-अंजाने में ही सही पर आज उसने कांचन का दिल दुखा दिया था. आज कांचन डिंपल और खुद के फ़र्क को समझ चुकी थी. आज वो जान गयी थी कि अमीरों का ग़रीबों से नाता केवल खेलने के लिए होता है, ना कि किसी बंधन में बाँधने के लिए.

वह डिंपल से नाराज़ तो नही थी पर उसके दिल में गुस्सा सवार था. कोई आपको कितना ही प्रिय क्यों ना हो-किंतु वो जब आपके टूटे दिल का कारण बनता है तब आपको उसपर क्रोध आ ही जाता है. कांचन का गुस्सा भी उसी प्रकार का था.

कांचन की हालत इस वक़्त ठीक उस व्यापारी की तरह थी. जो दिन भर गली गली बाज़ार बाज़ार घूम कर अपना सौदा बेचा हो और घर लौट'ते समय किसी ने उसके सारे पैसे छीन लिए हों. जो मानसिक स्थिति उस समय उस सौदागर की होती है वही कांचन की थी. और फिर यहाँ बात एक दिन की कमाई की नही थी-कांचन की पूरी ज़िंदगी की थी. उसके उन सपनो की थी जो अब तक वो देखती आई थी. वे सारे सपने उससे एक झटके में छीन लिए जा रहे थे. उसका गुस्सा होना तो स्वभाविक था.

कांचन सिसक रही थी. इस एहसास से कि अब वो कभी अजित से नही मिल सकेगी उसकी आत्मा लहू-लुहान होती जा रही थी. उसके समझ में नही आ रहा था वह ऐसा क्या करे जिससे कि वह फिर से अजित को हासिल कर सके. उसका साहेब फिर से उसका हो सके? पर ये ख्याली पुलाव थे. अजित को वापस पाने का कोई भी रास्ता उसे दूर दूर तक दिखाई नही दे रहा था

कांचन इन्ही सवालों के चक्रवात में घिरी अपने घर की चौखट तक पहुँची. आगन में पावं धरते ही बुआ ने कुछ पुछा....किंतु शांता की बात उसके कानो तक नही पहुँची. वह किसी और ही दुनिया में पहुँची हुई थी.

कांचन अपने उसी दशा में चलती हुई रसोई तक पहुँची. पूजा की थाली को एक और रखा. फिर अपने कमरे में घुस गयी. कमरे में पहुँचकर चारपाई पर ऐसे फैल गयी जैसे महीनो की बीमार हो.

शांता से उसकी हालत छुपि ना रही. वह कांचन को देखते ही ताड़ गयी कि इसे कुछ तो हुआ है. शांता कांचन को आज से पहले इतनी चुप और उदास कभी नही देखी थी. वह कमरे के भीतर आई. कांचन पर निगाह डाली. कांचन के माथे से पसीना बह रहा था किंतु शरीर ऐसे काँप रहा था मानो वो किसी ठंडे प्रदेश में आ गयी हो. आँखें बिना पलके झपकाए छप्पर को घुरे जा रही थी.

कांचन की ऐसी हालत देखकर शांता के होश उड़ गये. वह झुकी और कांचन के माथे पर हाथ रखा. शांता का हाथ पड़ते ही कांचन चिहुनक उठी. वह फटी फटी आँखों से बुआ को देखने लगी.

" कांचन क्या हुआ ? तुम्हारी तबीयत तो ठीक है ?" बुआ चिंतित होकर बोली .

बुआ का स्नेह मिलते ही कांचन की आँखों से आँसू के दो गोले लुढ़क कर उसके गालो में फैल गये. कांचन कुछ कहने के लिए अपने होंठ हिलाई पर आवाज़ बाहर ना निकल सकी. उसके होंठ सिर्फ़ फड़फड़ाकर रह गये. वह सहायता के लिए लालसा से बुआ को देखने लगी. वह किसी नन्हे बच्चे की तरह फफक पड़ने को तैयार थी.

कांचन को रोता देख शांता की छाती फट गयी. वह किसी अंजानी आशंका से घबरा उठी. उसकी आवाज़ सुनकर कांचन के फूफा और चिंटू भी दूसरे कमरे से आ गये. अपनी दीदी को रोता देख चिंटू उदास हो उठा था.

" कांचन तू कुछ बोलेगी भी ? किसी ने कुछ कहा है तुम्हे ?" शांता ने फिर से पुछा
.

कांचन सिसकती हुई शांता को यशोदा जी की कही सारी बातें बताने लगी. कांचन की बात सुनकर शांता भी परेशान हो उठी. उसने कांचन को छाती से लगा लिया और उसके आँसू पोंछने लगी. कांचन के टूटे दिल की पीड़ा अब उसके दिल तक पहुँच गयी थी. उसकी समझ में नही आ रहा था कि वो कांचन से कहे भी तो क्या कहे? वह उसे दिलासा देने लगी. उसके अतिरिक्त शांता कर भी क्या सकती थी. चिंटू और फूफा भी उसके आस-पास बैठ गये. चिंटू कांचन से लिपट सा गया था. उसके समझ में कुछ भी नही आ रहा कि दीदी क्यों रो रही है? पर कांचन को रोता देख उसे भी रोना आ रहा था. उसकी आँखें भी भर आई थी.

तभी कमरे में धनपाल ने कदम रखा. मुनीम जी से मिलने के पश्चात उसका काम पर मन नही लग रहा था. कुछ ही देर बाद उसने घर का रुख़ कर लिया था.

" क्या हुआ ?" भीतर आते ही धनपाल ने कांचन को रोते हुए देखा तो पुछा .

शांता उसे सारी बातें बताने लगी.

सुनकर धनपाल के जबड़े भींच गये. क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गयी. उसने अपने गुस्से पर नियंत्रण किया और कांचन के बराबर बैठकर उसके सर पर हाथ फेरने लगा. तत्पश्चात उसने कांचन से कहा - "नही कांचन....नही ! अब तुम्हे रोने की आवश्यकता नही. अब तुम्हारे दुख के दिन गये कांचन. अब तुम्हारे साथ कोई अन्याय नही कर सकता. कम से कम मेरे जीतेज़ी तो नही. तुम्हे, तुम्हारे सारे अधिकार मिलेंगे. मैं अभी हवेली जाता हूँ और ठाकुर साहब से बात करता हूँ. तू चुप हो जा अजित तुम्हारा है और तुम्हारा ही रहेगा. उसे तुमसे कोई अलग नही कर सकता"

" बाबा ...! माजी को मैं पसंद नही . वो मेरा विवाह साहेब से कभी नही होने देंगी ." कांचन की सिसकियाँ अभी भी जारी थी .

" तू चिंता मत कर बेटी . मैं हूँ ना . मैं अभी हवेली जाता हूँ . सब ठीक हो जाएगा ."

" भैया , क्या आप सच में ठाकुर साहब से बात करेंगे ?" शांता आश्चर्य से बोली .

" हां शांता , अब वो दिन आ गया है जिसका मुझे इंतेज़ार था . तुम कांचन का ध्यान रखना .... मैं अभी आया ." धनपाल बोला और तेज़ी से दरवाज़े से बाहर निकल गया .

कांचन के साथ-साथ हरिया भी हत-प्रत से धनपाल को जाते हुए देखते रहे. शांता और धनपाल की बातें उन दोनो को ही समझ में नही आया था. पर धनपाल की बातों से कांचन के आँसू ज़रूर थम गये थे. वह सवालिया नज़रों से बुआ को देखने लगी.

२१

ठाकुर साहब और मुनीम जी हॉल में बैठे बातें कर रहे थे. उनकी बातों का केन्द्र डिंपल थी. ठाकुर साहब अभी तक अजित और कांचन के प्रेम-प्रसंग से अंजान थे. उन्होने मुनीम जी से पुछा -"मुनीम जी आपको क्या लगता है, यशोदा जी हमारी डिंपल के लिए मान जाएँगी?"

" हमारी डिंपल में कमी ही क्या है मालिक , जो यशोदा जी इनकार करेंगी ?" मुनीम जी ने उन्हे ढाढ़स बँधाया . - " आप निश्चिंत रहें , उनसे मैं बात करूँगा .... किंतु आपसे एक इज़ाज़त चाहूँगा . अगर आप मंज़ूरी दें तो ?"

" कहिए मुनीम जी ...... आपको इज़ाज़त की क्या ज़रूरत है ?" ठाकुर सवालिया नज़रों से देखते हुए बोले .

" मालिक , मैं यशोदा जी से इस संबंध में अकेले में बात करना चाहता हूँ ."

" अकेले में ?" ठाकुर साहब चौंकते हुए बोले - " किंतु उससे क्या होगा मुनीम जी ?"

" सरकार किसी के दिल का हाल कौन जाने . क्या पता यशोदा जी क्या चाहती हों . उनका इनकार कहीं आपको दुखी ना कर जाए . इसलिए मैं उनसे अकेले में ही बात करना चाहता हूँ ." मुनीम जी ने अपनी शंका ज़ाहिर की . किंतु ये उनका ढोंग था . मुनीम जी नही चाहते थे कि यशोदा जी के मूह से अजित और कांचन के प्रेम संबंधो का पता उन्हे चले .

" आप जो उचित समझे , कीजिए मुनीम जी . हमारी तो सोच ही सिमटकर रह गयी है . किंतु कोशिश कीजिएगा कि वो मान जायें . हमें तो अजित बहुत पसंद है . उसके जैसा लड़का ढूढ़ने से भी नही मिलेगा ."

" आप चिंता ना करे सरकार , ईश्वर ने चाहा तो सब ठीक ही होगा . अजित मुझे भी बहुत पसंद है ." मुनीम जी ने उन्हे हौसला दिया .

अभी इनकी बातों का क्रम जारी ही था कि तभी हवेली के मुख्य द्वार से यशोदा जी दाखिल हुई. उनके चेहरे पर विशेष प्रकार का हर्ष फैला हुआ था. ऐसा लगता था जैसे उन्हे कोई मनचाहा वरदान मिल गया हो.

यशोदा जी धीरे से चलती हुई उनके पास आई और नमस्ते की मुद्रा में हाथ जोड़ दिए.

ठाकुर साहब और मुनीम जी भी खड़े होकर उनके नमस्ते का जवाब मुस्कुराकर दिए.

ठाकुर साहब ने यशोदा जी को बैठने का इशारा किया और खुद भी बैठ गये.

" बेहन जी , कहाँ से आ रही हैं आप ? इतना खुश तो आपको पहले कभी नही देखा .... क्या कोई खास बात है आज ?" सवाल मुनीम जी ने पुछा था , किंतु उत्तर की आस लिए ठाकुर साहब भी यशोदा जी की सूरत देखने लगे .

" मंदिर से होकर आ रही हूँ मुनीम जी . और कोई बात नही ." यशोदा जी ने उत्तर दिया .

" माता से क्या माँगा आपने ?" इस बार ठाकुर साहब ने पुछा .

" इस हवेली के लिए खुशियाँ . और अपने लिए एक सुंदर सी बहू ." यशोदा जी मुस्कुराकर बोली .

" वास्तव में इस हवेली को आप जैसे देवी की दुआओं की ज़रूरत है . ईश्वर से तो हमारा जन्म का बैर है . हमारी तो वो कभी सुनता नही . शायद आपकी सुन लें ." ठाकुर साहब निराशापूर्ण लहजे में बोले .

" आप निराश मत होइए ठाकुर साहब . ईश्वर का दिया तो सब कुछ है आपके पास . और क्या चाहिए आपको ?" यशोदा जी ठाकुर साहब से बोली - " दुश्चिन्ताओं को छोड़िए ठाकुर साहब , ईश्वर के घर देर है अंधेर नही . आप डिंपल के बारे में सोचिए ..... उसके विवाह के बारे में सोचिए . आपने उसके लिए कोई लड़का देखा है या नही ?"

" हमने लड़का देखा तो है पर .... ईश्वर जाने ये रिश्ता संभव हो पाएगा भी या नही ."

" यदि ऐसा है तो फिर उसकी ज़िम्मेदारी मुझपर छोड़ दीजिए . अगर आप को ऐतराज़ ना हो तो आपकी बेटी आज से मेरी हुई ." यशोदा जी असली बात को करीब लाती हुई बोली .

यशोदा जी की बात सुनते ही ठाकुर साहब और मुनीम जी के चेहरे खिल गये. उनकी चमकती हुई नज़रें एक दूसरे की सूरत देखने लगे.

" बेहन जी क्या आपने इस संबंध में अजित बाबू से बात की ? कहीं उनकी मर्ज़ी ....?" मुनीम जी डरते डरते पूछ बैठे .

" आप अजित की चिंता मत कीजिए मुनीम जी . अजित वही करेगा जो मैं कहूँगी ." यशोदा जी विश्वास भरे स्वर में मुनीम जी से बोली . फिर ठाकुर साहब से मुखातिब हुई - " ठाकुर साहब , मैं आपको वचन देती हूँ . आप ही की बेटी मेरे घर की बहू बनेगी . आप डिंपल की चिंता छोड़ दीजिए . मैं आज ही अजित से इस संबंध में स्पष्ट बात करूँगी ."

" बेहन जी आपने तो हमारा सारा बोझ हल्का कर दिया . हमने तो अजित को उसी दिन पसंद कर लिया था जिस दिन वो हवेली में कदम रखा था . आज आपकी स्वीकृति भी मिल गयी . अब हमें ईश्वर से कोई शिकायत नही रही ." ठाकुर साहब भाव - विभोर होकर बोले . यशोदा जी की बात सुनकर खुशी से उनकी आँखें झिलमिला गयी थी .

" सच में आज का दिन बड़ा ही शुभ है ." मुनीम जी बोले - " आज बरसो बाद हवेली में खुशियाँ लौटकर आई है ."

मुनीम जी की बात पूरी हुई ही थी कि हवेली के मुख्य द्वार से धनपाल ने भीतर कदम रखा.. उसपर नज़र पड़ते ही मुनीम जी के चेहरे पर से सारी खुशियाँ गायब हो गयी.

यशोदा जी भी खुश नही लग रही थी. धनपाल का ऐसे वक़्त यहाँ आना उन्हे परेशान कर गया था.

किंतु ठाकुर साहब के चेहरे पर ऐसा कोई भाव नही था. वे बस पसीने से लथ-पथ, मैले कुचेले कपड़ों में खड़े धनपाल को आश्चर्य से देखने लगे थे.

धनपाल उनके करीब आया और हाथ जोड़कर सभी को प्रणाम किया.

" क्या बात है धनपाल ? इस तरह भागे हुए क्यों आए हो ? सब कुशल तो है .?" ठाकुर साहब उसकी दशा का अनुमान लगाकर बोले .

" ठाकुर साहब मैं आपसे एक ज़रूरी बात करने आया हूँ . किंतु वो बात इतनी आवश्यक है कि सब के सामने नही कह सकता . मैं आपसे अकेले में बात करने की इज़ाज़त चाहता हूँ " धनपाल विनम्र स्वर में बोला .

" यहाँ सब अपने ही हैं धनपाल , तुम कहों जो भी कहना चाहते हो ." ठाकुर साहब एक नज़र यशोदा जी और मुनीम जी की तरफ देखकर फिर धनपाल से बोले .

" इसी बात का तो दुख है ठाकुर साहब की यहाँ सब अपने नही हैं ."

" धनपाल !" ठाकुर साहब क्रोध से चीखे . उनकी दहाड़ ऐसी थी कि बंद कमरो के अंदर लेटे अजित और डिंपल के कानो तक उनकी आवाज़ पहुँच गयी . वे दोनो अपने अपने कमरे से बाहर निकल आए . और सीढ़ियों के पास खड़े होकर हॉल की तरफ देखने लगे . घर के बाकी नौकर चाकर भी इकट्ठे हो गये थे .

धनपाल भी पल भर के लिए ठाकुर साहब के गुस्से से काँप सा गया. उसने आज से पहले ठाकुर साहब को इतने गुस्से में कभी नही देखा था. उसने नम्र होते हुए ठाकुर साहब से कहा - "मैं क्षमा चाहता हूँ ठाकुर साहब. मैं जानता हूँ मैने बहुत बड़ी बात कहने की जुर्रत की है. लेकिन मैं अपने घर से यहाँ यूँही आपकी भावनाओ से खेलने नही आया. बल्कि बरसो से मेरे सीने में एक सच दफ़न है जिसे मैं यहाँ खोलने आया हूँ. ठाकुर साहब, मैं जो भी कहूँगा सच कहूँगा, मेरी बातों में सच्चाई है.....जिसके दम पर ही मैं इतनी बड़ी बात कहने का साहस कर पाया हूँ. आपसे विनती है ठाकुर साहब....एक बार ठंडे दिल से मेरी बात सुन लें. फिर चाहें तो आप मुझे फाँसी पर लटका दीजिएगा. मैं विरोध नही करूँगा."

ठाकुर साहब धनपाल के विश्वास से भरे शब्दों को सुनकर थोड़े नर्म पड़े. - "धनपाल....तुम जानते हो तुम क्या कह रहो हो? तुमने ऐसा कहकर ना केवल मुनीम जी का अपमान किया

है बल्कि हमारी घर आईं मेहमान यशोदा जी का भी अपमान किया है. अगर तुम्हारी बातों में रत्ती भर भी झूठ निकला तो हम तुम्हे इस गुस्ताख़ी के लिए माफ़ नही करेंगे. हम ये भी भूल जाएँगे कि तुम कांचन के पिता हो."

" उसी कांचन के लिए ही तो मैं यहाँ आया हूँ ." धनपाल ठाकुर साहब की धमकी की परवाह किए बिना आगे बोला - " ठाकुर साहब .... सिर्फ़ मैं ही नही - आप भी कांचन के पिता हैं . मैने तो कांचन को सिर्फ़ पाला है . कांचन तो आपकी बेटी है . ठकुराइन की कोख से जन्मी आपकी अपनी बेटी है ."

" क्या .....????" ठाकुर साहब के साथ - साथ यशोदा जी और मुनीम जी भी एक झटके से अपने स्थान से ऐसे उच्छल पड़े .... जैसे उन तीनो को एक साथ किसी ज़हरीले बिच्छू ने डँक मार दिया हो .

मुनीम जी के माथे पर पसीना छलक आया. जबकि यशोदा जी स्तब्ध सी उसे घुरे जा रही थी. किंतु ठाकुर साहब की दशा सबसे बुरी थी. वो पागलों की तरह धनपाल को एक-टक घूरते जा रहे थे.

" क्या बकवास कर रहे हो धनपाल ? तुमने रास्ते में धतूरा तो नही सूंघ लिया ?" मुनीम तेज़ी से धनपाल की तरफ बढ़ते हुए बोले .

" मुनीम जी , किसी और ने ये बात कही होती तो बात मेरी समझ में आती . किंतु आप तो .... आप तो इस षड्यंत्र के रचयिता हैं . क्या आप भी भूल गये ? या फिर ठाकुर साहब के सामने सच बोलने से घबरा रहे हैं ?" धनपाल मुनीम जी पर व्यंग भरी दृष्टि डालते हुए कहा .

" क ..... क्या बकवास कर रहे हो ? क्या मतलब है तुम्हारा ?" मुनीम जी हकलाते हुए बोले . उनकी चेहरे पर घबराहट तेज़ हो गयी थी .

ठाकुर साहब पागलों के से अंदाज़ में कभी धनपाल को तो कभी मुनीम जी को देखते जा रहे थे. उनके समझ में अभी तक कुछ भी नही आया था.

यशोदा जी भी मूर्खों की तरह उनकी बातें सुनने में खोई हुई थी.

" सरकार , ये आदमी पागल हो गया है ." मुनीम जी ठाकुर साहब की तरफ मुड़ते हुए बोले - " कांचन आपकी बेटी कैसे हो सकती है . मालकिन ने हॉस्पिटल में एक ही बच्ची को जन्म दिया था , जो कि डिंपल के रूप में बरसों से आपके साथ है . चाहें तो इस बात की पुष्टि आप हॉस्पिटल के डॉक्टर्स और दूसरे कर्मचारियों से कर सकते हैं . ये आदमी अपनी स्वार्थ - सिद्धि के लिए कांचन को आपकी बेटी बना रहा है . दर - असल ये चाहता है कि कांचन को आपकी बेटी घोषित करके उसका विवाह अजित से करा दे . लेकिन मैं ऐसा नही होने दूँगा . मैने आपका बरसों से नमक खाया है ..... मैं आपकी बेटी डिंपल के अधिकारों से इस आदमी को खेल ने नही दूँगा ."

" बस कीजिए मुनीम जी ." धनपाल क्रोध से चीखा . - " अब और झूठ बोलकर अपने पापो को मत बढ़ाइए . डिंपल आपकी बेटी है . इस सच को ठाकुर साहब के सामने उज़गार कीजिए ."

ठाकुर साहब ने विस्मित नज़रों से धनपाल की तरफ देखा.

" धनपाल ..... नमक हराम , तू बरसों तक मेरे टुकड़ों पर पलता रहा और अब तू उसी नमक के बदले में हवेली की खुशियाँ छीन लेना चाहता है ?" मुनीम जी किसी घायल शेर की तरह दहाड़े .

" नमक हरामी मैने नही आपने की है मुनीम जी ." धनपाल मुनीम जी के उत्तर में चीखा . फिर ठाकुर साहब की तरफ पलटकर बोला - " ठाकुर साहब , मेरे मन में कोई स्वार्थ नही है . हां ! स्वार्थ था .... जो इतने दिनो तक कांचन को अपनी छाती से लगाए रखा . मैं पिता के मोह में बँधा कांचन को खुद से दूर नही करना चाहता था इसलिए अब तक आपको इस सच्चाई से परिचित नही कराया . किंतु अब सवाल उसकी पूरी ज़िंदगी की है उसके जीवन भर की खुशियों की है . अगर अब भी मैं चुप रहता तो कांचन के साथ बहुत बड़ा अन्याय करता . इसलिए मैं अपना मोह त्याग कर आपको सच बताने चला आया .

ठाकुर साहब अगर अब भी आपको मेरी बात पर यकीन नही हो रहा है तो कहिए मुनीम जी से....कहिए कि वो डिंपल के सर पर हाथ रखकर कसम खाएँ की डिंपल इनकी बेटी नही."

ठाकुर साहब की नज़र मुनीम जी की तरफ घूमी.

ठाकुर साहब की नज़र पड़ते ही मुनीम जी सूखे पत्ते की तरह काँपे. उन्होने गले में अटके थूक को निगलते हुए कहा - "सरकार.....धनपाल सरासर झूठ बोल रहा है. ये नमकहराम तो.....!"

" मुनीम जी ." ठाकुर साहब मुनीम जी को बीच में टोकते हुए बोले . - " सच बोलिए मुनीम जी . ईश्वर जानता है हमने कभी आपको अपना मुलाज़िम नही समझा . हमेशा आपको अपना मित्र समझा है . हम आपको वचन देते हैं , अगर आप हमसे सच कहेंगे तो हम आपको इस अपराध के लिए क्षमा कर देंगे . किंतु आज झूठ मत बोलिए . ईश्वर के लिए सच बोलिए . हम सच जानना चाहते हैं ."

ठाकुर साहब की तड़प देखकर मुनीम जी स्तब्ध रह गये. अपने बचाव के सारे रास्ते बंद देख उन्होने सच बोल देने में ही अपनी भलाई समझी. वे घुटनो के बल चलते हुए ठाकुर साहब के पास गये और हाथ जोड़कर बोले - "मुझसे भूल हो गयी सरकार, मुझे माफ़ कर दीजिए. उस घड़ी मैं बेटी के प्रेम में अँधा था. मैं सही ग़लत का निर्णय नही कर पाया. मैं डिंपल के सुनहरे भविष्य की कल्पना करके ये अपराध कर बैठा. जिस दिन मालकिन सीढ़ियों से गिरी थी. और उन्हे हॉस्पिटल ले जाया गया था. उसके दो दिन पहले ही मेरी बीवी भी उसी हॉस्पिटल में भरती थी. ये बात मैने आपको बताया भी थी. जब मालकिन ने कांचन को जन्म दिया तब आप हॉस्पिटल में नही थे. उसके कुछ ही देर बाद मेरी पत्नी ने भी डिंपल को जन्म दिया. उसी क्षण मेरे मन में ये पापी विचार समा गया. और मैं ये अपराध कर बैठा. मैने कांचन की जगह डिंपल को रख दिया. और कांचन को वहाँ से हटा दिया."

" मुनीम जी आप मेरे साथ बिश्वास घात भी कर सकते हैं ये मैने कभी सपने में भी नही सोचा था " ठाकुर एक घृणा भरी दृष्टि मुनीम जी पर डालते हुए बोले . - " किंतु मेरी समझ में ये बात नही आई कि दोनो बच्चियो को बदलने के बाद डिंपल को हमारे पास और कांचन को आपके पास होना चाहिए फिर वो धनपाल के पास कैसे पहुँच गयी ?"

ठाकुर साहब के इस सवाल पर मुनीम जी का सर शर्म से झुक गया. उनके मूह से कोई बोल ना फूटा.

" खामोशी तोड़िए मुनीम जी और हमारे सवाल का जवाब दीजिए ." ठाकुर साहब अधिरता के साथ बोले .

" इसका जवाब मैं देता हूँ ठाकुर साहब ." धनपाल मुनीम जी को खामोश देख ठाकुर साहब से बोला - " ये कांचन को अपने पास रखना ही नही चाहते थे . ये नही चाहते थे कि कांचन जीवित रहे और आगे चलकर डिंपल के अधिकारों को छीने . इसलिए इन्होने अपनी पत्नी को समझा बूझकर चुप करा दिया . फिर अपने एक आदमी को मेरे घर मुझे बुलाने भेज दिया .

मैं उन दिनो मुनीम जी का सबसे ख़ास आदमी हुआ करता था. इनके इशारों पर कुछ भी कर जाता था. किसी के हाथ पैर तोड़ना तो मेरे लिए गिल्ली डंडा खेलने जैसा था. इनके इशारे पर मैने कई बड़े बड़े अपराध भी किए. कई लोगों को मौत की नींद भी सुला दिया.

वो रात का समय था. जब मुनीम जी का भेजा हुआ आदमी मेरे घर आया. उस वक़्त मैं बहुत मुसीबत में था. मेरी पत्नी गर्भ से थी. और उसका बच्चा होने वाला था. मैं अपने घर के दूसरे कमरे में बेचैनी से किसी खुशख़बरी की आस में कान लगाए बैठा था. मेरे घर में उस वक़्त मेरी बेहन शांता और पड़ोस के गांव से बच्चा जनवाने आई महरि थी. कुछ ही देर बाद मुझे महरि ने ऐसी खबर सुनाई कि जिसे सुनकर मैं पत्थर का हो गया. उसने बताया कि मेरी पत्नी मर गयी और बच्चा भी पेट में ही खराब हो गया. इस खबर से मुझे बड़ा आघात पहुँचा.

मैं इसी शोक में डूबा हुआ था कि तभी दरवाज़े पर किसी की दस्तक हुई. दरवाज़ा खोला तो मुनीम जी का भेजा हुआ आदमी बाहर खड़ा मिला. उसने मुझे बताया कि मुनीम जी ने मुझे इसी वक़्त अपने घर बुलाया है. मन तो इस वक़्त कहीं भी जाने का नही हो रहा था पर रात गये मुनीम जी ने बुलाया है तो ज़रूर कोई विशेष काम होगा. ये सोचकर मैं उसके पिछे पिछे चल पड़ा.

मुनीम जी के घर पहुँचते ही मुनीम जी ने मुझे ढेर सारे रुपयों का लालच दिया. फिर कांचन को मेरे हाथ में थमाए और बोले - "इस बच्ची को कहीं फेंक आओ. लेकिन ऐसी जगह फेंकना कि ये जीवित ना रहे और किसी की नज़र इसपर ना पड़े. मैं सुनकर दंग रह गया.

मैने अपने जीवन में बड़े से बड़ा अपराध किया था पर किसी नन्हे मासूम बच्चे के क़त्ल की बात सुनकर ही थर्रा उठा. मैने मुनीम जी से पुछा - "मुनीम जी ये बच्ची किसकी है?"

मुनीम जी मेरी बात सुनकर भड़के और बोले - "तुम्हे इस बात से कोई मतलब नही होना चाहिए कि ये किसकी बच्ची है? तुम्हे इस काम के बदले लाखों रुपये दूँगा. बस आज के बाद ये सवाल कभी मत पूछना. और ना इस बारे में कभी किसी से ज़िक्र करना."

मैं सोच में पड़ गया.

मैं उस वक़्त पत्नी और बच्चे की मौत के गम में पड़ा था. मुझे उस बच्ची पर बड़ी दया आ रही थी. मैं सोच रहा था - 'किसकी बच्ची है ये. कौन हैं इसके माता पिता. क्या उन्हे पता है उसकी बच्ची इस वक़्त कहाँ हैं? क्या वो ये जानते हैं कि इस वक़्त उनकी बच्ची की मौत का सौदा हो रहा है?

उस बच्ची के माता पिता के बारे में जानने की लालसा मेरे मन में तेज़ हो गयी. सहसा मेरे मन में एक विचार आया. मैने मुनीम जी से कहा - "मुनीम जी, अगर आप मुझे इसके माता पिता का नाम बता दें तो मैं यह काम मुफ़्त में कर जाऊंगा."

मेरा प्रस्ताव सुनकर मुनीम जी उलझन में पड़ गये. फिर कुछ देर सोचने के बाद बोले. - "तुम इनके माता-पिता के बारे में क्यों जानना चाहते हो?"

" बस ऐसे ही ... जिज्ञासा वश . आप मुझपर भरोसा कीजिए . मैं ये भेद किसी पर नही खोलूँगा ." मैने मुनीम जी को अपने झाँसे में लिया .

उन दिनो मैं उनका बहुत वफ़ादार हुआ करता था. मुनीम जी आँख मूंदकर मुझपर भरोसा करते थे. संदेह की सुई भी उन्हे छूकर भी नही गयी. किंतु फिर भी उस रहस्य को बताने में वो हिचकिचा रहे थे. - "समझ में नही आता. तुम इसके मा-बाप के बारे में जानकार क्या करोगे? इस मामूली सी बात के लिए लाख रुपये को ठुकराना बहुत महँगा सौदा है तुम्हारे लिए."

" ये लाख रुपये तो मैं कभी भी कमा सकता हूँ मुनीम जी . लेकिन जो सवाल इस वक़्त मेरे अंदर उठा है अगर उसका जवाब मुझे नही मिला तो मैं जीवन भर परेशान रहूँगा .

मुझे सिर्फ़ इस बच्ची के माता - पिता के बारे में बता दीजिए , और कुछ नही पूछूंगा कि आप ऐसा क्यों कर रहे हैं . किस लिए कर रहे हैं . मैं हर तरह का वादा करता हूँ . फिर आप जो कहेंगे मैं वही करूँगा ."

" धनपाल मुझे तुम पर पूरा भरोसा है , पर ये राज़ बहुत ख़ास है . मुझे माफ़ करना , मैं अपने साए को भी ये राज़ नही बता सकता ."

मुनीम जी के इनकार से मुझे किसी बड़े षड्यंत्र की बू आने लगी थी. अब तक मैं इनके हर राज़ से वाक़िफ़ था. मैं समझ गया ये किसी बड़े अपराध को जन्म देने वाले हैं. कुछ ऐसा करने वाले हैं जिसके बारे में मुझसे भी पर्दे दारी की जा रही है.

किंतु अब मुझमे सच को जानने की इच्छा और तेज़ हो गयी थी. मैने मुनीम जी से धमकी भरे स्वर में कहा - "मुनीम जी, अगर आप मुझे सच नही बताएँगे तो मैं इस बच्ची को पुलिस के पास ले जाऊंगा और उन्हे सारा सच बता दूँगा. जब आपको मुझपर भरोसा ही नही तो फिर भरोसा ना करने का परिणाम भी देख लीजिएगा."

मेरी बात का उनपर तुरंत असर हुआ, पुलिस के नाम से ही वो काँप से गये. ये जानते थे मैं कितना ज़िद्दी और क्रोधी इंसान हुआ करता था. जो मन में ठान लेता था वो करके रहता था.

मुनीम जी हार मानते हुए मुझे सब कुछ बताते चले गये. सारा सच जान लेने के बाद मुझे इनसे बेहद घृणा सी हुई. मैं सोच भी नही सकता था कि कोई इंसान इतना नीचे गिर सकता है. जो इंसान अपने मजबूर मालिक की बेबसी का यूँ फ़ायदा उठाए वो इंसान कहलाने लायक ही नही. मैं मन मसोस कर रह गया. उनके कई उपकार थे मुझपर जिनके बोझ तले मैं उस वक़्त दबा हुआ था.

मुनीम जी ने मुझे चुप रहने के लिए कई प्रलोभन भी दिए. पर मैने इन्हे स्पष्ट मना कर दिया. मैने इनसे कहा - "मैं आपको वचन दे चुका हूँ कि सच बोलने पर मैं आपसे एक पैसा भी नही लूँगा. इसलिए अब मैं आपसे पैसे लेकर वादा खिलाफी नही कर सकता. आप निश्चिंत रहिए ये राज़ मुझ तक ही सीमित रहेगा."

उस वक़्त मैने मुनीम जी से जो कहा था वो सच ही कहा था. किंतु जब मैं कांचन को लेकर मुनीम जी के घर से निकला और उसे फेंकने हेतु घाटियों की तरफ बढ़ा. तब मेरे साथ कुछ ऐसा हुआ कि मेरी पूरी ज़िंदगी बदल गयी.

वो सर्द की रात थी. कांचन मेरे हाथ में सफेद कपड़ों में लिपटी गहरी नींद सोई हुई थी. अचानक ही तेज़ सर्द हवा से कांचन कुन्मुनाई-शायद उसे ठंड का आभास हुआ था. मैने उसे अपनी छाती से भीच लिया. तभी जैसे मेरे अंदर कहीं कोई बिजली चमकी हो, उसे छाती से लगाते ही मुझे कुछ अज़ीब सा महसूस हुआ. कुछ ऐसा जो उस दिन से पहले मैने कभी महसूस नही किया था. जैसे किसी ने मेरे भीतर से मुझे आवाज़ दिया हो. जैसे कोई मुझे पुछ रहा हो - 'इस नन्ही मासूम बच्ची ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो तुम इसे मारने जा रहे हो? क्या तुम शरीर से इतने लाचार हो गये हो कि तुम्हे अपना पेट भरने के लिए ऐसी नन्ही मासूम बेज़ुबान बच्ची को मारना पड़ रहा है?. जो ये भी नही जानती कि जीना क्या होता है मरना क्या होता है. जो अभी अपने मूह से मा तक भी नही बोल सकती. जो अपनी सहायता के लिए किसी को आवाज़ तक नही दे सकती. क्या तुम ऐसी बेज़ुबान बच्ची को मार कर चैन से जी सकोगे?'

वो मेरी आत्मा की आवाज़ थी-जो मुझे धिक्कार रही थी. मैं छटपटा उठा. मेरे अंदर कुछ पिघलता सा महसूस हुआ. शायद वो मेरा पत्थर का दिल था जो अब मोम बनता जा रहा था. उस घड़ी मुझे ऐसा लगा जैसे कोई शक्ति मेरे अंदर घुस कर मुझे बुरी तरह से निचोड़ रही हो. और मैं दर्द से छटपटा रहा हूँ. सिसक रहा हूँ. मैं उस दर्द से निकलने का भरसक प्रयास कर रहा हूँ पर निकल नही पा रहा हूँ.

मैं उस पीड़ा को और ना सह सका. मेरे पैरों की शक्ति क्षीण होती चली गयी और मैं बीच रास्ते में ही धम्म से ज़मीन पर बैठ गया और सोचने लगा. 'क्या मैं सच में इतना अपंग और लाचार इंसान हूँ कि मुझे दो वक़्त की रोटी के लिए किसी बच्ची की हत्या करने पर आमादा होना पड़े. क्या मेरा ये शरीर इस लायक भी नही कि मैं मेहनत से अपने लिए दो वक़्त की रोटी की जुगाड़ ना कर सकूँ? धिक्कार है मुझपर.....और मेरे इस शरीर पर. क्या मुझसे भी नीच इंसान होगा कोई धरती पर? मुझसे तो अच्छे वो भीख-मन्गे हैं जो दूसरों के आगे हाथ फैलाते हैं. मैं तो उनसे भी गया गुज़रा हूँ.'

इस विचार के आते ही मुझे अपने अगले पिछले सारे पाप याद आने लगे. मुझे खुद से नफ़रत सी होने लगी. मैने उसी क्षण निर्णय किया कि अब से मैं कोई पाप नही करूँगा. मैने कांचन के माथे को चूमा और फिर से उसे अपनी छाती से लगा लिया. मैने तय कर लिया

कि मुनीम जी को दिए वचन के अनुसार अब ये बच्ची उनके लिए और अपने माता-पिता के लिए मर चुकी है. अब आज से ये मेरी बेटी बनकर जिएगी. अब आज से इसका पिता मैं हूँ. मैं इसके लिए मेहनत करूँगा मज़दूरी करूँगा. दूसरों के घरों में-खेतों में काम करूँगा पर इसे कोई कष्ट नही होने दूँगा.

इस विचार के साथ ही जब मैने पुनः उसे अपनी छाती से भीचा तो मेरे अंदर की सारी पीड़ा ख़तम हो गयी. मेरे निर्जीव शरीर में फिर से जान लौट आई. मैं खुशिपुर्वक उठा और अपने घर के रास्ते चल पड़ा.

घर पहुँचा तो शांता मेरे चेहरे पर खुशी और हाथ में बच्चा देखकर दंग रह गयी. मैने उसे और महरि जो पड़ोस के गांव से मेरी बीवी को देखने आई थी-दोनो को पूरी कहानी बता दिया. साथ ही उनसे ये कसम भी लिया कि इस बात को किसी से ना कहे.उन दोनो ने हामी भरी.

मैने सुबह ये बात प्रचारित कर दी कि मेरी बीवी मेरी बेटी को जन्म देते ही मर गयी.

इसी तरह कांचन मेरे घर पलने लगी.

" ठाकुर साहब , जिस दिन से कांचन मेरी गोद में आई तब से लेकर आज तक मैने कोई भी बुरा काम नही किया . मैने मेहनत की मज़दूरी की , दूसरे के खेतों में बैल की तरह काम किया मगर कांचन के मूह में एक नीवाला भी हराम का नही डाला . उसे जो कुछ भी खिलाया , पिलाया पहनाया , ओढ़ाया सब अपनी मेहनत और खून पसीने की कमाई से .

मैं खुद भूखा रहा पर उसे भर पेट खिलाया. मैने उसे सदेव अपने पलकों में बिठाकर रखा. कभी भूल से भी कोई कष्ट नही दिया. कहने को तो मैं उसका कोई नही पर उससे मेरा ऐसा नाता जुड़ गया है कि उसके लिए सौ बार मर भी सकता हूँ और सौ बार जी भी सकता हूँ."

" ऐसा ना कहो धनपाल . ऐसा ना कहो ." ठाकुर साहब तड़प कर बोले - " तुम्हारा कांचन का बहुत गहरा नाता है . फिर मत कहना तुम उसके कुछ नही लगते . तुम उत्तम व्यक्ति हो धनपाल . हमारा तो दिल कर रहा है , हम अभी झुक कर तुम्हारे पावं छू लें ."

" मुझे शर्मिंदा ना कीजिए ठाकुर साहब , आप तो देवता स्वरूप इंसान हैं . मैने इतने दिन आपसे आपकी बेटी को दूर रखा इसके लिए हो सके तो मुझे माफ़ कर दीजिए ." धनपाल हाथ जोड़ते हुए बोला .

" धनपाल , जन्म देने वाले से पालने वाला बड़ा होता है . कांचन पर हमसे अधिक तुम्हारा अधिकार है . हम तुमसे बस एक विनती करना चाहते हैं , अगर तुम्हे ऐतराज़ ना हो तो कांचन को हवेली में रहने की इज़ाज़त दे दो . हम इसलिए नही कह रहे हैं कि तुम्हारे घर में उसे कोई दिक्कत है . नही ..... हरगिज़ नही , हम ऐसा सोच भी नही सकते . हम तो बस इतना चाहते हैं कि वो कुछ दिन यहाँ रहे , ताकि .... जो प्यार जो दुलार हम उसे दे ना सकें . वो फिर से उसे दे सकें . कुछ दिन उसके पिता होने का गौरव .... हम भी हासिल कर सकें ." ये कहने के बाद , ठाकुर साहब उम्मीद की नज़र से धनपाल को देखने लगे .

" मुझे और शर्मिंदा मत कीजिए ठाकुर साहब . अभी चलिए और अपनी बेटी को अपने घर ले आइए ." धनपाल ने खुशी से अपने आँसू छलकाते हुए कहा .

" तुम धन्य हो धनपाल , तुम्हारे मूह से ये शब्द सुनने के लिए हमारे कान तरस रहे थे , आओ चलें " ठाकुर साहब ये कहकर आगे बढ़ने को हुए , तभी मुनीम जी से नज़र मिलते ही ठिठक गये . वे एक घृणात्मक दृष्टि मुनीम जी पर डालते हुए बोले - " मुनीम जी , हम आपको आपके उस अपराध के लिए क्षमा करते हैं जो कि आपने स्वार्थ में आकर मेरी बच्ची को मुझसे दूर कर दिया . पर इस अपराध के लिए आपको कभी क्षमा नही करेंगे कि आपने हमारी दूध - मूही बच्ची को जान से मरवाने की कोशिश की . हम ये कभी नही भूलेंगे मुनीम जी .... हो सके तो अपनी सूरत फिर कभी हमारे सामने ना लाइयेगा ."

मुनीम जी की नज़रें अपराध भाव से ज़मीन पर गढ़ सी गयी. वो कुछ देर ज़मीन ताकते रहे फिर काँपते पैरों के साथ हवेली से बाहर निकल गये.

ठाकुर साहब और धनपाल के कदम भी बाहर की ओर उठते चले गये. फिर दोनो जीप में बैठकर बस्ती की ओर बढ़ गये.

यशोदा जी अभी भी पत्थर की बुत बनी मुख्य द्वार की तरफ देख रही थी. धनपाल द्वारा रहस्योदघाटन से वो अभी तक हैरान थी. अचानक वो पलटी और अपने कमरे की तरफ चल दी. जैसे ही उनके कदम सीढ़ियों की तरफ बढ़े उन्हे डिंपल खड़ी दिखाई दी. अजित भी दूसरी और खड़ा आश्चर्य में डूबा हुआ था.

यशोदा जी सीढ़ियाँ चढ़ती हुई डिंपल और अजित के पास आई. उन्होने एक व्यंग भरी दृष्टि डिंपल पर डाली. यशोदा जी से नज़र मिलते ही डिंपल की नज़रें शर्म से झुक गयी.

" अजित अपने कमरे में चलो . तुमसे कुछ बात करनी है ." यशोदा जी अजित से बोली और आगे बढ़ गयी . अजित के कदम खुद ब खुद मा के पिछे हो लिए . पर जैसे ही वो दरवाज़े के अंदर होने को हुआ उसकी नज़र ना चाहते हुए भी डिंपल की तरफ घूम गयी . जैसे ही उसकी नज़र डिंपल पर पड़ी , वो अंदर तक काँप गया . डिंपल उसे ही देख रही थी , किंतु उसके देखने में जो पीड़ा थी वो सीधे अजित के दिल तक आ रही थी . उसने डिंपल को इतना उदास कभी नही देखा था . अजित को अपना दिल पिघलता हुआ सा लगा . वो ज़्यादा देर डिंपल की पीड़ा भरी नज़रों का सामना ना कर सका . वो तेज़ी से कमरे के अंदर दाखिल हो गया .

उसके अंदर जाते ही डिंपल भारी कदमों से सीढ़िया उतरती हुई हवेली से बाहर निकल गयी.

२२

मुनीम जी इस वक़्त अपनी पत्नी रुक्मणी के साथ बात विवाद में उलझे हुए थे. रुक्मणी जी क्रोध में मुनीम जी को उल्टी सीधी बात सुनाए जा रही थी.

तभी दरवाज़े से डिंपल को खड़ा देख वे दोनो ही उसकी तरफ लपके.

मुनीम जी उसे देखकर पीड़ा से भर उठे. किंतु रुक्मणी जी खुशी से रो पड़ी थी. आज बरसों बाद रुक्मणी जी डिंपल को अपनी छाती से लगा रही थी. किंतु जो डिंपल बचपन से मा के वात्सल्य के लिए तड़पति रही थी आज उसे मा का वात्सल्य अच्छा नही लग रहा था. उसके पिता की वजह से उसकी छाती पर जो घाव लगा था उसे ममता का मरहम भी नही भर पा रहा था. उसकी तड़प बढ़ती ही जा रही थी.

डिंपल घायल नज़रों से मुनीम जी को देखने लगी. -"आपने ऐसा क्यों किया पिताजी?"

" सिर्फ़ तुम्हारी खुशी के लिए डिंपल ." मुनीम जी दुखी स्वर में बोले - " मैं जानता हूँ सच्चाई जान लेने के बाद तुम्हारे दिल को बहुत ठेस पहुँची है , पर ये सब उस नमक - हराम धनपाल की वजह से हुआ है . मैं उसे ज़िंदा नही ...."

" अपने दोष को किसी और का नाम मत दीजिए पिताजी ." डिंपल मुनीम जी की बात काटते हुए बोली . - " धनपाल काका ने तो दूसरे की बेटी को जीवन दान दिया है , लेकिन आपने ...... आपने तो अपनी ही बेटी को जीते जी मार डाला "

" ऐसा मत कह डिंपल ." मुनीम जी तड़प कर बोले - " सब ठीक हो जाएगा . अभी ज़्यादा कुछ भी नही बिगड़ा है . हां हवेली तुमसे ज़रूर छीन गयी है , पर अजित को तुमसे कोई नही छीन सकता . खुद यशोदा जी ने ठाकुर साहब के सामने कसम ली है कि वो अजित का विवाह तुमसे करेंगी ."

" लेकिन अब मैं अजित से शादी नही कर सकती पिता जी " डिंपल एक आह भर कर बोली - " मैं उससे शादी करके ज़िंदगी भर उसके मज़ाक का पात्र नही बन सकती ."

" डिंपल ये क्या कह रही है तू ?" मुनीम जी आश्चर्य से बोले - " तू चिंता मत कर , मैने कहा ना सब ठीक हो जाएगा . तू आराम कर मैं अभी किसी काम से बाहर जा रहा हूँ , लौटकर आने के बाद इस संबंध में बात करूँगा ." मुनीम जी बोले और दरवाज़े से बाहर निकल गये .

मुनीम जी के जाने के बाद रुक्मणी डिंपल को बिठाकर उसे दुलारने लगी. मा की ममता से उसका दुख थोड़ा कम तो हुआ पर उसे सुकून नही मिला.

" मैं सोना चाहती हूँ मा ." डिंपल रुक्मणी से बोली .

रुक्मणी ने उसके लिए कमरा तैयार कर दिया और बिस्तर लगा दिया. डिंपल ने बिस्तर पर गिरकर अपनी आँखें मूंद ली. सोना तो बस एक बहाना था....वो असल में एकांत चाहती थी. ताकि वो अपने अतीत और वर्तमान का लेखा जोखा कर सके.

डिंपल इस वक़्त बेहद अपमानित महसूस कर रही थी. वो होती भी तो क्यों ना. बचपन से इस अभिमान से जीती आई थी कि वो ठाकुर की बेटी है, पर आज इस सत्य के खुल जाने से उसे गहरा आघात लगा था. हालाँकि वो जानती थी उसके पिता ने जो भी किया उसके भले की सोच कर किया. किंतु ये बात ज़माना तो नही समझेगा. अब वो ज़माने को क्या मूह दिखाएगी. अब लोग क्या कहेंगे, अब सब जान चुके हैं कि वो ठाकुर की नही उसके नौकर मुनीम की बेटी है. अब वह कैसे अपना सर उँचा रख सकेगी? मुनीम जी की करनी ने ना केवल उसके सपनो को बल्कि उसके पूरे वज़ूद को तोड़कर रख दिया था. उसे इस घर में एक घुटन सी महसूस हो रही थी. उसे समझ में नही आ रहा था कि वो क्या करे कि उसे इस घुटन से मुक्ति मिल सके. ऐसी कौनसी जगह जाए जहाँ उसके मन को थोड़ा सुकून मिल सके.

सहसा ! उसके मानस-पटल पर कल्लू का चित्र उभरा. वह झटके से बिस्तर पर उठ बैठी. फिर कुछ सोचते हुए खड़ी हुई और कमरे से बाहर निकली.

हॉल में आकर उसने रुक्मणी की तलाश में अपनी नज़रें दौड़ाई. उसे किचन से कुछ आवाज़ें आती सुनाई दी. रुक्मणी शायद किचन में थी. डिंपल खड़ी कुछ पल सोचती रही फिर धीमे कदमों से बाहर निकल गयी.

उसने अपने पावं का रुख़ कल्लू के घर की तरफ कर दिया.

शांता अभी भी कांचन के सिरहाने बैठी उसके सर को सहलाए जा रही थी. कांचन का रोना तो कब का बंद हो चुका था. पर उसके दिल में उदासी अब भी छाई हुई थी. चिंटू उसकी गोद पर लेटा हुआ था. हरिया जी बरामदे में बैठे बीड़ी पी रहे थे.

तभी घर के बाहर जीप के रुकने की आवाज़ से सबका ध्यान टूटा. शांता के साथ कांचन और चिंटू भी उठकर कमरे से बाहर निकले. जैसे ही ये लोग बरामदे तक पहुँचे.....उन्हे धनपाल के साथ ठाकुर साहब आँगन में प्अजितष्ट होते दिखाई दिए.

ये पहली मरतबा था जब ठाकुर साहब हवेली से निकल कर बस्ती में किसी के घर तक आए हों. कांचन के आश्चर्य की सीमा ना रही.

कांचन पर नज़र पड़ते ही ठाकुर साहब का हृदय वात्सल्य से भर उठा. उनके कदम कांचन के करीब आते गये.

शांता को कुछ कुछ समझ में आ चुका था, किंतु हरिया जी और कांचन के लिए ठाकुर साहब का आना अब भी पहेली बना हुआ था.

शांता और हरिया जी के हाथ एक साथ ठाकुर साहब को नमस्ते करने के लिए उठ खड़े हुए.

ठाकुर साहब उनके नमस्ते का उत्तर देते हुए कांचन के पास जाकर खड़े हो गये. फिर सजल नेत्रों से उसके उदास चेहरे को देखने लगे.

कांचन के हाथ भी नमस्ते की मुद्रा में जुड़ गये.

" बेटी , इनके पावं छु लो , ये तुम्हारे पिता हैं ." धनपाल ने हैरान परेशान सी खड़ी कांचन से कहा .

" क .... क्या ...... प ...... पिता ?" कांचन के मूह से अनायास निकला .

हरिया जी भी धनपाल की बात से बुरी तरह चौंक पड़े थे.

" हां बेटी . मैने तो तुम्हे सिर्फ़ पाला है , वास्तव में तुम इनकी संतान हो . ठाकुर साहब ही तुम्हारे असली पिता हैं ." धनपाल कांचन के सर पर हाथ फेरते हुए बोला .

कांचन आँखों में आश्चर्य लिए ठाकुर साहब को देखने लगी.

ठाकुर साहब की आँखें गीली थी. उनके चेहरे पर बेटी को गले से लगाने की गहरी तड़प थी. उन्होने अपनी बाहें खोल दी. कांचन आगे बढ़ी और उनकी बाहों में समा गयी. उनके बाहों में सिमटते ही कांचन को वो पल याद आया जब वो छोटी थी और हवेली में डिंपल के साथ खेला करती थी. तब ठाकुर साहब को देखते ही डिंपल उछलकर उनकी गोद में बैठ जाती थी. तब कांचन का मन भी होता था कि वो भी ठाकुर साहब की गोद में जाए, पर लज्जावश वो ऐसा नही कर पाती थी. हां ठाकुर साहब कभी कभार प्यार से उसके सर पर हाथ फेर देते थे या कभी कभार झुक कर उसके माथे को चूम लिया करते थे. पर उन्होने कभी डिंपल की तरह कांचन को अपनी छाती से भींचा नही था. ना कभी उसे अपनी गोद में उठाए थे. उनकी गोद में चढ़ने की तमन्ना कांचन के दिल में हमेशा रही थी. फिर जैसे जैसे बड़ी होती गयी ये दूरी और बढ़ती गयी. हालाँकि ठाकुर साहब कांचन की इस बाल भावना से अंजान थे अगर वे जानते होते तो निसंदेह वो कांचन को भी अपनी गोद में लेने से नही हिचकिचाते. वे कांचन से भी उतना ही प्यार करते थे जितना की डिंपल से.

किंतु आज ठाकुर साहब की छाती से लगकर कांचन को एक असीम सुख का अनुभव हो रहा था. यही दशा ठाकुर साहब की भी थी.

शांता, धनपाल और हरिया जी पिता पुत्री के इस मिलन से भावुक हो उठे थे.

कुछ देर बाद ठाकुर साहब कांचन से अलग हुए और शांता से बोले - "शांता तुमने मेरी बेटी को मा जैसा प्यार दिया. इसे तो हवेली में भी वो प्यार वो खुशी नही मिलती जो इस घर से, तुम लोगों से मिला है. हम तुम्हारे अभारी हैं. अब हमें इज़ाज़त दो कि हम कांचन को हवेली ले जा सकें" ये कहते हुए ठाकुर साहब ने शांता के आगे हाथ जोड़ दिए.

उत्तर में शांता ने भी सहमति में सिर हिलाते हुए अपने हाथ जोड़ दिए. फिर कांचन से बोली - "जाओ बेटी, अब अपने असली घर जाओ, पर कुछ दिन तक यहाँ आती रहना. हमें तुम्हारी आदत हो चुकी है."

इस घर को छोड़ कर जाने की बात से कांचन का दिल बैठ गया. उसके मन में आया कि वो अभी मना कर दे. पर कर ना सकी.

" दीदी कहाँ जा रही है मा ?" अब तक खामोश खड़े चिंटू की समझ में कुछ ना आया तो शांता से पूछ बैठा .

उसकी बात सुनकर कांचन उसके पास आई और उसे अपनी छाती से लगा लिया. फिर ठाकुर साहब से बोली - "पिताजी, क्या मैं चिंटू को भी अपने साथ लेकर जा सकती हूँ? ये मेरे बगैर नही रह सकेगा."

" बेटी अब से वो घर तुम्हारा है , तुम बेशाक़ अपने भाई को अपने साथ रखो , हम तो चाहते थे कि तुम्हारे साथ साथ इस घर के सारे लोग हमारे साथ रहें . पर हम ऐसा कहकर धनपाल के स्वाभिमान को ठेस नही पहुँचाना चाहते ."

" हम इस घर में खुश हैं ठाकुर साहब . आपने हमारे लिए इतना सोचा यही काफ़ी है ." धनपाल ने झेंपते हुए कहा .

ठाकुर साहब आभारपूर्ण दृष्टि धनपाल पर डालकर कांचन के साथ बाहर जाने लगे. चिंटू भी कांचन के साथ था.

धनपाल शांता और हरिया जी भी पिछे पिछे बाहर तक आए.

कांचन एक बार सबसे गले मिलकर जीप में बैठ गयी. जीप के आगे बढ़ते ही उसे लगा जैसे वो किसी अंजानी दुनिया में जा रही हो. उसकी नज़रें धनपाल पर ही टिकी हुई थी. कांचन का दिल भी वैसे ही रो रहा था जैसे सच्चाई जान लेने के बाद डिंपल का दिल रोया था.

दोनो का दुख एक समान था. उनके पिता वो ना थे जिन्हे वे दोनो समझती आई थी. किंतु फिर भी उनके दुख में एक विशेष अंतर था. डिंपल इस बात से दुखी थी कि मुनीम जी की बेटी होने की वजह से अब वो ज़िंदगी भर सर उठाकर नही जी सकेगी. अब उसे उमर भर ज़माने की चुभती नज़रों का सामना करना पड़ेगा. जिसकी उसे आदत नही थी. किंतु कांचन इस बात से दुखी थी कि जिस धनपाल के गोद में वो बचपन से खेलती आई थी. जिसकी छाती से लगकर वो चैन की नींद सो जाया करती थी. जिसके कंधो पर बैठकर वो

खुशी से इतराया करती थी. जिसके हाथों से नीवाला खाकर वो बड़ी हुई थी.....वो उसका पिता ना था. कांचन इस बात से दुखी थी कि जो स्नेह जो वात्सल्य जिस व्यक्ति से अब तक वो लेती आई थी वो उसका पिता ना था.

कांचन इस बात से उतनी खुश नही थी कि अब वो ठाकुर साहब की बेटी कही जाएगी, हवेली में मौज से रहेगी, दिन भर नौकर चाकर उसके आगे पिछे घुमा करेंगे. और अब वो बिना किसी बाधा के अजित से शादी कर सकेगी. जितना दुख उसे इस बात से था की धनपाल उसका पिता ना था.

नीक्की के कदम कल्लू के घर के बाहर जाकर रुके. उसका घर क्या था बस एक टूटा फूटा झोपड़ा जिसकी दीवारें मिट्टी की बनी हुई थी और छप्पर उजड़ा हुआ था....जिसके उपर प्लास्टिक के टुकड़े जगह जगह पर पेबंद की तरह चिपकाए गये थे.

डिंपल कुछ देर तक कल्लू के झोपडे को देखती रही फिर आगे बढ़ी और दरवाज़े तक पहुँची. दरवाज़ा खुला था. डिंपल ने अंदर झाँका. उसे कल्लू एक मरियल सी चारपाई पर लेटा हुआ दिखाई दिया. वह खेत से आने के बाद चारपाई पर लेटा अपनी थकान मिटा रहा था. वो किसी गहरी सोच में डूबा हुआ लग रहा था. अचानक ही उसे दरवाज़े पर किसी के खड़े होने का एहसास हुआ. उसने अपनी गर्दन घूमाकर दरवाज़े की तरफ देखा. उसे दरवाज़े पर डिंपल खड़ी दिखाई दी. डिंपल पर नज़र पड़ते ही वह झट से उठ बैठा.

" डिंपल जी , आप ?" उसके मूह से स्वतः ही निकला .

" क्या मैं अंदर आ सकती हूँ ." डिंपल ने कल्लू से पुछा .

" कौन है कल्लू ? किससे बात कर रहा है तू ?" कल्लू डिंपल से कुछ बोल पाता उससे पहले ही उसकी मा की आवाज़ आई . उसकी मा का नाम झूमकि था . झूमकि चारपाई पर लेटी हुई थी जब कल्लू और डिंपल की आवाज़ उसके कानो से टकराई .

" मा , ठाकुर साहब की बेटी डिंपल जी आई हैं " कल्लू जब तक अपनी मा को उत्तर देता डिंपल अंदर दाखिल हो चुकी थी .

ठाकुर साहब की बेटी उसके घर आई है ये जानकार झूमकि आश्चर्य से भर उठी. वो धीरे से चलती हुई उसके पास आई और प्यार से उसके सर पर हाथ फेरने लगी. डिंपल एक सुखद एहसास से भर उठी. कुछ देर पहले जो घुटन उसके अंदर थी वो झूमकि के स्नेह से पल भर में दूर हो गयी. वह जिस सुकून की तलाश में घर से निकली थी, वही सुकून उसे झूमकि के स्नेह से मिल रहा था.

झूमकि अपनी बूढ़ी आँखों से एक टक डिंपल को देखती जा रही थी. वह सोच रही थी जिस घर में कभी तीज त्योहार में भी लोग मिलने नही आते थे आज उस घर में ठाकुर साहब की बेटी कैसे आ गयी?. उसे वो पल याद आ गया जब कल्लू बारिश से भीगने के बाद घर आया था. उस रात उसे थोड़ी बुखार भी आई थी. वह बेहोशी की हालत में बार बार

कांचन का नाम लेकर बड़बड़ाता रहा था. झूमकि उसके मूह से कांचन का नाम सुनते ही सब समझ गयी थी कि कल्लू कांचन से प्यार करने लगा है. उस रात वो कल्लू के भाग्य पर खुद भी रोती रही थी. किंतु उसने उस रात एक निर्णय भी लिया था. वाह तय कर चुकी थी कि एक दो दिन में वो धनपाल से मिलकर कल्लू और कांचन के रिश्ते की बात करेगी.

ठीक तीसरे दिन कल्लू के खेत जाने के उपरांत दोपेहर से पहले वो धनपाल के घर के लिए निकली. धनपाल से उसकी पहचान कुछ ज़्यादा नही थी. बस एक गांव में होने की वजह से जितनी होनी चाहिए उतनी ही थी. कोई विशेष संबंध नही था. गांव के रिश्ते से धनपाल उसका देवेर लगता था.

राह चलते हुए उसके मन में ढेरो शंकाए थी. उसे उम्मीद तो नही थी कि धनपाल अपनी फूल सी बेटी का हाथ उसके कल्लू के हाथ में देगा. पर मा तो मा होती है. बेटे के लिए वो एक बार धनपाल के आगे झोली फैलाने को भी तैयार हो गयी थी. मन में एक आस थी- शायद धनपाल को उसपर तरस आ जाए और इस रिश्ते के लिए हां कह दे.

कुछ ही देर में झूमकि आशा-निराशा के झूले में झूलती हुई धनपाल की चौखट तक पहुँची. अभी वो अंदर जाने की सोच ही रही थी कि उसे आँगन के खुले दरवाज़े से अंदर का दृश्य दिखाई दे गया. बरामदे में धनपाल के पूरे परिवार के साथ कोई शहरी औरत बैठी थी. उसका साहस नही हुआ कि वो अंदर जाए. वह नही चाहती थी कि पराई स्त्री के सामने उसे लज्जित होना पड़े. किसी के दिल का हाल कौन जाने...क्या पता धनपाल कुछ ऐसा बोल दे जो उसे उस औरत के सामने अपमानित कर दे. वह बाहर ही खड़ी उस औरत के बाहर निकलने की प्रतीक्षा करने लगी.

कुछ देर खड़ी रहने के बाद वह कान लगाकर अंदर से आती आवाज़ को सुनने का प्रयास करने लगी. धनपाल और शांता की आवाज़ तो उसके कानो तक नही आ रही थी. पर यशोदा जी की उँची आवाज़ उसके कानो तक साफ साफ आ रही थी. उनके मूह से कांचन और अजित की बात सुनकर वो समझ गयी कि ये स्त्री हवेली में ठकुराइन की इलाज़ करने आए डॉक्टर बाबू की मा है. और इस वक़्त वो अपने बेटे के रिश्ते की बात कर रही है.

पूरी बात जान लेने के बाद उसका दिल बैठ गया. झूमकि जिस मूह गयी थी उसी मूह लौट आई. उस दिन उसे अपने कल्लू के भाग्य पर बहुत रोना आया था. उसने कल्लू की शादी की उम्मीद ही छोड़ दी थी.

किंतु आज डिंपल को अपने घर देख उसका मन फिर से वोही कल्पनाए करने लगा था. हालाँकि वो ज़मीन और आसमान के अंतर को समझ रही थी. पर दिल के हाथों ऐसा सोचने पर मजबूर थी.

" बेटी , सच सच बता . तू मेरे घर किस लिए आई है ? आज तक इस घर में लोग तीज त्योहार में भी मुश्किल से ही आते हैं . फिर तू तो इतने बड़े बाप की बेटी है ." झूमकि जिज्ञासा वश पुछि .

" मा जी सबसे पहले तो मैं ये बता दू कि मैं ठाकुर साहब की बेटी नही . मेरे पिता मुनीम जी हैं . उन्होने ही मुझे , जब मैं पैदा हुई थी ..... ठाकुर साहब की बेटी से बदल दिया था . किंतु अब ये भेद खुल चुका है कि मेरे असली पिता मुनीम जी हैं ."

कल्लू और झूमकि के मूह, खुले के खुले रह गये.

" अगर तुम मुनीम जी की बेटी हो तो ठाकुर साहब की असली बेटी कौन है ?" झूमकि ने अगला सवाल किया .

" कांचन !" डिंपल के मूह से धीरे से निकला .

" क्या ....?" कल्लू चौंकते हुए बोला .

" हां कल्लू , कांचन ही ठाकुर साहब की असली बेटी है जिसे धनपाल बाबा ने पाला है ." ये कहने के बाद , डिंपल क्षण भर कल्लू को देखती रही . और उसके मनोभाव को पढ़ने की कोशिश करती रही .

इस सत्य को जान लेने के बाद जहाँ कल्लू को इस बात की खुशी थी कि कांचन ठाकुर साहब की बेटी है वहीं उसके दिल में जो रही सही उम्मीद थी कांचन को पाने की, वो भी टूट चुकी थी. अब तो कांचन के बारे में वो कल्पना भी नही कर सकता था. उसका सर पीड़ा भाव से नीचे झुक गया.

" बेटी , ये जानकार बड़ा दुख हुआ कि तुम्हारे साथ ऐसा हुआ . जिस घर को जिस इंसान को बचपन से अपना घर अपना पिता मान कर चली , आज वो पराया हो गया .

तुम्हारे मन को तो बहुत ठेस पहुँचा होगा ." झूमकि डिंपल के दुख का अनुभव कर भावुक हो उठी .

मा की बात से कल्लू का ध्यान भी डिंपल के दुख की और गया. सच में....उसने तो डिंपल के दुख का अनुभव ही नही किया था. - "डिंपल जी, मुझे इस बात का खेद है. आपके साथ जो कुछ भी हुआ, अच्छा नही हुआ."

" छोड़ो इन बातों को ." डिंपल सर झटक कर बोली - " मैं यहाँ किसी और काम से आई हूँ . अगर आप लोग हां कहे तो ?"

" हम भला आपके किस काम आ सकते हैं डिंपल जी ?" कल्लू सवालिया नज़रों से डिंपल को देखा .

" मा जी ." डिंपल झूमकि के तरफ मुड़ती हुई बोली . - " मैं आपके बेटे से शादी करना चाहती हूँ . क्या आप इसकी इज़ाज़त दोगि ?"

डिंपल की बात सुनकर झूमकि की पथराई हुई बूढ़ी आँखें हैरत से फैल गयी. उसे लगा जैसे वो कोई सपना देख रही है. उसे अपनी कानो सुनी पर अभी भी विश्वास नही हो रहा था.

" ये आप क्या कह रही हैं डिंपल जी . कहाँ हम कहाँ आप ? धरती - आकाश का मिलन कभी नही होता डिंपल जी ." कल्लू झूमकि के बोलने से पहले बोल उठा .

" मैं भी वहीं हूँ कल्लू जहाँ तुम हो ." डिंपल कल्लू के तरफ पलटकर बोली - " ध्यान से देखो ...... मैं भी उसी धरती पर खड़ी हूँ जिस पर तुम खड़े हो . हमारे बीच धरती आकाश का नही बस एक कदम का फासला है . मैं अपने घर से चलकर यहाँ तक आई हूँ , अब एक कदम तुम भी आगे बढ़ जाओ ."

" प ...... पर ....!" कल्लू के शब्द उसके अंदर ही घुटकर रह गये . फिर कुछ सोचते हुए बोला - " लेकिन डिंपल जी , आपके पिता इस रिश्ते के लिए कभी हां नही कहेंगे . मुनीम जी ने ना जाने आपके लिए कैसे कैसे सपने देखे होंगे . भला मेरे घर में आपको क्या मिलेगा ?"

" मुझे बड़ा घर , गाड़ी , दौलत नही चाहिए कल्लू . मुझे अब इन चीज़ों से नफ़रत हो गयी है . मैं तो बस एक ऐसा साथी चाहती हूँ जो मुझसे सच्चा प्यार करे . मैं प्यार की भूखी हूँ कल्लू ...... मुझे हर किसी ने ठुकराया है , प्लीज़ तुम इनकार मत करो . मुझे अपना लो . तुम जैसे रखोगे मैं रह लूँगी ." डिंपल भारी गले से बोली . वह बेहद दुखी थी .

कल्लू फटी फटी आँखों से डिंपल को देख रहा था. जीवन भर वो किसी के प्यार के लिए तरसता रहा था. ये ठीक था की वो कांचन से प्यार करता था. पर कांचन ने कभी उसे इस प्यार की नज़र से नही देखा. किंतु आज डिंपल के दिल में खुद के लिए प्यार देखकर उसकी खुशी की सीमा ना रही थी. उसने कभी भी सोचा नही था कि उसके लिए भी कभी कोई लड़की तड़पेगी. कोई उसके आगे भी प्यार की भीख माँगेगी. किंतु ऐसा था. आज डिंपल उसके सामने अपने प्यार का इज़हार कर रही थी. कल्लू इस खुशी को बर्दास्त नही कर पा रहा था. उसकी आँखें छल्छला आई. उसके होंठ कुछ कहने के लिए खुले पर सिर्फ़ काँप कर रह गये.

" बेटी ..... इससे क्या पूछ रही है . मैं तुम्हे अपनी बहू स्वीकार करती हूँ . तुझे ईश्वर ने सिर्फ़ मेरे बेटे के लिए ही बनाया है . तू ठहर .....!" झूमकि बोली . और कोने में पड़े एक पुराने संदूक के तरफ बढ़ गयी फिर संदूक में कुछ ढूँढने लगी . वह जब लौटी तो उसके हाथ में मंगलसूत्र था .

" ये ले इसे कल्लू के हाथ में दे . ये मेरा मंगलसूत्र है . इसके पिता ने मुझे पहनाया था . मैं बरसो से इसी दिन के लिए संभाल कर रखी थी ." झूमकि ने डिंपल के हाथ में मंगलसूत्र थमाते हुए कहा .

डिंपल झूमकि के हाथ से मंगलसूत्र लेकर कल्लू के आगे बढ़ा दी. - "मुझे अपनी पत्नी होने का दर्ज़ा दे दो कल्लू. मैं तुम्हारा उपकार जीवन भर नही भूलूंगी."

" कल्लू सोच मत ..... विधाता ने तुम्हे ये मौक़ा दिया है . इस मौक़े को ठुकरा मत . इसके गले में मगलसूत्र पहना दे बेटा ." झूमकि ने कल्लू से कहा .

कल्लू का हाथ आगे बढ़ा और डिंपल के हाथ से मंगलसूत्र ले लिया. फिर उसने डिंपल को लेकर घर के एक कोने में बने छोटे से मंदिर के पास गया. वहाँ से चुटकी भर सिंदूर लिया

और डिंपल की माँग भर दिया. तत्पश्चात....उसने डिंपल के गले में मंगलसूत्र भी पहना दिया.

झूमकि की आँखें खुशी से गीली हो गयी. वह डिंपल की बालाएँ लेने लगी.

डिंपल और कल्लू ने झुक कर झूमकि का आशीर्वाद ले लिया.

तभी !बाहर जीप के रुकने की आवाज़ आई. कल्लू बाहर निकला तो मुनीम जी जीप से उतरते दिखाई दिए.

डिंपल और झूमकि भी बाहर निकल आए थे. मुनीम जी को आते देख झूमकि थोड़ी चिंतित हो गयी थी. किंतु डिंपल शांत थी.

" नमस्ते मुनीम जी ." जैसे ही मुनीम जी नज़दीक आए कल्लू हाथ जोड़कर बोला .

किंतु, मुनीम जी ने जैसे उसकी बात सुनी ही ना हो. वो सीधे डिंपल के पास आए और बोले - "डिंपल....तू यहाँ क्या कर रही है बेटी. मैं तुम्हे कहाँ कहाँ ढूंढता फिर रहा हूँ. तूने अपनी मा को भी नही बताया कि तू बस्ती आ रही है. चल घर चल.....तेरी मा परेशान है."

" अब मेरा घर यही है पिताजी . मैं कल्लू से शादी कर चुकी हूँ . अब मेरा घर और मेरा परिवार सब बदल चुका है ." डिंपल शांत किंतु मजबूत स्वर में बोली .

" क्या बकवास कर रही है तू ?" मुनीम जी पागलों की तरह चीखे . तभी उनकी नज़र डिंपल की माँग पर सजे सिंदूर और गले में पड़े मंगलसूत्र पर पड़ी . - " ये तूने क्या कर दिया बेटी . क्या तुझे मुझपर भरोसा नही था . मेरे रहते तूने अपनी ज़िंदगी नर्क बना ली . ये मुझे किस जुर्म की सज़ा दे रही है तू ?"

" जुर्म तो आपने अनगिनत किए हैं पापा . पर सच पुछिये तो मैं इस रिश्ते से खुश हूँ . अब आप आए हैं तो आशीर्वाद देकर जाइए ."

" हरगिज़ नही ." मुनीम जी नथुने फुला कर बोले - " मैं तुम्हारी बर्बादी पर तुम्हे आशीर्वाद दूँ . ये मुझसे हरगिज़ नही होगा . मैं इस रिस्ते को ही नही मानता ."

मुनीम जी की बात से डिंपल के साथ साथ कल्लू और झूमकि भी सकते में आ गये.

" कल्लू ......!" मुनीम जी आगे बोले . - " तू जितने पैसे चाहे मुझसे ले ले पर डिंपल को इस रिश्ते से आज़ाद कर दे ."

" ये आप क्या कह रहे हैं मुनीम जी ?" कल्लू नागवारि से बोला . उसे मुनीम जी की बात अच्छी नही लगी थी . - " मैने डिंपल जी को शादी के लिए मजबूर नही किया . इन्होने खुद मेरे आगे शादी की इच्छा ज़ाहिर की थी ."

" कुछ भी हो पर मैं इस शादी को नही मानता . तुम मेरी बेटी को छोड़ दो मैं तुम्हे इतने पैसे दूँगा कि तुम्हारी पूरी ज़िंदगी आराम से गुज़र जाएगी ."

" बस कीजिए पिताजी . मेरे पति का और अपमान मत कीजिए . अगर आशीर्वाद नही दे सकते तो आप यहाँ से चले जाइए और हमें सुकून से रहने दीजिए ."

" डिंपल ये तू कह रही है ?" मुनीम जी आश्चर्य से डिंपल को देखते हुए बोले .

जवाब में डिंपल ने अपना चेहरा घुमा लिया.

" ठीक है , मैं जा रहा हूँ . पर एक दिन तुझे अपने फ़ैसले पर अफ़सोस होगा और तब तू लौटकर मेरे ही पास आएगी ." मुनीम जी बोले और गुस्से से जीप की तरफ बढ़ गये .

उनके बैठते ही जीप मूडी और फ़र्राटे भरते हुए निकल गयी.

मुनीम जी अपने घर पहुँचे. उन्हे देखते ही रुक्मणी बोली - "डिंपल कहाँ है जी? आप तो उसे ढूँढने गये थे."

" वो उस भीखमंगे कल्लू से शादी कर चुकी है ." मुनीम जी दाँत पीस कर बोले . - " कहती है .... अब वही झोपड़ा उसका घर है और वही लोग उसका परिवार . अब हमसे उसका कोई नाता नही ."

" ये आप क्या कह रहे हैं जी . शुभ शुभ बोलिए ." रुक्मणी पति की बात से घबराकर बोली .

" ये सब उस नमकहराम धनपाल की वजह से हुआ है . मैं उसे छोड़ूँगा नही . वो मेरी बेटी की ज़िंदगी बर्बाद करके अपनी बेटी के लिए खुशियाँ खरीदना चाहता है . पर मैं ऐसा होने नही दूँगा ." मुनीम जी दाँत पीसते हुए बोले और कुछ सोचने लगे . अचानक ही उनके होंठो पर एक ज़हरीली मुस्कान थिरक उठी . फिर धीरे धीरे उनके होंठों की मुस्कुराहट गहरी और गहरी होती चली गयी और फिर देखते ही देखते उनके मूह से ठहाके छूटने लगे . वो पागलों की तरह ज़ोर ज़ोर से हँसने लगे .

पास खड़ी रुक्मणी ने उन्हे इस तरह अट्टहास लगाते देखा तो वो दंग रह गयी, वो मुनीम जी को ऐसे देखने लगी. जैसे वो पागल हो गये हों.

" ये क्या हो गया है आपको ? आप ऐसे क्यों हंस रहे हैं ?" रुक्मणी भय से कांपति हुई बोली .

" रुक्मणी मैं कांचन के भविष्य पर हंस रहा हूँ . वो धनपाल सोचता है उसने जंग जीत ली है , मूर्ख है वो . वह सोचता होगा , अब वो आसानी से अजित और कांचन की शादी करा सकेगा . नही हरगिज़ नही ." अचानक से मुनीम जी की बातों में पत्थर की सख्ती आ गयी . - " वो अपनी कांचन की शादी अजित से कभी नही करा सकेगा . उसकी वजह से मेरी बेटी की ज़िंदगी बर्बाद हुई है . अब मैं कांचन को ऐसा चोट दूँगा जिसका दर्द धनपाल की छाती में होगा . उसे कांचन से बहुत प्यार है , उसकी साँसे बस्ती है उसमें . मैं उसी कांचन को ज़िंदगी भर के लिए ना भरने वाला नासूर दूँगा ." मुनीम जी दाँत चबाते हुए बोले .

२३

ठाकुर साहब कांचन और चिंटू के साथ हवेली में दाखिल हुए.

ठाकुर साहब के साथ - साथ कांचन और चिंटू भी खुश थे. कांचन के लिए ये किसी सपने से कम नही था. कुछ देर पहले धनपाल से जुदा होते वक़्त जो मन पीड़ा से भर गया था, हवेली में उसके पावं पड़ते ही इस एहसास से कि अब वो इस हवेली की मालकिन हो गयी है, खुशी से झूम उठा था. बचपन से अब तक कई बार वो इस हवेली में आ चुकी थी, पर आज उसकी छाती फूली हुई थी. किसी का भय नही, किसी चीज़ का डर नही. आज वो बेखौफ़ होकर हवेली में साँसे ले रही थी. उसके समीप खड़ा चिंटू मूह फाडे एक एक चीज़ को देख रहा था. उसके लिए तो ये बिल्कुल नया अनुभव था, आज उसे पहली बार हवेली आने का मौक़ा मिला था.

ठाकुर साहब सोफे पर बैठ चुके थे, किंतु कांचन अभी भी खड़ी थी. कांचन को आया देख हवेली के सारे नौकर हॉल में एकट्ठा हो गये थे.

ठाकुर साहब सोफे पर बैठे एक मुख कांचन को देखे जा रहे थे. तभी हवेली का एक नौकर ट्रे में दूध का गिलास लेकर आया. दूध में कई तरह के ड्राइ फ्रूट मिला हुआ था. कांचन और चिंटू ने गटागट दूध का गिलास खाली कर दिया.

सहसा.....कांचन को याद आया कि इस हवेली के किसी कमरे में उसकी मा बंद है. कांचन के मन में अपनी मा को देखने की उससे मिलने की इच्छा जाग उठी.

वह ठाकुर साहब से बोली - "पिताजी.....क्या मैं मा से मिल सकती हूँ?"

उसकी बात सुनकर ठाकुर साहब पीड़ा से भर गये. उनके समझ में नही आया कि वो कांचन को क्या जवाब दें. - "नही....बेटी ! तुम अभी अपनी मा से ना ही मिलो तो अच्छा है, उसकी मानसिक स्थिति अभी ठीक नही हुई है, कुछ दिन और रुक जाओ, जब अजित बाबू इज़ाज़त देंगे तभी तुम अपनी मा से मिल लेना. अभी तो वो तुम्हे पहचानेगी भी नही, उसकी नज़र में डिंपल उसकी बेटी है." ये कहने के साथ साथ ही ठाकुर साहब को अचानक डिंपल का ध्यान हुआ.

धनपाल के हवेली में आने के बाद ठाकुर साहब ऐसे उलझ गये थे कि उनका पल भर के लिए भी डिंपल की तरफ ध्यान नही गया. किंतु अब उनका ध्यान रह-रहकर डिंपल की तरफ जा रहा था, वे सोच रहे थे - "अब तक तो डिंपल को सारी सच्चाई का इल्म हो गया होगा. ना जाने क्या बीत रही होगी उसके दिल पर?"

" छोटू ....." उन्होने पास खड़े नौकर से कहा - " ज़रा डिंपल बेटा को बुला लाओ ." फिर कुछ सोचते हुए उठ खड़े हुए - " रूको , हम खुद जाकर देखते हैं ."

ठाकुर साहब अभी दो कदम ही चले थे कि छोटू ने उन्हे टोका - "मालिक....डिंपल मेमसाब तो हवेली में नही हैं."

" हवेली में नही है ..... तो कहाँ गयी वो ?" ठाकुर साहब चौंकते हुए बोले . - " कहीं मुनीम जी के घर तो नही चली गयी ? शायद दुखी होकर वो वहीं गयी होगी ...... जाओ उसे बुला लाओ . कहना हम अभी मिलना चाहते हैं ."

छोटू तेज़ी से बाहर निकला. किंतु जिस तेज़ी से वो गया था उसी तेज़ी से लौट आया.

" डिंपल मेमसाब वहाँ भी नही हैं .... मालिक , वो तो ...... कल्लू के घर में हैं ." छोटू ने झिझकते हुए ठाकुर साहब से कहा .

" कल्लू के घर में .....?" ठाकुर साहब ने सवालिया नज़रों से छोटू को देखा .

" मालिक .... डिंपल मेमसाब ने कल्लू के साथ शादी कर ली है . मुनीम जी इस बात से नाराज़ हुए बैठे हैं और उनकी पत्नी रो रही हैं ." छोटू एक ही साँस में सारा किस्सा ठाकुर साहब के सामने बयान कर दिया .

" क ..... क्या ?" ठाकुर साहब .... आश्चर्य से छोटू को देखते हुए बोले .

छोटू ने अपनी गर्दन झुका ली.

" ड्राइवर से कहो जीप निकले , हम अभी डिंपल से मिलने जाएँगे ." ठाकुर साहब क्रोध में बोले .

" जी मालिक ." छोटू बोला और बाहर भागा .

ठाकुर साहब बेचैनी से टहलने लगे. उनके मुख-मंडल पर चिंता की लकीरें खिच गयी थी.

कांचन भी डिंपल के इस अनायास उठाए गये कदम से हत-प्रत थी. वो जानती थी कल्लू अच्छा लड़का है, पर वो किसी भी कीमत पर डिंपल के योग्य नही था. - "कहीं डिंपल ने इस बात से तो नाराज़ होकर कल्लू से शादी नही की, कि मैं उसकी जगह आ गयी?" कांचन के मन में सवाल उभरा. उसका दिल ज़ोरों से धड़क उठा.

जीप तैयार हो चुकी थी. ठाकुर साहब जैसे ही बाहर को निकले कांचन ने पिछे से उन्हे पुकारा - "पिता जी.....मैं भी आपके साथ डिंपल के पास जाना चाहती हूँ, मुझे लगता है डिंपल कहीं मुझसे नाराज़ ना हो."

" भला तुमसे ..... उसकी क्या नाराज़गी हो सकती है बेटी ? खैर तुम चलना चाहती हो तो चलो ." ठाकुर साहब बोले और बाहर मुख्य द्वार की तरफ बढ़ गये .

कांचन चिंटू का हाथ पकड़कर ठाकुर साहब के पिछे हो ली. थोड़ी ही देर में जीप हवेली से बाहर निकल चुकी थी.

एक बार फिर से जीप के रुकने की आवाज़ से कल्लू, डिंपल और झूमकि का ध्यान बाहर की ओर गया. वे तीनो दरवाज़े से बाहर निकले.

जीप से ठाकुर साहब के साथ कांचन और चिंटू उतरते हुए दिखाई दिए.

ठाकुर साहब पर नज़र पड़ते ही तीनो के होश उड़ गये. उनकी गुस्से से भरी सूरत देखकर कल्लू और झूमकि के शरीर में भय की मीठी लहर दौड़ गयी.

ठाकुर साहब तेज़ी से झोपडे तक आए. झूमकि और कल्लू के हाथ स्वतः ही उन्हे नमस्ते कहने को जुड़ गये.

ठाकुर साहब गुस्से में थे, फिर भी हाथ जोड़ उनके नमस्ते का उत्तर दिए. फिर डिंपल को देखने लगे.

डिंपल सर झुकाए खड़ी थी. उसकी माँग में भरा हुआ सिंदूर और गले में मंगलसूत्र उसकी विवाहिता होने का प्रमाण दे रहा था. ठाकुर साहब कुछ देर डिंपल की दशा को देखते रहे.

डिंपल की नज़रें नीचे थी पर फिर भी उसे ठाकुर साहब की चुभती नज़रों का एहसास हो रहा था. उसने अपनी गर्दन उठाई और झिलमिलाती आँखों से ठाकुर साहब को देखा.

" मुझे माफ़ कर दीजिए अंकल ....." डिंपल हाथ जोड़ते हुए बोल ी .

" क ...... क्य ा .....?" ठाकुर साहब दो कदम पिछे हटते हुए बोले - " क्य ा ..... क्या कहा तुमन े .... अंकल .....?"

डिंपल उन्हे देखती हुई विवशता में अपने होठ काटने लगी.

" डिंपल ...... हमें मुनीम जी के छल से उतना दुख नही हुआ था जितना कि आज तुम्हारे मूह से " अंकल " शब्द सुनकर हुआ ह ै ." ठाकुर साहब तड़प कर बोले - " तूने हमारे २० साल के प्यार का अच्छा सिला दिया है डिंपल . हमने तो आज तक कभी कांचन को तुमसे अलग नही समझा फिर तुम्हे कांचन से अलग कैसे समझ सकते है ं , जबकि तुम हमारी गोद में खेली ह ो "

ठाकुर साहब का दिल डिंपल की बात से लहू-लुहान हो गया.. उन्हे डिंपल से ऐसी बेरूख़ी की उम्मीद नही थी. उन्होने कभी नही सोचा था कि जिस डिंपल को उन्होने अपनी छाती से लगाकर रखा जिसकी मुस्कुराहटो को देखकर वो अब तक जीते रहे थे वोही डिंपल उससे मूह फेर लेगी, एक पल में उनसे इस तरह संबंध तोड़ लेगी. डिंपल के इस बर्ताव से उनकी आत्मा सिसक उठी थी.

ठाकुर साहब की बात से डिंपल का दिल भर आया. वा तो इस एहसास से मरी जा रही थी कि मुनीम जी की ग़लतियों की वजह से अब वो कभी ठाकुर साहब से नज़र नही मिला सकेगी. कभी उनका प्यार, उनका स्नेह नही पा सकेगी. किंतु ठाकुर साहब की बात सुनकर उसकी सारी शंका निर्मूल साबित हुई. उसका मन भावुकता से भर गया. उसके होंठ उन्हे पापा कहने के लिए फड़क उठे, उसकी बाहें उनसे लिपटने के लिए मचल उठी. वह आगे बढ़ी - "प....पापा. मुझे माफ़ कर दीजिए. मुझसे भूल हो गयी, मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ पापा. प्लीज़ मुझे अपने गले से लगा लीजिए."

ठाकुर साहब गीली आँखों से डिंपल को देखने लगे. वो किसी छोटी डरी सहमी बची की तरह बिलख उठी थी. उसकी आँखों से लगातार आँसू बह रहे थे.

ठाकुर साहब आगे बढ़े और डिंपल को अपने कलेज़े से लगा लिए. डिंपल उनकी छाती पर मूह छिपा कर फफक पड़ी.

वहाँ मौजूद हर-एक इंसान की आँखें नम हो गयी.

डिंपल की रुलाई जब तक पूरी तरह से नही रुक गयी.....ठाकुर साहब उसे अपनी छाती से चिपकाए खड़े रहे. कुछ देर बाद डिंपल ने अपना सर उनकी छाती से अलग किया. ठाकुर साहब उसके आँसू पोछने लगे.

कांचन उसके करीब गयी तो डिंपल ठाकुर साहब से अलग होकर कांचन से लिपट गयी. - "दीदी, तुम भी मुझे माफ़ कर दो, जाने अंजाने में मैने भी तुम्हारा दिल दुखाया है."

" क .... क्या " कांचन गुस्से से अलग होती हुई बोली . -" क्या कहा तूने ? देखा पिताजी आपने ? इसने मुझे क्या कहा ...... अब मैं इसकी दीदी बन गयी ." कांचन नाक फुला कर ठाकुर साहब से शिकायत करती हुई बोली

कांचन की बात से ठाकुर साहब ज़ोरों से हंस पड़े. उनके साथ-साथ वहाँ मौजूद सभी के होंठ खिलखिला पड़े.

" अच्छा बाबा , माफ़ कर दे , आइन्दा दीदी नही कहूँगी ." डिंपल कांचन के हाथ पकड़ती हुई बोली . उसकी बातों में शर्मिंदगी के भाव थे .

" डिंपल ...... पर ये क्या बेटी , तूने शादी कर ली . किसी को बताया तक नही . तुम्हारी शादी के लिए हमने कितने अरमान दिल में बसाए थे . वो सब धरे के धरे रह गये . ऐसा क्यों किया तुमने बेटी " ठाकुर साहब मायूस होकर बोले .

डिंपल का सर आत्मबोध से झुक गया. फिर क्षमायाचना हेतु ठाकुर साहब को देखती हुई बोली - "मुझे माफ़ कर दीजिए पापा. हवेली से निकलने के बाद मैं बहुत निराश हो चुकी थी. ये सब कुछ एक दम से हो गया. प्लीज़....मुझे माफ़ कर दीजिए."

ठाकुर साहब प्यार से उसके सर पर हाथ फेरते हुए बोले - "तुम्हारी खुशी ही हमारी खुशी है डिंपल. तूने कल्लू को पसंद किया है तो हमें भी कल्लू पसंद है. अब हम ये चाहते हैं कि तुम सब हमारे साथ हवेली चलो और वहीं रहो."

" नही पापा . अब मैं इस घर को नही छोड़ सकती . लेकिन मैं एक बेटी की तरह हवेली आती रहूंगी . आप सब से मिलती रहूंगी ." डिंपल ठाकुर साहब को इनकार करती हुई बोली - " मुझे आशीर्वाद दीजिए पापा कि मैं अपना नया जीवन अपने पति के घर में सुख से जी सकूँ ." डिंपल ये कहते हुए ठाकुर साहब के चरणो में झुक गयी .

" मेरा आशीर्वाद सदा तुम्हारे साथ है बेटी ." ठाकुर साहब डिंपल के सर पर हाथ रखते हुए बोले . - " सदा खुश रहो . तुम्हारा जीवन फूलों की तरह सदा महकता रहे ."

डिंपल के बाद कल्लू ने भी ठाकुर साहब के पैर छुकर आशीर्वाद लिया. जो आशीर्वाद मुनीम जी से ना मिल सका. वो ठाकुर साहब से उन्हे मिल चुका था.

ठाकुर साहब कांचन और चिंटू के साथ हवेली लौट गये.

२४

सुबह उठते ही यशोदा जी नहा धोकर मदिर के लिए निकल पड़ी. वो मंदिर पैदल ही जाया करती थी. हवेली से मंदिर का रास्ता ३० मिनिट का था.

आज वो बहुत खुश थी. खुश होती भी तो क्यों ना? उन्हे मनचाही मुराद जो मिल गयी थी. उन्होने एक ही सपना देखा था, अजित को पढ़ा लिखा कर काबिल इंसान बनाना और किसी उँचे-बड़े घर में उसका विवाह रचाना.

२ दिन पहले वो अजित और डिंपल के विवाह के सपने पाले हुए थी . किंतु उनके दिल में एक फास थी . और वो फास थी अजित और कांचन की मोहब्बत ....! वो डिंपल से अजित का विवाह करना चाहती तो थी ...... किंतु अपने ही हाथों अपने बेटे के अरमानों का खून भी नही करना चाहती थी . किंतु आज परिस्थिति बदल चुकी थी . आज सब कुछ उनके मान मुताबिक हो रहा था . आज वो ठाकुर साहब जैसे धनवान व्यक्ति से रिश्ता भी कर रही थी और उसके लिए अजित का दिल भी नही दुखाना पद रहा था . ईश्वर ने सब कुछ उनके अनुरूप ही कर दिया था . इसलिए आज सुबह उठते ही वो नहा - धोकर मंदिर के लिए निकल पड़ी थी .

पूजा कर लेने के पश्चात यशोदा जी हवेली के लिए लौट पड़ी.

कुछ ही देर में उनके कदम हवेली के सीमा के भीतर थे. वो बड़े इतमीनान से हवेली की तरफ बढ़ी जा रही थी कि तभी उनके कानों से मुनीम जी की आवाज़ टकराई -"बेहन जी ज़रा रुकिये......"

यशोदा जी आवाज़ की दिशा में मूडी. मुनीम जी अपने घर के बाहर खड़े अपने हाथ उठाकर यशोदाजी को रुकने का इशारा कर रहे थे.

यशोदा जी आश्चर्य से मुनीम जी को देखने लगी, वो तेज़ी से यशोदा जी की तरफ भागे चले आ रहे थे.

" नमस्ते बेहन जी ." मुनीम जी पास आते हुए बोले - " आप से एक ज़रूरी बात करनी थी . आप थोड़ी देर के लिए हमारे घर आएँगी ."

" मैं क्षमा चाहती हूँ मुनीम ज ी . इस वक़्त आपके घर आना संभव नही हो सकेग ा ."
यशोद ा जी शर्मिंदा होती हुई बोली - " आप अच्छी तरह से जानते है ं ..... ठाकुर
साहब को ये अच्छा नही लगेग ा . आख़िर मैं उनकी मेहमान हू ँ ."

" त ो .... क्या आप हमारी मेहमान नही है ं ?" मुनीम जी रुष्ट स्वर में बोले - " आख़िर
हम समध ी बनने वाले हैं यशोद ा ज ी , आपको हमारे घर आने से इनकार क्यों हो रही
ह ै ?"

यशोदा जी चौंक कर मुनीम जी को देखने लगी. उनके मूह से समधी बनने वाली बात
सुनकर उन्हे हैरानी हुई थी - "मैं समझी नही मुनीम जी......आप किस संबंध की बात कर
रहे हैं?"

" ऐसा ना कहिए यशोद ा ज ी ." मुनीम जी विचलित होकर बोले - " अभी कल ही तो
आपने हवेली में बैठकर मेरी डिंपल को अपनी बहू बनाने की बात कही थ ी . इसके
गवाह खुद ठाकुर साहब भी है ं . आप इस तरह अपनी ज़ुबान से मत मुकरिय े ."

" मुनीम ज ी , आपने शायद ठीक से मेरी बात नही सुनी थ ी ." यशोद ा जी रूखे स्वर
में बोली - " मैने ये नही कहा था कि मैं डिंपल को ही अपनी बहू बनाऊंग ी . मैने कहा
थ ा ..... ठाकुर साहब की बेटी ही मेरे घर की बहू बनेग ी . और आप ये जानते ही हैं कि
ठाकुर साहब की बेटी डिंपल नह ी .... कांचन ह ै ."

" बेहन ज ी ..... शब्दों का अर्थ बदल कर अपने वादे से मत फिरीए . आपके शब्द जो
भी रहे हो ं , पर आपका इरादा डिंपल को ही अपनी बहू बनाने का थ ा ." मुनीम जी
बिदककर बोल े . उनके चेहरे पर नाराज़गी फैल गयी थ ी .

" आप जो भी समझना चाहे ं ...... समझिए ! पर मेरे घर की बहू कांचन ही बनेग ी ."
यशोद ा जी मुनीम जी को दो टुक जवाब देकर आगे बढ़ने को हुई .

" रुकिय े ...... यशोद ा ज ी ." मुनीम जी कड़क स्वर में बोले - " जाने से पहल े
...... एक सत्य मेरे मूह से भी सुनते जाइए . शायद उसके बाद आपका इरादा बदल जाए
."

" कैसा सत्य .....?" यशोदा जी की सवालिया निगाहें मुनीम जी के चेहरे पर चिपक गयी .

" एक सत्य जिसका संबंध आपके पति से है ." मुनीम जी अपने होंठो पर विषैली मुस्कान भरते हुए बोले .

" आ ...... आप मेरे पति को कैसे जानते हैं ?" यशोदा जी हकलाते हुए बोली - " कहाँ हैं वो ? मुझे बताइए मुनीम जी ..... मैं आपके आगे हाथ जोड़ती हूँ ."

यशोदा जी की बदहवासी देखकर मुनीम जी के होंठों की मुस्कुराहट गहरी हो गयी.

" आप मेरे साथ मेरे घर चलिए ..... मैं आपके पति के बारे में सब कुछ बताता हूँ ." मुनीम जी घर की तरफ रुख़ करते हुए बोले .

यशोदा जी उनका अनुसरण करती हुई उनके पिछे चल पड़ी.

मुनीम जी, यशोदा जी के साथ घर के अंदर दाखिल हुए.

" बैठिए बेहन जी .....!" मुनीम जी हॉल में पड़े सोफे की तरफ इशारा करते हुए बोले .

यशोदा जी सकुचाते हुए बैठ गयी.

" कहिए क्या लेंगी आप ?" मुनीम जी सोफे पर बैठते हुए बोले .

" इस वक़्त कुछ भी खाने पीने की इच्छा नही है मुनीम जी . आप कृपा करके ये बता दीजिए कि आप मेरे पति को कैसे जानते हैं ? और इस वक़्त वे कहाँ हैं ? आप नही जानते मुनीम जी मैं उनसे बातें करने के लिए उनकी एक झलक देखने के लिए कितनी बेचैन रही हूँ ."

" मैं आपकी पीड़ा समझ सकता हूँ . किंतु आप धीरज रखिए ..... आज आपके सभी सवालों का जवाब मिल जाएगा ." मुनीम जी विश्वास दिलाते हुए बोले - " आपको याद

है जिस दिन आप हवेली में आईं थी . उस दिन मैं आपका शुभ समाचार लेने आपके कमरे में गया था ."

" हां याद है , किंतु उस बात का मेरे पति से क्या संबंध है ?"

" उस दिन मैने आपके कमरे में एक फोटो फ्रेम देखा था , तब मैने फोटो की तरफ इशारा करके पुछा था कि ये किन की तस्वीर है . और आपने कहा था कि वो आपके पति हैं ."

" हां .... मुझे याद है ...." यशोदा जी तत्परता से बोली .

" मेरे ऐसा पुछने का कारण ये था कि मैं आपके पति की तस्वीर को पहचान गया था . आपकी पुष्टि के लिए बता दूं कि उनका नाम मनोहर कुमार है ."

" हां ...... आपने ठीक कहा , उनका नाम मनोहर कुमार ही है . लेकिन आप उनसे कब और कहाँ मिले थे ? और यदि आप उन्हे पहले से जानते थे तो आपने अब तक ये बात हम से छुपाई क्यों ?" यशोदा जी के मन में एक साथ कई सवाल उमड़ पड़े .

" सही वक़्त का इंतेज़ार कर रहा था बेहन जी , और अब वो वक़्त आ गया है " मुनीम जी अपने शब्दों में पीड़ा भरते हुए बोले - " मनोहर बाबू से मेरी पहली मुलाक़ात देल्ही में हुई थी . मैने ही उन्हे किशनगढ़ आने का न्योता दिया था ."

" किशनगढ़ ....? लेकिन किस लिए ?" यशोदा जी मुनीम जी के तरफ सवालिया नज़रों से देखती हुई बोली .

" बेहन जी .....! आज आपके सामने ये जो चमकता दमकता खूबसूरत शीश महल ख डा दिखाई दे रहा है . इसका निर्माण आपके पति के ही हाथों हुआ है ."

यशोदा जी की आँखें आश्चर्य से फैल गयी.

" आप ये तो जानती ही होंगी कि आपके पति काँच के कुशल कारीगर थे ." मुनीम जी ने बोलना आरंभ किया . - " जब ठाकुर साहब ने मुझसे हवेली के निर्माण की बात कही , तब मैं काँच के कारीगरों की तलाश में देल्ही गया . वहीं पर आपके पति से मुलाक़ात हुई और उन्हे कुछ पेशगी देकर किशनगढ़ आने का निमंत्रण दिया ."

यशोदा जी बिना हीले डुले मुनीम जी की बातों को सुनती रही.

मुनीम जी आगे बोले - "मेरे लौटने के तीसरे दिन ही मनोहर बाबू किशनगढ़ आ पहुँचे. मैने उन्हे हवेली के निर्माण सम्बन्ध में बातें बताई. अगले रोज़ वो देल्ही लौट गये. उन्हे अपने साथ काम करने के लिए कुछ और सहायक कारीगर की ज़रूरत थी. २ दिन बाद जब वो आए तो उनके साथ २० और कारीगर थे.

आते ही उन्होने निर्माण कार्य शुरू कर दिया. लगभग २० महीने बाद हवेली का निर्माण कार्य पूरा हुआ. उन दिनो ठाकुर साहब अपनी पत्नी शारदा जी के साथ बनारस में रहते थे. हवेली के निर्माण के दौरान वो महीने में एक दो बार आते, थोड़ा बहुत काम का ज़ायज़ा लेते फिर चले जाते.

जब हवेली का निर्माण कार्य पूरा हुआ. उस दिन ठाकुर साहब, अपनी पत्नी शारदा देवी के साथ आए. उस दिन शारदा जी की गृह प्रवेश की खुशी में हवेली को दुल्हन की तरह सज़ाया गया था. काम करने वाले सभी कारीगर जा चुके थे. सिवाए मनोहर बाबू के. वे जाने से पहले ठाकुर साहब से कुछ ज़रूरी बात करना चाहते थे.

मैं उस पूरा दिन हवेली में ही रहा था. गृह प्रवेश के बाद.....जब लोगों की भीड़ कम हुई.....ठाकुर साहब शारदा जी को हवेली दिखाने लगे. उस दिन ठाकुर साहब बहुत खुश थे. उनका खुश होना लाजिमी भी था. शीश महल उनका सपना था.....जिसे उन्होने शारदा जी के बतौर मूह दिखाई बनवाने का प्रण किया था.

शाम का वक़्त हो चला था. ठाकुर साहब शारदा जी के साथ हॉल में खड़े थे. मैं उनके पिछे खड़ा था. वे शारदा जी को काँच की बनी दीवारों को दिखाते हुए कह रहे थे. - "शारदा इन दीवारों को देखो. क्या इनमें तुम्हे कुछ विशेषता दिखाई देती है?"

शारदा जी ध्यान से काँच की दीवार को देखने लगी. किंतु उनके समझ में कुछ ना आया. शारदा जी ने पलट कर ठाकुर साहब की तरफ अपनी निगाह घुमाई.

शारदा जी को अपनी और सवालिया नज़रों से देखते पाकर....ठाकुर साहब जान गये कि शारदा जी को कुछ भी समझ में नही आया है. - "शारदा ....इसके काँच के टुकड़ों में देखो. तुम्हे कहीं भी तुम्हारी तस्वीर दिखाई नही देगी. ये इस तरह से बनाई गयी है कि किसी भी चीज़ का प्रतिबिंब इसपर नज़र नही आता."

शारदा जी ने अबकी बार ध्यान से देखा. अबकी बार उनकी आँखें आश्चर्य से फैलती चली गयी. ठाकुर साहब मुस्कुरा उठे. साथ ही उन्हे ये आश्चर्य भी हुआ कि इतनी अनोखी चीज़ देखने के बाद भी शारदा जी ने प्रशंसा नही की.

" आओ ..... तुम्हे और भी कुछ दिखाते हैं ." ठाकुर साहब वहाँ से मुड़ते हुए बोले . फिर शारदा जी को लेकर हवेली के विशाल कमरों की तरफ बढ़ गये . मैं उनके पिछे था .

" इन्हे देखो शारदा . इसकी कारीगरी को देखो . जानती हो ये काँच हम ने फ्रांस से मँगवाए हैं ." ठाकुर साहब इस वक़्त अपने शयन - कक्ष में थे . ये कहने के बाद ठाकुर साहब शारदा जी के तरफ देखने लगे . शारदा जी काँच की अद्भुत कारीगरी देखने में मगन थी .

ठाकुर साहब इसी तरह हवेली का कोना कोना घूम घूम कर शारदा जी को हवेली दिखाते रहे और हर एक काँच की विशेषता बताते रहे.

पूरी हवेली घूम लेने के पश्चात ठाकुर साहब शारदा जी को लेकर अपने कमरे में वापस आए.

शारदा जी गर्भवती से होने की वजह से हवेली घूमते घूमते काफ़ी थक चुकी थी.

" अब बताओ शारदा , तुम्हे ये हवेली कैसी लगी ?" ठाकुर साहब हसरत भरी नज़र से शारदा जी को देखते हुए बोले .

" अत्यंत सुंदर .....!" शारदा जी मुस्कुराकर बोली - " किंतु उस प्यार से अधिक सुंदर नही जो आपके दिल में मेरे लिए है . आपने जिस प्यार से मेरे लिए ये हवेली बनवाया है , उसी प्यार से अगर आप मेरे लिए कोई झोपड़ा भी बनवाते तब भी मुझे उतनी ही खुशी होती , जितनी की आज हो रही है ."

शारदा जी के जवाब से ठाकुर साहब निराश हो गये. उनकी सारी खुशियों, सारे उमंगों पर जैसे पानी फिर गया. शारदा जी के द्वारा ऐसी भव्य हवेली की तुलना किसी साधारण झोपडे से किए जाने पर उनके दिल को गहरा आघात लगा. -"शारदा , लगता है थकान की वजह से तुम हवेली के दरो-दीवार को ठीक से देख नही पाई हो, इसलिए इसकी तुलना एक साधारण झोपडे से कर रही हो. किंतु जब तुम इसकी अद्भुत कारीगरी को ध्यान से देखोगी तब इसकी प्रशंसा किए बगैर नही रह सकोगी."

ठाकुर साहब के चेहरे पर उदासी की लकीर खिंच गयी थी. शारदा जी को शीघ्र ही अपनी भूल का एहसास हुआ. उन्होने अपनी भूल सुधारते हुए कहा - "मेरा ये मतलब नही था. मेरे कहने का मतलब था कि आप अगर मेरे लिए प्यार से एक झोपडे का भी निर्माण करवाते तब भी वो मुझे अपने प्राणो से प्रिय होता. किंतु यहाँ तो आपने मेरे लिए साक्षात इन्द्र-महल बनवा दिया है. सच-मुच ऐसी भव्य इमारत की तो मैने कल्पना तक नही की थी."

इससे पहले की ठाकुर साहब शारदा जी को कोई उत्तर दे पाते....दरवाज़े पर नौकर की आवाज़ गूँजी.

" मालिक ..... मनोहर बाबू आपसे मिलना चाहते हैं ." गोरप्पा बोला और सर झुकाकर उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा .

" उन्हे यहीं भेज दो ." ठाकुर साहब गोरप्पा से बोले .

उत्तर पाकर गोरप्पा वापस लौट गया.

कुछ ही देर में मनोहर बाबू कमरे के अंदर दाखिल हुए. अंदर आते ही उन्होने हाथ जोड़कर सभी को नमस्ते किए.

" शारदा .....!" ठाकुर साहब शारदा जी से बोले . - " इनसे मिलो ...... ये मनोहर हैं . इन्होने ही इस अद्भुत हवेली का निर्माण किया है . काँच की जितनी भी कारीगरी तुम देख रही हो ..... सब इन्ही के हाथों का चमत्कार है ."

ठाकुर साहब की बात सुनते ही शारदा जी बिस्तर से उठ खड़ी हुई. फिर मनोहर बाबू को प्रश्नात्मक दृष्टि से देखती हुई बोली - "मनोहरजी, आपकी कारीगरी की जितनी भी तारीफ़ की जाए कम है, आपकी अद्भुत चित्रकारी ने मेरा मन मोह लिया है. काँच में ऐसी सुंदर कारीगरी मैने आज तक नही देखी. आपकी कारीगरी अमिट है. मैं इसे अपना सौभाग्य समझूंगी की आज आप जैसे उत्तम कलाकार से मिलना हुआ."

शारदा जी के कहने की देरी थी और ठाकुर साहब के सीने पर एक ज़ोर का घुसा पड़ा. शारदा जी के मूह से जिस प्रशंसा को सुनने के लिए वे घंटो तक हवेली का कोना कोना घुमाते रहे थे. जिस प्रशंसा को पाने के लिए उन्होने हवेली के निर्माण में पानी की तरह पैसे बहा दिए थे. जिस प्रशंसा के वे सालों से आकांक्षी थे. वही प्रशंसा..... शारदा जी के मूह से उन्हे ना मिलकर मनोहर बाबू को मिल रही थी. वे अंदर ही अंदर से तड़प उठे. वे खुद को अपमानित सा महसूस करने लगे.

" ये मेरे लिए बड़ी खुशी की बात है शारदा जी , कि आपको मेरा काम पसंद आया ." मनोहर जी आभार प्रकट करते हुए बोले -" मैं एक कारीगर हूँ , जब किसी के द्वारा अपने काम की प्रशंसा सुनता हूँ तो मन एक सुखद एहसास से भर जाता है . आप लोगों को मेरा काम पसंद आया . अब मैं यहाँ से सुखी मन से जा सकूँगा ."

" तुम हम से किस लिए मिलना चाहते थे ?" ठाकुर साहब रूखे स्वर में मनोहर बाबू से पूछे .

" ठाकुर साहब , अब मेरा काम पूरा हो चुका है , किंतु घर जाने से पहले आपसे कुछ ज़रूरी बातें करनी थी . अगर आप अपना कुछ समय मुझे दे सकें तो बड़ी मेहरबानी होगी ." मनोहर जी आदर - पूर्वक बोले .

" इस वक़्त हम काफ़ी थके हुए हैं मोहन . तुम आज भर रुक जाओ . जो भी बातें हैं ..... हम रात के खाने के बाद कर लेंगे . तुम कल सबेरे चले जाना ."

" ठीक है ठाकुर साहब , आप कहते हैं तो मैं आज भर रुक जाता हूँ . नमस्ते !" मनोहर बाबू उत्तर देने के बाद नमस्ते कहकर वहाँ से चले गये .

मैने भी ठाकुर साहब और शारदा जी से इज़ाज़त ली और हॉस्पिटल के लिए रवाना हो गया. मेरी पत्नी पिछले दो दिनो से हॉस्पिटल में डिलीवरी के लिए भरती थी. मुझे उसे देखने जाना था. हॉस्पिटल से लौटने के बाद मैं अपने घर में हवेली के निर्माण संबंधी खर्चे का लेखा जोखा करने लगा. आज ही मुझे पूरा हिसाब ठाकुर साहब को दिखाना था.

दो घंटे के बाद, लगभग ७ बजे के आस-पास मैं पुनः हवेली पहुँचा. किंतु अभी मैं दरवाज़े तक ही पहुँचा था कि मुझे हॉल से मनोहर बाबू और शारदा जी की बातें करने की आवाज़ें सुनाई दी. ना जाने क्यों..... पर मेरे कदम वहीं पर ठिठक गये. और मैं चोरी छुपे उनकी बातें

सुनने का प्रयास करने लगा. हालाँकि मैं शारदा जी की तरफ से शंकित नही था पर आज दिन की घटनाओ के मद्दे-नज़र..... मेरे मन में उनकी बातें सुनने की लालसा जाग उठी.

मैं दरवाजे की आड़ लेकर उनके बीच हो रही बातों को सुनने लगा.

शारदा जी कह रही थी - "मनोहरजी, आप कुछ अपने परिवार के बारे में भी बताइए. कौन कौन हैं आपके घर में?"

मनोहर बाबू - "सिर्फ़ दो लोग, एक मेरी पत्नी और दूसरा मेरा ६ साल का बेटा."

शारदा जी - "आपने कहा कि, आपको अक्सर काम के सिलसिले में घर से बाहर रहना पड़ता है. ऐसे में वे लोग काफ़ी अकेले हो जाते होंगे. खास कर आपकी पत्नी. क्या आपने इस बारे में कभी सोचा है?"

मनोहर बाबू - "इस बात का एहसास मुझे भी है शारदा जी. पर क्या करें विवशता ही ऐसी है, ना चाहते हुए भी उनसे दूर रहना पड़ता है."

शारदा जी - "तो क्या आपके लिए पैसा इतना मायने रखता है?"

मनोहर बाबू - "नही शारदा जी, पैसा मेरे लिए मेरे परिवार से बढ़कर नही है. मैं चाहता तो हवेली का निर्माण ६ महीने पहले ही पूरा कर देता. किंतु तब शायद ये उतनी सुंदर ना होती जितना की अब देख रही हैं. किंतु मैं अपने काम के साथ समझौता नही करता. अगर मैं अपने काम से संतुष्ट ना होता तो मैं तब तक काम करता रहता जब तक कि मैं पूरी तरह से संतुष्ट ना हो जाऊ. फिर चाहें इसके लिए मुझे यहाँ कुछ साल और क्यों ना बिताना पड़ता. मैं बस इतना चाहता हूँ कि मैं जो भी काम करूँ....लोग उसे सराहें, पसंद करें. और मेरी कारीगरी की प्रशंसा करें."

शारदा जी - "आप एक सच्चे कारीगर हैं मनोहरजी, मुझे आप जैसे कला-प्रेमी से मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई. मैं आपके कला-कौशल को दिल से सम्मान देती हूँ. और साथ ही आपको धन्यवाद भी कहती हूँ कि आपने इस हवेली के लिए अपना कीमती समय दिया."

मनोहर बाबू - "इस धन्यवाद के असली हक़दार तो आपके पति ठाकुर साहब हैं. जिन्होने सचे मन से आपके लिए ऐसी भव्य हवेली का निर्माण करवाया. आप सच में बहुत भाग्यशाली हैं शारदा जी, कि आपको ठाकुर साहब जैसा देवता पति मिला. इस युग में पत्नी के प्रति ऐसा निश्चल प्रेम शायद ही किसी पुरुष के हृदय में हो. वे सच में देवता हैं."

शारदा जी - "आपका बहुत बहुत धन्यवाद मनोहरजी. ये सच है कि ठाकुर साहब को अपने पति के रूप में पाकर मैं खुद को भाग्यशाली समझती हूँ. हम दोनो के ही दिलों में एक दूसरे के लिए अथाह प्रेम है."

मनोहर बाबू - "होना भी चाहिए. इस रिश्ते में प्रेम और विश्वास का बहुत बड़ा स्थान है."

शारदा जी - "ह्म्म्म.......आप ठीक कहते हैं. वैसे आप सालों बाद घर जा रहे हैं, आपके मन में तो काफ़ी उत्सुकता होगी अपनी पत्नी और बेटे से मिलने की?"

मनोहर बाबू - "बस एक ही बात सोचे जा रहा हूँ, पता नही कैसे होंगे वे लोग? किस हाल में जी रहे होंगे. इतने दिनो तक मैं उनकी कोई खबर तक नही ले पाया."

शारदा जी - "दिल छोटा ना कीजिए मनोहरजी. ईश्वर की कृपा से वे अच्छे ही होंगे. आप जब घर जाएँ तो उनके लिए भेंट ज़रूर लेकर जाइएगा. और हो सके तो घर पहुँचकर वहाँ का शुभ-समाचार ज़रूर भेज दीजिएगा. मुझे आपके शकुशल घर पहुँचने का इंतेज़ार रहेगा."

शारदा जी के ये शब्द सुनकर मेरा मन उनके प्रति श्रधा भाव से भर गया. मैने अब उनकी बातों को सुनना व्यर्थ जाना. मैं दरवाज़े की औट से बाहर निकला और हवेली के अंदर प्अजितष्ट हुआ. हॉल में पहुँच कर मैने शारदा जी और मनोहर बाबू को नमस्ते किया और फिर ठाकुर साहब के कमरे की तरफ बढ़ गया.

मैं कुछ देर ठाकुर साहब के पास बैठा उन्हे खर्चे का लेखा जोखा समझाता रहा. इस कार्य में २ घंटे से भी अधिक समय बीत गया. कार्य पूरा होने तक रात्रि भोजन का समय भी हो चला था. ठाकुर साहब के आदेश पर मैं भी खाने में शामिल हो गया.

लगभग एक घंटे के बाद हम भोजन से फारिग हुए.

शारदा जी अपने कमरे में सोने चली गयीं.

हवेली का एक मात्र नौकर गोरप्पा भी....दिन भर का थका हारा होने की वजह से ठाकुर साहब से आज्ञा लेकर अपने रहने के स्थान पर सोने चला गया.

मनोहर बाबू को ठाकुर साहब से कुछ ज़रूरी बातें करनी थी इसलिए हम तीनो ही हॉल में पड़े सोफे पर बैठे रह गये.

" कहिए क्या कहना चाहते थे आप ?" ठाकुर साहब मनोहर बाबू की ओर देखकर बोले .

" ठाकुर साहब, बात यह है कि मुझे कलकत्ता में एक काँच का मंदिर बनाने का काम मिला है. मैं इसी संबंध में आपसे बात करना चाहता था."

" ये तो बड़ी खुशी की बात है , किंतु ये बात आप हमें क्यों बता रहे हैं ?"

" ठाकुर साहब असल बात यह है कि १५ दिन पहले कलकत्ता से उस मंदिर के ट्रस्टी यहाँ आए थे . उन्होने इस शीश महल को देखा और अब वे लोग मुझसे इसी रूप का कलकत्ता में एक भव्य मंदिर बनवाना चाहते हैं ."

" हरगिज़ नही ." ठाकुर साहब तेज़ी से बोले - " कलकत्ता तो क्या .... पूरे विश्व में ऐसी इमारत दूसरी नही बननी चाहिए ."

" लेकिन इसमें हर्ज़ क्या है ठाकुर साहब ?" मनोहर बाबू आश्चर्य से ठाकुर साहब की तरफ देखते हुए बोले .

" वो इसलिए कि अगर ऐसी कोई दूसरी इमारत बनी तो इसका मोल कम हो जाएगा . और हमें ये मंज़ूर नही ."

" लेकिन ये कैसे संभव है ठाकुर साहब ? मैं एक कारीगर हूँ . मुझे जब भी कहीं किसी चीज़ के निर्माण का कार्य मिलेगा .... मैं तो करूँगा ही . क्योंकि ये मेरा व्यवसाय है . मेरी कला है . मैं अपने हाथ नही रोक सकता ." मनोहर बाबू विरोध जताते हुए बोले .

" बात को समझने की कोशिश करो मोहन , ये हवेली हमारी और हमारी पत्नी शारदा की यादगार है . हम इसकी दूसरी मिसाल हरगिज़ नही चाहते ."

" ये हवेली आपका सपना होगा ठाकुर साहब , मेरा नही , मेरे सपने कुछ और हैं , मैं एक कारीगर हूँ और मुझे अवसर मिला तो मैं इससे भी उँचा उठकर अपना कला - कौशल दिखाना चाहूँगा . और ऐसा करने से आप मुझे नही रोक सकते ."

" मोहन ....!" ठाकुर साहब झटके से खड़े होते हुए चीखे . - " हमारा नाम ठाकुर रामप्रताप सिंह है , हम क्या कर सकते हैं क्या नही , इसका तुम्हे अभी अंदाज़ा नही . व्यर्थ की ज़िद ना करो . मत भूलो कि तुम इस वक़्त मेरी छत के नीचे बैठे हो . तुम चाहो तो हम तुम्हे इतनी दौलत दे सकते हैं कि तुम्हारी कई पीढ़ियों तक को काम करने की ज़रूरत महसूस ना होगी ."

" व्यर्थ की ज़िद तो आप कर रहे हैं ठाकुर साहब , मैं काग़ज़ के चन्द टुकड़ों के लिए अपनी उमर भर की कला का सौदा नही कर सकता ." मनोहर बाबू भी तैस में आकर उठ खड़े हुए .

" तो फिर तुम जैसे लोगों से अपनी बात मनवाने के हमें और भी तरीके आते हैं ."

" आप हमें धमकी दे रहे हैं ?"

" नही .... धमकी कमज़ोर लोग दिया करते हैं . हम तो चेतावनी दे रहे हैं . अगर तुमने हमारी बात नही मानी तो हम अपनी बात मनवाने के लिए कुछ भी कर सकते हैं ."

" आप जो चाहें कर लीजिएगा . किंतु अब मैं यहाँ एक क्षण भी नही रुक सकता . मैं जा रहा हूँ " मनोहर बाबू ठोस शब्दों में बोले और अपने कमरे की तरफ बढ़ गये .

ठाकुर साहब और मनोहर बाबू की गरमा गर्मी से मेरा दिमाग़ काम करना बंद कर चुका था. मैं केवल मूक-दर्शक बना उनके बीच हो रहे तकरार को देख रहा था.

कुछ ही देर में मनोहर बाबू अपना सामान हाथों में उठाए कमरे से बाहर निकले.

उन्हे देखकर ठाकुर साहब की आँखें सुलग उठी.

मनोहर बाबू हॉल में आए अपना सामान नीचे रखकर ठाकुर साहब और मुझे नमस्ते किए. फिर अपना सामान उठाकर जाने को मुड़े.

" तुम ऐसे नही जा सकते मोहन ?" ठाकुर साहब किसी ज़हरीले साँप की तरह फुफ्कार छोड़ते हुए बोले .

" मैं तो जा रहा हूँ ठाकुर साहब . और ये मेरा अंतिम निर्णय है ."

" तो फिर हमारा भी अंतिम निर्णय सुन लो मोहन , अगर तुमने हवेली के बाहर कदम रखने की कोशिश भी की , तो हम तुम्हे गोली मार देंगे ." ठाकुर साहब ये कहते हुए दीवार पर टाँग रखी बंदूक की तरफ बढ़ गये . उन्होने बंदूक उतारी और मनोहर बाबू पर तान दी .

" ठाकुर साहब , आप बंदूक की ज़ोर दिखा कर मुझे डरा नही सकते . मेरा फ़ैसला अटल है ." मनोहर बाबू ठाकुर साहब की धमकियों की परवाह ना करते हुए बोले .

फिर दरवाज़े की तरफ बढ़ गये .

" रुक जाओ मोहन ....!" ठाकुर साहब ज़ोर से दहाड़े .

किंतु मनोहर बाबू उनकी बातों को अनसुना करते हुए दरवाज़े की तरफ बढ़ते रहे.

ठाकुर साहब की आँखों में खून उतर आया. उन्होने बंदूक संभाली. मेरी धड़कने बढ़ चली. बात यहाँ तक बढ़ जाएगी मैने सोचा ना था. किंतु इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता "ढायं" की आवाज़ के साथ ठाकुर साहब के बंदूक से एक गोली चली. निशाना था मनोहर बाबू की पीठ. गोली उनके पीठ पर अंदर तक धसती चली गयी. मनोहर बाबू एक चीख के साथ लहराए और फर्श पर गिरते चले गये. उनके हाथ में थमा सूटकेस इधर उधर बिखर गया.

मैं फटी फटी आँखों से मनोहर बाबू को ज़मीन पर तड़पते हुए देखने लगा. अभी मैं उस सदमे से बाहर भी नही निकल पाया था कि एक ज़ोरदार चीख से मेरा ध्यान टूटा. मैने आवाज़ की दिशा में देखा. शारदा जी सीढ़ियों के पास खड़ी फटी फटी आँखों से खून से लथपथ मनोहर बाबू की ओर देखे जा रही थी.

" र .... शारदा .....!" ठाकुर साहब के मूह से घुटि घुटि सी चीख निकली .

शारदा जी तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरती हुई मनोहर बाबू के पास आईं.

" म .... मनोहर जी !" शारदा जी मनोहर बाबू के घायल शरीर को देखती हुई बोली - " ये सब कैसे हो गया मनोहर जी ?"

मनोहर बाबू पीड़ा भरी सूरत लिए शारदा जी को देखने लगे. शारदा जी को देखते ही उनकी आँखों से आँसू छलक पड़े. वे टूटते हुए शब्दों में शारदा जी से बोले -
"म....माफ़फ.....कीजिए.......शारदा जी, मैने.....आपसे.....ग़लत.....कहा.....था....कि, आपके......पति......देवता......हैं.......वे......द.......देवता.......नही.......हैं."

" मनोहर जी , आपको कुछ नही होगा मनोहर जी . मैं अभी डॉक्टर को बुलाती हूँ ." शारदा जी , मनोहर जी की हालत पर बिलखती हुई बोली .

" म ..... मेरा .... वक़्त ..... पूरा .... हो .... चुका ..... है ....
शारदा जी ...... हो .... सके ..... तो ...... मेरी .... पत्नी ...... को ...... इसकी ...... सूचना .... दे ...... दीजिएगा ." ये अंतिम शब्द कह कर मनोहर जी हमेशा के लिए खामोश हो गये .

शारदा जी पत्थर की मूरती बनी मनोहर बाबू की लाश को घुरती बैठी रहीं.

ठाकुर साहब शारदा जी को यूँ मनोहर बाबू के लाश के पास बैठा देख घबरा गये. वे शारदा जी के पास गये. फिर उन्हे कंधे से हिलाकर बोले - "शारदा , तुम्हे क्या हो गया है शारदा ? तुम्हे इस हालत में यहाँ नही आना चाहिए था. चलो तुम्हे कमरे तक छोड़ आते हैं."

शारदा जी एक झटके से उठी. फिर विक्षिप्त नज़रों से ठाकुर साहब की तरफ देखती हुई बोली - "आपने सुना......मनोहरजी क्या कह रहे थे?......मेरे पति देवता नही हैं."

" रधाआअ ....! ये तुम्हे क्या हो गया है शारदा ?" ठाकुर साहब शारदा जी की हालत पर घबराकर बोले - " हमारा विश्वास करो शारदा , हम इसकी जान नही लेना चाहते थे ."

जवाब में शारदा जी पीड़ा भरी नज़रों से ठाकुर साहब को देखने लगी, उनकी आँखों में उस वक़्त ऐसी पीड़ा व्याप्त थी कि जिस पर नज़र पड़ते ही ठाकुर साहब अंदर से सहम गये.

" शारदा .... होश में आओ शारदा ." ठाकुर साहब शारदा जी को झंझोड़ते हुए बोले .

" मेरे पति देवता नही हैं . उन्होने निर्दोष मनोहर का खून कर दिया ." शारदा जी बड़बड़ाई .

शारदा जी की मानसिक स्थिति बिगड़ चुकी थी. बार बार एक ही शब्द दोहरा रहीं थी. "मेरे पति देवता नही हैं."

शारदा जी इसी शब्द को बार बार दोहराते दोहराते अचानक ही हँसने लगी.

ठाकुर साहब पागलों की तरह शारदा जी के तरफ देखने लगे.

शारदा जी क़ी हँसी तेज़ होती चली गयी. और फिर ठहाकों में तब्दील हो गयी.

मैं हैरान-परेशान सा कभी मनोहर बाबू की लाश को देख रहा था तो कभी पागलों की तरह ठहाके लगाती शारदा जी को.

मनोहर बाबू की दुखद मृत्यु ने शारदा जी को पागल कर दिया. पाप ठाकुर साहब ने किया था...किंतु उसकी सज़ा पिछले २० सालों से देवी समान शारदा जी को भुगतनी पड़ रही है.

उस हादसे से मैं इस क़दर सुन्न पड़ा हुआ था कि मुझे कुछ भी होश नही था. मैं पत्थर की मूरत बना पूरे घटनाक्रम को समझने की कोशिश कर रहा था. मैं कभी शारदा जी के बारे में सोचने लगता तो कभी मनोहर बाबू के बारे में. ज़हन पर शाम के वक़्त की वो बातें जो मनोहर बाबू और शारदा जी के बीच हुई थी, मुझे रह रह कर याद आ रही थी.

कितने खुश थे शाम को ये सोचकर की दो दिन बाद वे अपने घर लौटेंगे और आप लोगों से मिल सकेंगे. रात खाने के वक़्त भी उनके चेहरे पर वही खुशी विराजमान थी. उन्हे तनिक भी इसका अंदाज़ा नही था कि आज की रात उनकी ज़िंदगी की आखरी रात हो सकती है. जो आँखें अपने परिवार को देखने की खुशी में चमक उठी थी. कौन जानता था कि वोही आँखें कुछ देर में सदा के लिए बंद होने वाली है.

सोचा तो मैने भी नही था कि पल में इतना सब कुछ हो जाएगा. किंतु अनहोनी तो हो चुकी थी. कुछ देर पहले के जीते जागते मनोहर बाबू अब मेरे सामने लाश में तब्दील हुए पड़े थे

ठाकुर साहब बदहावाश शारदा जी को संभालने में लगे हुए थे. शारदा जी थोड़ी शांत हुई तो ठाकुर साहब उन्हे उठाकर अपने कमरे में ले गये. फिर हॉल में उस जगह पर आए जहाँ मनोहर बाबू का निर्जीव शरीर पड़ा था.

" इस लाश को ठिकाने लगाना होगा मुनीम जी . वो भी रातों रात .... अगर इस खून की भनक भी किसी को हो गयी तो हम ज़िंदगी भर जेल की हवा खाते रहेंगे ."

" जी मालिक ..." मेरे मूह से मुश्किल से निकला . मैं आगे की आज्ञा के लिए ठाकुर साहब की सूरत देखने लगा .

" इसे स्टोर रूम में लिए चलते हैं . वहाँ का फर्श अभी कच्चा है . वहीं खड्डा खोद कर इसे दफ़न कर देंगे ." ठाकुर साहब मेरी और देखकर बोले .

मेरी गर्दन अपने आप हां में हिलने लगी.

" मुनीम जी , इस रहस्य को आप अपने तक ही सीमित रखिएगा . अन्यथा हमारे साथ आप भी लपेटे में आ जाएँगे ." ठाकुर साहब ने मुझे चेतावनी दी .

मेरी गर्दन फिर से हां में हिली.

मेरी स्वीकृति मिलते ही ठाकुर साहब मनोहर बाबू के शरीर को सर के तरफ से पकड़ कर उठा लिए.....फिर मेरी ओर देखकर आँखों की भाषा में लाश उठाने का संकेत किए. मैं हरकत में आया. मैं मनोहर बाबू के पावं के तरफ आया और उनके टाँगो को पकड़कर उठा लिया.

मनोहर बाबू की लाश को उठाए हम धीरे धीरे स्टोर रूम की तरफ बढ़ते चले गये.

स्टोर रूम में पहुँचकर हम ने लाश को नीचे रखा. फिर गड्ढा खोदने के लिए औज़ार ढूँढने लगे. पास ही एक कोने में मजदूरों का सामान पड़ा था. मैने ज़मीन खोदने के लिए गैन्ति और ठाकुर साहब ने कुदाल उठा लिए.

मैने काँच के बने फर्श को एक नज़र देखा फिर अपनी शक्ति का भरपूर प्रयोग करते हुए गैन्ति को फर्श पर मारने लगा.

" थक्क .... थककक ...." करती गांटी की आवाज़ .... रात के सन्नाटे को चीरती हुई पूरी हवेली में गूँजती जा रही थी . आवाज़ बाहर ना जाए इसके लिए हम ने हवेली के

सारे खिड़की दरवाज़े बंद कर दिए थ े .

मैं पसीने से लथ-पथ गैन्ति चलाए जा रहा था. गैन्ति की आवाज़ के साथ साथ कभी कभी शारदा जी की चीख और ज़ोर के ठहाकों से भी हवेली गूँज उठती थी.

जब कभी उनकी चीख या ठहाके हमारे कानों से टकराते तो हमारे रोंगटे खड़े हो जाते. किंतु हम उसकी परवाह किए बिना अपना काम करते रहे. मैं ज़मीन खोदता रहा और ठाकुर साहब मिट्टी उठाते रहे. लगभग ३ घंटे की अथक मेहनत के बाद हम ने इतना गड्ढा खोद लिया था कि हम मनोहर बाबू की लाश को दफ़ना सकें.

मनोहर बाबू की लाश को दफ़नाने के बाद हम वापस हॉल में आए और हॉल में फैले मनोहर बाबू के खून को साफ करने लगे. कुछ ही देर में हम ने वो काम भी पूरा कर लिए था. इस पूरी प्रक्रिया में मेरी जो हालत थी वो मैं ही जानता था.

मनोहर बाबू के खून के सारे सबूत मिटाने के बाद मैं अपने घर आ गया.

मनोहर बाबू के शरीर के साथ साथ उनकी मौत का रहस्य भी सदा के लिए हवेली के नीचे दबकर रह गया. किसी को ज़रा भी भनक नही लगी कि रात हवेली में क्या हुआ. गांव का कोई भी इंसान ये नही जान पाया कि हवेली में कितने कारीगर काम करने के लिए आए थे और कितने लौटकर गये. गांव वालों को ना तो कारीगरों के काम से कोई मतलब था ना उनके नाम और पते से. हां....पर एक नयी खबर जो गांव वालों के कानो तक पहुँची वो थी शारदा देवी के पागल होने की. कोई नही जान पाया कि एक दिन पहले हवेली में आई शारदा जी को अचानक रातों रात क्या हो गया कि वो पागल हो गयी?

लोग हैरान हुए परेशान हुए. ठाकुर साहब के दुख का अनुभव करके दुखी भी हुए पर कोई ये नही जान पाया कि ये सब हुआ कैसे? लोगों को इसका जवाब या तो मैं दे सकता था या फिर ठाकुर साहब."

अपनी बात पूरी करके मुनीम जी ने यशोदा जी की तरफ देखा.

यशोदा जी की आँखों से आँसुओं की बाढ़ बह निकली थी. जो रुकने का नाम ही नही ले रही थी.

यशोदा जी को रोता देख मुनीम जी अपनी सफलता पर मन ही मन मुस्कुराए.

" बेहन जी ..... हो सके तो मुझे माफ़ कर दीजिएगा ." मुनीम जी शोक प्रकट करते हुए बोले - " उस वक़्त मैं विवश था . ठाकुर साहब की मदद करना मेरी मजबूरी बन गयी थी . मेरी पत्नी हॉस्पिटल में थी . मुझे रुपयों की सख़्त ज़रूरत थी . उनकी मदद करने के अलावा मेरे पास और कोई चारा ना था . अगर मैं अपनी स्थिति को भूलकर उनका विरोध करता भी तो सिवाए मुझे नुकसान के कुछ ना मिलता . ठाकुर साहब अपने बचाव के लिए कुछ भी कर सकते थे . वो मेरी जान भी ले सकते थे . मैं उनके हर आदेश पालन के लिए पूरी तरह से मजबूर था . उन्होने जो भी कहा बिना अधिक सोचे मैं करता चला गया ."

" मुझे आपसे कोई शिकायत नही है मुनीम जी . उल्टे आपका आभार मानती हूँ कि आपने इस रहस्य को मेरे सामने खोला . वरना मैं सारी ज़िंदगी यही सोचती रहती कि मेरे पति काम पर गये हैं और एक दिन ज़रूर लौटकर आएँगे ." यशोदा जी की रुलाई फुट पड़ी थी .

यशोदा जी को रोते देख मुनीम जी के होंठों में मुस्कुराहट तैर गयी. उनकी ये चाल कारगर होती नज़र आ रही थी.

" लेकिन मैं ठाकुर साहब को माफ़ नही करूँगी मुनीम जी ." यशोदा जी अपने आँसुओं को पोछती हुई आगे बोली - " वो समझते हैं इतना बड़ा अपराध करके भी वो बच जाएँगे तो ये उनकी भूल है . मैं उन्हे जेल की हवा खिलाकर रहूंगी ."

" नही बेहन जी , आप क़ानूनन उनका कुछ नही बिगाड़ सकती ." मुनीम जी उन्हे टोकते हुए बोले - " बात बहुत पुरानी हो चुकी है , अब तो मनोहर बाबू के अवशेष भी मिट्टी में मिल गये होंगे . हम उन्हे मुज़रिम साबित नही कर सकते ."

" तो क्या आप चाहते हैं मैं उन्हे अपने पति का खून माफ़ कर दूँ ." यशोदा जी सवालिया नज़रों से मुनीम जी को देखती हुई बोली .

" हरगिज़ नही ...." मुनीम जी तपाक से बोले - " उनका अपराध क्षमा के लायक ही नही है . उन्हे सज़ा ज़रूर दीजिए ..... पर ऐसी सज़ा जो मौत से भी बदतर हो ."

" तो आप बताइए मुनीम जी , जो आप कहेंगे मैं वोही करूँगी . किंतु उन्हे माफ़ नही करूँगी ." यशोदा जी अपने जबड़े भिच कर बोली .

" उनकी सबसे बड़ी सज़ा ये होगी कि आप कांचन को अपनी बहू बनाने से इनकार कर दें . उनकी आधी ज़िंदगी तो शारदा जी के दुख में रोते गुज़री है , शेष आधी ज़िंदगी अब बेटी के दुख में रोते हुए गुज़रेगी ." मुनीम जी कुटिलता के साथ मुस्कुराते हुए बोले .

" कांचन को अपनी बहू बनाने के बारे में तो अब मैं सोच भी नही सकती . जिसके बाप ने मेरे माँग का सिंदूर उजाड़ा है मैं अपने बेटे के हाथों उसकी माँग भराई कैसे करवा सकती हूँ . अब वो कभी मेरे घर की बहू नही बन सकती . कभी भी नही ...." यशोदा जी द्रृढ शब्दों में बोली .

यशोदा जी के अंतिम शब्द सुनकर मुनीम जी गदगद हो उठे. उनका छोड़ा हुआ तीर निशाने पर लग चुका था.

" यशोदा जी वैसे तो मैं बहुत साधारण आदमी हूँ , पर फिर भी जब कभी आपको मेरी मदद की ज़रूरत हो मुझे ज़रूर याद कीजिएगा . मेरे घर के दरवाज़े आपके लिए हमेशा खुले रहेंगे ." मुनीम जी दबे शब्दों में यशोदा जी को अपने घर आने का निमंत्रण दे गये .

" आपका एहसान होगा हम पर मुनीम जी . वैसे भी इस गांव में आपके सिवा हमारा कोई नही ."

" आप जाइए बेहन जी और अजित बाबू को लेकर आइए . आज से ये घर आप ही का घर है ." मुनीम जी यशोदा जी से बोले .

यशोदा जी मुनीम जी को धन्यवाद कहती हुई उठी और मुनीम जी के घर से बाहर निकल गयी.

उनके जाते ही मुनीम जी अपनी पत्नी रुक्मणी से बोले. - "अब मेरा बदला पूरा हुआ रुक्मणी. तुमने ये तो सुना होगा कि लोग एक तीर से दो निशाने भी करते हैं, लेकिन आज

मैने एक तीर से तीन निशाने किए हैं. तीन..."

रुक्मणी मुनीम जी की सूरत देखती रही, किंतु उनकी बातों का अर्थ नही जान पाई.

" नही समझ़ी ... .." मुनीम जी रुक्मणी को आश्चर्य से देखते हुए बोले - " आज यशोदा जी को उनके पति की मौत का रहस्य बताकर मुझे तीन फ़ायदे हुए हैं . पहला ये कि यशोदा जी का विश्वास जीत लिया . दूसरा ये कि अजित से कांचन को हमेशा के लिए अलग कर दिया . और तीसरा फ़ायदा ...." मुनीम जी हौले से मुस्कुराए - " तीसरा फ़ायदा ये हुआ कि उस नमक हराम धनपाल से डिंपल की बर्बादी का बदला ले लिया . कांचन से जितना ठाकुर साहब को प्रेम ना होगा उससे कई गुना अधिक धनपाल को उससे प्रेम है . अब उसे पता चलेगा कि खुद की जान से प्यारी किसी चीज़ को जब तकलीफ़ होती है तब खुद के दिल पर क्या गुज़रती है . मैने उसे ऐसा घाव दिया है कि अब वो सारी उमर सिवाए सिसकने , तड़पने और फड़फड़ाने के अतिरिक्त कुछ भी ना कर पाएगा ."

२५

यशोदा जी हवेली में दाखिल हुई. हॉल में ठाकुर साहब, कांचन और अजित बैठे हुए चाइ पी रहे थे. ठाकुर साहब पर नज़र पड़ते ही यशोदा जी का चेहरा सख़्त हो गया. नफ़रत की एक चिंगारी उनके पूरे बदन में दौड़ गयी.

ठाकुर साहब ने जैसे ही यशोदा जी को हॉल में आते देखा सोफे से खड़े होकर उन्हे नमस्ते किए.

किंतु यशोदा जी ठाकुर साहब के नमस्ते का उत्तर दिए बिना मूह मोड़ कर अपने कमरे की ओर बढ़ गयीं.

ठाकुर साहब भौचक्के से यशोदा जी को जाते हुए देखते रहे. यशोदा जी के इस व्यवहार पर उन्हे बेहद हैरानी हुई. उन्हे ये समझ में नही आया कि अचानक यशोदा जी को क्या हो गया.

यही दशा कांचन और अजित की थी.

कांचन तो घबराहट के मारे सिकुड सी गयी थी. वो सदा ही यशोदा जी से भयभीत रहती थी.

किंतु अजित अपनी मा के इस रूखे व्यवहार का कारण जानने उनके पिछे पिछे उनके कमरे तक जा पहुँचा.

" क्या बात है मा ?" अजित ने रूम के अंदर कदम रखते ही यशोदा जी से पुछा - " आप ठाकुर साहब के नमस्ते का उत्तर दिए बिना ही उपर आ गयीं . क्या उनसे कोई भूल हो गयी है जो आपने उनका इस तरह से अपमान किया ?"

" मान - अपमान जैसा शब्द उस ठाकुर के लिए नही है अजित , जिसके पहलू में तुम बैठे थे . ये तो वो इंसान है जिसका बस चले तो अपनी झूठी शान कायम रखने के लिए अपनी बीवी और बेटी की भी बलि दे दे ."

" क्या कह रही हो मा ?" अजित ने धीरे से किंतु आश्चर्य से यशोदा जी को देखते हुए कहा .

" अजित तू बचपन से ही अपने पिता के बारे में पुछता था ना कि वो कहाँ गये हैं ? क्यों तुमसे मिलने नही आते ? और मैं तुम्हे झूठी दिलासा दिया करती थी . मैं खुद भी बरसों से झूठी आस के सहारे जी रही थी . सालों से मेरा मन कह रहा था कि तुम्हारे पिता के साथ कुछ तो अनहोनी हुई है . पर मैं कभी मायूस नही हुई और उनका इंतेज़ार करती रही . लेकिन आज २० साल बाद ये पता चला कि वे लौटकर क्यों नही आए ."

" क्या ..... तो क्या पीताजी का पता चल गया मा ? कहाँ हैं पीताजी और इतने बरसों तक वे लौटकर क्यों नही आए ?" अजित उत्सुकता से अपनी मा के चेहरे को देखता हुआ बोला . उसके मन में अपने पिता के बारे में जानने की जिज्ञासा बचपन से थी और इस वक़्त तो वो मुनीमा हुआ जा रहा था .

यशोदा जी अजित की बेताबी देखकर कराह उठी. वो भीगी पलकों से अजित को देखने लगी.

" जवाब दो मा .... कुछ तो बताओ ." अजित मा को खामोश देखकर दोबारा पुछा .

" वे इस लिए लौटकर नही आ सके अजित .... क्योंकि २० साल पहले ही ठाकुर साहब ने उनका क़त्ल कर दिया था ."

" क ..... क्या ?" अजित फटी फटी आँखों से मा को देखने लगा . उसने जो कुछ सुना उसपर यकीन करना उसे मुश्किल हो रहा था - " क्या कह रही हो मा ? पीताजी का खून हो गया है ... वो भी ठाकुर साहब के हाथों ....?"

" हां अजित , यही सच है ." जवाब में यशोदा जी ने मुनीम जी के मूह से सुनी सारी बातें अजित के सामने दोहरा दी .

अपने पिता का हश्र जानकार अजित का खून खौल उठा. गुस्सा ऐसा सवार हुआ की उसका दिल चाहा अभी वो जाकर ठाकुर साहब का गला दबा दे. लेकिन यशोदा जी के

समझाने पर वो रुक गया.

यशोदा जी अपना पति खो चुकी थी पर बेटा नही खोना चाहती थी. अपने घर से इतनी दूर अकेले ठाकुर साहब से भिड़ना उनके लिए ख़तरनाक हो सकता था.

" अब हम इस घर में नही रहेंगे अजित . जिस घर की दीवारों पर मेरे पति के खून के छींटे पड़े हों , उस घर की हवा भी मेरे लिए ज़हर है . हम आज ही अपने घर लौट चलेंगे ."

अजित कुछ ना बोला. वो कोई निर्णय लेने के पक्ष में नही था और ना ही यशोदा जी की बात काटने का उसमे साहस था.

यशोदा जी आनम फानन अपना सामान पॅक करने लगी. उनको सामान पॅक करते देख अजित भी अपने कपड़े और दूसरी चीज़ें अपने सूटकेस में भरने लगा.

लगभग २० मिनिट बाद दोनो अपना सामान उठाए कमरे से बाहर निकले.

हॉल में अभी भी कांचन और ठाकुर साहब बैठे हुए थे. वे दोनो अभी भी इसी बात पर विचार-मग्न थे कि यशोदा जी को क्या हुआ है. उनका व्यवहार अचानक से क्यों बदल गया है.

कांचन तो चिंता से सूख सी गयी थी. वो हमेशा ही यशोदा जी से डरी सहमी रहती थी. ना जाने वो किस बात पर भड़क जाएँ. हमेशा यही प्रयास करती थी कि उससे ऐसी कोई भूल ना हो जिससे यशोदा जी नाराज़ हो जाएँ. किंतु आज जब यशोदा जी का रूखा व्यवहार देखा तो सोच में पड़ गयी. यशोदा जी से उसकी आखरी मुलाक़ात रात को हुई थी. तब से लेकर अब तक की सारी बातें याद करने लगी और ये जानने की कोशिश करने लगी की उससे कब और कहाँ कौन सी भूल हुई. पर लाख सोचने पर भी उसे अपनी ग़लती नज़र नही आई.

कांचन अभी इन्ही सोचो में गुम थी कि उसे यशोदा जी और अजित सीढ़ियाँ उतरते दिखाई दिए. उनके हाथ में थामे सूटकेस पर जब उसकी नज़र गयी तो उसके होश उड़ गये. उसका दिल किसी अनहोनी की कल्पना करके ज़ोरों से धड़क उठा.

ठाकुर साहब की भी हालत कुछ अच्छी नही थी. यशोदा जी और अजित को सीढ़ियाँ उतरते देख उनके चेहरे का रंग भी उड़ चुका था. वो विस्मित नज़रों से दोनो को सीढ़ियाँ उतरते देखते रहे.

जैसे ही दोनो सीढ़ियाँ उतरकर हाल में आए - ठाकुर साहब लपक कर उनके पास गये. - "बेहन जी ये सब....? आप लोग इस वक़्त कहाँ जा रहे हैं?"

ठाकुर साहब के पुछने पर यशोदा जी के दिल में आया कि जितना भी उनके अंदर ज़हर है वो सब उनपर उगल दे. पर सिर्फ़ खून के घूट पीकर रह गयी. गुस्से की अधिकता में उनसे इतना ना बोला गया. दो टुक शब्दों में उन्होने जवाब दिया - "हम हवेली छोड़कर जा रहे हैं. अब हम यहाँ नही रह सकते."

" क ... क्या ? लेकिन क्यों ? क्या हम से कोई भूल हुई है ?"

" क्या आप सच में नही जानते कि आपसे क्या भूल हुई है ?" यशोदा जी तीखे बान छोड़ती हुई बोली . - " आपने जो किया है उसे भूल कहना भी भूल का अपमान होगा ठाकुर साहब , आपने तो पाप किया है .... पाप ."

ठाकुर साहब का सर चकरा गया. उनके समझ में नही आया कि यशोदा जी किस पाप की बात कर रहीं है. उनसे रातों रात ऐसा कौन सा पाप हो गया है जिसके लिए यशोदा जी हवेली छोड़ कर जा रही हैं. जब कुछ भी समझ में नही आया तो उन्होने पुछा - "मैं सच में नही समझ पा रहा हूँ बेहन जी आप क्या कह रही हैं?"

" मनोहर कुमार याद है आपको ?"

" म ...... मनोहर कुमार ....?" ठाकुर साहब बुरी तरह से चौंके . वे हकलाते हुए बोले - " आ ..... आप किस मनोहर कुमार की बात कर रही हैं ?"

" मैं उसी मनोहर कुमार कारीगर की बात कर रही हूँ जिसे आप लोगों ने हवेली में काँच की कारीगरी के लिए बुलवाया था . मैं उसी मनोहर कुमार की बात कर रही हूँ जिसके पीठ पर आपने इसलिए गोली मारी थी ताकि वो फिर से ऐसी भव्य हवेली का निर्माण ना कर सके ."

" आ .... आप ..." ठाकुर साहब की ज़ुबान लड़खड़ा कर रह गयी . मूह से आगे एक भी बोल ना फूटे . उन्हे ऐसा महसूस हुआ जैसे हवेली की पूरी छत उनके सर पर आ गिरी हो .

" हां मैं उसी मनोहर कुमार की विधवा हूँ ."

ठाकुर साहब मूह फेड यशोदा जी को देखते रह गये.

कांचन भी अवाक थी. यशोदा जी की बात सुनकर उसे गहरा धक्का लगा था. उसने सपने में भी नही सोचा था कि उनके पिता ठाकुर रामप्रताप सिंह जिन्हे पूरा गांव देवता समझता है उनके हाथ किसी के खून से रंगे हो सकते हैं.

इस रहस्योदघाटन से कांचन सकते में आ गयी थी. ठाकुर साहब के उपर जो पहाड़ टूटा था उससे भी कहीं बड़ा पहाड़ कांचन पर टूटा था. साफ शब्दों में कहें तो उसकी पूरी दुनिया ही लूट चुकी थी.

इस विचार के आते ही कि अब वो सदा के लिए अजित को खो चुकी है. यशोदा जी अब उसे किसी भी कीमत पर अपनी बहू स्वीकार नही करेंगी, वो सूखे पत्ते की तरह काँप उठी थी. उसकी हालत इस वक़्त ऐसी थी कि वो अजित से गुहार करना तो दूर उससे नज़र भी नही मिला पा रही थी. वो बस अंदर ही अंदर अपनी बाद-किस्मती पर सिसक रही थी.

उसने फिर भी साहस करके अजित को देखा. अजित की नज़रें भी कांचन पर ही टिकी हुई थी. किंतु कांचन से नज़र टकराते ही उसने अपना मूह फेर लिया.

कांचन की आँखें भर आई.

ठाकुर साहब के पास कहने के लिए कुछ था ही नही. और कुछ था भी तो यशोदा जी से कहने का साहस नही कर पा रहे थे. वो पत्थर की मूरत में तब्दील हो चुके थे.

उन्हे जब होश आया यशोदा जी और अजित हवेली से बाहर निकल चुके थे. ठाकुर साहब पलटकर कांचन को देखने लगे. कांचन की आँखों में आँसू थे. कांचन को रोता देख उनके दिल पर आरी सी चल गयी. किंतु इससे पहले की वो कांचन के सम्मुख दिलासा के दो बोल

भी बोल पाते....कांचन मूडी और अपने कमरे की तरफ बढ़ गयी. ठाकुर साहब का सिर अपराध से झुक गया. वे निढाल होकर सोफे पर पसर गये.

यशोदा जी और अजित जैसे ही हवेली से बाहर निकले मुनीम जी भागते हुए उनके पास आए.

" सामान मुझे दीजिए बेहन जी . मैं लिए चलता हूँ . मेरा घर आपके होने से पवित्र हो जाएगा ." मुनीम जी खुशी से आँखें चमकाते हुए बोले और यशोदा जी से सूटकेस लेने लगे .

" हम अपने घर जाना चाहते हैं मुनीम जी . अब हम इस गांव में नही रुकेंगे ."

यशोदा जी की बात सुनकर मुनीम जी के होश उड़ गये. उन्हे अपनी योजना असफल होती नज़र आई. वे तुरंत बात बनाकर बोले - "ऐसा ना कहिए बेहन जी, कुछ दिन हमारे घर रुक जाइए. हमें अपनी सेवा का मौक़ा दें. मनोहर बाबू को यहाँ लाने वाला मैं ही था. मुझे भी प्रायश्चित का मौक़ा दीजिए. कम से कम २ दिन के लिए ही सही पर इनकार मत कीजिए."

यशोदा जी अजित को देखने लगी.

अजित के लिए जैसे ठाकुर साहब थे वैसे ही मुनीम जी. उसे ना तो ठाकुर साहब की सूरत पसंद थी और ना ही मुनीम जी की. पर मरता क्या नही करता. ना जाने क्यों उसका मन भी यही चाह रहा था कि वो अभी गांव छोड़ कर ना जाए. कोई तो बंधन था जो उसे रोक रहा था. उसने सहमति में सर हिलाते हुए कहा - "मुनीम जी ठीक कह रहे हैं मा. हमें कुछ दिन रुकना चाहिए."

यशोदा जी का मन विचलित था. पर ना ना करके भी वो दिन के लिए रुकने को राज़ी हो गयीं.

उनकी हां देखकर मुनीम जी का चेहरा खिल गया. उन्होने यशोदा जी का सामान उठाया और अपने घर की तरफ बढ़ गये. अजित और यशोदा जी भी उनका पद-अनुसरण करते हुए उनके पिछे चल पड़े.

मुनीम जी उन्हे उनके कमरे तक ले गये. अजित काफ़ी देर तक यशोदा जी के साथ बैठा उन्हे दिलासा देता रहा. यशोदा जी ने लंच भी नही किया. कुछ देर बाद थकान ने उन्हे आ घेरा और वो बिस्तर पर आराम की ग़र्ज़ से लेट गयीं. उन्हे आराम करता देख अजित भी अपने कमरे में चला आया.

अजित बिस्तर पर लेटा कांचन के बारे में सोच रहा था. हवेली से निकलते वक़्त उसका मुरझाया हुआ सूरत बार बार आँखों के आगे आ रहा था. उसने सोचा - "इसमे कांचन का क्या दोष....उसने तो कुछ भी नही किया. वो तो धनपाल के घर पली बढ़ी है. हवेली के हर पाप और मक्कारी-फरेब से दूर रही है. फिर मैं उसे किस बात की सज़ा दे रहा हूँ. अगर उसका गुनाह इतना है कि वो ठाकुर जैसे खूनी की बेटी है तो मुझे ये भी नही भूलना चाहिए कि उसे जन्म देने वाली औरत शारदा जैसी देवी है."

शारदा जी की याद आते ही उसकी सोच का दायरा घुमा. "शारदा जी, उनका इलाज भी तो अधूरा है, उन्हे किस भरोसे छोड़ कर जाऊंगा? क्या डॉक्टर होने का कर्तव्य यही है? नही... उन्हे इस वक़्त मेरे साथ की मेरे इलाज़ की ज़रूरत है, ऐसी हालत में मैं उन्हे छोड़ कर नही जा सकता. मुझे इस संबंध में मा से बात करनी होगी."

अजित उठा और मा के कमरे में दाखिल हुआ.

यशोदा जी सो चुकी थी. अजित उनके पायतने बैठा उनके जागने का इंतेज़ार करने लगा.

काफ़ी देर बाद यशोदा जी की आँख खुली.

" कैसी हो मा ?" उन्हे जागता देख अजित बोला - " मा मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूँ ."

" हां बोलो ...." यशोदा जी उठकर बैठी हुई बोली .

" मा , मैं कुछ दिन और यहाँ रहने की बात कर रहा था ."

" क्यों .... क्या कांचन का भूत अभी तक तुम्हारे दिमाग़ से उतरा नही है ?"

" इसमे उसका क्या दोष है मा ? उसने तो कुछ नही किया . वो तो गांव में पली बढ़ी एक ग़रीब लड़की है . उसका हवेली वालों से कोई लेना देना नही . फिर उसे इस बात की सज़ा क्यों दे मा ?"

" बस कर अजित ." यशोदा जी आँखें तरेर कर बोली - " फिर कभी अपनी ज़ुबान पर उस लड़की का नाम भी मत लाना , अगर मैं उसे अपने घर ले आई तो वो लड़की ज़िंदगी भर मेरी छाती में शूल की तरह चुभती रहेगी . वो उस हत्यारे की बेटी है जिसने मेरी माँग का सिंदूर उजाड़ा . मुझे उसके साए से भी नफ़रत है ."

" और शारदा जी . क्या उनसे भी इतनी ही नफ़रत है . जिन्हे पिताजी की मौत ने इतना दुखी किया कि वो अपना मानसिक संतुलन खो बैठी . जो पिछले २० सालों से बंद कोठरी में पड़ी ना तो जी रही हैं ना मर रही हैं . क्या उनके बारे में भी ऐसे ही विचार हैं आपके ?"

यशोदा जी चूप हो गयी. शारदा जी की याद आते ही उनका गुस्सा पल में गायब हो गया. - "उस देवी से मुझे भी हमदर्दी है...पर बेटा...!"

" मा .... शारदा जी के बारे में सोचो मा . बिना कोई अपराध किए उनका पूरा जीवन बंद कोठरी में बीत गया . क्या आप चाहती हैं कि निर्दोष होते हुए भी वो इसी तरह एक दिन मर जाएँ ? मा मैं जब कभी उनके कमरे में जाता था उनकी आँखों में एक अज़ीब सी पीड़ा का अनुभव करता था . किंतु जैसे ही उनकी नज़र मुझपर पड़ती उनके सूखे चेहरे पर खुशी दौड़ जाती थी . जाने क्या बात थी पर उन्हे देखकर मुझे तुम्हारी याद आ जाती थी . उनका मेरे सिवा कोई नही है मा . कम से कम एक डॉक्टर होने के नाते मैं उन्हे मरते हुए नही छोड़ सकता ."

" ठीक है अजित , तुम उनका इलाज़ करो , जब तक वो ठीक नही हो जाती . हम इसी गांव में रहेंगे ." यशोदा जी भावुक होकर बोली .

" थैंक यू मा ." अजित उन्हे अपनी छाती से लगाते हुए बोला .

" लेकिन कांचन के बारे में मेरा फ़ैसला अभी भी वोही है . मैं उसे अपने घर की बहू कभी नही बनाउंगी ."

यशोदा जी के इस बात पर अजित ने चुप्पी साध लेना ही बेहतर समझा.

२६

शाम के ५ बजे थे. कांचन अपने कमरे में चिंता-मग्न बैठी थी. चिंटू टीवी का साउंड उँचा किए टीवी देखने में मशगूल था.

कांचन के मस्तिष्क पर आज दिन की घटना का चलचित्र चल रहा था. यशोदा जी के मूह से ये सुन लेने के पश्चात कि उसके पिता ने २० साल पहले अजित के पिता की हत्या की थी. उसका कोमल दिल आहत हो चुका था. उसके पिता हत्यारे हैं, सिर्फ़ इसलिए कि ऐसी हवेली दोबारा ना बने, उन्होने अजित के निर्दोष पिता का खून कर दिया. ये एहसास उसे अंदर से कचोटे जा रहे थे. उसे तेज़ घुटन सी महसूस होने लगी थी.

" अब मैं यहाँ नही रहूंगी ." वो मन ही मन बोली - " पता नही साहेब के दिल पर क्या गुज़र रही होगी . क्या सोचते होंगे वो मेरे बारे में ..... यही ना कि मैं कितनी संगदिल हूँ जिस घर में उनके पिता का खून बहा है मैं उसी घर में मज़े से रह रही हूँ . नही ..... अब मैं यहाँ नही रह सकती . मैं अभी चली जाती हूँ ."

कांचन ने अपने विचारों को विराम दिया और चिंटू को देखा. चिंटू टीवी पर नज़रे जमाए बैठा था.

" चिंटू ..." कांचन ने उसे पुकारा . किंतु चिंटू के कानो में ज़ू तक नही रेंगी . कांचन ने दोबारा पुकारा . पर इस बार भी चिंटू का ध्यान नही टूटा . कांचन गुस्से से उठी और उसके हाथ से रिमोट छीनकर टीवी बंद कर दी .

चिंटू मूह फूला कर बोला - "दीदी टीवी देखने दो ना. कितनी अच्छी पिक्चर आ रही थी."

" नही , अब चलो यहाँ से . हम बस्ती जा रहे हैं . अब हम यहाँ नही रहेंगे ." कांचन चिंटू के रूठने की परवाह किए बिना उसका हाथ पकड़ कर उसे खींचती हुई कमरे से बाहर निकल गयी .

हॉल में बबलू दिखाई दिया. कांचन बबलू से ये कहकर कि वो बस्ती जा रही है, हवेली से बाहर निकल गयी.

हवेली से निकलकर बस्ती की ओर जाते हुए चिंटू की नज़रें बार बार हवेली की तरफ मूड रही थी. उसे हवेली छूटने का बेहद दुख हो रहा था. यहाँ उसे हर चीज़ के मज़े थे. रोज़ अच्छे और स्वादिष्ट पकवान भर पेट खाने को मिल रहा था, ताज़े फल, फ्रूट के साथ गिलास भर कर मेवे वाला दूध भी सुबह शाम पीने को मिल रहा था. वहाँ गांव में टीवी नही थी, यहाँ दिन भर टीवी देखने का मज़ा ले रहा था.

किंतु कांचन को चिंटू के मन की दशा का भान नही था. वह तो अपने दुख से दुखी उसका हाथ थामे उसे जबरन खींचती हुई बस्ती की ओर बढ़ी चली जा रही थी.

चलते हुए अचानक ही कांचन को ये ख्याल आया. -"साहेब और मा जी, हवेली से निकल कर कहाँ गये होंगे? कहीं साहेब गांव छोड़कर अपने घर तो नही चले गये?"

कांचन के बढ़ते हुए कदम थम गये.

चिंटू ने उसे हसरत से देखा. उसे लगा शायद दीदी अब हवेली लौटेगी.

" अब क्या करूँ ?" कांचन ने खुद से पुछा .

वो कुछ देर खड़ी सोचती रही. पहले उसका मन चाहा वो घर जाकर बाबा को सब बात बता दे और बाबा को अजित और माजी को मनाने स्टेशन भेज दे. शायद वे लोग अभी भी वहीं हों. पर अगले ही पल उसे ये विचार आया कि जब तक वो घर जाकर अपने बाबा को बताएगी और उसके बाबा जब तक स्टेशन आएँगे. तब तक कहीं साहेब और मा जी ट्रेन में बैठकर घर ना चले जाएँ.

उसने खुद ही स्टेशन जाने का विचार किया.

वो चिंटू को लिए तेज़ी से मूडी. और स्टेशन के रास्ते आगे बढ़ गयी.

कांचन स्टेशन पहुँची. उसकी प्यासी नज़रें अजित की तलाश में चारों तरफ दौड़ने लगी.

स्टेशन लगभग खाली था. प्लॅटफॉर्म पर कोई ट्रेन नही थी.

काफ़ी देर इधर उधर ढूँढने के बाद भी उसे अजित कहीं दिखाई नही दिया.

अजित को ना पाकर उसके चेहरे पर उदासी फैल गयी. मन रोने को हो आया. दबदबाई आँखों से एक बार फिर उसने पूरे स्टेशन पर अपनी नज़रें घुमाई. लेकिन अजित तो ना मिलना था ना मिला.

वो वहीं लोहे की बनी बर्थ पर बैठकर सिसकने लगी.

चिंटू के समझ में कुछ भी नही आ रहा था. लेकिन कांचन को रोता देख उसे भी रोना आ रहा था.

तभी किसी ट्रेन के आने की आवाज़ उसके कानो से टकराई.

उसने गर्दन उठाकर आती हुई ट्रेन के तरफ देखा.

धड़-धड़ाती हुई ट्रेन प्लॅटफॉर्म पर आकर रुकी. उसके रुकते ही यात्रियों के उतरने और चढ़ने का सिलसिला शुरू हो गया. कुछ देर पहले जो स्टेशन खाली सा दिख रहा था अब लोगों की भीड़ से भरने लगा था.

कांचन कुछ सोचते हुए उठी. चिंटू को बर्थ पर बैठे रहने को बोलकर खुद ट्रेन के समीप जाकर खिड़कियों से ट्रेन के अंदर बैठे मुसाफिरों को देखने लगी.

उसकी नज़रें अजित को ढूँढ रही थी.

अभी कुछ ही पल बीते थे की उसके पिछे से किसी ने उसे पुकारा.

अपना नाम सुनकर कांचन तेज़ी से मूडी. किंतु अपने सामने बिरजू को खड़ा देख उसकी सारी तेज़ी धरी की धरी रह गयी.

" कांचन जी किसको ढूँढ रही हैं आप ?" बिरजू अपने काले दाँत दिखाकर धूर्त मुस्कान के साथ पुछा .

" मैं साहेब को ढूँढ रही हूँ ." कांचन अटकते हुए बोली .

" साहेब ....?" बिरजू ने अज़ीब सा मूह बनाया - " ओह्ह्ह .... तो तुम डॉक्टर बाबू की बात कर रही हो . उन्हे तो मैने ट्रेन के अंदर बैठे देखा है ."

" क्या सच में भैया ....?" कांचन खुशी से चहकते हुए बोली - " क्या उनकी माजी भी साथ थी ?"

" हां माजी भी साथ थी . क्या तुम उनसे मिलना चाहती हो ?"

" हां ....!" कांचन हन में सर हिलाई .

" तो फिर आओ मेरे साथ ..... तुम्हे डॉक्टर बाबू और उनकी माजी से मिलाता हूँ ."

कांचन बिरजू के साथ ट्रेन में चढ़ गयी. अजित के मिलने की खुशी से वो फूले नही समा रही थी. मारे खुशी के उसकी आँखें डब-डबा गयी थी. अजित से मिलने की मुनीमगी में वो ये भी नही समझ पाई कि बिरजू उसे झाँसे में ले रहा है और वो किसी मुसीबत में गिरफ्तार होने वाली है.

बिरजू के लिए ये बिन माँगी मुराद थी. इससे अच्छा अवसर शायद उसे फिर कभी नही मिलने वाला था.

लगभग पूरे गांव को पता था कि बिरजू २ दिनो से शहर गया हुआ है. अब ऐसे में वो कांचन को लेकर कहीं भी जा सकता था. किसी को उसपर शक़ नही होने वाला था.

उसने सोचा भी यही था. कांचन पर नज़र पड़ते ही उसके मन में ये सोच लिया था कि वो कांचन को लेकर शहर जाएगा. कुछ दिन उसके साथ ऐश करेगा फिर उसे कहीं बेचकर गांव लौट आएगा.

उसका सोचा लगभग सही हुआ था. बस ट्रेन चलने की देरी थी.

इस स्टेशन में ट्रेन ५ मिनिट के लिए रुकती थी. और अब ५ मिनिट पूरे होने को आए थे. ट्रेन किसी भी वक़्त छूट सकती थी.

किंतु कांचन को इसका होश नही था. वो किसी भी कीमत में अजित को शहर जाने से रोकना चाहती थी. वो बड़े ध्यान से ट्रेन में बैठे मुसाफिरों के चेहरों को देखती हुई आगे बढ़ती जा रही थी.

बिरजू उसे आगे और आगे लिए जा रहा था.

सहसा ट्रेन ने सीटी बजाई. कांचन कुछ समझ पाती उससे पहले ट्रेन ने एक झटका खाया और चल पड़ी.

ट्रेन को चलता देख कांचन के होश उड़ गये. उसने बिरजू को आवाज़ लगाई. बिरजू थोड़ा आगे बढ़ गया था.

" ये देखो अजित बाबू यहाँ बैठे हैं ." बिरजू ने कांचन को समीप बुलाते हुए कहा .

कांचन बिजली की गति से उसके करीब पहुँची.

वहाँ देखा तो अजित और मा जी नही थी.

उसे देखकर बिरजू धूर्तता से मुस्कुराया.

कांचन के पसीने छूट गये. किंतु अगले ही पल कांचन उसी गति से दरवाज़े की तरफ भागी.

बिरजू उसके पिछे लपका.

कांचन जब तक दरवाज़े तक पहुँचती. ट्रेन हल्की रफ़्तार पकड़ चुकी थी.

बिरजू भी उसके पिछे दरवाज़े तक पहुँचा. वो आज किसी भी कीमत पर कांचन को जाने देना नही चाहता था. ऐसा मौक़ा उसे फिर कभी नही मिलने वाला था.

ट्रेन के खुलते ही चिंटू घबरा उठा. उसने कांचन को बिरजू के साथ ट्रेन में चढ़ते देख लिया था. कांचन के ना आने से चिंटू की हिचकियाँ शुरू हो गयी. वो सीट पर खड़े खड़े रोने लगा.

तभी उसकी नज़र कांचन पर पड़ी. चलती ट्रेन में अपनी दीदी को जाते देख चिंटू का नन्हा दिल काँप उठा. उसकी दीदी उसे छोड़ कर कहाँ जा रही है? क्या वो अब कभी उससे नही मिल सकेगा. वो दीदी कहता हुआ सीट से कुदा और कांचन को छुने, उससे मिलने, उसे रोकने दौड़ पड़ा.

कांचन की नज़र भी चिंटू पर पड़ चुकी थी. चिंटू को प्लॅटफॉर्म पर यूँ भागता देख कांचन घबरा उठी. उसने पलटकर पिछे देखा. बिरजू उसके पिछे खड़ा मुस्कुरा रहा था.

कांचन ने आव देखी ना ताव.....एक ज़ोर की छलांग मारी और ट्रेन से नीचे कूद गयी.

बिरजू हक्का-बक्का रह गया.

उसने सपने में भी नही सोचा था कि कांचन इस तरह ट्रेन से कूद सकती है. लेकिन उसने भी ठान रखा था चाहें कुछ भी हो जाए आज वो कांचन को हाथ से जाने नही देगा.

ट्रेन अब स्टेशन से बाहर निकल चुकी थी और उसकी रफ़्तार भी बढ़ गयी थी.

बिरजू दरवाज़े से दो कदम पिछे हटा फिर द्रुत गति से ट्रेन के बाहर छलांग मारा.

किंतु किस्मत आज उसके साथ नही थी.

ट्रेन से कूदने से पहले वो ये नही देख पाया कि आगे बिजली का खंभा आने वाला है. वो जैसे ही ट्रेन से बाहर कुदा, उसका सर बिजली के खंभे से जा टकराया.

बिरजू खंभे से टकराकर नीचे गिरा. गिरते ही वो कुछ देर फड़फड़ा फिर शांत हो गया.

उसे गिरता देख प्लॅटफॉर्म पर मौजूद लोग तेज़ी से उसकी तरफ लपके.

कांचन भी उस दृश्य को अपनी खुली आँखों से देख चुकी थी. लेकिन उसे इस वक़्त चिंटू की चिंता थी.

ट्रेन से कूदने से उसका घुटना और हाथ बुरी तरह से छील गया था. जहाँ से रक्त की धार बह निकली थी. किंतु वो अपने दर्द की परवाह ना करते हुए फुर्ती से खड़ी हुई. फिर चिंटू की तलाश में दृष्टि घुमाई.

उसे चिंटू दौड़ता हुआ अपनी ओर आता दिखाई दिया.

कांचन ने आगे बढ़कर चिंटू को अपनी बाहों में समेट लिया. उसके गले लगते ही चिंटू फफक-कर रो पड़ा. कांचन की भी रुलाई फुट पड़ी.

कुछ देर में उनका रोना थमा तो कांचन चिंटू को लिए उस ओर बढ़ गयी. जिस ओर बिरजू गिरा था.

वहाँ लोगों की भीड़ जमा होती जा रही थी.

कांचन चिंटू को लिए भीड़ के नज़दीक पहुँची. वो आगे बढ़कर अंदर का नज़ारा देखने लगी. अंदर का दृश्य देखते ही उसका कलेजा मूह को आ गया.

बिरजू मरा पड़ा था. उसकी भयावह आँखें खुली अवस्था में भीड़ को घूर रही थी. सर फटने की वजह से ढेर सारा खून बहकर ज़मीन पर फैल गया था.

कांचन ज़्यादा देर उस दृश्य को नही देख सकी. वो भीड़ से बाहर निकली और चिंटू का हाथ थामे घर के रास्ते बढ़ गयी.

बिरजू की भयानक मौत ने उसके नारी मन को भावुक कर दिया था.

२७

शाम ढल चुकी थी. धनपाल और हरिया जी आँगन में बिछी चारपाई पर लेटे हुए थे.शांता रसोई में हरिया जी के लिए खाना परोस रही थी.

धनपाल को अभी भूख नही थी. जब से कांचन हवेली गयी थी धनपाल की भूख ही मिट गयी थी. यही हाल शांता का भी था. दोनो बच्चो के एक साथ चले जाने से घर सूना सूना सा हो गया था. किसी का भी दिल किसी चीज़ में नही लगता था.

शांता का मन फिर भी हरिया जी से थोड़ा बहुत बहल जाता था. पर धनपाल का दिल हमेशा कांचन की चिंता से भरा रहता था. उसे ये तो पता था क़ि हवेली में कांचन को कोई कष्ट ना होगा. फिर भी उसका मन कांचन की चिंता से घिरा रहता था.

अभी सिर्फ़ दो ही दिन हुए थे कांचन को हवेली गये और इस घर में मुर्दनि सी छा गयी थी. दो दिन पहले ये घर कांचन और चिंटू की नोक-झोंक, लड़ाई-झगड़े शोर-गुल से महका करता था. अब यहाँ हर दम वीरानी से छाई रहती.

पहले बिना विषय के भी धनपाल और शांता घंटो बात कर लेते थे. अब विषय होने पर भी चार शब्द बोले नही जाते थे.

उनका दुखी हृदय कोई भी बात करने को राज़ी ही ना होता था. अब उनकी बातें सिर्फ़ हां-हूँ में पूरी हो जाती थी.

इस वक़्त भी धनपाल कांचन के बारे में ही सोच रहा था. मूह में बीड़ी की सीलि दबाए वो कांचन के बचपन के दीनो में खोया हुआ था.

तभी दरवाज़े पर हलचल हुई.

धनपाल ने गर्दन उठाकर देखा. कांचन चिंटू के साथ आँगन में परवेश करती दिखाई दी.

" कांचन ...!" उसपर नज़र पड़ते ही धनपाल के मूह से बरबस निकला .

धनपाल की आवाज़ से शांता भी रसोई से बाहर निकली.

" बाबा ..." कांचन कहती हुई धनपाल से आ लिपटी .

" बेटी तुम लोग इस वक़्त यहाँ , और ये क्या हालत बना रखी है तूने ? वहाँ सब ठीक तो है ?" धनपाल ने कांचन के हुलिए और मुरझाए चेहरे को देखते हुए कहा .

कांचन के जवाब देने से पहले शांता भी रसोई से आँगन में आ चुकी थी.

" सब गड़बड हो गया है . वहाँ कुछ भी ठीक नही है ." कांचन रुनवासी होकर बोली .

" क्या कह रही है तू ....?" धनपाल चौंकते हुए बोला - " ठाकुर साहब कैसे हैं ? अजित बाबू और उनकी माजी कैसी हैं ?"

" पिताजी अच्छे हैं , साहेब और माजी भी ठीक हैं .... लेकिन वहाँ ....."

" वहाँ सब अच्छे हैं तो फिर गड़बड क्या है ...?"

जवाब में कांचन ने हवेली से लेकर बिरजू के मरने तक की सारी बातें बता दी.

सुनकर धनपाल के साथ साथ शांता और हरिया जी के मूह भी खुले के खुले रह गये.

एक तरफ बिरजू की मौत से जहाँ शांता ने राहत की साँस ली, वहीं दूसरी तरफ अजित के पिता की मौत का रहस्य जानकर धनपाल चींतीत हो उठा. उसे चिंता कांचन की थी. उसके विवाह की थी. इस रहस्य को जान लेने के पश्चात यशोदा जी कांचन को अपने घर की बहू बनाना स्वीकार करेंगी या नही ये सवाल उसके दिमाग़ में उथल-पुथल मचा रहा था.

" तू चिंता मत कर बेटी ..... चल खाना खा ले . सब ठीक हो जाएगा ." शांता उसे गले से लगाती हुई बोली .

" कुछ ठीक नही होगा बुआ ." कांचन नाक फुलाकर बोली . - " मा जी मुझे अपनी बहू कभी नही बनाएँगी . मैं उन्हे पसंद नही ."

" दुखी ना हो बेटी , तू तो लाखों में एक है . मेरे होते तुझे चिंता करने की ज़रूरत नही है . मैं सब ठीक कर दूँगा ." धनपाल ने कांचन को दिलासा देते हुए कहा .

शांता कांचन को अंदर ले गयी और उसके ज़ख़्मो पर मरहम लगाने लगी. लेकिन जो ज़ख़्म उसके दिल पर लगे थे, उसका मरहम शांता के पास ना था और ना ही धनपाल के पास.

धनपाल चारपाई पर बैठा गेहन चिंता में डूबा हुआ था. वो यही सोचे जा रहा था. क्या वास्तव में यशोदा जी अपने पति की मृत्यु को भूलकर कांचन को अपनी बहू अपना सकेंगी. या फिर ज़िंदगी भर कांचन को अजित बाबू के लिए तड़पना पड़ेगा. उसकी सोच गहरी होती जा रही थी. पर उसे अपने किसी भी सवाल का जवाब नही मिल रहा था.

सचमुच इस बार वादी ने ऐसा तीर छोड़ा था जिसकी कोई काट उसके पास ना थी. वो सिर्फ़ तड़प सकता था. तड़प उठा था.

रात बीत चुकी थी. घर के सभी लोग चादर ताने सो चुके थे. किंतु कांचन की आँखों से नींद कोसो दूर थी. उसे नींद आती भी तो कैसे? उसके जीवन में जो तूफान आया था उसने ना सिर्फ़ कांचन की खुशियाँ, उसके सपने, बल्कि उसकी आँखों से नींद भी उड़ा ले गया था.

कांचन की दशा इस वक़्त ऐसी थी जैसे जल बिन मछली. अजित से अलग होकर जीने की कल्पना ही उसे मार देने के लिए काफ़ी थी.

कांचन बिस्तर पर लेटी हुई उन पलों में खोई हुई थी, जो उसने अजित के साथ बीताए थे. उसकी बातें, उसकी खामोशी, उसका रूठना, उसका मनाना, उसकी बाहों में सिमट कर सब कुछ भुला देना. सब कुछ कितना अच्छा लगता था उसे. वे सारे लम्हे एक एक करके उसकी आँखों के आगे किसी चलचित्र की तरह आ जा रहे थे.

" क्या वो पल फिर से लौटकर आएँग े ? क्या मैं फिर से उनके साथ प्यार के वो लम्हे बिता सकूँग ी ? क्या मुझे फिर से साहेब के उन मजबूत बाहों का घेरा मिलेग ा ?" कांचन खुद से बातें करने लग ी .

" नह ी ... अब साहेब तुम्हे कभी नही मिलेंग े ." उसके दिल के किसी कोने से आवाज़ आई - " तुम्हारे पिता ने उनके पिता का खून किया ह ै . साहेब एक बार तुम्हे माफ़ कर भी दे ं , पर माजी तुम्हे कभी माफ़ नही करेंग ी . वो तो तुम्हे पहले भी पसंद नही करती थी और अब तो बिल्कुल भी नह ी ...."

कांचन छटपटा उठी. -"कैसे जियूंगी मैं? जो साहेब नही मिले तो मैं तो मर जाऊंगी." उसके मूह से एक कराह सी निकली और आँखों से आँसू धूलक कर उसके गालो में फैल गये. कांचन उन्हे आष्टिं से पोछती हुई सिसक पड़ी.

उसका दिल इस वक़्त अंधेरी कोठरी बना हुआ था. उम्मीद की एक भी किरण उसे दूर दूर तक दिखाई नही दे रही थी. उसकी समझ में नही आ रहा था, वो क्या करे? कहाँ जाए कि उसके मन का गुबार निकल सके. उसे इस वक़्त सिर्फ़ आह भर रोने को मन कर रहा था. उसकी दशा ठीक उस नन्ही बालिका की तरह थी, जिसने दुकान से कोई मन-पसंद खिलोना खरीदा हो, पर घर लाते समय रास्ते में गिर कर टूट गया हो. जैसे उस बालिका के दुख का अनुमान कर पाना संभव नही, वैसे ही इस वक़्त कांचन के दुखों का अनुमान लगा पाना संभव नही था.

कांचन कुछ देर यूँही रोती रही फिर कुछ सोचते हुए अपने बिस्तर से उठी और कोने में जाकर खड़ी होकर छप्पर को देखने लगी.

उसकी दृष्टि छप्पर पर फँसी एक थेलि पर टिकी थी. उसने हाथ बढ़ाकर उस थेलि को उतार लिया. उस थेलि में अजित का वो जूता था जिसे कांचन घाटी से उठा लाई थी.

उसने जूता बाहर निकाला और उसे अपनी छाती से लगाकर सिसक पड़ी. जूते को छाती से लगाते ही उसके बेचैन दिल को एक सुकून मिला. वो बिस्तर पर जाकर लेट गयी और जूते को अपनी छाती से लगाए मन ही मन बोली - "साहेब आप जहाँ भी रहें खुश रहें, मैं अब आपके यादों के सहारे जी लूँगी.. मेरा जी बहलाने के लिए आपका जूता ही बहुत है. मैं रोज़ इसे अपने माथे से लगाकर आपको ऐसे ही ख्यालो में पूजती रहूंगी. और आपके खुशियों की प्रार्थना करती रहूंगी."

कांचन बार बार अजित के जूते को कभी छाती से लगाती कभी गालो में फिराती तो कभी माथे से लगा लेती. काफ़ी देर तक इसी तरह अजित के जूते को लिए वो रोती सुबक्ती रही. फिर कब उसकी आँख लग गयी उसे पता ही ना चला.

सुबह दिन चढ़ने तक कांचन सोती रही. आँख खुलते ही शांता ने उसे बताया कि हवेली से नौकर आया था उसे पूछने.

कांचन ने हवेली जाने से मना कर दिया. शांता ने ज़ोर देना ठीक नही समझा. वो खुद भी नही चाहती थी कि कांचन और चिंटू उसकी नज़रों से दूर हों.

हवेली से आए नौकर से ये भी पता चला कि अजित और उनकी माजी मुनीम जी के घर ठहरे हुए हैं. और धनपाल उनसे बात करने उनके पास गया है.

अजित के मुनीम जी के घर होने की बात सुनकर कांचन का मुरझाया चेहरा खिल उठा. उसे इस बात की खुशी थी कि वो अपने साहेब को फिर से देख सकेगी. उसके अंदर उम्मीद की एक किरण जाग उठी. शायद साहेब और माजी उसे क्षमा कर दें और उसे स्वीकार कर लें.

धनपाल भी यही आशा पाले घर से निकला था. वो यही सोचता जा रहा था कि चाहें यशोदा जी पावं ही क्यों ना पड़ना पड़े, पर कांचन के लिए उन्हे मना ही लेगा.

धनपाल अभी बस्ती की सीमा से बाहर निकल कर मंदिर तक ही पहुँचा था कि उसे यशोदा जी मंदिर की सीढ़ियाँ उतरती दिखाई दी.

धनपाल वहीं खड़ा होकर उनके नीचे उतरने का इंतेज़ार करने लगा.

यशोदा जी की नज़र भी धनपाल पर पड़ चुकी थी.

यशोदा जी सीढ़ियाँ उतर कर नीचे आईं और अपना सँडल पहनने लगी.

तभी धनपाल उनके पास आया और हाथ जोड़कर नमस्ते किया.

यशोदा जी धनपाल के आने का कारण अच्छी तरह जानती थी. उन्हे पता था कि कांचन के मोह ने धनपाल को उनके पास भेजा है.

यशोदा जी अनमने मन से धनपाल के नमस्ते का उत्तर देकर आगे बढ़ी.

" बेहन जी , मैं आप ही से मिलने जा रहा था . अच्छा हुआ आप यहीं मिल गयीं ." धनपाल उन्हे जाते देख , विनम्र स्वर में बोला .

" मुझसे ...? किस लिए ....?" यशोदा जी जानकार अंजान बनती हुई बोली .

" बेहन जी , ये मत समझिएगा कि मुझे आप लोगों के दुख का एहसास नही है . मुझे कांचन ने सब बता दिया है . आपके पति के बारे में जानकार मेरा दिल भी कराह उठा है . आपसे विनती है बेहन जी , ठाकुर साहब की वजह से आप हमारी और से अपना मन मैला ना करें ."

" मैं आपकी ओर से अपना मन मैला क्यों करूँगी धनपाल जी . आप तो भले इंसान हैं . आपसे हमारी कोई नाराज़गी नही है ."

" विधाता ने सच - मच आपको विशाल हृदय दिया है . ऐसा कहकर आपने मेरी चिंता दूर कर दी . मैं यही जानने आया था कि उस सच के उजागर होने के बाद कहीं कांचन और अजित बाबू के रिश्ते में कोई खटास तो नही पड़ी ."

" ज़रा ठहरिए .... आप शायद मेरी बातों का ग़लत अर्थ निकाल रहे हैं ." यशोदा जी ने धनपाल को बीच में टोक - कर कहा - " धनपाल जी आप अगर ये सोच रहे हैं कि मैं कांचन को अपनी बहू के रूप में स्वीकार कर लूँगी तो मैं आपको स्पष्ट कहे देती हूँ कि कांचन मेरे घर की बहू कभी नही बन सकती ."

" ऐसा ना कहिए बेहन जी , मेरी मासूम बेटी पर दया कीजिए ." धनपाल ने फरियाद किया . - " वो मेरी बेटी है . उसे मैने पाला है . वो हर पाप पुण्य से निर्दोष है . ठाकुर साहब की ग़लतियों की सज़ा आप मेरी कांचन को मत दीजिए . उसकी ज़िंदगी नर्क बनकर रह जाएगी . आप कांचन को मेरी बेटी जानकार अपना लीजिए ."

" आप व्यर्थ में ज़िद कर रहे हैं धनपाल जी . जो हो नही सकता आप वो बात कर क्यों रहे हैं ? कांचन आपकी बेटी नही है . आपने सिर्फ़ पाला है . आप चाहते हैं मैं उस लड़की को अपनी बहू बना लूँ जिसके बाप ने मेरा सिंदूर उजाड़ा है ?" यशोदा जी बिफर कर बोली - " मैं इतनी मूर्ख नही हूँ . अगर मैं कांचन को अपने घर ले आई तो वो जीवन भर मेरी आखों को काँटे की तरह खटकती रहेगी , शूल बनकर मेरी छाती में

चुभती रहेगी और मेरी आत्मा को लहू- लुहान करती रहेगी . नही .... मैं उसे कभी स्वीकार नही करूँगी ."

धनपाल के पास यशोदा जी की बातों का कोई उत्तर ना था. वो निरुत्तर हो गया.

" धनपाल जी , मुझे आपसे या कांचन से कोई बैर नही है . पर मैं आप लोगों की खुशी के लिए अपने दुख का सामान नही कर सकती . कांचन मेरे घर की बहू नही बन सकती . अब मुझे आज्ञा दीजिए ." यशोदा जी ये कहकर आगे बढ़ गयी .

धनपाल ठगा सा उन्हे जाते हुए देखता रह गया. उसकी कोई भी युक्ति काम ना आई. उसकी मिन्नतें यशोदा जी के दिल में बसी नफ़रत को नही हरा सकी.

धनपाल आँखों में आँसू लिए भारी मन के साथ अपने रास्ते बढ़ गया.

२८

५ बज चुके थे . कांचन घाटी में झरने के निकट उसी पत्थर पर बैठी हुई थी जिस पर रोज़ बैठकर अजित का इंतेज़ार किया करती थी . रोज़ इसी समय वो अजित के साथ होती थी . उसके बाहों में बाहें डाल कर वादी की सुंदरता में खो जाती थी . एक दूसरे की धड़कनो को सुनते हुए प्रेम की बाते करती थी . उसे अजित का बोलना इतना भाता था कि उसका मन चाहता , अजित यूँही बोलता रहे और वो खामोशी से उसकी बातें सुनती रहे . पर आज वैसा कुछ भी ना था . आज ना तो उसे अजित की वो मीठी बातें सुनने को मिल रही थी और ना ही उसके तन - बदन को महका देने वाला अजित का साथ . आज वो अकेली थी . नितांत अकेली .

कांचन को ये शंका पहले से थी कि अजित आज नही आएगा. किंतु फिर भी वो खुद को यहाँ आने से नही रोक पाई. उसे इस घाटी से, इस वातावरण से बेहद मोह हो गया था. दोपहर से ही उसका मन यहाँ आने के लिए व्याकुल हो उठा था. ४ बजने तक वो यहाँ आ पहुँची थी. और पिछले एक घंटे से टुकूर-टुकूर उस रास्ते की ओर देखे जा रही थी जिस ओर से अजित के आने की उम्मीदे थी. किंतु जब भी उसकी नज़र रास्ते की ओर जाती, खाली और सुनसान पथ को देख कर निराशा से अपना सर झुका लेती. जैसे जैसे वक़्त गुज़रता जा रहा था उसके मन की पीड़ा बढ़ती जा रही थी.

कुछ देर और गुज़र गयी. अजित अब भी नही आया. अजित को ना आता देख उसका मन गहरी पीड़ा से भर गया. उसकी आँखों की कोरों पर आँसू की बूंदे छलक आई.

" लगता है अब साहेब नही आएँगे . वो मुझसे सदा के लिए रूठ गये . अब मुझे सारी उमर ऐसे ही इंतेज़ार करना होगा ." कांचन मन ही मन बोली . उसकी आँखें फिर से पानी बरसाने लगी . - " क्यों होता है ऐसा ? क्यों जो चीज़ हमें सबसे अच्छी लगती है वो हमें नही मिलती ? कितना अच्छा होता साहेब और मेरी शादी हो जाती . मैं दुल्हन बनकर उनके घर जाती . उनके साथ हँसी खुशी ज़िंदगी बिताती . पर सब गड़बड हो गया . सारी ग़लती पीताजी की है . वे ना तो साहेब के पीताजी की हत्या करते ना माजी और साहेब मुझसे रूठते . अब मैं कभी हवेली नही जाऊंगी . तभी उन्हे पता चलेगा , अपने जब दूर होते हैं तो कैसा लगता है ."

कांचन की आँख से बहते आँसू तेज़ हो गये. और उसकी रुलाई फुट पड़ी.

कुछ देर बाद जब उसकी रुलाई रुकी, उसने गर्दन उठा कर अपनी प्यासी नज़रों को रास्ते पर डाला. अगले ही पल उसकी आँखें आश्चर्य से भर गयी. उसे अजित आता हुआ दिखाई दिया.

अजित को आता देख उसका दिल खुशी से झूम उठा. उसे लगा जैसे उसे पूरा संसार मिल गया. इस बार उसकी आँखें खुशी से डब-डबा गयी.

कांचन खुशी से अजित की और लपकना ही चाहती थी तभी उसके दिल ने कहा - "रुक जा कांचन...! तुम्हे इतना खुश होने की ज़रूरत नही है. कहीं ऐसा ना हो साहेब तुम्हारी खुशी से नाराज़ हो जायें. साहेब को इस वक़्त पिता की मृत्यु का दुख है. तुम्हारा यूँ खुश होना कहीं उनके दिल से तुम्हारी मोहब्बत को ना निकाल दे. पहले उनकी बातें सुन ले. पहले ये जान ले वो क्यों आए हैं. क्या पता वो तुम्हे खरी-खोटी सुना कर तुमसे नाता तोड़ने आए हों."

कांचन रुकी.

उसके चेहरे पर आई चमक क्षण में गायब हो गयी. उदासी फिर से उसके चेहरे का आवरण बन गयी.

अजित नज़दीक आया.

कांचन आशा भरी दृष्टि से अजित को देखने लगी.

अजित पास आकर खड़ा हो गया और कांचन के चेहरे पर अपनी निगाह डाली.

कांचन का चेहरा मुरझाया हुआ था किंतु दिल में खुशियों के हज़ारों फूल खिल उठे थे. वो अजित के मूह से बोल सुनने के लिए ऐसी व्याकुल थी मानो आज अजित उसके जीवन और मृत्यु का फ़ैसला सुनाने वाला हो. दिल ऐसे धड़क रहा था जैसे मीलों भाग कर आई हो.

" कांचन ! क्या नाराज़ हो मुझसे ?" अजित ने मूह खोला .

कांचन मासूमियत से अपनी गर्दन ना में हिलाई.

" तो फिर इतनी दूर क्यों खड़ी हो ? क्या आज मेरे गले नही लगोगी ?"

अजित के कहने की देरी थी और उसकी आँखों की कोरों पर जमे आँसू छलक पड़े. खुशी से कुछ कहने के लिए उसके होंठ फड़फडाए पर शब्द बाहर ना आ सके.

वो तेज़ी से आगे बढ़ी और अजित की बाहों में समा गयी. अजित की छाती से लगते ही उसके अंदर की अंतर-पीड़ा आँसू का रूप लेकर बाहर आने लगे.

अजित उसे रोता देख बेचैन हो उठा.

" क्या हुआ कांचन ? क्यों रो रही हो ? क्या इसलिए कि मैं तुम्हे बिना कुछ कहे हवेली से बाहर आ गया ?" अजित उसके चेहरे को अपने हाथों में लेकर बोला .

" साहेब आप मुझसे नाराज़ तो नही हो ?" उसने गीली आँखों से अजित को देखा .

" नाराज़ ..? मैं भला तुमसे क्यों नाराज़ रहूँगा ? तुमने किया ही क्या है ?" अजित उसके आँसू पोंछता हुआ बोला .

" साहेब , जब आप और माजी हवेली से निकल गये तो मैं बहुत घबरा गयी थी . शाम तक मैं रोती रही थी फिर चिंटू को लेकर मैं भी हवेली छोड़ कर निकल गयी ." कांचन ने सुबक्ते हुए अपने हवेली से निकलने से लेकर स्टेशन पहुँचने तक . फिर वहाँ पर बिरजू की मौत और उसके बाद घर आने तक की सारी बातें विस्तार से अजित को बता दिया .

अजित के आश्चर्य की सीमा ना रही. उसे कांचन पर बेहद प्यार आया. उसके खातिर कांचन कितनी बड़ी मुसीबत में फँसने वाली थी. उसने मन ही मन ईश्वर को धन्यवाद कहा और कांचन के माथे को चूमकर उसे छाती से भीच लिया.

कांचन किसी नन्ही बच्ची की तरह उसकी बाहों में सिमट-ती चली गयी.

कुछ देर एक दूसरे से लिपटे रहने के बाद अजित कांचन को लेकर खाई के करीब बड़े पत्थर पर जा बैठा.

" कांचन वादा करो अब ऐसी नादानी नही करोगी ." अजित पत्थर पर बैठने के बाद कांचन से बोला - " कभी मेरी खातिर बिना सोचे समझे , बिना अपने बाबा और बुआ से पूछे बिना कोई काम नही करोगी . मैं तुम्हे छोड़कर कहीं नही जाऊंगा . अगर कहीं गया भी तो तुरंत लौट आऊंगा . मेरे आने तक मेरी राह देखोगी ."

कांचन सब-कुछ समझने के बाद किसी बच्चे की तरह 'हां' में अपना सर हिलाई.

अजित उसके भोलेपन पर मुस्कुराया.

" तुम्हे ऐसा क्यों लगा मैं तुम्हे छोड़कर चला जाऊंगा ?" अजित ने पुछा .

" साहेब मैं समझी थी मेरे पिता की ग़लती की वजह से आप मुझे छोड़ दोगे . आप मुझे फिर कभी नही मिलोगे ये सोचकर मैं बहुत रोई हूँ . साहेब मैं आपसे बहुत प्यार करती हूँ . मुझे छोड़ कर मत जाना . नही तो मैं मर .....!" उसके शब्द पूरे होते उससे पहले अजित ने उसके मूह पर अपना हाथ धर दिया .

" खबरदार ! जो फिर कभी तुमने ऐसी बात की . जितना तुम मुझसे प्रेम करती हो , मैं भी तुमसे उतना ही प्रेम करता हूँ ." अजित ने प्यार से डांटा . फिर उदास लहजे में बोला . - " ठाकुर साहब ने जो किया वो ग़लत था . और इसके लिए मैं उन्हे कभी क्षमा नही करूँगा . पर इसमे तुम्हारा क्या दोष ? तुम तो निष्कलंक हो , तुम्हारा मन तो गंगा की तरह पवित्र है . संसार में तुमसे अच्छी , तुमसे प्यारी , तुमसे सुंदर और तुमसे पवित्र विचार वाली लड़की दूसरी ना होगी . तुम इतनी अच्छी हो कांचन कि अगर मैने भूले से भी तुम्हे कोई कष्ट दिया तो ईश्वर मुझसे नाराज़ हो जाएगा . इसलिए अपने मन से ये बात निकाल दो कि मैं तुम्हे कभी छोड़ कर जाऊंगा या तुम्हे कोई कष्ट दूँगा . तुम मेरी ज़रूरत हो कांचन . चाहें दुनिया इधर की उधर हो जाए . पर मैं तुम्हारा साथ नही छोड़ूँगा . जिसको जो करना हो करे ."

कांचन का जी ठंडा हो गया. अजित के दिल में अपने लिए अथाह प्यार देखकर वो पूरी तरह से आश्वस्त हो गयी कि अजित अब उसे छोड़कर नही जाएगा. अब एक ही चिंता थी. किसी तरह माजी के दिल का मैल भी निकल जाए. वो भी उन्हे माफ़ कर दें और उसे स्वीकार कर लें."

" क्या सोचने लगी हो ? क्या अब भी तुम्हे मेरी बातों पर यकीन नही है ?" अजित ने कांचन को खोया देखा तो पुछा .

" नही साहेब , मैं तो माजी के बारे में सोच रही थी . क्या माजी भी मुझे माफ़ कर देंगी ?"

" मा के दिल में अभी गुस्सा है . उनका गुस्सा जाने में थोड़ा वक़्त लगेगा . पर चिंता ना करो . सब ठीक हो जाएगा . मैं बहुत जल्द तुम्हारे घर बारात लेकर आऊंगा और तुम्हे दुल्हन बनाकर ले जाऊंगा ."

कांचन अपनी बारात और दुल्हन बन-ने की बात सुनकर शरमा गयी. वो मुस्कुराती हुई उन आने वाले पलों में खोती चली गयी.

कांचन को अपने ख्यालो में खोता देख अजित शरारत से बोला - "कहाँ खो गयी? क्या अभी से रात्रि मिलन के सपने देखने लगी?"

" धत्त ...!" कांचन लज़ती हुई बोली और उसकी बाहों में सिमट गयी .

२९

रात के ११ बज चुके थे. शीश महल उसी शान से खड़ा अपनी छटा बिखेर रहा था. हवेली के सभी नौकर सवर्टें क्वॉर्टर में सोने चले गये थे. सिर्फ़ दो सुरक्षा-कर्मी अपने अपने कंधों पर बंदूक लटकाए हवेली की निगरानी में जाग रहे थे.

ठाकुर साहब इस वक़्त हॉल में सोफे पर बैठे हुए अपने जीवन का लेखा जोखा कर रहे थे. वे ये सोचने में लगे हुए थे कि उन्होने अपने पूरे जीवन में क्या पाया और क्या खोया.

उनके सामने सेंटर टेबल पर महँगी शराब की बोतलें और गिलास रखे हुए थे.

ठाकुर साहब ने बॉटल खोली और गिलास में शराब उडेलने लगे. फिर गिलास को होंठों से लगाकर एक ही साँस में खाली कर गये.

ये उनके लिए कोई नयी बात नही थी. रातों को जागना और शराब पी कर अपनी किस्मत को कोसना उनका मुक़द्दर बन गया था.

किंतु आज वे और दिन से अधिक दुखी थे. आज उनकी आँखों में आँसू थे. वे आँखें जो २० सालों तक हज़ार गम सहने के बाद भी कभी नही रोई, आज रो रही थी. वजह थी कांचन....!

आज शाम को जब धनपाल के घर से लौटने के बाद नौकर ने उन्हे ये बताया कि कांचन अब हवेली नही लौटना चाहती, तभी से उनका मन दुखी हो उठा था.

आज जितना अकेलापन उन्हे पहले कभी महसूस नही हुआ था. आज उनके सारे सगे-समधी एक एक करके उनसे अलग हो गये थे.

पहले मुनीम जी, फिर डिंपल और आज कांचन ने भी उनसे नाता तोड़ लिया था.

ठाकुर साहब को कांचन से ऐसी बेरूख़ी की उम्मीद नही थी. मुनीम जी और डिंपल उनके सगे नही थे. उनका जाना ठाकुर साहब को उतना बुरा नही लगा था. पर कांचन तो उनकी बेटी थी. उसके रगो में उनका खून दौड़ रहा था. चाहें अपने स्वार्थ के लिए या फिर घृणा से

पर कांचन का ऐसे दुखद समय पर मूह मोड़ लेना उन्हे अंदर से तोड़ गया था. उनकी खुद की बेटी उन्हे पसंद नही करती, इस एहसास से वो बुरी तरह तड़प रहे थे.

आज उनके पास अपना कहने के लिए कुछ भी नही बचा था. अगर उनके पास कुछ बचा था तो ये हवेली जो इस वक़्त उनकी बेबसी का मज़ाक उड़ा रही थी. उसकी दीवारें हंस हंस कर उनके अकेलेपन पर उन्हे मूह चिढ़ा रही थी.

ठाकुर साहब ने फिर से गिलास भरा और पहले की ही तरह एक ही साँस में पूरा गिलास हलक के नीचे उतार गये.

अब उनकी आँखों में आँसू की जगह नशा तैर उठा था.

वे लहराते हुए उठे और हॉल के बीचो बीच आकर खड़े हो गये. फिर घूम घूम कर हॉल के चारों ओर देखने लगे. उनकी नज़र जिस और पड़ती, चमकती हुई काँच की दीवारें उन्हे परिहास करती नज़र आती.

ये सिलसिला कुछ देर चलता रहा. फिर अचानक ठाकुर साहब के जबड़े कसते चले गये. वे लपक कर सेंटर टेबल तक गये. सेंटर टेबल पर रखे बॉटल को उठाया और गुस्से से दीवार पर फेंक मारा.

बॉटल दीवार से टकराने के बाद टूट कर बिखर गयी.

पर इतने में उनका गुस्सा शांत ना हुआ. उन्होने पास पड़ी लकड़ी की कुर्सी उठाई और पूरी शक्ति से दीवारों पर मारने लगे.

च्चन....च्चन्न......छचाकक....की आवाज़ के साथ दीवारों पर जमा काँच टूटकर फर्श पर गिरने लगा.

काँच टूटने की आवाज़ सुनकर बाहर तैनात पहरेदारों में से एक दौड़कर भीतर आया. ठाकुर साहब को पागलों की तरह काँच की दीवारों का सत्यानाश करते देख उन्हे रोकने हेतु आगे बढ़ा.

किंतु !

जैसे ही ठाकुर साहब की नज़र उस पर पड़ी. शेर की तरह दहाड़े - "दफ़ा हो जाओ यहाँ से. खबरदार जो भीतर कदम रखा."

पहरेदार जिस तेज़ी से आया था. उसी तेज़ी से वापस लौट गया.

पहरेदार के बाहर जाते ही फिर से ठाकुर साहब दीवारों पर कुर्सियाँ फेंकने लगे. ये सिलसिला कुछ देर तक चलता रहा फिर तक कर घुटनो के बल बैठते चले गये.

" ये हम से क्या हो गया ?" ठाकुर साहब अपना सर पकड़ कर रो पड़े . -" इस हवेली के मोह ने हमारा सब - कुछ हम से छीन लिया . इसने हम से हमारी शारदा को छीन लिया . इसने हमारी बेटी कांचन को हम से अलग कर दिया . हम इस हवेली को आग लगा देंगे ." ठाकुर साहब पागलों की तरह बड़बड़ाये . - " हां यही ठीक रहेगा . तभी हमारी शारदा ठीक होगी , तभी हमारी बेटी हमारे पास लौट आएगी "

उनके अंदर प्रतिशोध की भावना जाग उठी. वो फुर्ती से उठे और रसोई-घर की तरफ बढ़ गये.

रसोई में केरोसिन के कयी गेलन पड़े हुए थे. वे सारे गेलन उठाकर हॉल में ले आए.

फिर एक गेलन को खोलकर केरोसिन दीवारों पर फेंकने लगे - "ये हवेली हमारी खुशियों पर ग्रहण है. इसने हमारी ज़िंदगी भर की खुशियाँ हम से छीनी है. आज हम इस ग्रहण को मिटा देंगे."

ठाकुर साहब घूम घूम कर केरोसिन छिड़क रहे थे. साथ ही अपने आप से बातें भी करते जा रहे थे. उन्हे इस वक़्त देखकर कोई भी आसानी से अनुमान लगा सकता था कि वे पागल हो चुके हैं.

पूरी हवेली की दीवारों को केरोसिन से नहलाने के बाद वे फिर से रसोई की तरफ भागे.

" माचिस कहाँ है ?" वे बड़बड़ाये और माचिस की तलाश में अपनी नज़रें दौड़ाने लगे .
- " हां मिल गयी ." उन्होने झपट्टा मार कर माचिस को उठाया . फिर तेज़ी से हॉल में आए .

" अब आएगा मज़ा ." उन्होने माचिस सुलगाई . फिर एक पल की भी देरी किए बगैर माचिस की तिल्ली को दीवार के हवाले कर दिया .

तिल्ली का दीवार से टकराना था और एक आग का भभका उठा.

ठाकुर साहब मुस्कुराए.

दो मिनिट में ही हवेली की दीवारें आग से चटकने लगी. आग तेज़ी से फैलती जा रही थी.

जैसे जैसे आग हवेली में फैलती जा रही थी वैसे वैसे ठाकुर साहब आनंद विभोर हो रहे थे. हवेली को धुन धुन करके जलते देख उनके आनंद की कोई सीमा ना रही थी.

बाहर खड़े पहरेदारों ने हवेली में आग उठते देख अंदर आना चाहा. पर साहस ना कर सके.

" अब हमारे दिल को सुकून पहुँचा है ." ठाकुर साहब मुनीमो की तरह हंसते हुए बोले . - " अब ये हवेली फ़ना हो जाएगी ."

उनकी हँसी तेज़ हो गयी. हवेली में आग जितनी तेज़ी से बढ़ रही थी उनके ठहाके उतने ही बुलंद होते जा रहे थे. उनकी मानसिक स्थिति बिगड़ने में कोई कसर नही रह गयी थी. उनकी आँखों में ना तो भय था और ना ही अफ़सोस. मानो वे खुद भी हवेली के साथ खाक होना चाहते हों.

हवेली पूरी तरह से आग के लपटों में घिर चुकी थी. ठाकुर साहब के ठहाके अब भी गूँज रहे थे.

तभी !

एक ज़ोरदार चीख ने उनके ठहाकों पर विराम लगा दिया. ये चीख शारदा जी के कमरे से आई थी.

ठाकुर साहब के दिमाग़ को एक तेज़ झटका लगा. सहसा उन्हे ख्याल आया कि शारदा अंदर कमरे में बंद है. वो चीखते हुए शारदा जी के कमरे की तरफ भागे.

किंतु दरवाज़े तक पहुँचते ही उनके होश उड़ गये. दरवाज़े पर बाहर से ताला लगा हुआ था. जिसकी चाभी इस वक़्त उनके पास नही थी.

" ये मैने क्या कर दिया ?" ठाकुर साहब खुद से बड़बड़ाये - " नही शारदा नही . हम तुम्हे कुछ नही होने देंगे . हमारा विश्वास करो . हम खुद को मिटा देंगे पर तुम पर आँच नही आने देंगे ."

शारदा जी की चीखें सुनकर ठाकुर साहब का सारा नशा दूर हो चुका था. वो किसी जुनूनी इंसान की तरह पूरी ताक़त से दरवाज़े पर लात मारने लगे. दरवाज़ा गरम था. स्पष्ट था दरवाज़े पर अंदर से आग पकड़ चुकी थी.

कुछ ही पल की मेहनत ने और आग की लपटों ने दरवाज़े को कमज़ोर कर दिया. एक आख़िरी लात पड़ते ही दरवाज़ा चौखट सहित उखाड़ कर कमरे के अंदर जा गिरा.

अंदर का दृश्य देखते ही ठाकुर साहब की आँखें फटी की फटी रह गयी. उनकी आँखों से आँसू बह निकले.

शारदा जी की साड़ी के आँचल में आग लगी हुई थी और शारदा जी भय से चीखती हुई कमरे में इधर से उधर भागती फिर रही थी.

ठाकुर साहब विधुत गति से छलांग मारते हुए अंदर दाखिल हुए. फुर्ती के साथ उन्होने शारदा जी की साड़ी को उनके बदन से अलग किया. सारी खुलते ही शारदा जी लहराकार फर्श पर गिर पड़ी. फर्श पर गिरते ही वे बेहोश हो गयीं.

ठाकुर साहब ने कमरे का ज़ायज़ा लिया. कमरे की दीवारों में आग पूरी तरह से फैल चुकी थी. उनकी नज़र बिस्तर पर पड़े कंबल पर पड़ी. उन्होने लपक कर कंबल उठाया और

शारदा जी को खड़ा करके जैसे तैसे उन्हे कंबल ओढ़ा दिया. फिर उन्हे बाहों में उठाए कमरे से बाहर निकले.

वे जैसे ही कमरे से निकल कर सीढ़ियों तक आए. वहाँ का नज़ारा देखकर उनके पसीने छूट गये. सीढ़ियों पर आग की लपटे उठ रही थी. पावं धरने की भी जगह नही बची थी.

आग की तपीस में उनका चेहरा झुलसने लगा था. जिस जगह पर वो खड़े थे. वहाँ से लेकर मुख्य-द्वार तक आग ही आग थी.

ठाकुर साहब ने शारदा जी को ठीक से कंबल में लपेटा. फिर अपना दिल मजबूत करके आग में कूद पड़े. सीढ़ियों पर पावं धरते ही उनका समुचा बदन धधक उठा. किंतु उन्होने अपने जलने की परवाह ना की. उनका लक्ष्य था मुख्य द्वार...! वहाँ तक पहुँचने से पहले वे अपनी साँसे नही छोड़ना चाहते थे. उनके कदम बढ़ते रहे. एक पल के लिए भी रुकने का मतलब था उन दोनों की मौत. ठाकुर साहब को अपनी मौत की परवाह नही थी. किंतु निर्दोष शारदा जी को वे किसी भी कीमत पर आग के हवाले नही छोड़ सकते थे.

वे भागते रहे. आग की लपटे उनके बदन को झुलसाती रही. जलन की वजह से उनके कदम तेज़ी से नही उठ रहे थे. फिर भी किसी तरह उन्होने मुख्य द्वार को पार किया. शारदा को ज़मीन पर धरते ही वो भी धम्म से गिर पड़े.

उनके बाहर निकलने तक लोगों की भीड़ जमा हो चुकी थी. पहरेदारों ने जब हवेली में आग की लपते उठते देखी तो भाग कर सबसे पहले मुनीम जी के पास गये. अजित और यशोदा जी जाग रहे थे. वे कांचन के विषय पर बात-चीत में लगे हुए थे. जब पहरेदारों ने दरवाज़ा खटखटाया.

हवेली में आग की बात सुनकर अजित और यशोदा जी सकते में आ गये. जब तक अजित बाहर निकलता. हवेली आग से घिर चुकी थी.

वो शारदा जी को बचाने अंदर जाना चाहता था पर यशोदा जी ने उसे जाने नही दिया.

कुछ ही देर में गांव के लोग भी हवेली के तरफ दौड़ पड़े थे. उनमे कांचन, धनपाल, कल्लू और डिंपल भी थी.

जब तक ठाकुर साहब शारदा जी को लेकर बाहर निकले. हवेली के बाहर लोगों का जमावड़ा हो चुका था.

ठाकुर साहब के भूमि पर गिरते ही अजित उनकी और दौड़ पड़ा. उसने पहले शारदा जी के बदन से कंबल को अलग किया. उनके कंबल में भी आग लगी हुई थी. अजित ने कंबल में लगी आग को बुझाया फिर उसी कंबल से ठाकुर के बदन में लगी आग को बुझाने लगा.

कुछ ही देर में ठाकुर साहब के बदन में लगी आग भी बुझ गयी. पर वे जलन से बुरी तरह तड़प रहे थे. उन्होने अपने दर्द की परवाह ना करते हुए अजित से पुछा - "शारदा कैसी है अजित? उसे कुछ हुआ तो नही?"

" शारदा जी बेहोश हैं . पर उन्हे कुछ नही हुआ . आप उनकी चिंता ना करें ."

" ईश्वर तेरा लाख - लाख शुक्र है ...." उनके चेहरे पर दर्द और खुशी के मिश्रित भाव जागे . - " अजित बेटा आपकी माताजी कहाँ हैं . मुझे उनके दर्शन करा दो ."

अजित ने मा की तरफ देखा. यशोदा जी के कदम स्वतः ही ठाकुर साहब के करीब चले गये. ठाकुर साहब के चेहरे पर उनकी नज़र पड़ी तो उनका कलेज़ा मूह को आ गया. उनका चेहरा काला पड़ गया था. यशोदा जी की नज़र उनके आँख से बहते आँसुओं पर पड़ी.

" बेहन जी . मेरे पाप क्षमा के योग्य तो नही फिर भी अपने जीवन के आख़िरी साँसों में आपसे हाथ जोड़कर अपने किए की माफी माँगता हूँ . आप से प्रार्थना है मेरे किए पाप की सज़ा मेरी बेटी कांचन को ना दीजिएगा . वो मासूम है . निष्कलंक है . उसे धनपाल की बेटी मानकर अपना लीजिए . अगर आप उसे अपना लेंगी तो मैं चैन से मर सकूँगा ." ठाकुर साहब के मूह से कराह भरे बोल निकले .

ठाकुर साहब की ऐसी हालत और उन्हे रोता देखकर यशोदा जी का दिल पिघल गया. वो बोली - "कांचन से हमें कोई शिकायत नही ठाकुर साहब. अजित उसे पसंद कर चुका है. वो मेरे ही घर की बहू बनेगी. मैं इस बात का वचन देती हूँ."

ठाकुर साहब दर्द में भी मुस्कुरा उठे. उन्होने नज़र फेर कर कांचन और डिंपल को देखा. वे दोनो पास पास ही खड़ी थी. ठाकुर साहब ने इशारे से उन्हे समीप बुलाया. वे दोनो उनके

नज़दीक बैठकर रोने लगी. ठाकुर साहब ने हाथ उठाकर उन्हे आशीर्वाद देना चाहा लेकिन तभी उनके शरीर से आत्मा का साथ छूट गया. निर्जीव हाथ वापस धरती पर आ गिरे.

वहाँ मौजूद सभी की आँखें नम थी. किसी के समझ में नही आ रहा था कि ये सब कैसे और क्यों हो गया?

अचानक हुए इस हादसे से सभी हैरान थे. लेकिन डिंपल की अवस्था सबसे अलग थी. ठाकुर साहब के मरने का दुख उससे अधिक किसी को ना था. उसने २० साल ठाकुर साहब को पिता के रूप में देखा था. बचपन से लेकर अब तक ठाकुर साहब ने उसकी हर ज़िद हर इच्छा को पूरा किया था. आज उसका दुख उस दिन से भी बड़ा था जिस दिन उसे ये पता चला था कि वो ठाकुर साहब की बेटी नही है. आज उसकी आँखें थमने का नाम ही नही ले रही थी. आज वो खुद को अनाथ महसूस कर रही थी.

कुछ ही देर में एम्बुलेंस आ गयी. अजित ने मुनीम जी के घर से हॉस्पिटल फोन कर दिया था.

ठाकुर साहब के मृत शरीर के साथ शारदा जी को भी हॉस्पिटल ले जाया गया.

उनके पिछे अपनी जीपों में, मुनीम जी, धनपाल और कल्लू के साथ डिंपल, कांचन, अजित और यशोदा जी भी हॉस्पिटल चले गये.

शारदा जी के ज़ख़्म मामूली थे. किंतु इस हादसे ने उनकी सोई हुई बरसों की याददाश्त को लौटा दिया था. वो जब हॉस्पिटल से निकली तो मुनीम जी ने उन्हे सारी स्थिति से परिचय करा दिया.

पति के मरने का दुख ने उन्हे कुछ दिन शोक में डूबाये रखा.

फिर कुछ दिनो बाद शारदा जी के मौजूदगी में अजित और कांचन की शादी हो गयी.

ठाकुर साहब को जिस दिन ये मालूम हुआ था कि कांचन उनकी बेटी है. उसके अगले रोज़ उन्होने अपनी नयी वसीयत बनवाई थी. जिस में उन्होने अपनी सारी संपाति में आधी संपाति डिंपल और आधी कांचन के नाम कर दी थी.

किंतु वो जगह जहाँ पर शीश महल स्थित था. वहाँ पर रहना ना तो कांचन ने स्वीकार किया और ना ही डिंपल ने. वो शीश महल जो २० सालों तक शान से खडा अपनी चमक बिखेरता रहा था , अब राख में बदल चुका था.

समाप्त